

आत्माएं
THE SPIRITS

DR.J.M.PEEBLES. M.D., M.A.

March 23, 1822 – February 15, 1922.

शब्दकोष



1. महान राक्षस

1.Brahma Rakshasa - महाराष्ट्र से मूर्तिकला

Manusmriti :

मनुस्मृति में कहा गया है कि एक ब्राह्मण जो किसी बहिष्कृत व्यक्ति के साथ संबंध रखता है, अन्य पुरुषों की पत्नियों को बहकाता है, या अन्य ब्राह्मणों की संपत्ति चुराता है, उसकी मृत्यु के बाद ब्रह्मराक्षस बन जाएगा।

ब्रह्मराक्षस (संस्कृत: ब्रह्मराक्षसः, रोमानी भाषा में: ब्रह्मराक्षसः, उच्चारित [breʰmeraːkʂeseḥ]) राक्षसों के एक वर्ग में से एक है, जो हिंदू

पौराणिक कथाओं में आमतौर पर दुष्ट प्राणियों की एक जाति है। ब्राह्मण वर्ग का जो सदस्य अधर्मी कार्यों में लिप्त रहता है, उसे मृत्यु के बाद ब्रह्मराक्षस बनने का श्राप दिया जाता है।



2.दानव

2.राक्षस जैसा कि यक्षगन में दर्शाया गया है

राक्षसों को अक्सर आकार बदलने वाले, भयंकर दिखने वाले, विशाल राक्षसी दिखने वाले प्राणियों के रूप में चित्रित किया गया था, जिनके मुंह के ऊपर से दो नुकीले दांत निकले हुए थे और उनके पंजे जैसे तेज नाखून थे। उन्हें नीच, गुर्राने वाले जानवरों और अतृप्त आदमखोर के रूप में दिखाया गया जो मानव मांस की गंध सूंघ सकते थे।

कुछ अधिक क्रूर लोगों को जलती हुई लाल आँखों और बालों के साथ, अपने हाथों से या मानव खोपड़ी से खून पीते हुए दिखाया गया था (बाद के पश्चिमी पौराणिक कथाओं में पिशाचों के चित्रण के समान)।

आम तौर पर वे उड़ सकते थे, गायब हो सकते थे और उनके पास माया (भ्रम की जादुई शक्तियां) थी, जो उन्हें इच्छानुसार आकार बदलने और किसी भी प्राणी का रूप धारण करने में सक्षम बनाती थी। राक्षस का स्त्री समकक्ष राक्षसी है।

हिंदू महाकाव्यों में:

रामायण और महाभारत की दुनिया में, राक्षस एक आबादी वाली जाति थे। वहाँ अच्छे और बुरे दोनों तरह के राक्षस थे, और योद्धाओं के रूप में वे अच्छे और बुरे दोनों की सेनाओं के साथ लड़ते थे। वे शक्तिशाली योद्धा, विशेषज्ञ जादूगर और मायावी थे।

आकार बदलने वालों के रूप में, वे विभिन्न भौतिक रूप धारण कर सकते हैं। भ्रमजाल के रूप में, वे ऐसे दिखावे बनाने में सक्षम थे जो उन लोगों के लिए वास्तविक थे जो उन पर विश्वास करते थे या जो उन्हें दूर करने में विफल रहे।

कुछ राक्षसों को आदमखोर कहा जाता था, और जब युद्ध के मैदान में कत्लेआम अपने सबसे बुरे दौर में होता था तो वे प्रसन्नचित्त दिखाई देते थे। कभी-कभी वे किसी न किसी सरदार की सेवा में सामान्य सैनिक के रूप में काम करते थे।

अनाम साधारण राक्षसों के प्रति उनके व्यवहार के अलावा, महाकाव्यों में इन प्राणियों के कुछ सदस्यों की कहानियाँ बताई गई हैं जो प्रमुखता से उभरे, कभी-कभी नायक के रूप में लेकिन अधिकतर खलनायक के रूप में।

थापर का सुझाव है कि राक्षस राक्षसी वनवासियों के अतिरंजित, अलौकिक चित्रण का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जो जाति समाज से बाहर थे।



3. भूत

3.भूत - एक दयालु ब्रह्मदैत्य ने एक गरीब ब्राह्मण व्यक्ति को भूतों के समूह से बचाया, जब वह आदमी बरगद से एक शाखा काट रहा था।

भूत बंगाल के भौगोलिक और जातीय-भाषाई क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने की लोककथाओं का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग हैं, जिसमें वर्तमान में बांग्लादेश और भारतीय राज्य पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा शामिल हैं।

भारतीय सांस्कृतिक पहचानें इस तरह से आपस में जुड़ी हुई हैं कि भूतों का चित्रण उस संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है जिसमें वह स्थापित होती है। पुरानी और नई दोनों तरह की परियों की कहानियां, अक्सर भूतों की अवधारणा का उपयोग करती हैं। आधुनिक बंगाली साहित्य, सिनेमा, रेडियो और टेलीविजन मीडिया में अक्सर भूतों के संदर्भ पाए जाते हैं।

इस क्षेत्र में कथित प्रेतवाधित स्थल भी हैं। बंगाली में भूतों के लिए सामान्य शब्द भूत या भुत (बंगाली: ভূত) है। इस शब्द का एक वैकल्पिक अर्थ है: बंगाली में 'अतीत'। इसके अलावा, प्रेत शब्द (संस्कृत के 'प्रेता' से लिया गया) का प्रयोग बंगाली में भूत के अर्थ में किया जाता है। बंगाल में, भूतों को मनुष्यों की अतृप्त आत्माएँ

माना जाता है जिन्हें मृत्यु के बाद शांति नहीं मिलती है या उन लोगों की आत्माएँ होती हैं जो हत्या, आत्महत्या या दुर्घटनाओं जैसी अप्राकृतिक या असामान्य परिस्थितियों में मर जाते हैं।

गैर-मानव जानवर भी मरने के बाद भूत बन सकते हैं। लेकिन इन्हें अक्सर सौभाग्य और धन से जोड़ा जाता है।



4.आत्मा

4. विरुद्ध **:**

आत्माएं और भूत लगभग एक जैसे ही होते हैं। लोककथाओं और संस्कृति में आत्माएं अलौकिक प्राणी हैं जो किसी मृत व्यक्ति की आत्मा से बनाई जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि जो लोग मृत्यु से पहले अपनी इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थ होते हैं और पुनर्जन्म के लिए स्वर्ग या नरक में जाने में असमर्थ होते हैं वे प्रेत या भूत बन जाते हैं।

फर्क सिर्फ इतना है; हमसे संबंधित मृत व्यक्ति को PRET कहा जाता है और अन्य सामान्य मृत व्यक्तियों को GHOST कहा जाता है।



4बी.महिला आत्मा

4बी.प्रेतनी

- पेंचापेची: पेंचापेची उल्लू का रूप धारण करो और बंगाल के जंगलों में घूमो। ऐसा कहा जाता है कि वे पूरे जंगल में असहाय यात्रियों का तब तक पीछा करते हैं जब तक कि वे पूरी तरह से अकेले न हो जाएं, जिस फूलदान में वे हमला करते हैं। अन्य भूतों के विपरीत, पेनचापेची वास्तव में अपने पीड़ितों को लगभग पिशाचपूर्ण तरीके से भस्म कर देते हैं।



Le Vampire, lithographie de R. de Moraine, tirée des *Tribunaux secrets*.

5.पिशाच

5, Pishacha

पिशाच लोक में जाने वाले प्राणी भी एक समय मनुष्य ही थे, लेकिन राक्षसी कृत्य करने और मरने के बाद वे पिशाच लोक में चले जाते हैं। पिशाच कौन बनता है - सबसे प्रमुख कारण है असामयिक मृत्यु। जो मनुष्य वाहन दुर्घटना में, किसी जानवर द्वारा मारे जाने पर या अधूरी इच्छाओं के कारण मर जाते हैं, वे पिशाच या पिशाच बन जाते हैं।

पिशाच भी पौराणिक प्राणी हैं जो जीवित प्राणियों के जीवन सार को खाकर, आमतौर पर उनका खून पीकर जीवित रहते हैं। हालाँकि आमतौर पर इन्हें मरे हुए लेकिन अलौकिक रूप से एनिमेटेड प्राणियों के रूप में वर्णित किया जाता है, कुछ पुरानी परंपराओं का मानना था कि पिशाच (रक्त चूसने वाले) जीवित लोग थे।

तब से, मध्य रोमानियाई क्षेत्र को पिशाचों को खोजने के लिए सबसे अच्छे स्थानों में से एक माना जाता है। ब्रैन कैसल को अब ड्रैकुला के

ट्रांसिल्वेनियाई घर के रूप में जाना जाता है, भले ही इसका 15वीं सदी के शासक व्लाद द इम्पेलर से बहुत कम संबंध है।

एक व्यक्ति विभिन्न तरीकों से पिशाच बन सकता है, जिनमें से सबसे आम है पिशाच द्वारा काटा जाना। अन्य तरीकों में जादू-टोना, आत्महत्या, संक्रमण, या किसी व्यक्ति की लाश पर बिल्ली कूदना शामिल है।

पिशाच जैसी विशेषताओं वाले जीव कम से कम प्राचीन ग्रीस में दिखाई देते हैं, जहां ऐसे प्राणियों की कहानियां बताई जाती थीं जो नींद में लोगों पर हमला करते थे और उनके शारीरिक तरल पदार्थ चूसते थे।



5बी. पिशाचिनी

5B. "Karna Pishachini." : यह प्राचीन तांत्रिक अनुष्ठान, जो अक्सर रहस्य में डूबा रहता है, कहा जाता है कि यह दूरदर्शिता और अन्य अलौकिक शक्ति के लिए दिव्य स्त्री ऊर्जा के निचले रूपों का आह्वान करता है।



6. ज़ोंबी

6. भुगतान : बेताल, बेताल या बेताला (अनुवाद। "दानव") एक भारतीय ज़ोंबी हॉरर है।

बेताल भारत के मूल हिंदू लोगों के देवता हैं। तूफ़ान के देवता, बेताल, को आमतौर पर एक भयंकर, विनाशकारी देवता के रूप में चित्रित किया गया है। बेताल की वीरता और बुद्धिमत्ता के बारे में कई कहानियाँ और लोककथाएँ इस देवता की पूजा करने वाले स्थानीय लोगों की पीढ़ियों से चली आ रही हैं।

श्री बेताल मंदिर (बेताल) एक हिंदू मंदिर है जो बिचोलिम के अमोना गांव में स्थित है तलूक, गोवा, भारत। यहां के मुख्य देवता बेताल हैं, जिन्हें शिव के योद्धा रूप भैरव रूप में पूजा जाता है; आमतौर पर श्री बेताल की मूर्ति मंदिर में खड़ी होती है, लेकिन त्योहारों के दौरान उनकी मूर्ति घोड़े पर सवार होकर गाँव में प्रदर्शित की जाती है। वह अमोना के ग्राम देवता हैं।



7. यक्ष

7. यक्ष (संस्कृत: यक्ष

यक्ष (संस्कृत: यक्ष, यक्ष, पाली: यक्खा) प्रकृति आत्माओं का एक व्यापक वर्ग है, जो आमतौर पर परोपकारी होते हैं, लेकिन कभी-कभी शरारती या मनमौजी होते हैं, जो पानी, उर्वरता, पेड़, जंगल, खजाने और जंगल से जुड़े होते हैं। वे हिंदू में दिखाई देते हैं, जैन और बौद्ध ग्रंथों के साथ-साथ दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के प्राचीन और युग मध्ययुगीन मंदिरों को संरक्षक देवताओं के रूप में वर्णित किया गया है। शब्द का स्त्रीलिंग रूप यक्षी या यक्षिणी (संस्कृत: यक्षिणी, यक्षीनी; पाली: यक्खिनी) है।



7बी.यक्षिणी

7B. Yakshini (or Yakshini; Pāli: Yakkhinī or Yakkhi) हिंदू, बौद्ध और जैन पौराणिक कथाओं में प्राणियों का एक वर्ग है, जो देवों (देवताओं), असुरों (राक्षसों) और गंधर्वों या अप्सराओं से अलग है। यक्षिणी और यक्ष भारत में सदियों पुराने पवित्र उपवनों से जुड़े कई असाधारण प्राणियों में से हैं।

अच्छे आचरण वाली और सौम्य यक्षिणियों की भी पूजा की जाती है। इन्हें कुबेर के द्वारपाल के रूप में दर्शाया गया है। लोककथाओं में कुछ कुख्यात यक्षिणियों का भी उल्लेख मिलता है जो मनुष्यों को श्राप दे सकती हैं।



<u>**8.**असुर</u>

8.असुर : का अर्थ है असुर, जहां कोई सूर्य/प्रकाश या अंधकार या अंधकार का राजा नहीं है। दैत्य, राक्षस, दानव, राक्षस ये सभी जातियाँ हैं जो सम्मिलित रूप से असुर कहलाती हैं।

कि ब्रह्माण्ड में सदैव दो शक्तियाँ घूमती रहती हैं, एक असूर्या, दूसरी सूर्य, एक ब्रह्मा, दूसरी गैर-ब्राह्मण! हिंदू धर्मग्रंथों में असुर वे लोग हैं जो 'सुर' (देवताओं) से लड़ते हैं। धर्मग्रंथों में उन्हें शक्तिशाली, अलौकिक, अर्ध-देवताओं के रूप में दर्शाया गया है। असुर का अर्थ है जो सुर (ईश्वर) नहीं हैं। प्राचीन ग्रंथों और पुराणों में.

असुर तीन प्रकार के बताये गये हैं, दैत्य, दानव और राक्षस. इनके अलावा भूत-प्रेत आदि बुरी आत्माओं को भी असुर की श्रेणी में रखा गया है। जिस प्रकार असुर तीन प्रकार के बताए गए हैं, उसी प्रकार असुरों की भी तीन माताएं होती हैं। दैत्यों की माता दिति, दैवों की माता दनु और दैवों की माता सुरसा थीं। यह शब्द भाषाई रूप से इंडो-ईरानी लोगों और पूर्व-पारसी धर्म युग के "अहुर" शब्द से संबंधित है।

<u>**9. Daitya :**</u> विष्णु पुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार राक्षस महर्षि कश्यप और दिति के पुत्र थे। इन्हें असुर भी कहा जाता है। हिरण्यकशिपु

और हिरण्याक्ष प्रसिद्ध राक्षस थे। राक्षस राक्षसी प्रवृत्ति के थे। बाद में, उन्होंने देवताओं या सुरों से भी युद्ध किया। देवता राक्षसों के सौतेले भाई थे और महर्षि कश्यप की दूसरी पत्नी अदिति के पुत्र थे।



10.कुवलयवस्व राक्षसों का वध।

<u>10. Danavas :</u> राक्षसों की एक पौराणिक जाति है, जो हिंदू ग्रंथों में वर्णित देवताओं और दैत्यों के सौतेले भाई हैं। दानव असुरों के एक बड़े समूह का हिस्सा हैं, और आमतौर पर उन्हें हिंदू देवताओं के विपरीत चित्रित किया जाता है।



11. <u>गंधर्व</u> (दाएं) एक अप्सरा के साथ, 10वीं शताब्दी, चाम, वियतनाम।

11.गंधर्व स्वर्गीय देवताओं की एक जाति हैं। वे भारतीय संगीतकारों के रूप में जाने जाते हैं, गंधर्वराज पुष्पदंत इंद्र के दरबार में एक गायक थे।

गंधर्व स्वर्ग में रहने वाले देवताओं की एक प्रजाति है। इन्हें भारतीय संगीतकारों के रूप में जाना जाता है, गंधर्वराज पुष्पदंत इंद्र के दरबार के गायक थे। गंधर्व मुख्य रूप से हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म से संबंधित है। जैन धर्म में गंधर्व शब्द का प्रयोग किसके संबंध में किया जाता था? Tirthankara कुंथनाथ.



12.अप्सराएँ



12. अप्सरा

12. अप्सरा : हिंदू पौराणिक कथाओं में अप्सराएं देवलोक की नर्तकियां हैं। इनमें उर्वशी, रंभा, मेनका आदि प्रमुख हैं। यूनानी ग्रंथों में अप्सराओं को सामान्यतः 'अप्सरा' कहा गया है। उन्हें युवा, सुंदर, अविवाहित, कमर तक

कपड़े से ढकी हुई और हाथों में पानी से भरा बर्तन पकड़े हुए महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है।

भारत में अप्सरा और गंधर्व का साथ बहुत घनिष्ठ है। इनकी व्युत्पत्ति के अनुसार अप्सरा (अप्सु सार्ति गच्छतीति अप्सरा) जल में रहने वाली मानी जाती है। अथर्ववेद और यजुर्वेद के अनुसार ये जल में रहते हैं इसलिए कुछ स्थानों पर इन्हें मनुष्यों को छोड़कर नदियों और जलाशयों पर जाने के लिए कहा जाता है।

यह उनके बुरे प्रभाव का संकेत है. शतपथ ब्राह्मण (11/5/1/4) में उन्हें तालाबों में तैरते पक्षियों के रूप में दर्शाया गया है और पिछले साहित्य में उन्हें निश्चित रूप से जंगली जलाशयों, नदियों और यहां तक कि समुद्र के अंदर वरुण के महलों में भी रहने वाला माना जाता है। जल के अलावा इनका संबंध वृक्षों से भी है।

अथर्ववेद (4.37.4) के अनुसार वे अश्वत्थ और न्यग्रोध वृक्षों पर रहते हैं जहाँ वे झूले झूलते हैं और उनके मधुर वाद्ययंत्रों (करकरी) की मधुर ध्वनि सुनाई देती है। वे नृत्य, गायन और खेल खेलकर अपना मनोरंजन करते हैं। ऋग्वेद में उर्वशी को एक प्रसिद्ध अप्सरा माना गया है।



13. पोल्टरजिस्ट

13. कुम्हारवादी : जर्मन लोककथाओं और भूत विद्या में, एक पोल्टरजिस्ट (/ˈpoʊltərˌɡaɪst/ या /ˈpɒltərˌɡaɪst/; जर्मन: [ˈpɔltɐɡaɪ̯st] ⓘ; 'रंबलिंग घोस्ट' या 'शोर आत्मा') एक प्रकार का भूत या आत्मा है जो शारीरिक गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार है, जैसे जैसे तेज़ आवाज़ें और वस्तुओं का हिलना या नष्ट होना।

पॉलीटर्जिस्टों के अधिकांश दावे या काल्पनिक विवरण उन्हें लोगों को काटने, काटने, मारने और गिराने में सक्षम दिखाते हैं। उन्हें फर्नीचर और कटलरी जैसी वस्तुओं को हिलाने या ऊपर उठाने या दरवाजे खटखटाने जैसी आवाजें करने में सक्षम के रूप में भी चित्रित किया गया है।

दुर्गंध पोल्टरजिस्ट घटनाओं के साथ-साथ स्वतःस्फूर्त आग और टिमटिमाती रोशनी जैसी विभिन्न विद्युत समस्याओं से भी जुड़ी होती है।

मानसिक शोधकर्ता फ्रैंक पॉडमोर ने पॉलीटर्जिस्ट मामलों के लिए 'शरारती छोटी लड़की' सिद्धांत का प्रस्ताव रखा (जिनमें से कई किशोर, आमतौर पर एक लड़की पर केंद्रित प्रतीत होते हैं)। उन्होंने पाया कि गड़बड़ी का केंद्र अक्सर एक बच्चा था जो लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्हें बेवकूफ बनाने या डराने के लिए इधर-उधर वस्तुएं फेंक रहा था। संशयवादी अन्वेषक जो निकेल का कहना है कि दावा किया गया है कि पोल्टरजिस्ट घटनाएं आम तौर पर "एक ऐसे व्यक्ति से उत्पन्न होती हैं जो शरारत पैदा करने के लिए प्रेरित होता है"। निकेल के अनुसार.



14.चुड़ैल

14.CHUDAIL : डायन भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों में लोककथाओं में एक प्रकार का राक्षस या राक्षसी है। ऐसा कहा जाता है कि इनका निर्माण उन महिलाओं से हुआ है जो प्रसव के दौरान मर जाती हैं। उनका स्वरूप वीभत्स और भयावह बताया गया है।[1] लेकिन वे एक खूबसूरत महिला का रूप भी ले सकते हैं। इन्हें इनके उल्टे पैरों की वजह से ही पहचाना जा सकता है। इस मामले में इसकी डायन से कई समानताएं हैं। हाल ही में जादू-टोना का आरोप लगाकर महिलाओं की हत्या करने के मामले सामने आए हैं.

<u>15. Daayan :</u> भारतीय संदर्भ में, विशेष रूप से आदिवासी लोककथाओं में, डायन वह महिला होती है जो बीमारी, मृत्यु, अकाल या अन्य अनैतिक कार्यों के लिए काले जादू का उपयोग करती है। यह एक प्रकार का अंधविश्वास है. इस प्रकार यह डायन के समान है। भारत में, जहां आदिवासियों का प्रचलन अधिक है, ओझाओं द्वारा महिलाओं को डायन घोषित कर दिया जाता है और मार भी दिया जाता है। राजस्थान, झारखंड और छत्तीसगढ़ में ऐसे कई मामले सामने आए हैं और इसके खिलाफ कानून भी बनाए गए हैं। ऐसे आरोप ज्यादातर बूढ़ी विधवा महिलाओं पर

लगाए जाते हैं, जिनका मकसद अक्सर जमीन, पैसा या अन्य प्रकार की संपत्ति पर कब्जा करना होता है।

<u>टिप्पणी :</u> अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि - ब्रहमाण्ड में ये सभी अशरीरी, मरणोपरांत संबंधी आत्माएँ; वे अनंत काल से वहां हैं। लेकिन जैसा कि ऊपर बताई गई तस्वीरें दी गई हैं, अब फिलहाल इनका स्वरूप वैसा नहीं है।

उदाहरण के लिए, क्या हमारी पोशाक वही है जो प्राचीन काल में 500 वर्ष पहले थी? जब हम धोती-कुर्ता, पगड़ी आदि पहनते थे, घोड़े, बग्गी, ऊँट पर यात्रा करते थे। लेकिन आज हम घिसाव पैंट-शर्ट. लेकिन आज हम बाइक और कार आदि से सफर करते हैं, उसी तरह आज वर्तमान समय में इन उपरोक्त आत्माओं का चेहरा, पहनावा भी बदल गया है, जैसे हमारा पहनावा बदल गया है।

देखें- कैसी होती थी पुराने जमाने के राजाओं की पोशाक? जब वही लोग आज मंत्री, मुख्यमंत्री बन गये हैं तो आज उनकी पोशाक क्या है? इसे आप आसानी से समझ सकते हैं. यथार्थ में !

पाठकों को यह महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए।

आत्माएं

(भूत - प्रेत विज्ञान और आत्मा विज्ञान का एक अध्ययन**)**

लेखक

डॉ. जे. एम. पीबल्स। एम.डी., एम.ए.

(एक अमेरिकी चिकित्सक)

23 मार्च**, 1822 - 15** फरवरी**, 1922**।

विनम्रतापूर्वक समर्पित: वी. सी. सिंह

(एम.ए., समाजशास्त्र और एम.ए., ए.आई.एच.सी.ए. - ओ.यू.)

प्रस्तावना

डॉ. (दिवंगत) श्री पीबल्स जी को भावभीनी श्रद्धांजलि। उनकी स्मृति में, आज मैं उनकी हिंदी और साथ ही अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तक, एक नए शीर्षक - "द स्पिरिट्स" / “आत्माएं “ - के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ; मैं इसे विनम्रतापूर्वक स्वर्गीय श्री पीब्लेस जी की दिव्य आत्मा को समर्पित करता हूं। सभी सम्मानित पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप सभी लाभान्वित हों आध्यात्म की इस पश्चिमी आध्यात्मिक महान पुस्तक को पढ़कर।

पाठकों! यदि एक बार पढ़ने पर इस पुस्तक का सार समझ में न आये तो दो-तीन बार पढ़ें, बार-बार पढ़ते रहें; जब तक यह किताब पूरी तरह से समझ में नहीं आ जाती. क्योंकि पुस्तक सत्य की नींव पर आधारित है और अलौकिक ज्ञान के इस क्षेत्र में हमारा ज्ञान न्यूनतम, अल्प, न के बराबर है। चूँकि यह ग्रन्थ पश्चिमी देशों का है इसलिए यह "ब्रह्म-विद्या" का स्वरूप है।

यदि कोई मुझसे पूछे **-** क्या भूत**,** पिशाच**,** राक्षस और दानव **-** ब्रह्मराक्षस जैसी अशरीरी आत्माएँ वास्तव में अस्तित्व में हैं या ये सब केवल कल्पना मात्र हैं**?** क्या यह केवल है**?**

<u>उत्तर **:**</u> यह कोई मानसिक कल्पना नहीं है. यह सिर्फ मेरा विश्वास नहीं है बल्कि यह एक सिद्ध वास्तविकता और सार्वभौमिक सत्य है कि -
हाँ, ऐसी अशरीरी, अलौकिक, पारलौकिक आत्माएँ अवश्य अस्तित्व में हैं; वे अतीत में अस्तित्व में थे, आज और अभी भी मौजूद हैं, और जब तक यह दुनिया मौजूद है तब तक भविष्य में भी मौजूद रहेंगे। कभी हम भी रूह थे; हम अभी भी आत्मा हैं, लेकिन वर्तमान में भी साकार शरीर के साथ हैं और भविष्य में भी आत्मा ही रहेंगे।

ये सूक्ष्म योनियों की आत्माएं होती हैं। जिसे हम सभी अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद सूक्ष्म संसार में देख सकेंगे। क्योंकि ये सूक्ष्म आत्माएं हैं और इन्हें देखने के लिए हमें सूक्ष्म आंखों की आवश्यकता होती है, जो प्रकृति हमें, हमारी मृत्यु के बाद, जब हम भी आत्मा बन जाते हैं, प्रदान करती है।

आप सभी हमारे सनातन ग्रंथों से परिचित हैं। आप रामायण, महाभारत, 18 प्रमुख पुराणों, उपनिषदों , योग वसिष्ठ , भगवद गीता और महा

भागवत जैसे महान ग्रंथों पर जरूर विश्वास करते होंगे। यदि आप इन महान ग्रंथों का ध्यान से अध्ययन करेंगे तो जगह - जगह पर इनमें ऐसी अशरीरी आत्माओं, भूतों, पिशाचों और राक्षसों आदि का वर्णन विस्तार से किया गया है, जो अक्षरश: सत्य है।

देखें - भगवान शिव की बारात में उनके साथ कौन-कौन बाराती थे? भूत, पिशाच, राक्षस, बेताल यक्ष और किन्नर गंधर्व प्रजाति की आत्माएं थीं।

देखिये - महाभारत के प्रेत-कल्प में इन भूत लोक के प्राणियों का बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है। रामायण में भगवान श्री राम ने पंचवटी (नासिक) में 14000 राक्षसों को वश में किया था।

देखें- महान ग्रंथ रामचरितमानस के रचयिता श्री गोस्वामी तुलसीदासजी को एक भूत ने रामायण कथा में हनुमान जी की उपस्थिति की खबर दी थी।

ऐसे अनगिनत, अनंत उदाहरण हैं जो विभिन्न ग्रंथों और शास्त्रों में पाए जाते हैं।

सब से अधिक ; आज और अभी भी, यदि आप ध्यान योग के शिखर पर पहुंच जाएं और अपनी "तीसरी आंख"/ज्ञान नेत्र या ज्ञान चक्र को खत्म कर दें, सक्रिय कर लें, तो आप स्वयं इसके साक्षी बन जाएंगे और फिर आप स्वयं ही कहने लगेंगे कि - हां ! वे निश्चित रूप से भूत हैं, क्योंकि मैंने स्वयं उन्हें अपनी दिव्य दृष्टि आज्ञा चक्र से देखा है। अस्तु !

विशेष टिप्पणियाँ / महत्वपूर्ण लेख : यदि अनुवाद के दौरान कुछ स्थानों पर स्त्रीलिंग (SHE) और पुल्लिंग (HE) का शाब्दिक अर्थ नहीं बदला गया है, तो कृपया क्षमा करें, तकनीकी गड़बड़ी के कारण ऐसा हुआ है। हमें इसका अफसोस है. इसके अलावा यदि कोई त्रुटि हो तो कृपया हमें क्षमा करें।

- संपादक

दिनांक: 20 07. 2024. (शनिवार).
स्थान: हैदराबाद, तेलंगाना, भारत।

डॉ. जेम्स मार्टिन पीबल्स की जीवनी

डॉ. जेम्स मार्टिन पीबल्स, एम.डी., एम.ए.

.

जन्म: 23 मार्च, 1822
व्हिटिंगहैम, वर्मोंट
मृत: 15 फरवरी, 1922 (उम्र **99**)
लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया

व्यवसाय चिकित्सक, लेखक, अध्यात्मवादी उपदेशक, यात्रा वृत्तांत वक्ता जेम्स मार्टिन पीबल्स (23 मार्च, 1822 - 15 फरवरी, 1922) एक अमेरिकी चिकित्सक, विपुल लेखक और कई पेशेवर, चिकित्सा और मानसिक/आध्यात्मिक धार्मिक संघों के आयोजक थे। .

जेम्स मार्टिन पीबल्स का जन्म 23 मार्च, 1822 को व्हिटिंगम, वर्मोंट के पुराने घर में हुआ था। वह सात बच्चों वाले परिवार में सबसे बड़े जीवित बच्चे थे - पाँच बेटे और दो बेटियाँ। ये बच्चे चरित्र में इतने विविध थे कि कहा जा सकता है कि विभिन्न प्रकार के लोग एक ही छत के नीचे एकत्रित थे। हालाँकि, जेम्स इस परिवार समूह में एकमात्र बच्चा था जिसके पास सार्वजनिक और साहित्यिक करियर की प्रतिभा थी।

पुराने घर से घाटी के नीचे, लगभग एक मील दूर, "तालाब के किनारे" एक छोटा सा लाल स्कूल था। मेपल और अन्य बर्च के पेड़ बाहरी मैदानों पर हावी थे। छोटी घाटी के दूसरी ओर एक साफ सुथरा नाला था, जो मछलियों, लैम्प्रे-ईल और ताजे पानी के तालाबों से भरा हुआ था। बचपन की आँखों की सुंदरता में पौधे ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे, आसपास की पहाड़ियाँ पहाड़ों जितनी ऊँची थीं और छोटी-सी खाड़ी एक सम्मानजनक नदी की तरह लगती थी।

उन पौधों पर नाम खुदे हुए थे, बाकियों में जेम्स के भी। वह जलधारा जहाँ लड़के और लड़कियाँ मछलियाँ पकड़ते थे, और बाँध और पानी के पहिये बनाते थे, अब भी खेतों में चाँदी के धागे की तरह बहती है, लेकिन पहले की तुलना में यह कितनी छोटी लगती है! परिदृश्य अभी भी बना हुआ है. वही चंद्रमा छोटी धारा के मुस्कुराते चेहरे पर अपनी चांदी जैसी चमक बिखेरता है, और खामोश तारे इस स्थानीय दृश्य को "पुराने दिनों" जैसा बनाते हैं।

लेकिन "पुराने ज़माने" के लड़के-लड़कियाँ अब नहीं रहे। उन सभी को इस प्रारंभिक विद्यालय से प्रत्यारोपित किया गया है, कुछ को सुदूर पश्चिम में शांतिपूर्ण मेहनती घरों में, कुछ को दुनिया के महान आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी के लिए, और फिर भी अन्य दृश्य क्षेत्र से स्वर्ग में घर में स्थानांतरित हो गए हैं। है।

जब जेम्स अपने चाचा डॉ. कॉर्बिट पीबल्स के साथ स्कूल गया, तब उसकी उम्र छह वर्ष से अधिक नहीं थी। गुरु सोलोमन के दर्शन में दृढ़ विश्वास रखते थे और पूरी निष्ठा के साथ उनके सिद्धांतों का पालन करते थे।

श्री पीबल्स का जन्म व्हिटिंगहैम, वर्मोंट में हुआ था। पीबल्स 1868 के भारतीय शांति आयोग के सदस्य थे, ट्रेबिज़ोंड, तुर्की में संयुक्त राज्य अमेरिका के वाणिज्य दूत और 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में अमेरिकी मध्यस्थता लीग के प्रतिनिधि थे। एक पूर्व यूनिवर्सलिस्ट मंत्री, वह अमेरिकी गृहयुद्ध के बाद एपिस्कोपेलियन बन गए, और फिर एक अध्यात्मवादी और थियोसोफिस्ट।

उनकी कई किताबें अध्यात्मवादी विषयों पर हैं, हालांकि उन्होंने हाउ टू लिव ए सेंचुरी एंड ग्रो ओल्ड ग्रेसफुली नाम से काफी लोकप्रिय किताब भी लिखी है।

उन्होंने 1882 में शिकागो मेडिकल यूनिवर्सिटी से डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री प्राप्त की। वह सिनसिनाटी के इक्लेक्टिक मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर थे।

कुछ संगठन जिनमें पीबल्स ने नेतृत्व की भूमिका निभाई, वे हैं नेशनल स्पिरिचुअलिस्ट एसोसिएशन, कैलिफोर्निया कॉलेज ऑफ साइंसेज, पीबल्स कॉलेज ऑफ साइंस एंड फिलॉसफी, कैलिफोर्निया सेंटेनेरियन क्लब और कैलिफोर्निया ह्यूमैनिटेरियन लीग। पीबल्स टीकाकरण और विविसेक्शन के विरोधी थे। उन्होंने 1900 में टीकाकरण एक अभिशाप और

व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए खतरा लिखा था। वह मासिक पत्रिका टेम्पल ऑफ हेल्थ एंड साइकिक रिव्यू के संपादक थे।

पीबल्स सिल्वेस्टर ग्राहम से प्रभावित थे और उन्होंने शराब, कॉफी, मांस, चाय और तंबाकू के सेवन का विरोध किया था। वह शाकाहार के समर्थक थे और उन्होंने द वेजीटेरियन मैगजीन में लेख लिखे थे। उनका आहार ओवो-लैक्टो शाकाहारी था, जिसमें मक्खन, पनीर, अंडे, दूध, फल, मेवे और सब्जियाँ शामिल थीं।

पीबल्स की शादी मैरी एम. कॉन्की से हुई थी और उनके तीन बच्चे थे, जिनमें से कोई भी शैशवावस्था से अधिक जीवित नहीं था।

जेम्स मार्टिन पीबल्स की अन्य पुस्तकें;

अध्यात्म क्या है, कौन है?
दुनिया भर में तीन यात्राएँ,... ...
अमरता का प्रमाण: इसकी स्वाभाविकता,...
डायन का जहर और मारक औषधि:... ...
दुनिया भर में पाँच यात्राएँ:... ...
आत्मा के पथ का पता लगाया गया: क्या...
युगों के द्रष्टा: आध्यात्मिकता को अपनाना...

डॉ. जेम्स मार्टिन पीबल्स की उनकी अपेक्षित तिथि शतक से केवल 36 दिन पहले, 15 फरवरी, 1922 को कैलिफोर्निया में हृदय वाल्व विफलता से मृत्यु हो गई।

डॉ. जे.एम. पीबल्स के विशेष विचार

यदि केल्पर सितारों का अध्ययन करके "भगवान के विचारों को पढ़ सकते हैं", तो ईमानदारी से, ईमानदारी से मनुष्यों की सामान्य और असामान्य

स्थितियों का अध्ययन करके, आत्माओं और अदृश्य बुद्धिमत्ता की अभिव्यक्तियों के विभिन्न आदेशों का अध्ययन करके, संवेदनशील द्रष्टा और विद्वान पढ़ सकते हैं कोई उनके विचारों को माप सकता है, उनके लक्ष्यों को समझ सकता है, उनके उद्देश्यों को समझ सकता है और उनकी नैतिक स्थिति का आकलन कर सकता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, देवदूत हो या राक्षसी।

इस खंड को तैयार करने में, मैंने केवल कलात्मक अभिव्यक्तियों की तुलना में विश्वसनीय गवाहों के तथ्यों पर अधिक ध्यान दिया है। मेरा एकमात्र उद्देश्य रहस्यमय आवरण को हटाना और रहस्यवाद को उसकी गहराई तक ले जाना है; यह यह पता लगाने के बारे में है कि हम किससे घिरे हुए हैं। क्या वे हमारे प्रिय रिश्तेदार हैं, या वे देवदूत या शैतान हैं?

पाठक पाएंगे कि ये पृष्ठ न केवल खोजकर्ताओं के रिकॉर्ड और मानसिक छात्रों और विशेषज्ञों की अच्छी तरह से जांची गई गवाही से भरे हुए हैं, बल्कि उनमें मुख्य रूप से वही शामिल है जो मैंने व्यक्तिगत रूप से चीन, भारत, सीलोन, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका में देखा है। प्रशांत महासागर के द्वीपों, एशियाई तुर्की, मैक्सिको में भौतिकवादी भूतवादियों के सत्र और असभ्य, सांप्रदायिक पुनरुत्थानवादियों के गंदे तंबू देखे गए हैं। देखना ही जानना है। चेतना एक साक्षी है जिसे चुप नहीं कराया जा सकता।

प्रत्येक समझदार व्यक्ति स्वयं को शक्ति और विचार का केंद्र मानता है और विचार का तात्पर्य है कि चेतना का अस्तित्व है। आत्म-चेतना और आत्म-जागृति निश्चित रूप से व्यक्तित्व का मुकुट है। इसके प्रति समर्पण करना, इसे सम्मोहित करना, अनजाने में इसे अन्य व्यक्तित्वों में विलीन करना, चाहे दिखाई दे या नहीं, आत्मघाती नहीं तो खतरनाक है। नैतिक विकास और मानवता की गहरी, व्यापक गरिमा के लिए आत्म-नियंत्रण दोगुना आवश्यक है।

क्या धुंध से ढके रहस्यवाद की जांच करना सुरक्षित है! क्या अदृश्य के अज्ञात क्षेत्रों में उद्यम करना बुद्धिमानी है! यदि लोग अस्तित्व के इन अदृश्य स्तरों में रहते हैं, तो वे किसके द्वारा जीते हैं? क्या वे संत, साधु या राक्षस हैं! क्या वे मनुष्यों को प्रभावित कर सकते हैं! क्या उनमें सम्मोहित करने की शक्ति है! क्या वे कभी-कभी जुनूनी हो जाते हैं और उनके पास संवेदनशील मध्यस्थ होते हैं! इस विशाल क्षेत्र की खोज में, इस अपेक्षाकृत नए बंदरगाह में प्रवेश करने में, किस पायलट पर भरोसा किया जा सकता है!

क्या कभी एक व्यक्तित्व को दूसरे द्वारा स्थानांतरित या हड़प लिया जाना चाहिए! क्या जागरूक, तर्कसंगत मनुष्य को कभी किसी अदृश्य बुद्धि द्वारा सम्मोहित और नियंत्रित किया जाना चाहिए, चाहे वह अवतारी हो या अवतरित? क्या ऐसा परिणाम सबसे ख़राब प्रकार की गुलामी नहीं होगी! क्या शारीरिक या मानसिक गुलामी कभी उचित है? क्या कामुक अध्यात्मवाद का अभ्यास, जो प्रेतात्मवाद का ही दूसरा नाम है, सदैव सुरक्षित है! क्या यह संवेदनशील लोगों को बेहतर बनाता है! कितने संतुलित, संवेदनशील, ईमानदार संत और विद्वान बुरे प्रभावों से सर्वथा मुक्त होते हैं!

भौतिक माध्यम के परिणाम क्या हैं! पर्दा क्यों नहीं उठाया जाता? क्या अदृश्य संस्थाओं के साथ संपर्क से उनके समर्पित संरक्षकों का ज्ञानोदय, उत्थान और नैतिक सुधार होता है! क्या यह उचित प्रश्न नहीं है! हिंदुओं और चीनियों द्वारा, जो प्राचीन काल से ही भूत-प्रेत और झाड़-फूंक में विश्वास करते हैं और उनका अभ्यास करते हैं, सत्य - सनातन आत्मा के ज्ञान, गुणों और अच्छाई, पवित्रता और महानता से जुड़ी सभी चीजों को धीरे-धीरे कैसे आत्मसात किया जा रहा है!

प्रेतात्मवाद का क्या अर्थ है? क्या यह राक्षसी है! क्या यह बस विनाशकारी और अधार्मिक है! क्या इसका मुख्य आकर्षण प्रतीकात्मकता है! क्या यह आसुरी आधिपत्य से अधिक कुछ है - जुनून, बाहरी, आंतरिक और नारकीय! यदि इसमें मुक्तिदायक गुण हैं, तो वे क्या हैं! क्या अध्यात्मवाद और अध्यात्मवाद पर्यायवाची हैं? पिछली आधी सदी से अमेरिकी भौतिकवादियों और धर्मवादियों दोनों के विचारशील दिमागों को झकझोर देने वाले इस आंदोलन का अंतिम परिणाम क्या होगा!

यह अनुभाग इन बार-बार दोहराए जाने वाले प्रश्नों का यथासंभव सर्वोत्तम उत्तर देने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

जे.एम. पीबल्स, एम.डी.
बैटल क्रीक, मिशिगन, **1** जनवरी **1904**।

परिचय

डॉ. जेम्स मार्टिन पीबल्स, एम.डी., एम.ए., अध्यात्मवाद, आत्मा विज्ञान, दानववाद, अलौकिक और पारलौकिक विज्ञान के बारे में कुछ महत्वपूर्ण विचार यहां नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं;

I. आत्माएं, आवश्यक रूप से देवता या शैतान नहीं, केवल मनुष्य हैं जो अपने नश्वर शरीर से मुक्त हो गए हैं।

द्वितीय. मृत्यु नामक घटना मनुष्य को न तो आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठाती है और न ही गिराती है।

तृतीय. आत्माएँ, चेतन प्राणी, अपनी पहचान बनाए रखने के लिए चेतना, स्मृति, प्रकृति और प्रवृत्तियाँ अपने साथ लाते हैं।

चतुर्थ. हमारे चारों ओर आध्यात्मिक दुनिया में आत्माओं के उतने ही प्रकार, वर्ग और जातियाँ हैं जितनी पृथ्वी पर नश्वर प्राणियों के प्रकार और स्थितियाँ हैं।

पांचवी . इस जीवन में सम्मोहन और आध्यात्मिक क्षेत्र से घनिष्ठ संबंध होने के कारण सम्मोहन, समाधि, निद्रा में चलना आदि घटनाएँ घटित होती रहती हैं। जो स्पष्ट रूप से एकमात्र तार्किक व्याख्या के रूप में जुनून की ओर इशारा करता है।

बहुत से भूत-ग्रस्त लोग अपने अजीब छापों और गैर-जिम्मेदाराना कार्यों के कारणों से पूरी तरह अनजान होते हैं।

छटवीं. जो लोग इस जीवन में दूसरों पर हावी होने के लिए अधिकार, पद और शक्ति की तलाश करते हैं, वे अपने राजसिक गुणों को अदृश्य से परे ले जाते हैं, और स्वाभाविक रूप से, कम से कम कुछ समय के लिए, नियंत्रण करने वाली आत्माएं बन जाते हैं, भले ही उनके पास कोई आविष्ट आत्मा न हो।

सातवीं. नकारात्मक स्वभाव वाले संवेदनशील व्यक्ति आत्माओं के इस वर्ग के दायरे में आते हैं, मानसिक रूप से प्रभावित होते हैं, और बाद में अपनी अजीब, बेचैन, घबराई हुई स्थिति के कारणों को समझे बिना ही वशीभूत हो जाते हैं।

आठवीं. पृथ्वी पर रहने वाली आत्माएँ स्वाभाविक रूप से पृथ्वी के वायुमंडल की सीमाओं के भीतर बंधी होती हैं, मानो गुरुत्वाकर्षण के निश्चित नियम के कारण सीधे पृथ्वी की सतह से बंधी हों।

नौवीं. आध्यात्मिक प्राणियों के विभिन्न नैतिक स्तर अपनी इच्छा से नश्वर लोगों की आभा पर ऐसा प्रभाव डाल सकते हैं और उनके विचारों और सुझावों को इस तरह से उन लोगों के दिमाग में सम्मोहित कर सकते हैं जो अभी भी नश्वरता में लिपटे हुए हैं, न केवल प्रभावित करते हैं, न केवल मानस का समन्वय करते हैं , लेकिन उन्हें जुनूनी बनाते हैं, और इस तरह कुछ हद तक इस सांसारिक, भौतिक तल पर फिर से कामुकतापूर्वक अपना जीवन जीते हैं।

दसवीं. स्वार्थी, अज्ञानी आत्माएं दुर्घटना या प्राकृतिक कारणों से आध्यात्मिक जीवन में चली जाती हैं और जल्द ही अपने आत्मीय साथियों की तलाश करती हैं, जो अंतरिक्ष के संबंध में तार्किक रूप से यहां हैं। वे अपने पुराने ठिकानों, अपने घरों को लौट जाते हैं; इसलिए ऐसे घरों को भुतहा घर कहा जाता है।

वे कुछ मनुष्यों के साथ अपने मानसिक उद्गमों का अनुसरण करते हैं और यदि संभव हो तो उन्हें मिलाते हैं, और पेड़ों पर कवक और काई की तरह उनसे चिपक जाते हैं, और इस प्रकार पिशाचों की तरह उनकी जीवन शक्ति को अवशोषित कर लेते हैं। यह जुनून के सबसे बुरे रूपों में से एक है।

ग्यारहवीं. शिकारी और जैव-हत्यारे, जो जानवरों पर अत्याचार करते हैं, निर्दोष पक्षियों को मारते हैं, पुरस्कार की लड़ाई में भाग लेते हैं, पागल द्वंद्वों में शामिल होते हैं और वध के लाल युद्धक्षेत्रों में द्वेष से भरी लड़ाई में भाग लेते हैं। मरने के लिए, कई लोग जुनूनी ताकतों का निर्माण करते हैं जो मानवता को नष्ट कर देते हैं।

ये बेलगाम व्यक्तित्व अक्सर इंसानों को ऐसे अपराध करने के लिए उकसाते हैं जहां इस तरफ कोई मकसद नजर नहीं आता। श्रीमती मैकनाइट का मामला एक उदाहरण है। कोई उल्लेखनीय दुर्भावना नहीं थी -

उसके पति, उसकी बहन और बच्चों की हत्या का कोई मकसद नहीं था। उसने कहा कि उसे खेद है, लेकिन वह खुद को ऐसा करने से नहीं रोक सकी - यह भूत-प्रेत के कब्जे का स्पष्ट मामला था।

बारहवीं. आज ओझा कहां हैं और जो यीशु मसीह की तरह राक्षसों को बाहर निकाल सकते हैं, और इस तरह पीड़ितों को स्वास्थ्य और सद्भाव प्रदान कर सकते हैं! यह स्पष्ट है कि प्रेतबाधा से पीड़ित व्यक्ति प्रेतात्माओं को बाहर नहीं निकाल सकता।

तेरहवीं. क्या यह सच है या नहीं कि इन आत्मा-नियंत्रित माध्यमों की झलक, पृथ्वी के करीब, पदार्थ और भौतिक चीजों के करीब होने के कारण, भौतिकवादी सिद्धांत, सख्त डार्विनवाद, सहज पीढ़ी और कुछ मानव शरीरों और उनकी शिक्षाओं की मृत्यु की ओर ले जाती है। आत्माओं की अमरता के बारे में!

चौदहवीं. क्या कोई जुनून, भूत-प्रेत से छुटकारा पा सकता है? यदि हां, तो किस प्रकार से - चीनी, हिंदू या ईसाई! इन प्रताड़ित बंदियों को छुड़ाने की शक्ति किसमें है! वे बुद्धिमान, स्वर्ग-प्राप्त लोग कौन हैं जो निम्न, भ्रमित आत्माओं को बेहतर परिस्थितियों और नैतिक विकास के लिए बेहतर सुविधाओं वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित करते हैं!

पंद्रहवीं. क्या कोई इन अज्ञानी, दुर्भावनापूर्ण या बुरी प्रवृत्ति वाली राक्षसी आत्माओं तक पहुंच सकता है, जो अक्सर झूठ बोलते हैं, अहंकारी और दिखावा करते हैं, जो व्यक्तित्व को सुन्न कर देते हैं, जुनूनी हो जाते हैं और यदि संभव हो तो कब्ज़ा कर लेते हैं? ! उनकी आत्मा की सहानुभूति प्रेरणा की अग्नि से जगमगा उठे! उनके भ्रष्ट स्वभाव को बदला जा सकता है, और इस प्रकार अंततः वे पिता के बहु-महल वाले घर के उच्च मसीह-क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए तैयार हो सकते हैं!

इस खंड में इन सभी मनोवैज्ञानिक प्रश्नों, सम्मोहन, ट्रान्स, जादू टोना, एकोन्माद, उद्देश्यहीन अपराध, राक्षसी आत्माओं द्वारा कब्ज़ा - भूत-प्रेत पर चर्चा की गई है।

मुझे क्या हिसाब देना चाहिए? मेरा तात्पर्य जादू-टोना, तंत्र-मंत्र और जादू-टोने के अपराध से है। जादू-टोना, टोना-टोटका और राक्षसों की संभावना, बल्कि वास्तविक अस्तित्व को नकारना, पुराने और नए नियम के विभिन्न अंशों में प्रकट ईश्वर के वचन को एक साथ नकारना है, और

यह अपने आप में एक सत्य है, जिसके प्रति दुनिया गवाही देता है. हर देश ने दिया है. यदि कोई व्यक्ति इसके बाद रहता है, - और वह रहता है, तो वह मूलतः 'स्व' (जीवात्मा) है, और सचेत रूप से स्वयं को जानता है। ईश्वर द्वारा थोपा गया व्यक्तित्व अपने मूल में अविनाशी है, और इसलिए पहचान मृत्यु के बर्फीले स्पर्श को चुनौती देती है।

सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. जॉर्ज ए. "आदतें मनुष्य से चिपकी रहती हैं," फुलर अपने "विजडम ऑफ द एजेस" (पृष्ठ 197, 198) में लिखते हैं, "जब भौतिक शरीर को एक तरफ रख दिया जाता है। ऐसा कोई चमत्कार नहीं है जो पल एक मृत दुष्ट आत्मा को राक्षस से संत में बदल दें।

यदि उसका घर भौतिक इच्छाओं और वासनाओं के क्षेत्र में रहा है, तो मृत्यु उसे उस क्षेत्र से बाहर नहीं निकाल सकती, क्योंकि वह केवल उसी को नष्ट कर सकती है जिसके माध्यम से इन इच्छाओं और वासनाओं की संतुष्टि हुई थी। ऐसी आत्माएँ स्वयं को संवेदनशील विषयों से परजीवी के रूप में जोड़ती हैं, और इन हड़पे हुए शरीरों के माध्यम से अपनी अपवित्र इच्छाओं को संतुष्ट करना चाहती हैं।

चूंकि बुरी आत्माएं जीवित रहते हुए भौतिक शरीरों में निवास करती हैं, इसलिए शरीर की मृत्यु के बाद भी अशरीरी बुरी आत्माएं भौतिक कपड़ों में निवास करती हैं, जो रोजमर्रा की जिंदगी के संतुलन को बिगाड़ देती हैं, स्वास्थ्य को खराब करती हैं और शारीरिक नुकसान पहुंचाती हैं। वे अपने शरीर में बीमारी के बीज बोकर अपने शरीर को कष्ट देते हैं।

दुनिया का अधिकांश पागलपन इन बुरी आत्माओं से निकलने वाले दुखद सुझावों और निराशाजनक विचारों के कारण हुआ है, जो अभी भी भौतिक जीवन के निचले स्तर पर काबिज हैं।

कई बार जीवन के पवित्र अभयारण्य पर न केवल हमला किया जाता है बल्कि ये आत्माएं उसे अपवित्र भी कर देती हैं। घर के मूल मालिक को अस्थायी रूप से पदच्युत कर दिया जाता है और कभी-कभी उसे भगा भी दिया जाता है। और ये बुरी आत्माएं उसके शरीर पर अपना अनैतिक और अवैध अधिकार स्थापित कर लेती हैं। बेशक, ऐसा कुछ समय के लिए ही होता है, लेकिन हर समय के लिए नहीं।

मनुष्य को जिन सबसे शक्तिशाली बुरी आत्माओं और शत्रुओं का सामना करना पड़ता है वे अदृश्य दुनिया से हैं। अपनी अदृश्यता के कारण ये

अधिक खतरनाक होते हैं। उनके हमले हमारी जानकारी के बिना सावधानीपूर्वक आयोजित और योजनाबद्ध होते हैं। जिन शक्तियों और सिद्धांतों के साथ आपको संघर्ष करने के लिए बुलाया गया है, वे भौतिक संवेदनाओं की इस दुनिया की नहीं हैं, बल्कि अदृश्य की महान दुनिया की हैं, जहां से सभी चीजें निकलती हैं।

'न केवल मनुष्य इन आत्माओं द्वारा सीधे नियंत्रित और प्रभावित होते हैं, बल्कि महान सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक दुनिया पर भी उनका आक्रमण होता है। इस प्रकार, वे अक्सर मनुष्यों के मामलों और जीवन पर शक्तिशाली प्रभाव डालने में सक्षम होते हैं।

जहां विश्व के महान धर्मों में आई विकृतियों का आंशिक कारण खोजा जा सकता है। विश्व में प्रचलित सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ भी कुछ हद तक निचले क्षेत्रों के इन निवासियों से प्रभावित होती हैं। "अक्सर वे संवेदनशील व्यक्ति के आस-पास की आभा पर आक्रमण करते हैं और उसका जीवन बर्बाद कर देते हैं। उसके माध्यम से वे फिर से पुराना जीवन जीते हैं, एक बार फिर से उसके आनंद का आनंद लेते हैं और उसके साथ एकजुट हो जाते हैं।

पिशाचवाद की यह प्रजाति आज दुनिया में उससे भी अधिक प्रचलित है जितना लोग विश्वास करना चाहते हैं। मानसिक घटनाओं की दिशा में जांच करने वाले पुरुषों और महिलाओं का एक बड़ा समूह हमेशा वह सब कुछ सुनने के लिए तैयार रहता है जो अच्छा और सुंदर है, जबकि वे उससे नफरत करते हैं जो उन्हें मानव अस्तित्व का काला पक्ष दिखाना चाहता है।

मनुष्य आधे-अधूरे सत्य के दायरे में बहुत दूर तक भटकने का जोखिम नहीं उठा सकता। अच्छी तरह से सशस्त्र होने और जीवन की लड़ाइयों के लिए पूरी तरह से सुसज्जित होने के लिए, उसे पूरी सच्चाई पता होनी चाहिए।

इसलिए, उसे अपने सामने मौजूद खतरों का एहसास कराया जाना चाहिए। ज्ञान हमारी शक्ति और ताकत के सबसे बड़े स्रोतों में से एक है। अज्ञान हमें दूसरों से अलग कर देता है। पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान व्यक्ति के भी गुलाम। अज्ञानता मनुष्य की आँखों के सामने काले पर्दे खींच देती है, जबकि राक्षसी आत्माएँ अनजाने में उस पर रेंगती हैं।

ज्ञान सभी पर्दे हटा देता है, सभी कोहरे और बादलों को दूर कर देता है, और दुश्मन को उसके इरादों से उजागर कर देता है। जब हम अपने दुश्मन और

उसकी ताकत के स्रोत को जानते हैं, तो लड़ाई आधी जीत ली जाती है। जीत तब होती है जब हमें अपनी ताकत और शक्ति का एहसास होता है।"

समय के पर्यवेक्षक इस बात पर संदेह नहीं कर सकते कि हम एक महान चक्र के अंतिम वर्षों में हैं, - असभ्य, स्वार्थी, नास्तिक अध्यात्मवाद की राक्षसी सेनाओं और अध्यात्मवाद के मसीह देवदूत के बीच लंबे समय से भविष्यवाणी किए गए उस महान युद्ध के दिन में। यह किया जाता है, - प्रतियोगिताओं, युद्धों और क्लेशों के उस युग में, जब सत्य और त्रुटि, चाहे मनुष्यों की आत्मा में हों या मनुष्यों में, अंतिम संघर्ष के लिए आमने-सामने आना ही चाहिए।

मैं जो धर्म बोलता हूं, मैं अपना और जगत के सब लोगों का उद्धार करने में सामर्थी हूं। ...मैं ने उस पर अपना प्राण उंडेल दिया है; सत्य न्याय को जीत दिलाएगा।" पुराने दर्शन और मूर्खताएं, सच्चाई और त्रुटियां एक साथ मिल जाती हैं, पुराने और आधुनिक जादू-टोना, जादू-टोना, सफेद और काला जादू, अच्छे, बुरे और उदासीन सिद्धांत, आधे-भूले हुए विद्या के भंडार में छिपे हुए हैं। बाहर आओ अपने छिपे हुए स्थानों को, आज की प्रेरणाओं, दिव्य मंत्रालयों और प्रकृति की दिव्य पुस्तक में प्रकट ईश्वर की सच्चाई के साथ सामने आने दें।

सूर्य तो सूर्य ही है, चाहे कोई माने या न माने, सूर्य के अस्तित्व की सच्चाई को झूठ नहीं करार देता। तात्पर्य यह है कि यदि कुछ असभ्य लोग, नास्तिक प्रकृति के लोग, पागल अभिमानी अज्ञानी लोग इन अलौकिक ज्ञान और गूढ़ शास्त्रों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं, तो यह उनकी अपनी बुद्धि की गहराई को दर्शाता है, जो झूठी भावनाओं पर आधारित है और भरी हुई है मूर्खता का. सांकेतिक है.

उन्हें स्वीकार करने से लेखक को कोई लाभ नहीं हो सकता और उन्हें अस्वीकार करने से कोई हानि नहीं हो सकती। यह उनकी अपनी सोच और बुद्धि के निम्न स्तर का प्रश्न है।

रहस्यमय संसार में केवल वे ही प्रवेश कर पाते हैं जो सच्चे अर्थों में धैर्यवान, धैर्यवान और साहसी, सत्य प्रेमी पुरुष हैं। साहसी व्यक्ति, सच्चा व्यक्ति; वे शेर के पिंजरे में प्रवेश करते हैं और पता लगाते हैं कि सोता हुआ शेर असली है या कृत्रिम, या शेर की खाल में भूसा भरा है और नकली है।

यह साहसी पुरुषों का काम है, कायरों का काम नहीं। क्योंकि भूत, पिशाच, राक्षस, यक्ष, किन्नर, गंधर्व और विद्याधर आदि अशरीरी आत्माओं से संपर्क स्थापित करना बहुत ही खतरनाक और जोखिम भरा काम है। सोते हुए शेर को जगाने की तरह यह जानलेवा भी साबित हो सकता है। क्योंकि दोनों की योनि अलग-अलग होती है।

हम; मनुष्य मध्यम जाति के प्राणी हैं और वे अशरीरी आत्माएँ, भूत, पिशाच आदि निम्न जाति के हैं; आम तौर पर दुष्ट और राक्षसी आत्माएं होती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इनमें कुछ सकारात्मक, अच्छे और सौम्य स्वभाव वाली आत्माएं भी पाई जाती हैं।

इस प्रकार हमारा शाश्वत आध्यात्मिक ज्ञान सत्य की नींव पर आधारित है। हमें उन ऐतिहासिक, शाश्वत ब्रह्मविद्या की आवश्यकता है; व्यक्ति को आधुनिक भूतवाद, जादू-टोना, सफेद और काला जादू, अच्छे, बुरे और उदासीन सिद्धांतों, आधे-भूले ज्ञान और बुरी, पुण्य आत्माओं की दुनिया में प्रवेश करना चाहिए और शाश्वत सत्य के वातावरण में प्रवेश करना चाहिए।

क्योंकि इस प्राथमिक आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने के बाद ही हम अपने सामने आने वाले भविष्य में दिव्य ज्ञान/ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने और ईश्वरत्व प्राप्त करने के उच्च लक्ष्य की ओर आत्मविश्वास और पूर्ण धैर्य और साहस के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

क्योंकि अदृश्य जगत की खोज में आत्मविश्वास ही सबसे बड़ा, सबसे शक्तिशाली मानसिक हथियार, ज्ञान का दीपक है। और ब्रह्माण्ड के सभी महान ग्रन्थ, धर्मग्रन्थ आदि अकाट्य प्रमाण हैं, इन्हें कोई झुठला नहीं सकता। जो इन्कार करता है वह कपटी, धूर्त और मूर्ख है। हमें उनका स्वागत दूर से ही करना चाहिए.

एक कहावत है;
एक सज्जन एक सज्जन से मिलते हैं, एक सुखद बातचीत शुरू होती है!
गधा गधे से मिलता है, लातें और लातें।

"आत्मा" जो कहा जाता है; किसे कहा गया है?

आत्मा एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है आंतरिक स्व या आत्मा। हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से हिंदू धर्म के वेदांत विद्यालय में, आत्मा पहला सिद्धांत है, किसी व्यक्ति की सच्ची आत्मा जो घटना, व्यक्ति के सार से पहचान से परे है। उनका अदृश्य व्यक्तित्व।

सारी दुनिया - दुनिया; यह "क्रिया और पदार्थ" के सिद्धांत पर आधारित है। उदाहरण के लिए, जीवित मनुष्य का शरीर "पदार्थ" का रूप है और इसे संचालित करने वाली शक्ति "क्रिया" है; आत्मा है.

आत्मा ऊर्जा का एक रूप है जिसे आत्म-ज्ञान और दिव्य ज्ञान के समय देखा जा सकता है। कई धार्मिक, दार्शनिक और पौराणिक परंपराओं में, आत्मा एक जीवित प्राणी का निराकार सार है।

प्रोग्रेसिव थिंकर के संपादक ने 17 सितंबर, 1904 को लिखा: 'डॉ. ए. जे. डेविस की 'डायका' और डॉ. जे. 'स्पिरिट ऑब्सेशन' पर एम. पीबल्स की महान रचनाएँ, साथी पुस्तकें हैं; प्रत्येक पुस्तक आध्यात्मिक क्षेत्र में मौजूद कुछ स्थितियों को दर्शाती है और प्रत्येक को सावधानीपूर्वक पढ़ा और विचार किया जाना चाहिए। आत्मा क्षेत्रों के वास्तविक निवासी 'डायका' के कार्य को महानतम जीवित द्रष्टा डॉ. डेविस द्वारा बहुत स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है।

डॉ. पीबल्स, एक विद्वान, एक यात्री और विश्व-व्यापी अनुभव वाले व्यक्ति, सभी वर्गों में बुरी आत्माओं और उनके विनाशकारी कार्यों का सम्मान करते हुए बहुत सारे सबूत प्रस्तुत करते हैं। एला व्हीलर विलकॉक्स ने इस पुस्तक का दिल से समर्थन करते हुए, यूरोप के लिए रवाना होने से ठीक पहले कनेक्टिकट से हमें निम्नलिखित पत्र लिखा: "मेरे प्रिय डॉक्टर: मैं आपकी बहुत मूल्यवान पुस्तक पढ़ रहा हूं और यह बहुत

अद्भुत है - यह बहुत सच है। और दुनिया इसकी आवश्यकता है। काश दुनिया इसे समझ सके और इस पर विश्वास कर सके - और ध्यान दे!"

डब्ल्यू. टी. स्टीड ने मुझे इस प्रकार लिखा: "'स्पिरिट ऑब्सेशन' पर आपकी पुस्तक के लिए धन्यवाद। मैंने इसे बहुत रुचि से पढ़ा है और पाया है कि यह उन लोगों के लिए अधिक लाभदायक चेतावनियाँ देने के लिए तैयार है जो मानसिक विषयों में रुचि रखते हैं, लेकिन अपनी "समीक्षाओं की समीक्षा" में उन्होंने कहा: "यदि कोई अपनी कोशिश करना चाहता है अध्यात्मवाद को हल्के-फुल्के, तुच्छ तरीके से सीखने के बाद, मैं उन्हें डॉ. पीबल्स की 'स्पिरिट ऑब्सेशन' पर लिखी पुस्तक पढ़ने की सलाह दूंगा। यह कठिन है और एक खतरनाक विषय का लोकप्रिय सर्वेक्षण है। इसके लेखक एक अनुभवी अध्यात्मवादी हैं, और आध्यात्मिक घटनाओं के अध्ययन से जुड़े खतरों के बारे में उनकी गवाही निर्विवाद है।"

डब्ल्यू जे कोलविले ने "जुनून" पर इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा: "आत्माएं सहायक या बाधा डालने वाली होती हैं, और इस पुस्तक, 'द डेमोनिज्म ऑफ द एजेस' में हमारे सामने आने वाले असंख्य साक्ष्यों को नकारना बेकार है, और इसके साथ यह बेकार है जैसा कि भौतिकवादी दावा करते हैं, उन्हें केवल अधूरे सबूतों और अस्पष्ट तंत्रिका रोगों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है... यह एक उत्कृष्ट सलाह से भरी किताब है कि इसे पूरा करने में कुछ समय लगेगा।

डॉ. ए.जे. डेविस ने हमें ये प्रेरक शब्द लिखे: "मैं पूरी तरह से प्रसन्न और आभारी हूं कि आपने 'शैतान को उसका हक दिलाने' के लिए इतनी दृढ़ता से काम किया है, क्योंकि मेरा मानना है कि आपके 'खतरे के संकेत', जब उचित हों, यदि ठीक से समझे जाएं, तो वे मासूम दिमागों के एक बड़े वर्ग को प्रगति की मुख्य दिशा से भटकने से रोकेगा।

डॉ. बी.एफ. ऑस्टिन ने अक्टूबर 1906 के अपने "रीज़न" में इन जुनूनी आत्माओं के बारे में लिखते हुए कहा:
"आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत से लोग अभी भी अपने सांसारिक जीवन की बुरी आदतों, जुनून और भूख के अधीन हैं। वे संवेदनशील प्राणियों को आंशिक रूप से या पूरी तरह से नियंत्रित करके इन इच्छाओं को संतुष्ट करना चाहते हैं और इस तरह सांसारिक जीवन के लिए अपने जुनून को फिर से पूरा करना चाहते हैं। संवेदनशील लोगों को हमेशा अविकसित आत्माओं के साथ अपमानजनक गठबंधन के खिलाफ संघर्ष करना पड़ता

है और सक्रिय रूप से उनका विरोध करना पड़ता है; अन्यथा वे जुनूनी हो जाते हैं.

"जुनून" पर इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा: "इसे प्रत्येक अन्वेषक की लाइब्रेरी में जगह मिलनी चाहिए।" मैरी टी. इओंगली ने लिखा: "जब मैं बैनर ऑफ लाइट मीडियम थी और कैलिफ़ोर्निया में सिटिंग देती थी, तब चिकित्सा रोगियों और मेरे मार्गदर्शकों से सलाह लेने वाले लोगों के साथ मेरे लंबे अनुभव से, मुझे विश्वास है कि जुनून ने कई संवेदनशील लोगों को सबसे कठिन स्थिति में ला दिया है।" बंधन में रखा जाता है और कई तथाकथित पागल वास्तव में अविकसित आत्माओं से पीड़ित होते हैं।"

जुनून के सबूत में चौंकाने वाले तथ्य. 8 मार्च 1884 के लंदन लाइट में, दस वर्षीय लड़का जे. इवांस के पिछले जुनून का निम्नलिखित (बहुत संक्षिप्त) विवरण है: “मि. हीटन अक्सर लड़के की अजीब हरकतों और आत्म-विनाश के प्रयासों, उसकी विलक्षण हरकतों, दयनीय चीखों और कभी-कभी भयावह चीखों को देखता था। श्री हेटन की प्रार्थनाओं ने लड़के को और भी अधिक क्रोधित कर दिया। उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों ने यह कहकर उन्हें छोड़ दिया कि उन तक दवाएं नहीं पहुंच सकतीं.

आख़िरकार उन्होंने गंभीर शपथों का सहारा लिया; इस धार्मिक समारोह के दौरान न तो लड़के की भाषा का वर्णन किया जा सकता है, न ही उसके चेहरे की भयानक विकृतियों का। उसने सक्रिय रूप से भाग लेने वाले या यीशु मसीह का नाम लेने वाले किसी भी व्यक्ति पर थूका। वह वास्तव में एक अशुद्ध, अविकसित आत्मा से पीड़ित था। बार-बार शपथ लेने और प्रार्थना करने के बाद एक बार लड़का नारकीय क्रोध के साथ उठा और बोला, 'अब मैं ठीक हो गया हूं।' ,

, , , 'एक सप्ताह के भीतर अशुद्ध आत्मा ने उसे फिर से अपने वश में कर लिया; गुर्राना, मुस्कुराना और बुरी तरह काटना। प्रभावों को नियंत्रित करके उसके दिमाग में भयानक सुझाव डाले गए - उसके मुँह से अशुद्ध शब्द निकले, और तीन सप्ताह तक वह इस राक्षस से संघर्ष करता रहा। आख़िरकार प्रार्थना और शपथ से उन्हें राहत मिली.

आत्महत्या करने की इच्छा के संबंध में उपरोक्त विवरण की सत्यता को कई गवाहों द्वारा प्रमाणित किया गया है, जिनके नाम पूर्ण विवरण के

साथ संलग्न हैं। और यह आत्मघाती प्रवृत्ति हमें हडसन टटल की याद दिलाती है, जिस पर अपने पिता की हत्या करने का जुनून सवार था और उसने आत्महत्या कर ली। चूँकि जीवन का प्रेम स्वाभाविक है, तो क्या सभी आत्महत्याएँ कम से कम कुछ हद तक नश्वर या अमर लोगों द्वारा इसके प्रति आसक्त नहीं होती हैं? प्रशांत तट पर एक जुनूनी माध्यम के रूप में, चार्ल्स जे. एंडरसन।

मेरे सामने एक पुस्तिका है जिसमें चार्ल्स एंडरसन द्वारा 23 मई, 1896 को ऑस्ट्रेंडर में दिया गया भाषण था, "अब्राहम लिंकन के आध्यात्मिक नियंत्रण के तहत।" उनके पहले नियंत्रणों में से एक बोवेरी थिएटर का एक अभिनेता था, जो नाचता और गाता था, बैंजो आदि के लिए बुलाता था। श्री जेम्स जोन्स और अन्य जो सेंस में उपस्थित थे, उनके अनुसार, वह थॉमस पेन और ऐसे अन्य उल्लेखनीय लोगों से भी मंत्रमुग्ध थे। कुछ साल पहले, सिएटल, वाशिंगटन के पास एक शिविर बैठक में, उनके और श्रीमती कूली के लिए एक साथ काम करने की व्यवस्था की गई थी।

वह परीक्षा देने जाती थी और वह व्याख्यान देने जाता था। उनकी कार्यप्रणाली में देश भर में यात्रा के दौरान आध्यात्मिक सत्र और परीक्षण शामिल थे। श्री सी. लव सहित अन्य लोगों ने हमें बताया कि वे अक्सर इस शिविर में सुबह एक और दो बजे तक आध्यात्मिक सत्र आयोजित करते थे। एक दिन सुबह लगभग तीन बजे मिस्टर लव को उनके तंबू में जगाया गया और उन्हें युवा एंडरसन के तंबू में जल्दी जाने के लिए कहा गया, क्योंकि उन पर एक बुरी आत्मा का कब्जा था - एक जुनूनी आत्मा जो जाने को तैयार नहीं थी - और जो हिंसक रूप से डूबने की धमकी दे रही थी।

मिस्टर लव, हमारा एक मजबूत, सुगठित आदमी था, उसने जल्दी से कपड़े पहने और घटनास्थल पर पहुंचने पर पाया कि श्रीमती कूली, एक या दो व्यक्तियों के साथ, इस "लड़के के माध्यम" को पकड़ रही थीं ताकि वह कोई अपराध न करे। डूबकर आत्महत्या. श्री लव, एक व्याख्याता और परीक्षण-वाहक माध्यम, और दृढ़ इच्छाशक्ति से संपन्न, ने उपस्थित लोगों से तुरंत चले जाने का अनुरोध किया। उसने ऐसा अनिच्छा से किया।

फिर उन्होंने माध्यम का व्यक्तिगत प्रभार अपने ऊपर ले लिया और मांग की कि वह उनके साथ चलें, जो उन्होंने किया। इस नए माहौल में, मिस्टर लव ने आविष्ट आत्मा से दृढ़तापूर्वक लेकिन विनम्रता से बात करना शुरू कर दिया।

संक्षेप में मिस्टर लव ने अब कहा: "आप मेरे प्रभारी हैं - आपको मेरे साथ तर्क करना चाहिए - मैं भी एक आत्मा हूं - सही काम किया जाना चाहिए - आत्माएं भी नश्वर लोगों की तरह कानून के अधीन हैं। किस अधिकार से आप इस युवा माध्यम के साथ ऐसा कर सकते हैं? तुम उसे आधी रात तक मोहक ढंग से क्यों पकड़े हुए हो? क्या आप नहीं जानते कि खुशी केवल सही और अच्छा काम करने से ही मिल सकती है?"

आख़िरकार समुद्र तट की ओर टहलते हुए सड़क के किनारे बैठे हुए इस आत्मा को अपने जीवन की पूरी कहानी बताने की प्रेरणा मिली। वह एक आत्महत्या थी - उसने जीवन के कष्टों से छुटकारा पाने के लिए खुद को डुबो दिया। श्री टटल के भयानक जुनून का सच्चा विवरण उनकी अपनी कलम से। यहां यह शब्दशः है, इसका अधिकांश भाग बुरी आत्माओं से संबंधित है, जो मार्च के लंदन मीडियम और डेब्रेक में दिखाई देता है।

16, 1894: "एंड्रयू जैक्सन डेविस द्वारा 'डायका' और डॉ. पीबल्स द्वारा 'गैडेरेन्स' कहे जाने वाले बुद्धिजीवियों के वर्ग के पास मजबूत मनोवैज्ञानिक शक्तियां हैं; वे सांसारिक परिस्थितियों के निकट संपर्क में रहते हैं, जैसा कि उन सभी के अनुभव से साबित हुआ है जिन्होंने जांच की है इस विषय ने प्रयोगात्मक रूप से पाया कि जुनून का परिणाम जुनूनी आत्मा के चरित्र पर निर्भर करता है।

जब भी माध्यम अपनी इच्छा छोड़ देते हैं, तो वे जुनूनी हो जाते हैं; यानी अपनी इच्छा से नियंत्रित न होकर और किसी अज्ञात शक्ति पर भरोसा करके वे खतरनाक जमीन पर खड़े होते हैं। नियंत्रित करने वाली आत्मा उनसे बेहतर और बुद्धिमान हो सकती है, या यह विश्वासघाती और स्वार्थी हो सकती है।

मारने की अनियंत्रित इच्छा

"मैं अपने दोस्तों के साथ एक बड़ी अखरोट खाने की मेज के आसपास बैठा था जो सवालों के जवाब में हिल रही थी। गुप्तचर अधिकारी ने दावा किया कि वह भारतीय है और अनुरोध करने पर उसने कहा कि वह मेरे हाथ से

उसका चित्र बनवायेगा। मैंने एक छोटे संगमरमर के आकार का चॉक का टुकड़ा उठाया और मेरे हाथ से अपने आप एक अजीब सा चित्र बन गया।

हम सभी हँसे, और मेरे पिता, जो मेज से उठकर कमरे के दूसरी ओर बैठे थे, ने कहा, 'वह शैतान जैसा दिखता है।' तुरंत ही मेरा मन हल्के और सुखद विचारों से तीव्र और अवर्णनीय घृणा में बदल गया। गुस्से ने रोशनी को खूनी लाली में बदल दिया, और हत्या करने की एक अनियंत्रित इच्छा थी, जिसके तहत मैंने चाक को गोली की सटीकता के साथ फेंक दिया, अपराधी के माथे के बीच में इतनी ताकत से मारा कि चाक टुकड़े-टुकड़े हो गया।

“अगर यह बड़ा होता, तो निश्चित रूप से गंभीर परिणाम होते। बेशक सत्र ख़त्म हो गया था, लेकिन मैं शाम तक उस भयानक प्रभाव से बच नहीं सका। इस सत्र के अध्ययन ने मुझे वह खतरा दिखाया जिससे कमजोर लोगों को खतरा है, और अपराधों के एक वर्ग की कुंजी दी जो अब तक समझ से परे थे।

“हम अक्सर ऐसे लोगों के बारे में सुनते हैं जिन पर वर्षों से भरोसा किया गया है, जो ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और नैतिक ईमानदारी के प्रतीक हैं, जो बिना किसी चेतावनी के संपत्ति या व्यक्ति के खिलाफ जघन्य अपराध करते हैं। वे आम तौर पर कहते हैं कि उसे अचानक और अनियंत्रित आवेग ने जकड़ लिया था, और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसे अपने किए पर पछतावा हुआ।

आत्मघाती जुनून.

“पागल लोगों में आत्महत्या की इतनी तीव्र इच्छा को दर्शाने के लिए, मैं एक और व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। रेवरेंड डॉ. अंडरहिल के घर पर एक घेरे में बैठकर, मैं कुछ समय के लिए लगभग बेहोशी की स्थिति में था, और मैंने कई भारतीय आत्माओं की उपस्थिति को पहचाना। शाम की ठंडी हवा में रैपिड्स के ऊपर काहोगा नदी की गर्जना मेरे संवेदनशील कान से बहुत स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती थी।

अचानक मुझे तेज लहरों की ओर दौड़ने और खुद को नदी में फेंकने की इच्छा महसूस हुई। जैसे ही मैंने शुरुआत की, किसी ने मुझे पकड़ लिया और मुझे असंतुलित स्थिति से बाहर खींच लिया, जिससे मैं खुद को नियंत्रित कर सका। यदि स्थिति अधिक गंभीर होती और मैंने तुरंत शुरुआत की होती, तो अंत अलग हो सकता था।

इच्छा पूरी शाम बनी रही। मैं जिस उदाहरण का उल्लेख कर रहा हूं उसका तात्कालिक कारण अनैतिक मंडलियों में बैठने के हानिकारक प्रभाव हैं।

जुनून का इलाज.

“एक किसान के यहाँ काम करने वाला एक युवक उदारवादी हो गया और आस-पड़ोस में बहुत उत्साह था और उत्सुक भीड़ रात भर उसके इर्द-गिर्द घूमती रही। कुछ दिनों के बाद वह पाता है कि उसके ऊपर एक ऐसी शक्ति आ गई है जो उसे नष्ट करने पर तुली हुई है।

उसकी भाषा सुनने में भयानक थी और यदि उसका विरोध किया जाता तो वह क्रोधित हो जाता, मुँह से झाग निकलने लगता और जो भी उससे बात करता उसे नष्ट करने का प्रयास करता। वह खेतों में भाग जाता था और खुद को गेट या बाड़ पर इतनी ताकत से फेंकता था कि उसे गंभीर चोट लगने का खतरा होता था। उसके दोस्त उसे मेरे पास लाए, इस आशा से कि वे सीख सकें कि उस भयानक प्रभाव से कैसे उबरा जाए जिसके तहत वह गिर गया था।

जैसे ही उसने मुझे देखा, लगभग एक चौथाई मील दूर, वह एक जंगली जानवर की तरह मेरी ओर दौड़ा, गाली देता हुआ, बड़बड़ाता हुआ और मुँह से झाग निकालता हुआ। उस समय मुझे मामले की परिस्थितियों के बारे में कुछ भी नहीं पता था, लेकिन चूंकि मैं भाग नहीं सकता था, इसलिए मैं मजबूती से खड़ा रहा और उसकी नज़र पकड़ कर उसे दूर रखा।

मैंने उसे भागा हुआ पागल समझा, क्योंकि मैंने उसके मित्रों को दूर से आते देखा था; और चूँकि यह मेरा अनोखा अनुभव रहा है कि मैंने हमेशा हर उस

पागल व्यक्ति का विश्वास जीता है जिसके साथ मैं संपर्क में आया हूँ, मुझे कोई डर नहीं था। "जब उसके दोस्त आए, तो उन्होंने उसका मामला समझाया। केवल एक ही समाधान था और वह यह था कि उसे चुम्बकित/आकर्षित किया जाए और इस प्रकार अपनी इच्छा को उस स्थान पर प्रक्षेपित किया जाए जिसने उसे पकड़ रखा था।

उनकी भयानक स्थिति पर दुःख से भरकर, मैंने अपनी सारी शक्ति लगा दी और एक घंटे के बाद उन्हें मेरी इच्छाओं का अनुपालन करते हुए पाया। मैंने उसके दोस्तों से कहा कि वह दो दिनों तक सुरक्षित है, और फिर उसे मुझसे मिलना चाहिए। वह उस प्रभाव से मुक्त हो गये और वे वापस लौटने में असफल रहे। शाम को वह फिर से पागल हो गया।

तीसरे दिन वह पहले से भी अधिक आक्रामक और उग्र हो गया और मैं बड़ी मुश्किल से उसे काबू में करने में सफल हुई। मेरे आध्यात्मिक मित्रों ने उसे बताया कि वह अत्यधिक खतरे में है, और यदि जुनून दोबारा आया तो वे और कुछ नहीं कर सकते; और, सबसे बढ़कर, उन्हें गोल घेरे में न बैठने की चेतावनी दी।

हालाँकि, उसी शाम, पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करते हुए और ऐसा करने के लिए कोई दबाव महसूस नहीं करते हुए, वह बैठ गए और जुनून वापस आ गया।

इस बार मुझ पर उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और जुनूनी भावना ने मेरे व्यर्थ प्रयासों का मज़ाक उड़ाया। थोड़े-थोड़े अंतराल के साथ, यह कुछ वर्षों तक जारी रहा, जब तक कि पीड़ित की मृत्यु नहीं हो गई। यह मेरे द्वारा देखा गया जुनून का सबसे निर्णायक मामला था। यह पागलपन के रूप में पारित हो गया होगा, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि कई मामले जिन्हें पागलपन के रूप में माना जाता है वे आसानी से चुंबकत्व के शिकार हो जाते हैं, क्योंकि वे सख्ती से जुनून से संबंधित होते हैं। (हडसन टटल।)

हडसन टटल एक ओझा के रूप में।

क्या मिस्टर टटल द्वारा अपने पिता की हत्या के खून से अधिक बुरी आत्माओं का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण हो सकता है? निश्चित रूप से उसके मन

में अपने पिता को मारने की "अनियंत्रित इच्छा" नहीं थी। और फिर भी इस देश और इंग्लैंड में कुछ अध्यात्मवादी हैं जो बुरी आत्माओं और जुनून दोनों के तथ्य से इनकार करते हैं। ये काल्पनिक सिद्धांतकार हैं।

कैलिफोर्निया के दिवंगत जे.एस. लवलैंड का मानना था कि सभी मानवीय जुनून और सभी बुरी प्रवृत्तियाँ शरीर के साथ मर जाती हैं। और जे.जे. मोर्स ने 3 अप्रैल, 1903 और 11 अक्टूबर, 1907 को द टू वर्ल्ड्स में निम्नलिखित प्रकाशित किया: "बुरी आत्माओं में विश्वास, चाहे वह मानव हो या अन्य, ने बहुत नुकसान किया है। आइए हम इससे ऊपर उठें और अंधविश्वास के प्रभाव के आगे झुकना बंद करें। इस विषय को विज्ञान के नजरिये से देखिये.

सीधे शब्दों में कहें तो, यदि कोई दुष्ट आत्मा आपको बुरा करने के लिए मजबूर करती है, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सक्रिय इच्छा आपके भीतर है; अन्यथा तुम्हें बुराई करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।" इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने सभी लेखों में, मैंने सिखाया है कि मनुष्य सम्मोहक शक्तियों के साथ नश्वर लोगों के साथ-साथ अमर लोगों के भी वश में हो सकते हैं। मैंने दुष्ट शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में किया है, चाहे इस शब्द में या भविष्य में, और मोक्ष शब्द का प्रयोग मैंने आत्म-विकास के अर्थ में किया है; और मैं 'राक्षस' शब्द का उपयोग एक स्वार्थी, अविकसित आत्मा के लिए करता हूँ; और 'मृत्यु' शब्द का प्रयोग सांसारिक को अधिक परिष्कृत और अलौकिक से अलग करने के रूप में किया जाता है।

और जितनी अतार्किक और अतार्किक रूप से "मेम्ने के प्रायश्चित रक्त" के माध्यम से चर्च की मुक्ति, मैं उतनी ही आसानी से इस पर विश्वास कर सकता था, जितनी आसानी से मैं मृत्यु, ताबूत और कब्र के कपड़ों के माध्यम से मुक्ति या पूर्ण खुशी में विश्वास कर सकता था। मृत्यु सभी सांसारिक यादों, सांसारिकता और रिश्तों की खोपड़ी से स्लेट को साफ नहीं करती; न ही यह उपद्रवी पुरानी व्यभिचारिता को पलक झपकते ही स्वर्गीय आनंद में बदल देता है; इस प्रकार चेतना व्यक्तित्व को नष्ट कर देती है।

आत्मा के जुनून की सच्चाई को नकार दिया गया - इसके समर्थकों को जला दिया जाना चाहिए।
आत्मा के जुनून के तथ्य को नकारा गया- इसके समर्थकों को जला दिया जाना चाहिए।

निस्संदेह सभी बुद्धिमान अध्यात्मवादियों में से उन्नीस बीस प्रतिशत राक्षसी जुनून में विश्वास करते हैं; अर्थात बुरी आत्माओं का मानसिक प्रभाव। और यह निर्धारित करना कठिन है कि यह अज्ञानता है या बेशर्म साहस जो जुनून के सुस्थापित तथ्य को नकारता है। कुछ असहिष्णु और कट्टर अध्यात्मवादियों ने, अध्यात्मवादी पत्रिकाओं में लिखते हुए, सभी शिष्टाचार से रहित, भाईचारे के प्रति अंधे, और भाईचारे के उस स्वर्ग-प्रेरित सिद्धांत के प्रति अंधे, जो सभी महान, उदार आत्माओं की विशेषता है, ने इस पुस्तक की आलोचना की और इस पुस्तक पर टिप्पणी की, जो , सत्य के प्रकाश में, निम्नलिखित शैली में समाप्त होता है: "मैं एक अध्यात्मवादी हूं [बल्कि एक मूर्ख अध्यात्मवादी] और मैं चाहता हूं कि कोई मुस्कुराता हुआ शैतान उपरोक्त डॉ. पीबल्स को अपना लाल-गर्म इम्पेल उन्हें पिचफ़र्कों पर चढ़ा दे और उन्हें डुबो दे भय का उबलता बर्तन उन्होंने कई अन्य लोगों के लिए तैयार किया है।"

17 सितंबर, 1906 को शिकागो के लाइट ऑफ ट्रुथ में लिखते हुए ओलिव पेनिंगटन ने कहा: "'डेमोनिज्म ऑफ द एजेस एंड स्पिरिट ऑब्सेशन' जैसी पुस्तक का प्रकाशन एक अपराध है; और मैं, एक व्यक्ति के रूप में, चाहता हूं कि यह दंडनीय हो कायदे से, , , , उसी प्रेतात्मवादी पत्रिका के एक अन्य लेख में इस भाषा का उपयोग किया गया है: “राक्षसी जुनून का विचार एक क्रूर, राक्षसी, आत्मा को नष्ट करने वाली, मनोबल गिराने वाली चीज़ है।

यह ऐसी चीज़ है जिसे सार्वजनिक रूप से नज़रअंदाज़ किया जाना चाहिए।” हत्यारी मानसिकता वाला ई.एस. चैपमैन ने स्पिरिचुअलिस्ट प्रेस के लिए लिखते हुए कहा, "यह आशा की गई थी कि डॉ. पीबल्स द्वारा जगाए गए राक्षस उस स्टीमर को डुबो देंगे जो उन्हें इंग्लैंड ले जा रहा था।" श्रीमती ईवा कैसल, एक अध्यात्मवादी लेखिका, ने जानबूझकर प्रोग्रेसिव थिंकर में लिखा है कि “डॉ. पीबल्स और उसकी किताब दोनों को पुतले में जलाया जाना चाहिए। , , , थिंकर के भाई, उदारवादी सोच वाले जे.आर. फ्रांसिस ने अपने शिकागो थिंकर में एक कार्टून बनाया और प्रकाशित किया, जिसमें इस परेशान करने वाले "फायर-लाइटिंग" व्यवसाय के विचार को समझाया गया।

अध्याय 1

बुरी आत्माएं और उनका प्रभाव.

क्या सभी मनुष्य कोमल, सौम्य और देवतुल्य हैं? क्या किसी का जीवन पूर्णतः निःस्वार्थ है? क्या उनके इरादे हमेशा शुद्ध होते हैं? पुराने प्रेरित ने कहा, “यदि हम कहते हैं कि हम में कोई पाप नहीं है, तो हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और सत्य हम में नहीं है।” परोपकारिता की महान ऊंचाइयों तक कौन पहुंचा है? क्या सबसे बुद्धिमान व्यक्ति यह कहने का साहस कर सकता है कि उसने सभी ज्ञान की उत्कृष्ट ऊंचाइयों को प्राप्त कर लिया है? क्या सबसे अच्छा और महानतम व्यक्ति ईमानदारी से कह सकता है, "मैं परिपूर्ण हूँ?"

यदि नहीं, तो एक अधूरा, अविकसित, अस्तित्व। पिछली शताब्दी के रिकॉर्ड की जाँच करें - पिछले वर्ष; आज विश्व की नैतिक स्थिति का अध्ययन करें। आपको कितने परोपकारी, आत्म-बलिदान करने वाले सुधारक मिलते हैं? कितने संत वासनाओं और उन सभी लुभावनी प्रवृत्तियों से मुक्त हैं जो पहले चकाचौंध करती हैं और फिर नष्ट कर देती हैं? कितने योग्य राजनेताओं को शाही मुकुट पहने हुए, सीनेट कक्षों या न्याय के संसदीय कक्षों की कमान संभालते हुए, प्रेम और ज्ञान से जलते हुए गिना जा सकता है?

जापानी-रूसी युद्ध पर विचार करें जो पागलपन की हद तक बढ़ गया है। फोटो का दूसरा दृश्य देखें. लगभग 400,000,000 भूरी आँखों वाले, अर्ध-प्रबुद्ध चीनी हैं; भारत में लगभग 250,000,000 प्लेग-पीड़ित, बहुपत्नी, बाल-विवाहित, अंधविश्वासी लोग हैं; मध्य क्षेत्रों में 200,000,000 अज्ञानी, कम कपड़े पहने अफ़्रीकी नीग्रो, नरभक्षी जनजातियाँ; दक्षिणी एशिया में लाखों नग्न जनजातियाँ, चूहे जनजातियाँ, और ऑस्ट्रेलिया के कीड़े-मकोड़े खाने वाले झाड़ियाँ; प्रशांत द्वीपवासी जो साँप खाते हैं; अमेरिका के षडयंत्रकारी, सोना-चोर करोड़पति; लंदन के

व्हाइटचैपल हत्यारे, सड़क पर आवारा और चोर; रात में घूमने वाले, शहरों में रहने वाले बहिष्कृत पुरुष और महिलाएं; झूठे, जुआरी, सिद्धांतहीन चालबाज, झुग्गी-झोपड़ी के ग्राहक, जंगली, भ्रमित, पागल; जेलों और जेलों में अपराधी; चालाक, नैतिक रूप से झूठे राजनेता; - ये - ये सभी मृत्यु के काले, झाड़ू-पंख के साथ आत्मा की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं!

वे आत्माएँ हैं - अब निर्जीव आत्माएँ, - लेकिन क्या वे शुद्ध हैं, - क्या वे अच्छी हैं? यदि हाँ, तो उन्हें ऐसा किसने बनाया? क्या यह आखिरी मरती हुई सांस थी? क्या मृत्यु कोई रक्षक है? क्या एक क्षण में मृत्यु एक मूर्ख अफ़्रीकी नरभक्षी में परोपकार और ज्ञान का संचार करती है? क्या मृत्यु स्लेट को साफ़ कर देती है, मूर्खों को दार्शनिक और जंगली लोगों को संत बना देती है? क्या सीमा के उस पार कोई बुरी आत्मा नहीं है?

यदि नहीं, तो आत्मा की पहचान एक भ्रम है, एक बहुत बड़ा भ्रम है। लेकिन हकीकत ऐसी नहीं है. सत्य तो यह है कि हमारा भौतिक शरीर, पंचभौतिक शरीर, अनादिकाल से नाशवान है और भविष्य में भी नाशवान ही रहेगा। जबकि इस शरीर की मेजबान आत्मा (PERI-SPIRIT) सदैव अमर रही है और कल भी अमर रहेगी। अन्यथा शव तो यहीं भूमि पर पड़ा रहता है, फिर स्वर्ग, नरक और परलोक कौन जाता है? पुनर्जन्म किसका होता है?

डायक्का एंड्रयू का जैक्सन डेविस. एंड्रयू जैक्सन डेविस का डायक्का।

ऊपर वर्णित ये अनगिनत लाखों लोग, अपने नश्वर वस्त्र उतारकर, अब आत्माएं हैं, फिर भी झुकाव और आत्मा में, वे अभी भी पृथ्वी के हैं, पार्थिव हैं। वे दीपक हैं. अपने "दीयाका और उसके पीड़ितों" में, यह द्रष्टा, ए जे डेविस, संक्षेप में इस प्रकार लिखते हैं: "डियाका का देश वह है जहां नैतिक रूप से कमजोर और स्नेहपूर्वक अशुद्ध लोग एक अजीब परिवीक्षा में प्रवेश करते हैं... वे लगातार संवेदनशील व्यक्तियों को पीड़ा दे रहे हैं , उनका उपहास करना, और वास्तव में ईमानदार और सच्चे लोगों की कीमत पर हंसना, वे (ये राक्षसी आत्माएं) सिखाते हैं कि वे उठ सकते हैं और खुश हो सकते हैं यदि वे आपकी ज्वलंत मुक्त-प्रेमी प्रवृत्ति को संतुष्ट करने के लिए व्हिस्की, या तंबाकू का सेवन कर सकते हैं।

एक सिद्धांतहीन बुद्धिजीवी होने के नाते, उनका खेल उनके प्रभाव में रहने वाले लोगों की कीमत पर मनोरंजन के अलावा कुछ नहीं है। , , , दैक्का हर तरह के प्रदर्शन में माहिर हैं। इससे किसी व्यक्ति की उत्कृष्टता में कोई इजाफा नहीं होता क्योंकि वह पार्लर में रहता है; न ही यह आवश्यक रूप से किसी व्यक्ति को - कम से कम मेरे सम्मान में नहीं - मुझे यह बताने के लिए ऊपर उठाता है कि वह अब आध्यात्मिक दुनिया में रहता है। , , ,

मृत्यु मनुष्य के चरित्र को नहीं बदलती, बल्कि केवल उसका मुखौटा उतार देती है और उसे वैसा ही बने रहने के लिए मजबूर कर देती है, और मृत्यु के बाद वह अपने चरित्र की छवि बन जाता है। इस स्वतंत्र दिव्यदर्शी की बातें कितनी सत्य हैं! "मृत्यु चरित्र नहीं बदलती।" क्या इस संसार में दुष्ट-चित्त, लाइलाज दुष्ट लोग नहीं हैं? इसे कोई अर्ध-बुद्धिमान व्यक्ति ही तार्किक रूप से नकार सकता है। इसलिए, आत्माओं की दुनिया में ऐसे अविकसित, तर्कहीन प्राणी अवश्य होंगे।

देह के आवरण से मुक्त होने से कोई व्यक्ति किसी अवांछित मुकुट का अधिकारी नहीं बन जाता। म्यान से मुक्त होने से सभी अधर्मी इच्छाओं से मुक्ति नहीं मिलती। मानव शरीर एक तम्बू, एक मंदिर, एक खोल है जिसे मौत का तांडव तोड़कर कैद आत्मा को मुक्त कर देता है।

बढ़ते पक्षी के चारों ओर मौजूद अंडे का छिलका विकसित नहीं होता है, लेकिन उसके भीतर का अंकुरित पक्षी विकसित होता है। यह जल्द ही सिकुड़ जाता है और अवरोध को तोड़ देता है और सूर्य के प्रकाश में बाहर आ जाता है; लेकिन अंडे से निकलने की प्रक्रिया से चूजा चील नहीं बन जाता; न ही शोर मचाने वाले, चहचहाने वाले अंडों से निकलने वाले पक्षी संगीतमय उपहास करने वाले पक्षी बन पाते हैं, न ही शहर की जेलों में भीड़ लगाने वाले नैतिक रूप से पिछड़े अपराधी मौत के गोले से प्यार की आत्माओं या शांति के स्वर्गदूतों में बदल जाते हैं। हैं। तर्क-वितर्क में तर्क और प्रकृति दोनों से निकटता से जुड़े रहना अच्छा है।

जुनून, युगों का दानववाद

आत्मा - शरीर - रचना। आत्मा शरीर का श्रृंगार.

"मरे हुए कैसे जी उठते हैं, और वे किस शरीर के साथ आते हैं!" यह प्रश्न बहुत पहले पूछा गया था. हम अपने दोस्तों को उनके शरीर के साथ-साथ उनके दिमाग से भी पहचानते हैं। क्या यह उन अमर लोकों में भिन्न होगा! और फिर भी, हमारे पास आध्यात्मिक स्वप्न देखने वालों का एक वर्ग है जो "विचार-शरीर" के बारे में बात करता है। इच्छा-ओ-बुद्धिमान शरीर, या आशा-शरीर के बारे में बात करना उतना ही अच्छा है, जितना कि यह एक अनिश्चित, आकारहीन विचार-शरीर है।

वास्तविक "आत्मा शरीर", जिसे कभी-कभी "सूक्ष्म" भी कहा जाता है, एक वास्तविक, आंशिक रूप से ठोस उप-शरीर है, जो सबसे नाजुक, अकल्पनीय आभा, परमाणु उत्सर्जन, ईथर तरल पदार्थ और परिष्कृत, अदृश्य पदार्थों से बना है। इन अनंत तत्वों और सार से अमर सार, दिव्य अहंकार (मनो-शारीरिक नियमों, समानताओं, आकर्षण और ध्रुवताओं द्वारा) अपने लिए एक आवरण बनाता है - एक ईथर आत्मा-शरीर, जो भौतिक शरीर में व्याप्त है, और, निश्चित रूप से, है एक ही रूप का.

मृत्यु के समय, जब स्थूल, भौतिक शरीर रूपांतरित हो जाता है और विघटित और अलग हो जाता है, तो ईथर या आत्मा-शरीर, इस विघटित नश्वर रूप से ऊपर उठकर, आध्यात्मिक शरीर के रूप में जाना जाता है। पॉल ने कहा, "एक प्राकृतिक (मांसल) शरीर है, और एक आध्यात्मिक शरीर है।" और मरने में, शक्तिशाली, अंतरतम आत्मा, एक मनो-चुंबक के रूप में कार्य करते हुए, स्वयं से जुड़े और संबंधित प्रत्येक आध्यात्मिक तत्व को अपने पास रखती है।

जब पार्थिव शरीर मर जाता है तो उससे आध्यात्मिक शरीर का उद्भव उचित और तार्किक रूप से शरीर का पुनरुत्थान होता है, - इसे भ्रष्टाचार से भ्रष्टाचार की ओर, मृत्यु दर से अमरता की ओर, अस्तित्व की उच्च आध्यात्मिक स्थिति तक उठाया जाना माना जाता है।

जुनूनी आत्माओं का ख़तरा, बुराई कहाँ है?

यह आत्मा में नहीं है, - "आत्मा ईश्वर है" फेनुमा हो थियोस।" ये ईसा मसीह के कथित शब्द थे। मनुष्य के भीतर की आत्मा एक असंयुक्त, अमिश्रित, एक उद्गम या एक दिव्य, अनंत आत्मा से और उससे ईथर संबंध है , ईश्वर। उससे, - एक निरंतर बहने वाले क्रिस्टल फव्वारे से एक बूंद की तरह - मानव आत्मा है - चेतना और जीवन का केंद्र - शुद्ध, अनिवार्य रूप से, स्वाभाविक रूप से दिव्य।

तो फिर, यह कैसे पाप कर सकता है, या किसी भी तरह से बुरा बन सकता है! यह जांच का विषय है. यह तो हो न सकता; और अब यह दर्शन आता है कि आत्मा किस प्रकार पदार्थ पर और उसके माध्यम से बुराई उत्पन्न करने, या बुरी आत्माओं के शासन की अनुमति देने के लिए कार्य करती है। इस विषय पर विचार करते हुए आइए आधार की ओर चलते हैं।

क्या किसी सर्जन द्वारा काटे जाने के बाद कोई हाथ कभी किसी इमारत को जला सकता है? क्या कभी किसी सड़ती हुई लाश ने अपना कफन और ताबूत उतारकर बैंक डकैती की है? लेकिन क्यों नहीं? जाहिर है, क्योंकि कारण मनुष्य, वास्तविक, चेतन आध्यात्मिक मनुष्य, मृत्यु के समय नाशवान, नश्वर शरीर छोड़ गया, जो केवल एक अस्थायी उपांग था। तर्क के साथ आगे बढ़ते हुए, इस तथ्य को ध्यान में रखें कि कोई भी कार्य, अच्छा या बुरा, भौतिक शरीर से उत्पन्न नहीं होता है। लेकिन असली आदमी "वहाँ" अभी भी अवतरित है, हालाँकि पुराना नश्वर शरीर धूल में गिर गया है।

आध्यात्मिक जगत में मनुष्य दोहरा है, लेकिन सीमित है; और सीमित होने के कारण, अपने साथ अदृश्य जगत में चेतना, भावना, इच्छा लेकर चलने के कारण, वह अपने अस्तित्व की उच्च और निम्न दोनों अवस्थाओं से अच्छाई और बुराई क्यों नहीं प्रकट करेगा? कोई भी ठोस विचारक इस बात की पुष्टि नहीं करेगा कि शराबी की लालसा पूरी तरह से भौतिक शरीर की होती है;

यदि ऐसा है, तो विच्छेदन के दौरान यह पूछा जा सकता है कि ऐसी असंवेदनशील सर्जरी क्यों की गई; और परिणामस्वरूप, विच्छेदन को बेहतर ढंग से सहन करने के लिए मादक उत्तेजक पदार्थों की मांग नहीं तो लालसा हो सकती है।

नहीं, ये इच्छाएँ आत्मा-शरीर से संबंधित अंतर्निहित सार, सार, आभा, अंधेरे शक्तियों और अंतर-संबंधित असंगतताओं से थीं, न कि अविनाशी आत्मा से, जो अपूर्ण आत्मा-जीव के माध्यम से कार्य करती है। चेतन आत्मा और भौतिक शरीर के बीच मौजूद इस मध्यवर्ती, कण जीव को उचित रूप से आत्मा-शरीर या आत्मा कहा जा सकता है, और इसे उपनिषदों, वैदिक विद्या, पुराने या नए नियम के ग्रंथों में कभी भी अमर घोषित नहीं किया गया है। ; न ही इसे "ईश्वर जिसने इसे दिया है" की ओर वापसी के रूप में कहा जाता है।

शहीद स्टीफ़न को याद रखा जाएगा कि उन्होंने मरते समय अपनी आत्मा (आत्मा नहीं) ईश्वर को समर्पित कर दी थी। यह आत्मा जिसकी "प्रशंसा" की गई थी वह ईश्वर का एक संभावित हिस्सा थी। वाक्यांश "अशरीरी आत्मा" एक कल्पना है। आत्माओं के पहचानने योग्य रूप होते हैं। उन्हें ऐसे कपड़े पहनाए जाते हैं, जिनकी गुणवत्ता पृथ्वी पर उनके आचरण और श्रवण संगति से मेल खाती है। मानव संरचना में प्रत्येक अणु में जन्मजात, विरासत में मिली विशेषताएं होती हैं। आत्मा-शरीर, भौतिक शरीर की तरह, कणों से बना है और बल के साथ जलता है।

और यह कण-युक्त आत्मा-शरीर, जैसा कि ऊपर कहा गया है, परमाणुओं, अणुओं, विद्युत तत्वों, अदृश्य सुगंधों, सूक्ष्म, अकल्पनीय सार से निकलने वाले पदार्थों से बना है, जो अंतरतम आत्मा के भौतिक शरीर से निकाले जाते हैं। वाहन अथवा आकाश वस्त्र है। जब पुराने तम्बू-शरीर को हटा दिया जाता है, तो यह आत्मा-शरीर, अपने अच्छे और बुरे गुणों के साथ, आत्माओं की दुनिया में प्रवेश करता है, जो कि यहीं और अभी की आध्यात्मिक दुनिया है, - लेकिन आध्यात्मिक दुनिया नहीं, न ही देवदूत की दुनिया शुद्धता और पवित्रता ही.

इसे स्वीकार किया जा रहा है, निष्कर्ष उतना ही अनूठा है जितना कि यह तार्किक है, कि नश्वर प्राणी, मृत्यु के द्वार से गुजरते हुए, अपनी वैयक्तिकता (चेतना, स्मृति और उद्देश्य) को बनाए रखते हैं, कम से कम अस्थायी रूप से, अपने पुराने पृथ्वी-आदी लीक में जारी रहना चाहिए सोचो और कार्य करो; उन्हें समान या समान इच्छाओं, झुकावों और प्रवृत्तियों का

अनुभव करना जारी रखना चाहिए, चाहे वे कितने ही घृणित और बुरे क्यों न हों, जो उनके पार्थिव शरीर में निवास करते समय उनकी विशेषता थी।

उनके विचार और स्नेह धरती के हैं। वे पृथ्वी से बंधे हैं. वे भटकती हुई, प्रेतात्माएँ हैं, आवारा लोगों की तरह भटक रही हैं। वे आवारा हैं. वे झूठे नाम लेते हैं. वे बेचैन राक्षस हैं जो संवेदनशील लोगों से चुंबकीय रूप से जुड़कर संतुष्टि और कामुक सुख की तलाश में घूमते हैं।

अपने स्वभाव में, वे सिम्मेरियन राक्षस हैं जो मनुष्यों को अपने पास रखते हैं और अपने पास रखते हैं, और ऐसा तब तक करते रहेंगे जब तक कि उनके प्राणियों के स्थूल और अधिक बाहरी, या पृथ्वी-व्युत्पन्न हिस्से इस तरह के तामसिक, फिर भी उपचारात्मक, शुद्धिकरण से नहीं गुजरते। वे विकास की प्रक्रियाओं से बुराई से मुक्त नहीं होते हैं जो अस्तित्व की अगली अवस्था से संबंधित है।

शिकागो प्रोग्रेसिव थिंकर में हडसन टटल ने कुछ समय पहले इस प्रकार लिखा था:- सभी आध्यात्मिक प्राणी कभी मनुष्य थे, और अध्यात्मवाद के मूल सिद्धांतों के अनुसार, जब वे मृत्यु के द्वार से गुजरते हैं तो उनमें कोई बदलाव नहीं होता है, सिवाय इसके कि विकास का. द्वारा प्राप्त किया गया है। इसलिए वे उतने ही अच्छे और बुरे हैं जितने यहाँ थे, न अधिक, न कम। जब भी वे वापस आते हैं और अपनी पहचान प्रकट करते हैं, हम देखते हैं कि व्यक्तिगत विशेषताएँ बरकरार रहती हैं और उनके आध्यात्मिक जीवन में भी शामिल हो जाती हैं।

झूठ और धोखे के प्रेमी, ईर्ष्यालु और नफरत करने वाले, उन गुणों को तब तक बनाए रखते हैं जब तक कि वे वर्षों और युगों की प्रगति के बाद समाप्त नहीं हो जाते। "अगर इस जीवन में, अगले जीवन में बुरे लोग हैं, और अगर हम उनके आने का रास्ता खोलते हैं और उन्हें हमें प्रभावित करने की अनुमति देते हैं, तो हमें उनसे उन गुणों को प्रकट करने की उम्मीद करनी चाहिए जो उन्हें सांसारिक जीवन में अलग करते हैं। यहां एक और पैराग्राफ है उनकी कलम से:- जैसे ही आत्मा आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करती है, जैसे ही वह इसे छोड़ती है, वहां असंख्य निम्न, अविकसित, अशिक्षित या दूसरे शब्दों में बुरी आत्माएं होंगी।

इस प्रेरितिक अंश पर टिप्पणी करते हुए, प्रतिभाशाली हेनरी वार्ड बीचर: - क्योंकि हम मांस और रक्त के खिलाफ नहीं, बल्कि रियासतों के खिलाफ, शक्तियों के खिलाफ, इस दुनिया के अंधेरे के शासकों के खिलाफ, ऊंचे

स्थानों पर राक्षसों के खिलाफ कुश्ती लड़ते हैं (बेहतर अनुवाद), इफिसियों 6:11, 12, टिप्पणियाँ: - प्रेरित द्वारा की गई गणना को देखो।

वह यह कहकर आरंभ करता है, 'परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; जैसा कि उन्होंने कहा, 'हर चीज़ का एक समय होता है।' और, जैसे कि उसने चारों ओर देखा हो कि खतरा कहां है, वह कहता है, - हम मांस और रक्त के खिलाफ नहीं लड़ते हैं।

दूसरे शब्दों में, यह मनुष्य नहीं है, यह सशस्त्र बल नहीं है, यह सैन्य बल नहीं है जो आपके लिए सबसे बड़ा खतरा है। हम अशरीरी आत्माओं से लड़ते हैं। वह कहते हैं, - और अब आध्यात्मिक शक्तियों की सूची आती है - 'रियासतियां - विभिन्न संप्रभुताएं और रियासतें -' शक्तियों के खिलाफ, इस दुनिया के अंधेरे के शासकों के खिलाफ - अज्ञानता के खिलाफ, स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आत्माओं के खिलाफ - क्योंकि यह सटीक रूप से, शाब्दिक अनुवाद है।

हमारे संस्करण में, आध्यात्मिक दुष्टता ऊंचे स्थानों पर है, लेकिन मूल में, 'स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आत्माएं' हैं। "हमारे संघर्ष का क्षेत्र उस क्षेत्र से भिन्न है जिस पर लोग एक-दूसरे का विरोध करते हैं। इसमें संपूर्ण अदृश्य क्षेत्र शामिल है। सभी गुप्त सड़कें, रास्ते और रास्ते, जिनमें आत्माएं निवास करती हैं, एक महान अदृश्य मेजबान से भरे हुए हैं। ये हैं हमारे विरोधी। और वे सभी बड़ी संख्या में हैं।

खतरनाक हैं क्योंकि वे अदृश्य हैं। क्या वे सूक्ष्म हैं? हम उनकी उपस्थिति से अनभिज्ञ हैं. वे आते हैं, वे जाते हैं; वे हमला करते हैं, पीछे हट जाते हैं; वे योजना बनाते हैं, हमला करते हैं, पीछे हट जाते हैं; वे उन सभी प्रक्रियाओं को अंजाम देते हैं जिनके द्वारा वे हमें दबाना या नष्ट करना चाहते हैं, हमारे उन्हें देखे बिना।

जब, भौतिक युद्ध में, हमारे विरुद्ध शत्रु रक्षा की एक नई पंक्ति स्थापित करता है, तो हम इसे देख सकते हैं; और जब एक नई बैटरी की खोज की जाती है, तो उसके सामने एक बैटरी रखी जा सकती है; लेकिन कोई भी इंजीनियरिंग इन अदृश्य इंजीनियरों या उनके काम का पता नहीं लगा सकती है। और इस विचार में बहुत अद्भुत बात है कि ब्रह्मांड में सबसे उत्कृष्ट शक्तियां, जो समय और स्थान को भरती हैं, मनुष्यों की सामान्य दृष्टि और अवलोकन से परे हैं।

यह एक उत्कृष्ट एवं भयावह अवधारणा है। यह मेरे दिमाग पर प्रेतवाधित घरों के विचार से उत्पन्न प्रभाव जैसा कुछ उत्पन्न करता है। "क्या आप कभी अकेले किसी घर में गए हैं? आप साहसी हैं। आप भूतों या आत्माओं में विश्वास नहीं करते हैं। आप विश्वास नहीं करते हैं कि प्रेतवाधित घर जैसी कोई चीज होती है; फिर भी, मंद चांदनी के शांत समय में, आप सुनते हैं गूँजते कदमों की आवाज़, आप जल्द ही बेहतर हिस्से के लिए विवेक प्राप्त कर लेते हैं, और बिना किसी देरी के, नीच उपस्थिति के प्रति सचेत होकर सेवानिवृत्त हो जाते हैं।

"ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस बात पर विश्वास नहीं करते कि यह दुनिया बुरी आत्माओं का साम्राज्य है। वे यह नहीं मानते कि ऊपर का विस्तृत स्वर्ग प्रेतवाधित है; न ही यह कि नीचे की दुनिया प्रेतवाधित है; न ही यह कि कानून और रीति-रिवाज, और रीति-रिवाज, और सुख, और विभिन्न गतिविधियाँ प्रेतवाधित हैं। वे आत्माओं द्वारा कब्ज़े के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते हैं, फिर भी, मैं आपको स्वीकार करता हूँ, मेरे मन में कुछ बहुत गहरा है।

इस विचार में विश्वास कि दुनिया आत्माओं से भरी हुई है, अच्छी और बुरी, उनके विभिन्न कार्य, और जिसे हम अपनी इन चमगादड़ आँखों से बहुत कम देख सकते हैं, जिसे हम अपनी अपूर्ण इंद्रियों से देख सकते हैं। जैसा कि आप समझ सकते हैं, यह उस महान पुस्तक के उन विशाल पृष्ठों को पढ़ने का पूरा हिस्सा नहीं है जिसे भगवान ने लिखा है। ईश्वर और अदृश्य क्षेत्र के ज्ञान में हमारा दर्शन जितना सोच सकता है, उससे कहीं अधिक है।

"मानव जीवन के खतरे के इस दृष्टिकोण के खिलाफ, क्योंकि यह हर तरफ से कई शक्तियों, संभावित और उत्कृष्ट, से घिरा हुआ है, जिसका अर्थ केवल बुराई है - इस दृष्टिकोण के खिलाफ, कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि भगवान की कृपा अवतार लेने वाली आत्माओं को अनुमति नहीं देगी पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच शैतानी कार्य करो।

जवाब में, मुझे केवल इतना कहना है कि वह, आपकी आंखों के सामने, पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच अवतारी आत्माओं को शैतानी कार्य करने की अनुमति देता है; और वो भी कई सालों तक. यदि राक्षस कुछ मनुष्यों से भी बदतर हैं, तो मुझे नरक के लिए खेद है! यदि इस लोक की अपेक्षा परलोक में अधिक बुराई, अधिक द्वेष, अधिक स्वार्थ, अधिक हृदयहीनता, अधिक क्रूरता है, तो मैं ग़लत हूँ।

"मुझे नहीं लगता कि आत्मा बदतर है क्योंकि उसने अपना शरीर खो दिया है। मुझे आशा है कि यह बेहतर है। हम ऐसी आत्माओं को देखते हैं जो बहुत बुरी हैं, बहुत भ्रष्ट हैं। और यह सब कुछ नहीं है; वे न केवल प्यार करते हैं, बल्कि वे प्यार भी करते हैं जो लोग गलत करते हैं, और जो लोग सही करते हैं, उनसे नफरत करते हैं और उन्हें उनके स्तर पर लाने की कोशिश करते हैं।

और क्या दुनिया का दुष्ट लोगों से भर जाना दयालु ईश्वर के चरित्र के साथ असंगत है? और यदि ईश्वर देहधारी आत्माओं को बुराई करने की अनुमति देगा, तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि अशरीरी आत्माओं को ऐसा करने की अनुमति देना ईश्वर की दया के विरुद्ध है! यह एक ऐसी बात है जो सभी विवादों से परे है, कि भगवान बुरी आत्माओं को इस दुनिया में पूर्ण शक्ति के साथ काम करने की अनुमति देता है, जहां तक उनकी अपनी इच्छा के क्षेत्र का संबंध है।

बुरे लोगों में भी अच्छे लोगों की तरह ही शक्ति होती है, उनकी शिक्षा और अनुभव के अनुसार; और उन्हें अपनी शक्ति का उपयोग करने का उतना ही अवसर मिलता है जितना अच्छे लोगों को मिलता है। ईश्वर अपना सूर्य बुरे और अच्छे दोनों पर समान रूप से उगता है, और न्यायी और अन्यायी दोनों पर समान रूप से वर्षा करता है। इस संसार में दुष्टों का उचित क्षेत्र और पूर्ण प्रभुत्व है। और आपको यह क्यों मान लेना चाहिए कि बुरी आत्माओं के पास ऐसा नहीं है?

मुझे लगता है कि इस मामले में आधुनिक मूर्खता बेतुकेपन की सीमा पर है। लोग इस विषय पर अपनी सामान्य समझ से दूर होते जा रहे हैं। "एक दुष्ट आत्मा पूरी तरह से परिष्कृत हो सकती है, सीखी जा सकती है। इस विषय पर विचार करते समय हमारा पहला विचार यह है कि बुरी आत्मा अवश्य ही एक अश्लील चीज़ होगी। निस्संदेह वहाँ अश्लील आत्माएँ हैं; लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि जो आत्माएं सबसे अधिक संभावित हैं, और जिनसे सबसे ज्यादा डरना चाहिए, वे ही अश्लील हैं।

इसके विपरीत, जहां आत्माएं अवतरित होती हैं, वहां यह माना जाता है कि जो लोग सबसे अधिक सुसंस्कृत होते हैं वे बुराई के लिए सबसे अधिक शक्तिशाली होते हैं। सबसे उत्कृष्ट कलाकार, सबसे चतुर और सूक्ष्म राजनेता, जिनके पास सबसे मिलनसार और सराहनीय तरीके हैं, जिनके

पास भ्रष्ट लॉबी-षड्यंत्रकारियों के समान योग्यताएं हैं, उन्हें सबसे अधिक शरारत करने में सक्षम माना जाता है।

और मैं समझ सकता हूं कि बुराई की भावना, विचित्र कैलीबन, अशिष्ट, पतित और सबसे निचले जुनून का प्रतिनिधित्व करने से दूर, बुद्धि से बनी होनी चाहिए, हाँ, और कुछ हद तक नैतिक भावना से, गर्व से तीव्र। , उग्र और क्रूर.

किसी व्यक्ति के पास जितना अधिक ज्ञान होगा, जब तक कि वह नैतिक न्याय और सच्चे ज्ञान द्वारा नियंत्रित न हो, वह उतनी ही अधिक बुराई कर सकता है। जालसाज़ निश्चित रूप से अच्छे लेखक होते हैं। बैंक डिफॉल्टर उत्कृष्ट अकाउंटेंट बनते हैं। चोर विशेषज्ञ यांत्रिक ताले तोड़ने वाले होते हैं। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. वेब ने एच.आर. पार्कमैन की हत्या कर दी। महान, महत्वाकांक्षी युद्ध सेनापति जो लाल युद्धक्षेत्रों में अपने हजारों लोगों को मारते हैं, वे बौद्धिक व्यक्ति हैं; और फिर भी, युद्ध के पुरुष, श्वेत पुरुष; इस तरह वे मर जाते हैं, और इस तरह बुरी आत्माएं बन जाते हैं, जिन पर कब्ज़ा हो जाता है।

इन बातों को जानते हुए, 'हम मांस और खून के खिलाफ नहीं, बल्कि रियासतों के खिलाफ, शक्तियों के खिलाफ, इस दुनिया के अंधेरे के शासकों के खिलाफ, स्वर्गीय स्थानों में दुष्ट आत्माओं के खिलाफ कुश्ती लड़ते हैं।' "इस धारणा के विरुद्ध कोई धारणा नहीं है कि कुछ आत्माएं हैं जिनका कार्य विशेष क्षमताओं के साथ हमला करना है।

मैं सादृश्य के माध्यम से नहीं, बल्कि उदाहरण के माध्यम से कह सकता हूं कि ऐसा कोई पत्ता नहीं उगता जिसमें परजीवी न हों। हाँ, गेहूँ और जंगली बीज एक साथ उगते हैं। प्रकाश के देवदूत, धन्य आत्माएँ, ईश्वर के सेवक भी हैं।

मेरा मानना है कि वे न केवल हमारे प्राकृतिक रक्षक, मित्र, शिक्षक और प्रभाव हैं, बल्कि वे बुरी आत्माओं के प्राकृतिक विरोधी भी हैं। दूसरे शब्दों में, मेरा मानना है कि जीवन का महान क्षेत्र नश्वर शरीर के बिना भी चलता है, जैसे शरीर के साथ चलता है। और, चूँकि यहाँ माँ न केवल अपने बच्चों की संरक्षक है, जिनसे वह प्यार करती है, बल्कि यह भी देखती है कि बुरे साथी और बुरे प्रभाव उन्हें धमकाते हैं, और उन्हें वापस खींचती है और आसन्न खतरे से बचाती है;

इसलिए ईश्वर के ये सेवक न केवल हमें दिव्य प्रवृत्तियाँ, शुद्धतम स्वाद, श्रेष्ठ विचार और भावनाएँ प्रदान करते हैं, बल्कि हमारे शत्रुओं को पहचानकर, हमें उनके विरुद्ध चेतावनी देते हैं, और उन पर आध्यात्मिक रूप से हमला करते हैं, और उन्हें हमसे दूर कर देते हैं। हैं।

लेकिन वे सर्वशक्तिमान नहीं हैं. केवल ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है। "उच्च स्तर पर इन बुरी आत्माओं से हमारी सुरक्षा स्थानों में न्यायपूर्ण और ईमानदार जीवन जीना, स्वच्छ, गैर-वासनापूर्ण आदतों को अपनाना, एक शांत धार्मिक भावना विकसित करना, अच्छे लोगों की संगति करना, परिष्कृत, सामाजिक और सामंजस्यपूर्ण. अपने आप को वातावरण से घिरा रखना, और हमेशा देवदूत सहायकों की उपस्थिति का आह्वान करना, और भगवान पर एक स्थायी भरोसा रखना।

<u>दूसरा अध्याय</u>

चीनी अध्यात्मवाद-क्वो परिवार में एक दानव

ज्ञान इंद्रिय बोध, अंतर्ज्ञान, कारण और उच्च निर्णय के माध्यम से आता है। मैंने अभी तक चीनी साम्राज्य में एक यात्री और खोजकर्ता के रूप में अपने मानसिक अवलोकनों और अनुभवों का उल्लेख नहीं किया है। अंग्रेजी अधिकारी, अमेरिकी मिशनरी, मंदारिन और कई चीनी साहित्यकार (कन्फ्यूशियस, ताओवादी और बौद्ध अनुयायी) घोषणा करते हैं कि किसी न किसी रूप में और किसी नाम के तहत अध्यात्मवाद चीन की लगभग सार्वभौमिक मान्यता है। इसे आम तौर पर "पूर्वज पूजा" कहा जाता है।

फादर गोंज़ालो कहते हैं, "ये चीनी लोग इस शापित विश्वास से बाहर नहीं निकल सकते कि उनके पूर्वजों की आत्माएँ हमेशा उनके आसपास रहती हैं, सलाह देने और परामर्श देने के हर अवसर का लाभ उठाती हैं।" डॉ. डूलिटल टिप्पणी करते हैं, "जिस माध्यम से परामर्श किया जाना है वह सभी

अशुद्ध प्रभावों को दूर करने के लिए हाथ में जलती हुई धूप की एक छड़ी लेता है, फिर किसी प्रकार की प्रार्थना दोहराई जाती है, शरीर में ऐंठन होने लगती है, माध्यम आँखें बंद कर लेता है, और आकृति हिल जाती है के बारे में, मानो आत्मा की गति और अजीब रवैया शुरू हो जाता है, जो गलती ढूंढने वाला या चापलूसी करने वाला हो सकता है।

तू सेन का अर्थ है शरीर में आत्मा, और यह कुछ चीनी लोगों के शरीर में रहने वाली ज्ञात आत्माओं का एक वर्ग है जो अदृश्य दुनिया के साथ संचार के माध्यम बन गए हैं। जिन व्यक्तियों के बारे में कहा जाता है कि वे इन आत्माओं से ग्रस्त हैं, उनसे कई लोग मिलने आते हैं, विशेषकर वे लोग जिन्होंने हाल ही में मृत्यु के कारण अपने रिश्तेदारों को खो दिया है, और उनसे बातचीत करना चाहते हैं। , , , ,

माना जाता है कि बांस पेंसिल की अनैच्छिक हरकतें उल्लेखनीय रहस्योद्घाटन और रहस्योद्घाटन उत्पन्न करती हैं, और इसी तरह की विधि से कुछ लोग अंधेरे में देखने का दावा करते हैं। जो लोग खुद को श्रेष्ठ बुद्धि से संपन्न मानते हैं, वे आत्माओं से सलाह लेने के इन और अन्य तरीकों में दृढ़ विश्वास रखते हैं।

चीनी लोग जुए के लिए मशहूर हैं. यह उनका मुख्य शाम का मनोरंजन/शगल है, और उनके लोकप्रिय राक्षसों में से एक, जिससे वे भाग्य के लिए परामर्श करते हैं, उसे जुआरियों का भगवान कहा जाता है। वे इसकी छवि के सामने झुकते हैं, आह्वान करते हैं और प्रार्थना करते हैं।

डॉ. नेवियस कहते हैं, "1877 के वसंत में, मैंने मध्य शानतुंग में अकाल-राहत कार्य में भाग लिया; और ट्विन माउंटेन स्ट्रीम में कुछ जिज्ञासुओं से मिलने के दौरान, मेरी मुलाकात किंग-किआ प्रथम गांव में रहने वाले क्वो नामक एक परिवार से हुई। एक युवक के बारे में बताया गया जो एक दुष्ट आत्मा के कारण विभिन्न कष्टों से पीड़ित था, और यह निर्णय लिया गया कि हमें उससे मिलना चाहिए।

हमने मिस्टर क्वो को खेतों में काम करते हुए पाया, जहां मेरी उनसे बातचीत हुई, जो इस प्रकार थी: "मैंने सुना है कि आप एक बुरी आत्मा से परेशान थे।" "उन्होंने उत्तर दिया, 'यह सच है, और सबसे अपमानजनक। मैं, एक पूर्णतः स्वस्थ व्यक्ति, इस राक्षस का गुलाम बन जाऊं, यह मेरे जीवन की परीक्षा है; लेकिन इसके लिए कोई मदद नहीं है।'

"'मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मदद है/ मैंने कहा।

'तुम्हारा मतलब क्या है?' उसने पूछा। 'मैं आपको बताता हूं/' मैंने उत्तर दिया। 'मेरी सगाई ईसाई धर्म के एक विदेशी शिक्षक से हुई है, जो अक्सर पूर्व के क्षेत्र का दौरा करता है।' ...इस बीच हम उसके घर पहुँच चुके थे, और उसने मुझे वह मंदिर दिखाया जहाँ वह राक्षस की पूजा करता था। . तब मैंने उनसे कहा कि सबसे पहले इस मंदिर को तोड़ देना चाहिए. इस पर वह तुरंत राजी हो गये. , , ,

रास्ते में मुझे उसके पिछले जीवन के बारे में और भी बहुत कुछ पता चला। वह कभी स्कूल नहीं गया, और हाल तक वह पढ़ नहीं सका। इसके अलावा (और यह चीन में बहुत असामान्य है) उसके गांव में कोई भी नहीं पढ़ सकता था। वह एक साहसी पर्वतारोही था, अड़तीस साल का, चतुर और मनोरंजक, उसकी शक्ल-सूरत में ऐसा कुछ भी नहीं था जो अस्वस्थ या असामान्य लगे। जब मैं उसके घर पहुँचा तो दोपहर हो चुकी थी।

मुझे तुरंत स्वागत कक्ष में ले जाया गया, जहाँ पहले दुष्ट आत्मा की पूजा की जाती थी। ...तब मैंने उनकी पत्नी और उनके पिता से भी इस विषय पर लंबी बातचीत की। सभी अलग-अलग विवरण अपने-अपने विवरण के पूरक और पुष्टि करते हैं, और हर महत्वपूर्ण विवरण में सहमत होते हैं। मैं ये बयान वैसे ही दे रहा हूं जैसे ये मुझे मिले थे।

मैं प्रस्तुत घटनाओं के संबंध में कोई राय नहीं देता. निःसंदेह, श्री क्वो ने बेहोशी की हालत में क्या कहा और क्या किया, इसके बारे में उनके बयान उनके आसपास के लोगों की गवाही पर निर्भर करते हैं।

आत्मा द्वारा जुआरी के अड्डे तक ले जाया गया।

"निम्नलिखित कहानी, उनके अपने शब्दों में, इस प्रकार है: "पिछले साल (1875) के अंत में, मैंने कई तस्वीरें खरीदीं, जिनमें से एक यू-हवांग (द) की पत्नी वांग-मु-नियांग की थी। चीन के इस हिस्से में प्रमुख देवता)। किया।

देवी, वांग मु-नियांग के लिए, मैंने घर में सबसे सम्मानजनक स्थान चुना; बाकी मैंने सजावट के तौर पर दीवारों पर इधर-उधर चिपका दिया। पहले महीने के दूसरे दिन मैंने देवी की पूजा करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन मेरी पत्नी ने विरोध किया।

अगली रात एक आत्मा सपने में आई और मुझसे बोली, 'मैं युइन-मेन सैन (पड़ोसी पर्वत का नाम) का वांग-मु-नियांग हूं। मैंने आपके घर में अपना निवास स्थान बना लिया है।" यह बार-बार कहा गया, और मैं जाग गया और आत्मा की उपस्थिति के प्रति सचेत हो गया। मुझे पता था कि यह एक शि-क्यूई (बुरी आत्मा) थी, और इस तरह, मैं विरोध किया, और यह कहते हुए शाप दिया: "मुझे तुमसे कोई लेना-देना नहीं है।" यह मेरी पत्नी ने सुना और यह जानने के लिए विनती की कि मैंने उससे क्या कहा था।

इसके बाद सब कुछ शांत हो गया और कुछ दिनों तक मुझे कोई परेशानी नहीं हुई.' लगभग एक सप्ताह बाद, मैं बेचैनी और बेचैनी की भावना से उबर गया जिसे मैं नियंत्रित नहीं कर सका। रात को मैं हमेशा की तरह बिस्तर पर गया, लेकिन मेरी बेचैनी बढ़ गई. आख़िरकार, एक अदम्य आवेग ने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया। मैं अपने बिस्तर से उठा और सीधे काओ-किआ में एक जुए के अड्डे पर गया, जहाँ मैं एक बार में 16,000 नकद (सोलह डॉलर) हार गया, जो एक किसान चीनी के लिए बहुत बड़ी रकम थी।

मैं घर के लिए निकला और रास्ता भूल गया; लेकिन जब उजाला हो गया तो मैं अपने घर वापस आ गया. उस समय मुझे इस बात का एहसास था कि मैं क्या कह रहा हूं और क्या कर रहा हूं, लेकिन मैंने चीजें यंत्रवत तरीके से कीं और जल्द ही भूल गया कि मैंने क्या कहा था। मैंने खाने की परवाह नहीं की और केवल आग्रह करने पर ही खाया। कुछ दिनों के बाद काओ-किआ से एक जुआरी आया और उसने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा, मैंने वैसा ही किया और इस बार मैं 25,000 नकद हार गया। पहले महीने की पंद्रहवीं और सोलहवीं तारीख को, मैं पे-ता गया, जहां एक थिएटर था। उसी रात मैं फिर जुए में 13,000 नकद हार गया.

अगली सुबह मैं वहां से लौटा और जैसे ही अपने गांव में प्रवेश कर रहा था, मेरे मुंह से झाग निकलने लगा और मैं बेहोश हो गया; और मुझे मेरे घर ले जाया गया. मुझे दवा दी गई जिससे मैं आंशिक रूप से होश में आ गया। अगले दिन मैंने अपने कपड़े पहने. आत्मा ने आकर मुझे घर से निकालना चाहा, परन्तु शीघ्र ही मैं लड़खड़ाने लगा; और सब कुछ अँधेरा हो गया, और

मैं वापस अपने कमरे में भाग गया। मैं जल्द ही हिंसक हो गया और जो भी मेरे पास आया, उस पर हमला करने लगा।

जब मेरे पिता ने स्थिति की खबर सुनी, तो वह मुझे देखने के लिए जल्दी से अपने घर से बाहर भागे। 'जैसे ही वह अंदर आया, मैंने एक गंदा टुकड़ा उठाया, जिसे मैंने अपने बिस्तर के नीचे छुपाया था, और उस पर रगड़ दिया। सौभाग्य से, आरोप उसके सिर के ऊपर से छत तक चला गया। पड़ोसियों की मदद से मेरे पिता ने मुझे जंजीरों से बांध दिया और चांग-यीउ में अपने घर ले गए।

वहाँ एक डॉक्टर था, मुझे दवा की बहुत ऊँची खुराकें दी गईं, लेकिन कोई असर नहीं हुआ और वह चला गया, उसने मुझे और काम करने से मना कर दिया। मैं पांच-छह दिन तक बहुत बड़बड़ाता रहा और मेरे दोस्त बहुत परेशान हो गये. उसने मुझे और दवाएँ देने की पेशकश की, लेकिन मेरे भीतर बैठे शैतान ने उत्तर दिया: "किसी भी मात्रा में दवा बेकार होगी।" मेरी माँ ने फिर पूछा: “अगर दवा बेकार है, तो हमें क्या करना चाहिए?

राक्षस को भगाने के लिए धूप जलाना।

राक्षस ने उत्तर दिया: 'मेरे लिए धूप जलाओ और मेरे अधीन हो जाओ, और सब ठीक हो जाएगा।' मेरे माता-पिता ने ऐसा करने का वादा किया, और अपने घुटनों पर बैठकर राक्षस की पूजा की, और उससे विनती की कि वह मुझे और अधिक पीड़ा न दे। इस तरह मामला तय हो गया, मैं हर वक्त बेहोश रहा. आधी रात के करीब मैंने घर से निकलने की कोशिश की. नौकर मेरे पीछे आये और मुझे वापस ले आये और फिर बाँध दिया।

तब मेरे माता-पिता ने दूसरी बार राक्षस की पूजा की, उससे मुझे मेरे कष्टों से मुक्त करने की प्रार्थना की, और अपना वादा दोहराया कि अब से वे स्वयं उसकी पूजा और सेवा करेंगे।

तब मैं होश में आया, और मेरी माँ ने मुझे वह सब कुछ बताया जो घटित हुआ था, और जो वादा उसने मुझसे किया था। इस पर सहमति देने से

इनकार करते हुए मैं फिर बेहोश हो गया. मेरी माँ ने मेरी आज्ञाकारिता पर जोर देने के अपने वादे को दोहराते हुए राक्षस के क्रोध को शांत किया और होश में आ गईं। अपने बड़े संकट में, मेरे पिता और माँ ने मुझसे अपना वादा निभाने और दुष्ट आत्मा की पूजा करने की विनती की। आख़िरकार, मैं अनिच्छा से सहमत हो गया।

राक्षस ने निर्देश दिया था कि हम एक निश्चित महिला, काओ-चाओ, जो एक आध्यात्मिक माध्यम थी, को बुलाएं ताकि वह हमें पूजा के लिए हमारे स्थान की व्यवस्था करने का निर्देश दे सके। इसलिए सब कुछ क्रम में आ गया, और प्रत्येक महीने की पहली और पंद्रहवीं तारीख को हम धूप जलाते थे, भोजन चढ़ाते थे, और उस मंदिर के सामने आवश्यक साष्टांग प्रणाम करते थे जिस पर देवी की छवि रखी गई थी।

आत्मा कभी-कभी कुछ दिनों के अंतराल पर आती थी, और कभी-कभी एक महीने या उससे अधिक की अवधि के बाद, और निर्देश देती थी जिसे वह बाद में मुझे बताता था, क्योंकि, मेरे अपने होठों से बोले जाने के बावजूद, मैं उनसे पूरी तरह से अनजान था। . राक्षस ने कहा कि उसके नियंत्रण में कई निचली आत्माएं हैं।

“मैं यह टिप्पणी करना चाहूंगा कि लैंग की यात्रा के बारे में श्री क्वो का विवरण ऊपर दिए गए विवरण से बिल्कुल मेल खाता है।

हालाँकि, श्री क्वो ने निम्नलिखित जोड़ा: 'हमारे बच्चे की मृत्यु हो गई,' उन्होंने कहा, 'आत्मा मंदिर के विध्वंस के कुछ दिनों बाद। मेरी पत्नी बहुत दुःखी हुई, उसने सोचा कि यह मेरे द्वारा राक्षस को क्रोधित करने का परिणाम है। उन्होंने मुझसे मंदिर का पुनर्निर्माण करने और पूजा फिर से शुरू करने का आग्रह किया।"

इन दुष्ट आत्माओं/राक्षसों के बारे में एक शिक्षक की गवाही।

चेन सिन लिंग (डब्ल्यू.जे. प्लम्ब) में लोक शिक्षक कहते हैं: "तू-चिंग जिले में बुरी आत्माओं या राक्षसों का कब्ज़ा बहुत आम है।" वह आगे लिखते हैं कि "चांग-लो में भी कई मामले हैं।" फिर वह कहता है: "जब कोई व्यक्ति इस तरह से पीड़ित होता है, तो आत्मा (केवेई) उसके शरीर पर कब्ज़ा कर लेती है, इस बात की परवाह किए बिना कि वह स्वस्थ है या कमज़ोर। किसी राक्षस की शक्ति का विरोध करना आसान नहीं है। बिना शारीरिक बीमारी के भी प्रभावित व्यक्ति बीमार दिखाई देता है।

जब किसी राक्षस के वश में हो जाते हैं, तो वे अपने सामान्य स्वरूप से भिन्न दिखाई देते हैं। "ज्यादातर मामलों में आत्मा किसी व्यक्ति के शरीर पर उसकी इच्छा के विरुद्ध कब्ज़ा कर लेती है, और वह इस मामले में असहाय होता है। केवी में किसी व्यक्ति की आत्मा को नियंत्रित करने की शक्ति होती है, जैसे नींद या सपने के दौरान। जब व्यक्ति को होश आता है तो उसे पता नहीं चलता कि क्या हुआ है.

"आवेशित व्यक्तियों के कार्य बहुत भिन्न होते हैं। वे ऊपर-नीचे कूदते हैं और अपनी भुजाएँ लहराते हैं, और फिर राक्षस उन्हें बताता है कि वह कौन सी आत्मा है, अक्सर गलत नाम लेता है या धोखे से खुद को भगवान या जिन्नों में से एक कहता है जो मनुष्यों के निवास पर आते हैं। या, शायद, यह किसी मृत पति या पत्नी की आत्मा होने का दावा करता है। शांत किस्म के केवी भी होते हैं, जो दूसरे लोगों की तरह बात करते हैं और हंसते हैं, बस उनकी आवाज बदल जाती है।

कुछ की आवाज पक्षी जैसी होती है. कुछ लोग मंदारिन - उत्तरी चीन की भाषा - और कुछ स्थानीय बोलियाँ बोलते हैं; परन्तु यद्यपि वाणी मनुष्य के मुख से निकलती है, तौभी जो कहा जाता है वह उसकी ओर से निकलता हुआ प्रतीत नहीं होता। बाहरी रूप और शैली भी बदल जाती है। "फू-शो में ऐसे लोगों का एक वर्ग शामिल है जो बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं और धूप, चित्र, अगरबत्ती और लैंप का उपयोग करके 'सेंसर' स्थापित करते हैं। समारोहों में संचालन के लिए ताओवादी पुजारियों को नियुक्त किया जाता है, और वे माध्यमों का भी उपयोग करते हैं।

ताओवादी माध्यम के लिए एक ताबीज निर्धारित करता है, जो हाथ में अगरबत्ती पकड़े हुए एक नक्काशीदार छवि की तरह खड़ा होता है, इस

प्रकार यह दर्शाता है कि वह चाहता है कि राक्षस उसके पास आए और उसे अपने कब्जे में ले ले। इसके बाद, ताबीज को जला दिया जाता है और राक्षस-आत्मा की पूजा की जाती है और उसका आह्वान किया जाता है, इस बीच पुजारी अपना मंत्रोच्चार जारी रखता है। थोड़ी देर के बाद, माध्यम कांपने लगता है, और फिर बोलता है और घोषणा करता है कि कौन सी आत्मा उतरी है, और उससे पूछता है कि वह क्या चाहता है।

फिर, जो कोई पूछना चाहता है, वह धूप लेकर, साष्टांग प्रणाम करता है, और किसी बीमारी या विपत्ति से बचाव के संबंध में उत्तर मांगता है। यही प्रदर्शन सर्दियों में जुआ कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाता है। यदि कुछ उत्तर सही होते हैं तो बड़ी संख्या में लोग आकर्षित होते हैं। वे एक मंदिर स्थापित करते हैं और बलिदान चढ़ाते हैं, और दिन तय करते हैं, हर तरफ से लोगों को बुलाते हैं और बीमारियों के बारे में आत्मा से सलाह लेते हैं।

आत्मा के रहस्योद्घाटन के लिए मंदिर।

ऐसे लोगों का एक वर्ग भी है जो 'रहस्योद्घाटन के हॉल' स्थापित करते हैं। वर्तमान समय में कई लोग इस प्रथा में लगे हुए हैं। वे अधिकतर महान योग्यता वाले साहित्यिक व्यक्ति हैं। फीडबैक के लिए बड़ी संख्या में लोग उनसे संपर्क करते हैं. ऊपर वर्णित कई माध्यम हैं। उपरोक्त सभी प्रथाएं आत्माओं द्वारा मनुष्यों पर कब्ज़ा करने का प्रयास नहीं हैं; बल्कि, वे आत्माओं के माध्यम से मनुष्यों को वश में करना चाहते हैं, और स्वेच्छा से स्वयं को उनके उपकरण के रूप में उपयोग करने की अनुमति देते हैं।

“जब कोई व्यक्ति अपने बाहरी स्वरूप के नियंत्रण में होता है, तो निःसंदेह, वह बाहरी रूप से वैसा ही व्यक्ति होता है जैसा सामान्य समय में होता था; लेकिन चेहरे का रंग बदल सकता है. दानव व्यक्ति को खतरनाक माहौल और उग्र, हिंसक तरीके से पेश कर सकता है। अक्सर चेहरे की मांसपेशियाँ उभरी हुई होती हैं, आँखें बंद होती हैं, या वे डरावनी दृष्टि से देखती हैं। ये राक्षस कभी-कभी भविष्यवाणियाँ करते हैं।

बोले गए शब्द निश्चित रूप से आविष्ट व्यक्तियों के मुख से निकलते हैं; लेकिन जो कहा गया है वह स्पष्ट नहीं है - ऐसा लगता है कि यह उनके मन या इच्छा से नहीं, बल्कि किसी अन्य व्यक्तित्व से आया है, जिसकी आवाज़ अक्सर बदलती रहती है। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता. जब व्यक्ति को होश आता है तो वह हमेशा अपनी कही हुई बातों से खुद को अनभिज्ञ बताता है।

चीनी लोग राक्षसों को भगाने के लिए कई तरह के तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। वे शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली पीड़ा, या पत्थर फेंकने, फर्नीचर हिलाने, या परिवार के बर्तनों को हिलाने और नष्ट करने से इतने परेशान और बेचैन हो जाते हैं कि वे एक सम्मानित विद्वान या ताओवादी पुजारी की सेवाएं लेते हैं, उन्हें बलिदान देने या पवित्र पुस्तकों का जाप करने के लिए मजबूर किया जाता है। और पीड़ा से सुरक्षा और मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।

कुछ लोग दानव को यान-चो के उदास क्षेत्र में वापस भेजने के लिए कागज के कपड़े और पैसे के बलिदान और प्रसाद का उपयोग करते हैं। ...मुझे नहीं पता कि इन तरीकों का कोई असर होता है या नहीं। एक नियम के रूप में, जब राक्षस अधिक परेशानी नहीं पैदा करते हैं, तो उनसे पीड़ित परिवारों को आमतौर पर अपनी पीड़ा को छुपाना या उनके लिए बलिदान देकर और धूप जलाकर इन बुरी आत्माओं को खुश करना सबसे अच्छा लगता है।

चीन में जुनून और प्लैंचेट पुराना।

14 अक्टूबर के लंदन डेली न्यूज में श्रीमती मोंटेग ब्यूचम द्वारा चीनी भाषा पर एक संबोधन के लंबे उद्धरण दिए गए हैं, जिन्होंने शैक्षिक कार्यों के लिए चीन में कई साल बिताए थे। अपने धर्म के बारे में बोलते हुए,

उन्होंने कहा, लंदन में प्लांचेट का उपयोग करने का नवीनतम चलन प्राचीन काल से चीन में बुरी आत्माओं से बातचीत करने के मान्यता प्राप्त साधनों में से एक रहा है। वह एक विशेष प्रांत में रहती थी जिसे दानव भूमि के नाम से जाना जाता था, जहां के मूल निवासी बंधे हुए थे।

आत्माओं में विश्वास और पूजा. "इस भूत भगाने में एक वास्तविक शक्ति है," उसने कहा। वे उपचार करते हैं और भविष्य बताते हैं।" वह व्यक्तिगत रूप से एक घटना के बारे में जानती थी जिसमें आत्माओं ने एक प्लैंचेट के माध्यम से एक बड़ी बाढ़ की भविष्यवाणी की थी। बॉक्सर के उदय की भविष्यवाणी एक प्लैंचेट द्वारा की गई थी। इन आत्माओं ने रिश्तों को खराब कर दिया, मुंह में झाग पैदा किया और चला दिया उसके कुछ पीड़ित पागल हैं।

समापन में उन्होंने घोषणा की कि "चीनियों पर नरक के राक्षसों का कब्ज़ा था," एक ऐसा जुनून जो ईसाई मिशनरियों और मूल चीनी पुजारियों दोनों की शक्ति को चकित कर देता है।

अध्याय III.

दुष्ट आत्माओं के कार्यों के संबंध में नेवियस परिपत्र की प्रतिक्रियाएँ।

निम्नलिखित वांग वू-फैंग के संचार से एक उद्धरण है: 'भूतों के मामले सभी वर्गों में प्रचुर मात्रा में हैं। ये स्वस्थ व्यक्तियों के साथ-साथ कमजोर और बीमार व्यक्तियों में भी पाए जाते हैं। जुनून के कई निर्विवाद मामलों में, अनिच्छुक विषयों ने विरोध किया है, लेकिन खुद को राक्षस के नियंत्रण में सौंपने के लिए मजबूर किया गया है। , , , ,

ज्यादातर मामलों में, बीमारी की शुरुआत दुःख, क्रोध या शोक की अवधि से होती है। ये स्थितियाँ राक्षसों के लिए द्वार खोलती हैं। बाह्य अभिव्यक्तियाँ उग्र एवं हिंसात्मक हैं। ऐसा हो सकता है कि विषय बारी-बारी से बात करे और हँसे; वह कुछ देर चलता है और फिर बैठ जाता है, या ज़मीन पर लोटता है, या कूद जाता है; या शरीर में विकृति और गर्दन में ऐंठन प्रदर्शित करता है। ,

उनके बीच ओझाओं को बुलाना आम बात थी, जो लिखित मंत्रों का इस्तेमाल करते थे, या छंदों का उच्चारण करते थे, या शरीर को सुइयों से छेदते थे। ये चीनी उपचार पद्धतियों में से हैं। "राक्षस विभिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जो स्वयं को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं; और फिर वे जो गुप्त रूप से काम करते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें कठिनाई से बाहर निकाला जाता है, और कुछ आसानी से। से। से।

परिचित राक्षसों द्वारा कब्जे के मामलों में, विषय द्वारा जो कहा जाता है वह निश्चित रूप से उसकी अपनी मर्जी से नहीं होता है। जब दानव मर जाता है और विषय होश में आ जाता है, तो उसे कुछ भी याद नहीं रहता कि उसने क्या कहा या किया। यह लगभग हमेशा सत्य है.

चीनी लोग राक्षसों को भगाने के लिए जिन तरीकों का इस्तेमाल करते हैं, वे हैं ताबीज और कागजी मुद्रा जलाना, या उनसे भीख माँगना या उन्हें उकसाना, या उन्हें जादू-टोना और मंत्रों से डराना, या उन्हें सुइयों से चुभाना या उंगलियों से चुभाना। , जिस स्थिति में वे चिल्लाते हैं और छोड़ने का वादा करते हैं। - पहले मुझे सुइयों से राक्षसों को भगाने की आदत थी। उस समय हमारे गांवों में बुरी आत्माओं के कब्जे के मामले बहुत आम थे, और मेरी सेवाओं की बहुत मांग थी। ,

एक दानव को निष्कासित करना कठिन

“इस साल (1880) के पहले महीने की पच्चीस तारीख को मुझे एक और मामला मिला। वह व्यक्ति, जो तेईस वर्ष का था, ली माओ-लिन के दूसरे बेटे की पत्नी थी। जब वह राक्षस के प्रभाव में थी, तो वह जंगली और बेकाबू

हो गई। यह छह दिनों तक बिना किसी रुकावट के चलता रहा। परिवार ने 'वू-पो' (मध्यम, शाब्दिक रूप से महिला जादूगरनी) और सुइयों से इलाज करने वाले लोगों से संपर्क किया, लेकिन सफलता नहीं मिली।

वे अपनी बुद्धि के अंत पर थे, और, अन्य सभी उपाय विफल होने के बाद, ली त्सो-यूएन नाम का एक व्यक्ति मेरे पास आया और आवेदन किया। मैंने जाने से इनकार कर दिया, लेकिन उन्होंने मुझसे कम से कम उनसे मिलने जाने का आग्रह किया, जिसे करने के लिए मैं तैयार हो गया। जब हम घर में दाखिल हुए तो वह भीड़ से घिरी हुई थी और उसका शोर बंद नहीं हुआ था.

जब उन्हें पता चला कि हम आ रहे हैं, तो उपस्थित लोगों ने हमारे लिए रास्ता खोल दिया, और वह महिला तुरंत बैठ गई, अपने बाल ठीक किए, और आश्चर्य से पूछा, 'यहाँ इतने सारे लोग क्यों हैं? हैं?' उसके पति ने उसे बताया कि वह पिछले कई दिनों से क्या कर रही थी। उन्होंने आश्चर्य से कहा, 'मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता।' लोगों ने इसे बड़ा आश्चर्य समझा कि मेरे घर में प्रवेश करते ही वह जीवित हो उठा; और निस्संदेह, मैं परिणाम के लिए बहुत आभारी था।

, , , , "हमारे उपदेश में, लोगों को यह बताने में सक्षम होना कि हमारे पवित्र धर्म में राक्षसों को बाहर निकालने और बीमारियों को ठीक करने की शक्ति है, इस प्रकार भगवान के प्रेम और दया को प्रकट करना, निश्चित रूप से सुसमाचार के प्रसार में एक बड़ा अंतर लाएगा। सहायता है। "तू वांग-किआ गांव में वांग पैन-हू नाम का एक व्यक्ति रहता है, जो ईसाई बनने के बाद पूरी तरह से मुक्त हो गया था, जिसका मैं पूरा रिकॉर्ड नहीं बना सकता, ये सब मेरे निजी तौर पर आया है ज्ञान।

पेकिंग के वांग युंग-एनगेउ के संचार से अंशों का अनुवाद।

"आम तौर पर आविष्ट व्यक्तियों के बारे में यह कहा जा सकता है कि कभी-कभी जो लोग गा नहीं सकते, वे आविष्ट होने पर ऐसा करने में सक्षम

होते हैं; अन्य जो सामान्यतः कविता नहीं लिख सकते, वे आविष्ट होने पर आसानी से ऐसा करने में सक्षम होते हैं।" उत्तर के लोग दक्षिण की भाषा बोलते हैं और जब उन्हें होश आता है तो वे पूरी तरह भूल जाते हैं कि उन्होंने क्या किया है।

शांति के समय में राक्षसी कब्जे की घटनाएं कम होती हैं, और नागरिक अशांति के समय में अधिक होती हैं: समृद्ध परिवारों में कम, और बदकिस्मत, सहानुभूतिहीन लोगों में और भी अधिक; शिक्षित लोगों में यह कम है और अशिक्षित लोगों में तो यह और भी अधिक है। राक्षसों की बाहरी अभिव्यक्तियों की विविधताएँ बहुत अधिक हैं, और उनके परिवर्तन उल्लेखनीय हैं। एक ही राक्षस स्वयं को कई अभिव्यक्तियों और व्यक्तित्वों में बदल देता है; इतना कि उन्हें समझना बहुत मुश्किल है. इसी के लिए वे विशेष रूप से जाने जाते हैं।

ह्सू चुंग-की, एक स्थिर चलने वाले आदमी से एक संचार का अनुवाद

मेरे घर के चौंतीस ली पश्चिम में हो किआ-च्वांग नामक एक छोटा सा गाँव है। इसी में मिस्टर चिन रहते थे, जो बहुत अमीर थे और उनका परिवार बड़ा था। वह एक प्रसिद्ध विद्वान भी थे और उनके कई शिष्य थे। अचानक उनके घर में बहुत अजीब घटनाएँ घटने लगीं। दरवाजे अचानक खुलते और अचानक अपने आप बंद हो जाते। थालियों और कटोरियों की खड़खड़ाहट बहुत कष्टप्रद थी।

कभी-कभी घर में लोगों के चलने की आवाज़ें सुनाई देती थीं, हालाँकि कोई दिखाई नहीं देता था। अक्सर बाजरे में भूसा और गेहूं में मिट्टी रहती थी। प्लेटें, कटोरे और चायदानी अचानक मेज से हवा में उठा दी जातीं; और सेवकों ने उन्हें पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया। ये घटनाएं लगातार घटती रहीं. इन उपद्रवों को ख़त्म करने के लिए कई लोगों को घर पर बुलाया गया.

धूप जलाकर, मन्नतें मांगकर और प्रसाद चढ़ाकर आत्माओं को प्रसन्न करने का प्रयास किया गया। मिस्टर चिन ने फंग-योह मंदिर में आत्माओं

के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। सभी संभव समाधान आज़माए गए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। यह स्थिति दो साल तक बनी रही. परिवार की संपत्ति रहस्यमय तरीके से गायब हो गई। श्री चिन की मृत्यु हो गई और अब उनके सभी वंशज अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं।

मिशनरी रेव टिमोथी रिचर्ड ने भी डॉ. नेवियस के परिपत्र के जवाब में लिखा: "आत्मा की चीनी रूढ़िवादी परिभाषा है, 'मृतकों की आत्मा'; जिनमें से सर्वश्रेष्ठ को देवताओं के पद तक ऊंचा किया जाता है... ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिससे चीनी आमतौर पर पीड़ित हों और जो राक्षसों के कारण न हो।

मन इस मामले में अछूता है. केवल शरीर को कष्ट होता है; और चीनी लोग उपवास करके और देवताओं को प्रसाद चढ़ाकर राक्षस से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। इस मामले में अधीनता अनैच्छिक है। , , ,

दुष्ट आत्माओं द्वारा सर्वाधिक नियंत्रित व्यक्तियों का वर्ग

“इसमें शामिल लोगों की उम्र पंद्रह से पचास साल के बीच है, चाहे लिंग कोई भी हो। यह रोग कभी दिन में तो कभी रात में अचानक आता है। राक्षस पागलों की तरह बात करता है, उसके चारों ओर सब कुछ तोड़ देता है, असाधारण ताकत हासिल कर लेता है, उसके कपड़े फाड़ देता है और सड़क पर या पहाड़ों में भाग जाता है या जब तक उसे रोका नहीं जाता। तब तक वह आत्महत्या कर लेगी.

इस हिंसक कब्जे के बाद, राक्षसी शांत हो जाती है और अपने भाग्य को स्वीकार करती है, लेकिन सबसे हृदयविदारक विरोध के तहत। राक्षस के प्रवेश पर अनुभव किए गए ये पागल मंत्र, अंतराल पर वापस आते हैं, और आवृत्ति में वृद्धि करते हैं, और आमतौर पर तीव्रता में भी, ताकि अंततः हिंसा से मृत्यु हो जाए।

एक पंद्रह वर्षीय शेफू लड़का किसी काम से जा रहा था। उनका रास्ता खेतों से होकर गुजरता था जहां लोग अपनी फसलों पर काम कर रहे थे। जब वह

उन लोगों के पास आया और उनसे बातें की तो वह अचानक बहुत बक-बक करने लगा; उसकी आँखें घूम गईं, फिर वह पास के तालाब की ओर चल दिया। यह देखकर लोग दौड़कर उसके पास आए और उसे डूबने से बचाया और उसके माता-पिता के पास ले गए।

जब वह घर पहुंचा तो उसने जमीन से इतनी ऊंची छलांग लगाई कि ऐसा लगा जैसे उसमें कोई अलौकिक शक्ति प्रकट हो रही हो। कुछ दिनों के बाद वह शांत हो गया और असामान्य रूप से शांत और सौम्य हो गया; लेकिन वह अपनी चेतना खो चुका था। राक्षस ने नान-किन में अपने दोस्तों के बारे में बात की। छह महीने के बाद यह राक्षस चला गया। तब से वह चिफू में कई विदेशियों की सेवा में रहे हैं। ऐसे में राक्षस की कोई पूजा नहीं की गई.

अब हम उन लोगों की ओर बढ़ते हैं जो अनजाने में राक्षस के प्रभाव में आ गए, उसके सामने झुक गए और उसकी पूजा करने लगे। राक्षस का कहना है कि अगर वह उसकी पूजा करेगा तो राक्षस उसे पीड़ा देना बंद कर देगा और वह उसकी संपत्ति में वृद्धि करके उसे इनाम देगा। लेकिन यदि नहीं, तो वह अपने शिकार को दंडित करेगा, उसकी यातनाएँ बढ़ाएगा और उसकी संपत्ति लूट लेगा।

लोगों को एहसास होता है कि उनका खाना शापित है। वे कुछ भी तैयार नहीं कर सकते लेकिन गंदगी और धूल हवा से नीचे आती है और उन्हें खाने के लिए भोजन देती है। उनके कुएं भी शापित हैं, उनकी अलमारियों में आग लगा दी जाती है और उनका पैसा बहुत रहस्यमय तरीके से गायब हो जाता है। इसलिए नकदी की गड्डी का सिर काट देने की प्रथा शुरू हुई, ताकि वह भाग न जाए। , , ,

जब राक्षस से छुटकारा पाने के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं, तो वे उसके सामने झुकते हैं और कहते हैं: 'रुको! अपना कष्ट रोको और हम तुम्हारी पूजा करेंगे!' दीवार पर कभी किसी महिला की, कभी किसी पुरुष की तस्वीर चिपकाई जाती है और धूप जलाकर महीने में दो बार नमस्कार किया जाता है। इस प्रकार पूजनीय होने के कारण, पैसा अब बाहर जाने के बजाय रहस्यमय तरीके से आता है। राक्षसों के आदेश पर चक्की के पाट भी चलाए जाते हैं और परिवार तुरंत अमीर बन जाता है।

लेकिन ऐसा कहा जाता है कि ऐसे परिवारों की किस्मत उनका साथ नहीं देती और वे अंततः गरीबी में फंस जाते हैं। ये बातें अधिकारी भी मानते हैं.

ऐसा माना जाता है कि महल इन राक्षसों के लिए बनाए गए थे, हालांकि, उन्हें गरीबों के मामूली मंदिरों से ही संतोष करना पड़ता है। , , ,

उपरोक्त वर्ग के समान एक और छोटा वर्ग है, जो निचले क्षेत्रों में प्रवेश करने की शक्ति रखता है। ये भूतों के विपरीत हैं, क्योंकि मृतकों को बुलाने और उनसे जिस व्यक्ति से उनकी सगाई हुई है उसके भविष्य के भाग्य के बारे में जानने के बजाय, वे दो दिनों के लिए अचेतन अवस्था में पड़े रहते हैं, जब उनकी आत्माएं अंधेरे के राजकुमार के सामने आती हैं। यह पूछने के लिए कि बीमार व्यक्ति को जीवित लोगों के बीच कब तक छोड़ा जाएगा। , , ,

डॉक्टर राक्षसों को कैसे बाहर निकालते हैं**?**

"आइए अब हम बुरी आत्माओं को भगाने के लिए अपनाई जाने वाली विभिन्न विधियों पर विचार करें। ऐसा करने के लिए डॉक्टरों को बुलाया जाता है। वे उंगलियों, नाक और गर्दन के सिरों को चुभाने के लिए सुइयों का उपयोग करते हैं। वे एक विशेष टैबलेट का भी उपयोग करते हैं, और इसे इस तरह से लगाते हैं: दोनों हाथों के अंगूठे एक साथ कसकर बंधे होते हैं, और दोनों पैर की उंगलियों को भी उसी तरह से बांधा जाता है।

फिर एक गोली पैर के दोनों अंगूठे के नाखून की जड़ में और दूसरी अंगूठे के नाखून की जड़ में रख दी जाती है। उसी समय दोनों गोलियों में आग लगा दी जाती है और मांस जलने तक उन्हें वहीं रखा जाता है। गोलियों के सेवन में, या सुइयों के चुभने में, हमेशा यह रोना होता है: 'मैं जा रहा हूँ;' मैं तुरंत जा रहा हूं. मैं फिर कभी वापस आने की हिम्मत नहीं करूंगा. ओह, इस बार मुझ पर दया करो. मैं कभी वापस नहीं आऊंगा!

जब डॉक्टर असफल हो जाते हैं, तो वे झाड़-फूंक करने वालों को बुलाते हैं। वे स्वयं राक्षस को नहीं भगा सकते, लेकिन वे ऐसा करने के लिए दूसरे राक्षस को बुलाते हैं। कन्फ्यूशीवादी और ताओवादी दोनों ही इस पद्धति का अभ्यास करते हैं। , ... यदि उन्हें पता चलता है कि धूप जलाने और

बलिदान देने से गरीब पीड़ित को मुक्ति नहीं मिलती है, तो वे ताओवादियों जैसे जादूगरों को बुला सकते हैं, जो चटाई पर बैठते हैं और एक अदृश्य शक्ति द्वारा ऊपर उठाए जाते हैं।

एक जगह से दूसरी जगह जाना. वे बीस या पचास फीट की ऊंचाई तक चढ़ते हैं, और चार या पांच ली (लगभग आधा मील) की दूरी तक ले जाए जाते हैं। इस वर्ग में वे लोग शामिल हैं जो मंचूरिया में अंत्येष्टि में जहां शरीर जलाया जाता है, आकाश से आग बुलाते हैं। , ,

उन पर आसमान से या मकानों की छतों से ईंट-पत्थर गिर सकते हैं। रास्ते में वे बिना किसी चेतावनी के सिर से पाँव तक कीचड़ या गंदगी में ढके हो सकते हैं; या फिर नदी तक पहुंचने पर उन्हें पकड़ लिया जा सकता है और पानी के नीचे दबाकर डुबोया जा सकता है।

"इस विषय पर विचार करते समय," "लाइफ इन मंगोलिया" (पृ. 74) के लेखक जेम्स गिलमोर कहते हैं, "कोई खुद को प्रेरितों के दिनों में वापस ले जाया हुआ महसूस करता है; और किसी को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है कि शैतान का प्रभुत्व अभी भी टूटा नहीं है।

अध्याय IV

चीन में अधिक राक्षसी जुनून-जांच के परिपत्र पर प्रतिक्रियाएँ।

विलियम ए. विलिस ने सावधानीपूर्वक तैयार किए गए चीनी अखबार में लिखा, "जून 1876 में चांग एन-लियांग के बेटे की पत्नी को भयानक दर्द और बीमारियाँ होने लगीं।" "वह जल्द ही बेहोश हो गई और उसने कहा कि उसके पति की पहली पत्नी, जो बहुत पहले मर गई थी, उसे और उसके पति को लेने आई थी। वहां मौजूद दोस्त बहुत डर गए और उन्होंने आत्मा

से वादा किया कि अगर औरत अगर वह चली जाती है मंदिर में, वे तीन दिनों तक शास्त्रीय मंत्रों का जाप करने के लिए छह पुजारियों को बुलाएंगे।

आत्मा ने कहा, 'तुम मुझसे इस तरह छुटकारा नहीं पा सकते।' तब उस स्त्री के ऊपर मछली पकड़ने का जाल फैलाया गया और राक्षस ने कहा, 'इससे तुम मुझे नहीं पकड़ सकती। मैं यहां ठहरूंगा। मैं इस माध्यम को पकड़ लूंगा. 'लेकिन जब रेवरेंड मिस्टर अस विलिस ने न्यू टेस्टामेंट पढ़ना और प्रार्थना करना शुरू किया, तो दुष्ट आत्मा ने कहा, "मत पढ़ो; मत पढ़ो। मैं चली जाऊंगी।" वह चली गई और महिला उठकर अपना काम करने लगी।

एच. वी. नॉयस ने एक पत्र में लिखा: "चीनी वर्ष के चौथे महीने, हो काओ, मैं फत्शान में भाषण दे रहा था। सेवा के बाद एक व्यक्ति आया और हो काओ से पूछा कि क्या वह शैतानों को बाहर निकाल सकता है।, उसने कहा कि उसका एक बेटा था जो इस प्रकार से ग्रसित था, हो-काओ ने उत्तर दिया कि वह ऐसा कर सकता है, और पुराने समय का यीशु दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकता था।

इसके बाद हो काओ उस व्यक्ति के साथ फतशान से कुछ ही दूरी पर एक गांव में उसके घर गया और उसने पाया कि उसका बेटा, एक वृद्ध व्यक्ति, दस या अधिक दिनों से लोगों पर चाकुओं से हमला करने और घर में आग लगाने का जुनून सवार था। इसलिए उसे पेड़ से बांधना पड़ा। राक्षस को अतीत का पता चल गया था. वह लोगों के मन को पढ़ सकता था। वह दूर-दूर तक जो कुछ हो रहा था उसके बारे में बताता था और लोग उससे डरते थे। , , ,

एक ओझा ने उसके लिए प्रार्थना की। जैसे ही प्रार्थना समाप्त हुई, जंजीर से बंधा आदमी एक या दो बार जितना हो सके उछला, और फिर हो-काओ ने कहा: 'जंजीरें उतार दो!' वे सभी ऐसा करने से डरते थे और इसलिए हो-काओ ने स्वयं जंजीरें उतारीं और उस व्यक्ति को घर के अंदर ले गया।

वह शांत था और बहुत थका हुआ लग रहा था और जल्द ही सो गया। परिवार अगरबत्ती आदि जलाना चाहता था, लेकिन उन्हें ऐसा कुछ करने के लिए नहीं कहा गया. राक्षसी के पिता ने अपने घर में मूर्ति पूजा से संबंधित सभी चीजें तोड़ दीं और उसके बाद उनका इससे कोई लेना-देना नहीं था।

जुलाई, 1880 में, श्री नॉयस ने फिर से इस प्रकार लिखा: “बुरी आत्माओं को बाहर निकालने का एक मामला है जिसका मैंने उल्लेख नहीं किया है। यह

दस साल पहले हिन-कोंग, हाई-पिंग जिले में हुआ था। चाओ त्सिमिंग नाम के एक कैलिफ़ोर्नियावासी ने एक दासी लड़की के लिए यीशु के नाम पर प्रार्थना की, जो आठ या नौ वर्षों से बुरी आत्मा से पीड़ित थी, और वह ठीक हो गई और तब से अब तक अच्छी है।

हो युइंग-शी से राक्षसों से संबंधित संचार का अनुवाद।

"मैं फू-सान शहर में तैनात था और चैपल उपदेश में लगा हुआ था, जब लगभग बीस ली दूर शिन त्सुएन के पड़ोस से एक व्यक्ति मुझसे मिलने आया। उसने कहा कि उसका बड़ा भाई, त्साई शि-हसियांग, कई महीनों से एक दुष्ट आत्मा से पीड़ित था; और उन्होंने दुष्टात्माओं को बाहर निकालने के लिए हर तरह के जादू का इस्तेमाल किया, और सभी प्रकार की चीनी पूजा को समाप्त कर दिया।

राक्षस अत्यंत दुर्भावनापूर्ण लग रहा था। उसे न केवल उत्पात मचाने में, बल्कि चीज़ों को तोड़ने में भी आनंद आता था। 'हमने अपना अधिकांश पैसा डॉक्टरों पर बर्बाद कर दिया था। हम दिन-रात इस कष्ट से परेशान रहते थे और इस राक्षसी आत्मा को दूर करने में पूरी तरह असमर्थ थे।' लेकिन सी-होंग, एक बौद्ध पुजारी जो बहुत दृढ़ इरादों वाला और शक्तिशाली था, ने उसे तुरंत चले जाने का आदेश दिया और वह चला गया। वह व्यक्ति फिर अपने आप में आ गया।

1 फरवरी को लिखे एक पत्र में, मुझे चाय के व्यापार में लगे एक बहुत ही बुद्धिमान चीनी व्यक्ति से निम्नलिखित संदेश मिला, जिसका अनुवाद है: "शांतुंग प्रांत में, यांग किआ-लो गांव में, यांग नाम का एक परिवार है, जिसमें ए. महिला बुरी आत्माओं से बहुत परेशान थी और उसकी हालत पंद्रह साल से ऐसी ही थी।

वह पहली बार सड़कों पर लोगों को यह घोषणा करते हुए दिखाई दीं कि ईसाई धर्म की शिक्षाएँ स्वर्ग से आई हैं; और लोगों को इस धर्म पर विश्वास करना चाहिए और इसका सम्मान करना चाहिए। उनसे पूछा गया, 'क्या मी-मी धर्म (एक स्थानीय संप्रदाय) में आपको बाहर निकालने की शक्ति नहीं है?

उन्होंने उत्तर दिया, 'मी-मी किआ राक्षसों का धर्म है; यह मुझे कैसे बाहर निकाल सकता है? मैं भी एक राक्षस (मो-क्वेई) हूं।'
कुछ स्थानीय ईसाइयों ने यह सुना और कहा, 'जब यीशु दुनिया में थे, तो उन्होंने बीमारियों को ठीक किया और राक्षसों को निकाला। हम जो मसीह में विश्वास करते हैं, ऐसा क्यों नहीं कर सकते?' जिसके बाद उपस्थित लोगों, यांग चिंग त्ज़ु, यांग शिंग-कुंग और यांग शिन-चिंग ने इस राक्षस को बाहर निकालने में भगवान की मदद के लिए ईमानदारी से प्रार्थना की।

प्रार्थना के बाद वे पीड़ित महिला के घर गये. उनके पहुंचने से पहले, महिला ने कहा, 'स्वर्गीय सिद्धांत में तीन विश्वासी आ रहे हैं।' जब वे पहुंचे तो उसने प्रत्येक को नाम से बुलाया और बैठने के लिए कहा।

फिर उसने कहा, 'तुम उस परमेश्वर के शिष्य और सेवक हो जिससे मैं सबसे अधिक डरती हूं।' "तब उसने उत्तर दिया, 'मेरा नाम कैनिन है।' तीनों लोगों ने राक्षस को महिला के शरीर को छोड़ने का आदेश दिया। राक्षस ने उत्तर दिया, 'मैंने इस महिला की पंद्रह वर्षों तक मदद की है। उसके सिर या पैर में ऐसा कोई आभूषण नहीं है जो उसने मेरी सहायता से प्राप्त न किया हो।'

बहुत रोने-धोने के बाद दुष्टात्मा ने स्त्री को पहिले महीने के दसवें दिन छोड़ देने का वचन दिया; और उस दिन अपने वादे के मुताबिक वह चला गया।

4 अगस्त 1880 को चीन में प्रकाशित वीकली हेराल्ड एंड साइन ऑफ़ द टाइम्स का एक उद्धरण निम्नलिखित है:

लगभग एक साल पहले, एक रविवार की सुबह, एक महिला अपने पति और चार बच्चों के साथ मेरे घर आई और मुझसे उसे ईसाई धर्म सिखाने के लिए कहा, क्योंकि उस महिला पर एक बुरी आत्मा का साया था और उसने

सपने में आदेश दिया था। यदि वह बुरी आत्मा से छुटकारा पाना चाहती तो उसे बहुत अधिक खर्च करना पड़ता और बहुत दूर से आना पड़ता। , ,

डॉ. टेलर ने यह पता लगाने के लिए कि क्या यह केवल एक उन्मादी दौरा था, या कुछ और जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं था, एक डिनर चाकू मंगवाया और, अपनी बांह खोलकर, उसकी धार को त्वचा पर रख दिया, जैसे कि था। काटने की कोशिश कर रहा था; लेकिन महिला ने बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया. फिर उसने एक कप पानी उसके चेहरे पर फेंका; लेकिन इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा; वह एक पल के लिए भी ऊंची आवाज में बोलने से नहीं रुकीं. , ,

उस दिन के बाद से उसे उन राक्षसों के हमलों को नहीं सहना पड़ा जो पिछले तीन वर्षों से लगातार उसे परेशान कर रहे थे, और जिसके इलाज के लिए उसने, उस गरीब महिला ने, मूर्तियों पर कई महंगे चढ़ावे चढ़ाए थे।

एक परिचित आत्मा को बाहर निकाला गया योंग परिवार।

यहाँ मिस ए.एम. फ़ील्ड द्वारा एक मौखिक वर्णन है: "पहली चीज़ जो मुझे अपने जीवन में याद आती है वह अत्यधिक गरीबी का संकट है। जब मैं पंद्रह वर्ष का था, मेरी माँ पर एक राक्षस ने हमला किया था और वह उसे दूर नहीं कर सकी। वो कब जब वह इस दुष्ट आत्मा के प्रभाव में थी तो वह बिल्कुल भी स्वस्थ नहीं थी। उसे घबराहट के साथ ऐंठन होने लगी और मुंह से झाग निकलने लगा। तब वह वही कहती जो राक्षस उससे कहने को कहता।

मेरे पिता ने उनसे कहा कि माध्यम बनना बहुत बुरा है; लेकिन अगर वह ऐसा करने के लिए प्रतिबद्ध है, तो उसे अपनी सेवाओं के लिए उचित वेतन से अधिक शुल्क नहीं लेना चाहिए। जो कोई भी राक्षस के साथ परामर्श के लिए उसके पास आता था, वह उससे कभी भी दो या तीन सेंट से अधिक शुल्क नहीं लेती थी। हमारे गाँव में कई माध्यम थे, लेकिन कोई भी मेरी माँ जितना लोकप्रिय नहीं था।

जब मैं बाईस साल का था, मेरे पिता की मृत्यु हो गई और मेरे भाइयों ने कहा कि मेरी माँ की परिचित आत्मा एक हानिकारक आत्मा थी, और वे अब उसके साथ घर में नहीं रहेंगे। मेरी माँ इस सब से बहुत व्यथित थी, और उसने सोचा कि वह खुद को बंदी से छुड़ाने की कोशिश करेगी; लेकिन राक्षस ने उससे कहा कि अगर उसने उसे बेदखल करने की कोशिश की, तो उसके लिए बुरा होगा। वह उससे डरती थी और कुछ करने की हिम्मत नहीं जुटा पाती थी। , , , ,

लेकिन जब उसे रिहा किया गया, जैसा कि बाद में हुआ, वह अपने बेटों और मेरे साथ रहने चली गई। अब हमारे पास उतना पैसा नहीं है जितना हमारे पास तब था जब मेरी माँ एक आध्यात्मिक माध्यम थी; लेकिन हमारे पास कुछ ऐसा है जो पैसे से भी अधिक मूल्यवान है।

एक राक्षस के नियंत्रण से एक नैतिक पतन।

अपनी पुस्तक 'पैगोडा शैडोज़' में एक अन्य मामले का वर्णन करते हुए मिस फील्ड कहती हैं: "लोटस नाम की एक बूढ़ी औरत एक राक्षस के नियंत्रण में आकर बुरी तरह बर्बाद हो गई थी। उसकी आँखें जंगली थीं। वह इन आत्माओं को देखने में असमर्थ थी। और उसके हाथ कांपने लगे।" इतना कि वह मुश्किल से एक किताब पकड़ पाती थी; और उसकी जीभ एक प्रकार के तंत्रिका पक्षाघात से कांप रही थी; उसके उन्माद में कटौती से ऐसा लग रहा था जैसे कोई अजीब जीभ उसके मुंह से बाहर आने वाली हो।

उनका मन मूर्तिपूजक अंधभक्ति, राक्षस पूजा की राक्षसीता से पूरी तरह भर गया था। डॉ. कैल्डवेल, जो लंबे समय तक चीन में रहे, ने एक बहुत ही सक्षम निबंध में कहा है: "मैंने आधुनिक शैतान-पूजा के विभिन्न चरणों के कई मामलों की जांच की है, और मुझे कहना होगा कि यह विषय बहुत दिलचस्प है। मैं यह कहने का साहस करता हूं मैंने पूर्व में राक्षसों के लगभग उतने ही पंथ देखे हैं जितने किसी भी जीवित व्यक्ति के हैं, फिर भी मैं इन अभिव्यक्तियों और अजीब घटनाओं की अवास्तविकता के बारे में आश्वस्त हूं, मैं पूरी तरह से और अंततः आश्वस्त होना चाहता हूं;

मैंने जो देखा है उसके बारे में लिखता हूं, और मैं शांति से और सलाहपूर्वक चौंकाने वाला प्रश्न पूछता हूं: क्या दानव-कब्जा, जिस अर्थ में इसे नए नियम में संदर्भित किया गया है, वर्तमान समय में मौजूद है! मैं महान ज्ञान और गहरे अनुभव वाले कई लोगों से मिला हूं जो इस प्रश्न का पूरी तरह से उत्तर नहीं दे सके। निस्संदेह इस मामले को सुलझाने का सबसे आसान तरीका सदूसी विधि है -

कहने का तात्पर्य यह है कि: 1 कोई बुरी आत्मा नहीं है; मृतकों का कोई पुनरुत्थान नहीं है. 'पहले भी थे, आज भी नहीं हैं।' लेकिन तथ्य यहीं ख़त्म नहीं होते. वर्तमान समय में अजीब घटनाएँ घटित होती हैं, और जैसा कि नए नियम में दर्ज है, वे फ़िलिस्तीन, ग्रीस और रोम में घटित हुईं।

प्रेरितों के समय में इन राक्षसों के पास शारीरिक दंड देने की शक्ति थी। वे कुछ को फाड़ डालेंगे; दूसरों को दांत पीसने पर मजबूर कर देते थे. उन्होंने जीवित प्राणियों को आत्म-विनाश की ओर धकेल दिया।

एक शब्द में कहें तो उनका एक विशिष्ट आध्यात्मिक व्यक्तित्व प्रतीत होता है। जैसा कि मैं इसे समझता हूं, यह मिर्गी, उन्माद, पागलपन, हिस्टीरिया या अपच नहीं था जिसे यीशु ने ठीक किया था; इसके बजाय, उसने 'बुरी आत्माओं को बाहर निकाल दिया' जिन्होंने इंसानों पर कब्ज़ा कर लिया था। उन्होंने उन्हें जागरूक व्यक्तित्व के रूप में संबोधित किया।

चीन में अधिक राक्षसी जुनून।
चीन में ट्रान्स मीडियम।

डॉ. नेवियस और चीन के अन्य यात्रियों से मैंने जो तथ्य उद्धृत किए हैं, उनमें से अधिकांश उस विशाल साम्राज्य में हजारों बार दोहराए गए हैं। उस देश में अपनी यात्राओं के दौरान, मैंने डॉ. नेवियस के हुक में वर्णित जुनून के लगभग हर चरण को बार-बार देखा है। चीन स्पष्ट रूप से भूत-प्रेतवादियों का देश है। उच्चतम से निम्नतम तक, यह धारणा अमेरिका में कहीं और की तुलना में अधिक आम है; लेकिन निम्न वर्ग में यह अक्सर अंधविश्वास का स्थूल रूप बन जाता है।

पूरे चीन में बड़ी संख्या में ट्रान्स माध्यम हैं, जिनमें से अधिकांश महिलाएं हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि उनका प्रभाव ऊपर उद्धृत अधिकांश स्रोतों की तुलना में पूरी तरह से अलग स्रोत से आता है। ये माध्यम आम तौर पर नुकीली पेंसिल जैसी छड़ियों और सफेद रेत से छिड़की हुई मेज का उपयोग करते हैं। उनके पास माध्यमशिप के वे सभी चरण हैं जिनसे हम पश्चिम में परिचित हैं।

उनके पास अपने व्यक्तित्व के माध्यम हैं, जो उत्कृष्ट परीक्षण देते हैं; उनके पास ऐसे द्रष्टा हैं जो भविष्य बताने का दावा करते हैं; और उनके दिव्यदर्शी, जो अंग्रेजी में इसका अर्थ बताते हैं, "अंधेरे में देखें।" बिना किसी विवाद के इसकी पुष्टि की जा सकती है कि अध्यात्मवाद किसी न किसी रूप में पूरे चीनी साम्राज्य में लगभग सार्वभौमिक मान्यता है।

वे राक्षसी आत्माओं के साथ कैसे संवाद करते हैं।

डॉ. डूलिटल अपनी पुस्तक "सोशल लाइफ अमंग द चाइनीज़" में लिखते हैं:—'उन्होंने कई तरीकों का आविष्कार किया है जिनके द्वारा वे देवताओं और आत्माओं को प्रसन्न करते हैं। उनके सबसे आम बर्तनों में से एक का-पुए है, जो बांस की जड़ का एक टुकड़ा है जो बीन के आकार का होता है और बीच में विभाजित होता है, जो सकारात्मक और नकारात्मक का संकेत देता है। धूप जलायी जाती है, का-पुआ को प्रतीक देवता के ठीक सामने लहराया जाता है, टुकड़ों को माध्यम के हाथ से फेंका जाता है, जिस तरह से वे गिरते हैं वह आत्मा की इच्छा का संकेत देता है।"

निम्नलिखित अभिव्यक्ति अधिक मानसिक है: "अभ्यासी सभी अपवित्र प्रभावों को दूर करने के लिए हाथ में जली हुई धूप की एक छड़ी लेता है; किसी प्रकार की प्रार्थना दोहराई जाती है, उंगलियां एक साथ जुड़ जाती हैं, और माध्यम की आंखें बंद हो जाती हैं, जिससे स्पष्ट होता है किसी अलौकिक शक्ति के पास होने का प्रमाण।

अगरबत्ती गिरती है और व्यक्ति इधर-उधर हिलने लगता है, यह इसका अचूक प्रमाण माना जाता है। वह भगवान माध्यम के शरीर में प्रवेश कर चुका है।

कभी-कभी देवता, माध्यम के मुंह का उपयोग करते हुए, गैरकानूनी या अयोग्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उसकी सहायता मांगने के लिए आवेदक को कड़ी फटकार लगाते हैं। , , , कभी-कभी ये माध्यम महान उपचार शक्तियों वाले एक निर्दिष्ट देवता के पास होने का दावा करते हैं और इस मामले में वे बीमारों के लिए दवा लिखते हैं। ऐसा माना जाता है कि जिस देवता या आत्मा का आह्वान किया जाता है वह वास्तव में किसी रहस्यमय तरीके से स्वयं को माध्यम में प्रविष्ट कराता है और दवा लिखता है। ,

सर जॉन बरोज़ लिखते हैं, "भविष्यवाणी की प्रथा, जिसमें जीवित लोगों को निर्देश देने और भविष्य को प्रकट करने के लिए मृतकों को बुलाने के विभिन्न अजीब तरीके शामिल हैं, बहुत प्राचीन मूल की है, जैसा कि चीनी से पहले यहूदी धर्मग्रंथों का रहस्योद्घाटन था। पांडुलिपियों द्वारा सिद्ध किया गया। एक प्राचीन चीनी पुस्तक, जिसे "पोह-शि-चिंग त्सुंग" कहा जाता है, में "सच्ची भविष्यवाणी के स्रोत" पर छह खंड हैं, जिसमें निम्नलिखित प्रस्तावना शामिल है:

भाग्य बताने वाले दिव्यदर्शी

“शगुन का रहस्य रहस्यों के अध्ययन और देवताओं और राक्षसों के साथ संचार में निहित है। परिवर्तनों की व्याख्याएँ गहरी और रहस्यमय हैं। विज्ञान का सिद्धांत सबसे जटिल है, उसका अभ्यास सबसे महत्वपूर्ण है। पवित्र शास्त्र कहते हैं: जो सत्य है वह भविष्य का संकेत देता है। मृतकों की स्थिति जानना और उनके साथ बुद्धिमानी से संवाद करना, जैसा कि पूर्वजों ने किया था, पार्टियों पर सबसे अधिक लाभकारी प्रभाव डालता है। ,
, ,

लेकिन जब वे नशे या दावत या अनैतिक सुख के लिए देवताओं का आह्वान करना शुरू करते हैं, तो यह सोचना कैसा प्रलोभन है कि उनकी प्रार्थनाओं का उन पर प्रभाव पड़ेगा! अक्सर जब कोई उत्तर नहीं दिया जाता है, या व्याख्या सत्यापित नहीं की जाती है, तो वे दोषों को दोष देते हैं, यह भूल जाते हैं कि उनकी विफलता उनकी ईमानदारी की कमी के कारण है। ,

शकुन-अपशकुन का यह भी एक बड़ा दोष है कि वे लाभ की इच्छा से लोगों को फंसाने के लिए भविष्यवाणी की कला का प्रयोग करते हैं। स्वाभाविक रूप से अप्रकाशित और गुप्त, चीनियों के उच्च वर्ग आत्माओं के साथ संबंध के अपने पूरे ज्ञान को विदेशियों और अपने ही देशवासियों की निचली जातियों से छिपाने की कोशिश करते हैं, यह महसूस करते हुए कि वे इसका उचित उपयोग करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान नहीं हैं। हैं।

निम्न वर्ग, अंधविश्वासी और पैसे के भूखे, अक्सर लाभ और भाग्य बताने के लिए अपने जादुई उपहारों का उपयोग करते थे। ये दूरदर्शी भविष्यवक्ता अतीत को "मारने" में भटकने वाली जिप्सियों से भी आगे जाते हैं, मंदिरों, सड़कों और सड़कों के किनारे घूमते हैं, खोए हुए धन को खोजने, कीमती धातुओं की खोज करने और छिपे हुए भविष्य को प्रकट करने का वादा करते हैं। क र ते हैं।

कौन सी अच्छी चीज़ का दुरुपयोग नहीं होता! स्वतंत्रता जीवित है, यद्यपि लाइसेंस रात में विदेश में घूमता है। पीटर द्वारा ईसाई धर्म को अस्वीकार कर दिया गया और यहूदा द्वारा धोखा दिया गया, हालाँकि इसने प्रसिद्धि प्राप्त की। महान राजमार्ग आत्माओं की वापसी के लिए खुला है, और उस राजमार्ग पर अच्छे और बुरे, ऊंचे और निचले, बुद्धिमान और मूर्ख चलते हैं। अनाज के खेतों में खरपतवार बहुतायत में उगते हैं।

लेकिन अगर हम खुद को बुद्धिमानी से, धार्मिक रूप से, प्रकृति के इस रहस्यमय पक्ष से जोड़ते हैं, तो यह न केवल हमारे लिए एक शक्तिशाली मुक्ति शक्ति बन सकता है, बल्कि भविष्य के अस्तित्व का एक सकारात्मक प्रदर्शन भी हो सकता है।

कोरिया में राक्षस.

चीन और जापान दोनों से संबद्ध कोरियाई लोग सभ्यता की दृष्टि से उपर्युक्त दोनों देशों से श्रेष्ठ हैं; और फिर भी वे सदियों से बारी-बारी से चीन और जापान की दया पर निर्भर रहे हैं। और अब रूस इस खूबसूरत पहाड़ी प्रायद्वीप पर कब्ज़ा करने और कब्ज़ा करने के लिए राजनीतिक रूप से संघर्ष कर रहा है। और इसलिए जापान के साथ यह युद्ध। कोरिया में दो मुख्य मान्यताएं हैं. एक है भौतिकवाद और दूसरा है प्राच्य अध्यात्मवाद।

इस देश के लाखों लोगों को इस तथ्य पर कभी संदेह नहीं है कि ऊपर का नीला आकाश आध्यात्मिक प्राणियों से भरा है। कोरियाई शहर चेमुलपो के लंबे समय से निवासी डॉ. लैंडिस लिखते हैं: "कोरिया सबसे जटिल और सर्वव्यापी जादू टोना का घर है जिसे दुनिया ने कभी देखा है। यह कांगो के बुतपरस्ती जितना क्रूर नहीं है, लेकिन यह इतना गुलाम और बचकाना है कि इसने एक मजबूत और आकर्षक जाति की मर्दानगी को छीन लिया है।

जुनून आम है, और इन राक्षसों को बाहर निकालने के जापानी तरीके, हालांकि समान हैं, चीनी की तुलना में अधिक गंभीर हैं।

"माता-पिता को विशेष रूप से भाग्यशाली माना जाता है यदि उनका बेटा अंधा पैदा हुआ हो। वह 'पान सु' या अंधा जादूगर बन सकता है, और निश्चित रूप से पूरे परिवार के लिए एक अच्छी आजीविका प्राप्त करने में सक्षम होगा। 'पान सु' को प्राकृतिक दृष्टि की बजाय अलौकिक दृष्टि का उपहार प्राप्त है। पुरुष जादूगरों की सहायक महिला जादूगरें होती हैं, जो हर जगह मौजूद रहती हैं।

इन दो प्रकार के जादूगर भक्तों का कार्य हवा में उड़ने वाली बुरी आत्माओं को संतुष्ट करना है, जिनमें से तीन-चौथाई राक्षस हैं जो पूरी तरह से दुष्ट हैं। 'पान सु' और 'मुतांग' किसी भी तरह से कम कीमत पर अपने आध्यात्मिक उपहार का उपयोग नहीं करेंगे। उनकी फीस बहुत अधिक है, और यह अनुमान लगाया गया है कि शर्मिंदगी से देश को सालाना $500,000 से कम का नुकसान नहीं होता है!

लोकप्रिय पंथ के अनुसार, स्वार्थी बुरी आत्माएं अंतरिक्ष के हर हिस्से को भर देती हैं, प्रकट होने के लिए उत्सुक रहती हैं, या किसी तरह से दुखी नागरिक पर कब्ज़ा कर लेती हैं। डॉ. हर्बर्ट जोन्स, जिन्होंने जापान में राक्षसवाद पर काफी समय बिताया है और अध्ययन किया है, हमें बताते हैं कि वे सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर अपने राक्षसी आत्मा सेवकों से परामर्श लेते हैं। "'मुतांग' या जादूगरनी कोरियाई लोगों में सबसे महत्वपूर्ण प्रकार की महिला है।

उसकी हर जगह उतनी ही मांग है जितनी कि अंधी 'पैन सु/' और क्योंकि वह स्वतंत्र रूप से घूम सकती है, वह अंधी नहीं है, इसलिए वह अधिक सक्रिय जीवन जीती है। फिर भी, अजीब बात है कि इस सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को सामाजिक रूप से बहिष्कृत कर दिया गया है।

यदि उसकी भविष्यवाणियाँ विफल हो जाती हैं, तो उसे अक्सर दंडित किया जाता है। जबकि कोरियाई लोग महिलाओं को किसी भी अन्य सभ्य लोगों की तुलना में कम महत्व देते हैं, और 'मुतांग' को सबसे निचले स्थान पर रखा गया है, हालांकि वह प्राकृतिक और अलौकिक एजेंटों के बीच मध्यस्थ है।

कई परिवार बच्चों को राक्षसों को बेच देते हैं। कोरियाई पिता के अनुसार, बच्चे की आत्मा बेचना उसकी समृद्धि सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका है। इस तरह से पवित्र किए गए बच्चे अभी भी अपने माता-पिता के साथ रहते हैं, लेकिन उन्हें 'मुतांग' माना जाता है।

दिवंगत रानी, एक खूबसूरत और प्रतिभाशाली महिला, ओझावाद, आध्यात्मिक प्रभावों में गहरी आस्था रखती थी और लगातार राक्षसी दैवज्ञों का सहारा लेती थी। लेकिन वे उसे उसके क्रूर भाग्य से नहीं बचा सके। जापानी हत्यारों ने उसे बेरहमी से मार डाला।"

कोरियाई राजदूत से मुलाकात.

एक बार समुद्र पार करते समय मुझे अपने देश में कोरियाई राजदूत को अपने केबिन-साथी के रूप में रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक आदर्श सज्जन व्यक्ति, उनकी शिक्षा पेरिस और लंदन दोनों में हुई। उन्होंने हर घंटे मुझे उन चमत्कारों, अभिव्यक्तियों और जुनून के बारे में बताया जो

उन्होंने अपनी युवावस्था से देखे थे, और उन्होंने मजाक में कहा कि उनके देश को "शैतानों की भूमि" कहा जाता था, लेकिन उन्होंने यह भी कहा, "मुझे इससे संबंधित सभी मामलों पर संदेह है अमरता की ओर।"

इस ज्ञान से अधिक आरामदायक और उत्साहवर्धक क्या हो सकता है कि जिन आत्माओं से हम पृथ्वी पर प्यार करते थे वे अभी भी हमारी देखभाल कर रही हैं! वह स्नेहमयी, प्यार करने वाली माताएँ जीवन के सबसे कठिन समय में हमारी देखभाल करती हैं! कि जिन मित्रों का हाथ हमने इतने सौहार्दपूर्ण ढंग से पकड़ा, वे "मृत" होने पर भी हमें देखकर मुस्कुराते हैं! वाशिंगटन इरविंग की भाषा में, "मुझे लगता है कि यह सदाचार के लिए एक नई प्रेरणा होगी, जो हमें हमारे गुप्त क्षणों में भी इस विचार से सावधान कर देगी कि जिन्हें हम एक बार प्यार करते थे और सम्मान देते थे, वे हमारे सभी का विषय थे।" कार्रवाई।" अदृश्य गवाह थे.

अध्याय V.

राक्षसी जापान और कोरिया में कब्ज़ा

सभी करीबी पर्यवेक्षक इस बात से सहमत हैं कि ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी देशों ने अच्छे और बुरे, सबसे बड़ी संख्या में ऋषियों और देवताओं को जन्म दिया है। ग्रीस में सुकरात, फ़िलिस्तीन में नाज़रीन और स्वीडन में स्वीडनबॉर्ग थे, जो कई वर्षों तक अंडरवर्ल्ड के स्वर्गदूतों, आत्माओं और राक्षसों के साथ खुलकर बातचीत करते थे।

कहा जाता है कि जापानी द्वीप, जो काफी ऊबड़-खाबड़ और पहाड़ी हैं, बदसूरत भूतों और राक्षसों से भरे हुए हैं जो कई लोगों को परेशान करते हैं। बोनेज़ (पुजारी) ओझा हैं।

इन गुप्त घटनाओं का वर्णन करने वाली उनकी महान पुस्तक "बास्कावा-शिन-ईकी" कहलाती है। जो राक्षस बहुत से लोगों को पीड़ित

करते हैं उन्हें टेंगू कहा जाता है। उनके पास बुरी आत्माओं के अन्य नाम भी हैं। ऐसा माना जाता है कि सभी ज्योतिषी जुनूनी होते हैं। एक प्रमुख ज्योतिषी का नाम शोको-सेत्सु है। जब उनके होठों से अजीब शख्सियतें बोलती हैं तो वे स्वप्निल, ऐंठन भरी स्थिति में चले जाते हैं।

परमानंद की इस अजीब स्थिति में वे भविष्यवाणी करते हैं। अज्ञानी लोग इन आनंदमय अवस्थाओं को फिट कहते हैं। अधिक बुद्धिमान लोग इन्हें वायु के देवता या अंधेरे क्षेत्रों के राक्षस कहते हैं, और उन्हें भगाने के लिए पुजारियों को बुलाया जाता है। जापानी बौद्धों और रोमन कैथोलिकों के धार्मिक समारोह बहुत समान हैं। वर्तमान कैथोलिक पादरी इन टार्टेरियन राक्षसों को बाहर निकालते हैं। तीसरी शताब्दी के मध्य में पोप कॉर्नेलियस ने ओझाओं को पादरी और परिषद का एक विशेष आदेश बताया।

लौदीकिया ने उन लोगों को मना किया जिन्हें चर्च के अंदर या बाहर भूत-प्रेत भगाने का काम करने के लिए नियुक्त नहीं किया गया था। कार्थेज की तथाकथित चौथी परिषद ने ओझाओं के लिए नियुक्ति की एक विधि निर्धारित की, जो रोमन पोंटिफ़िकल में दी गई थी और आज भी उपयोग की जाती है! बिशप नियुक्त किए जाने वाले व्यक्ति के हाथों में भूत भगाने की किताब देता है और उससे दुष्ट राक्षसों से ग्रस्त लोगों पर हाथ रखने की शक्ति प्राप्त करने के लिए कहता है।

जापान के एक उत्कृष्ट विशेषज्ञ वाल्टर डिक्सन हमें बताते हैं कि जापान की शैतान आत्माएँ गहरी दिलचस्पी लेती हैं और हर जोड़े की शादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। , , , मिकाडो को बारह पत्नियाँ रखने की अनुमति है; डेम्यो को आठ और शोडेबू को पांच की अनुमति है। बुरी आत्माएं उन लोगों को परेशान करती हैं जो एक साथ खुशी से नहीं रहते। इस संबंध में, हम डॉ. नेवियस से फिर से उद्धरण देते हैं:

1890 की गर्मियों में जापान की यात्रा के दौरान मैंने जाँच में पाया कि भूतों के संबंध में जापान के मूल निवासियों की मान्यताएँ और अनुभव चीनियों से भिन्न नहीं थे। मैंने टोक्यो की इंपीरियल यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर से बात की और पत्र-व्यवहार किया, जो इस विषय पर विशेष जांच कर रहे हैं; और हम उम्मीद कर सकते हैं कि उनकी जांच के नतीजे जल्द ही जनता को बताए जाएंगे।

इस बीच, जापान की इंपीरियल यूनिवर्सिटी में जापानी और भाषाशास्त्र के प्रोफेसर, बेसिल हॉल चेम्बरलिन द्वारा लिखित, 1890 में प्रकाशित एक हालिया पुस्तक, "थिंग्स जापानी" में हमारे पास दानव विज्ञान से संबंधित कुछ बहुत ही दिलचस्प कथन हैं। प्रोफेसर चेम्बरलिन कहते हैं: चीनी धारणाओं के संबंध में लोमड़ी की अलौकिक शक्ति, और कुछ हद तक बिज्जू और कुत्ते की अलौकिक शक्ति, प्रारंभिक मध्य युग के दौरान जापान में प्रवेश कर गई।

बहुत पुरानी सदी की राक्षसी कथा 'उजी जुई' में जादुई लोमड़ियों का एक या दो बार उल्लेख किया गया है और तब से यह विश्वास इतना फैल गया और बढ़ गया कि इस देश में एक भी बूढ़ी औरत नहीं है। , या उस मामले के लिए, एक भी आदमी नहीं है - जिसके पास लोमड़ी के बारे में कोई कहानी नहीं है जो किसी ऐसे व्यक्ति के साथ घटी हो जो कम से कम किसी तरह का परिचित हो।' , , ,

ऐसी कहानियों के नाम असंख्य हैं, और इससे भी अधिक उत्सुक और दिलचस्प वह शक्ति है जिसके साथ इन राक्षसी लोमड़ियों को मनुष्यों में अपना निवास बनाने का श्रेय दिया जाता है, जो कि बुरी आत्माओं द्वारा कब्ज़ा करने की घटना के समान है जिसे अक्सर नए नियम में संदर्भित किया जाता है। . .

जापान की इंपीरियल यूनिवर्सिटी के डॉ. बेल्ज़, जिन्हें अपने प्रभार के तहत अस्पतालों में इन मामलों का अध्ययन करने का विशेष अवसर मिला है, ने डॉ. नेवियस को कुछ टिप्पणियाँ भेजी हैं, जिनमें से निम्नलिखित सारांश है: "लोमड़ियों द्वारा कब्ज़ा (कित्सुनी) -त्सुकी कैराना एक प्रकार का तंत्रिका विकार या भ्रम है जो जापान में असामान्य रूप से नहीं देखा जाता है।

मनुष्य में प्रवेश करने के बाद, कभी-कभी स्तन के माध्यम से, और अधिक बार उंगलियों के नाखूनों और मांस के बीच की जगह के माध्यम से, लोमड़ी अपना जीवन जीती है, उस व्यक्ति के वास्तविक स्व से अलग जो उसे पाल रहा है। . इस प्रकार एक प्रकार की दोहरी इकाई या दोहरी चेतना उत्पन्न होती है।

आविष्ट व्यक्ति अंदर लोमड़ी द्वारा कही गई या सोची गई हर बात को सुनता और समझता है, और दोनों अक्सर ज़ोर से और हिंसक विवाद में

उलझ जाते हैं, जिसमें लोमड़ी उस व्यक्ति की प्राकृतिक आवाज़ से बिल्कुल अलग आवाज़ में बोलती है।

बाइबिल में वर्णित राक्षसी कब्जे के मामलों और जापान में देखे गए राक्षसी कब्जे के मामलों के बीच एकमात्र अंतर यह है कि इस मामले में पीड़ित ज्यादातर महिलाएं हैं, और ये महिलाएं निम्न वर्ग से संबंधित हैं। ऐसी स्थितियों में, कमजोर बुद्धि वाले लोग अंधविश्वासी हो जाते हैं और उनमें टाइफाइड बुखार जैसी दुर्बल करने वाली बीमारियाँ शामिल हो सकती हैं।

भूत कभी नहीं होते सिवाय उन लोगों के जो इसके बारे में पहले से ही सुन चुके हैं और इसके अस्तित्व की वास्तविकता पर विश्वास करते हैं। "मैं कई मामलों में से एक का उल्लेख करना चाहूंगा: एक बार मुझे टाइफाइड बुखार से पीड़ित एक लड़की के पास बुलाया गया था। वह ठीक हो गई थी, लेकिन स्वास्थ्य लाभ के दौरान, उसने अपने आस-पास की महिलाओं को एक अन्य महिला के बारे में बताया। मैंने किसी को किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करते हुए सुना, जिसके पास स्वामित्व था एक लोमड़ी, और जो निस्संदेह उससे छुटकारा पाने और उसे किसी और को देने की पूरी कोशिश करेगी।

उस क्षण, लड़की को एक असाधारण अनुभव हुआ। लोमड़ी (एक आत्मा) ने उसे अपने वश में कर लिया था। उससे छुटकारा पाने की उसकी सारी कोशिशें बेकार गईं। 'वह आ रहा है! वह आ रहा है!' जैसे ही लोमड़ी का हमला करीब आता वह चिल्लाने लगती। 'ओह, मुझे क्या करना चाहिए! वह यहाँ है।' और फिर एक अजीब, सूखी, फटी आवाज़ में, लोमड़ी बोलती, और अपनी दुर्भाग्यपूर्ण परिचारिका का मज़ाक उड़ाती।

मामला तीन सप्ताह तक ऐसे ही चलता रहा, जब तक कि निचिरेन संप्रदाय के एक पुजारी को नहीं बुलाया गया। पुजारी ने लोमड़ी को खूब डांटा। लोमड़ी (हमेशा, निश्चित रूप से, लड़की के मुंह से बोलकर) दूसरे पक्ष के लिए बहस करती रही। आख़िरकार उन्होंने कहा, 'मैं इससे थक गया हूं.' मैं उसके जाने के अलावा और कुछ नहीं मांगता। ऐसा करने पर आप मुझे क्या देंगे?'

पुजारी ने पूछा कि वह क्या लेगा। लोमड़ी ने उत्तर दिया, कुछ केक और अन्य चीजों का नाम बताते हुए उसने कहा कि उन्हें एक निश्चित दिन पर शाम 4 बजे एक निश्चित मंदिर की वेदी के सामने रखा जाना चाहिए।

लड़की को पता था कि उसके मुँह से क्या कहा जा रहा है, लेकिन वह अपने व्यक्तित्व में कुछ भी कहने में असमर्थ थी। जब वह दिन और समय आया, तो सौदे के अनुसार भेंट उसके रिश्तेदारों द्वारा बताए गए स्थान पर ले जाया गया और लोमड़ी-राक्षस ने उसी क्षण लड़की को रिहा कर दिया।

टोक्यो में डॉ. जे. मैककार्टर के लेखक और साहित्यिक सहायक बी. गा-मा-नो-उची ने डॉ. नेविंस को एक ऐसे मामले के बारे में बताया जो उनके स्वयं के निरीक्षण में आया था। उन्होंने कहा कि उन्हें टोक्यो में भूत-प्रेत के कब्जे के किसी भी मामले की जानकारी नहीं है, लेकिन शियू में उनके घर में ऐसे बहुत से मामले हैं।

उन्होंने मो-री सा-नो की-ची नाम के लगभग चौदह साल के एक लड़के का मामला बताया, जो एक ऐसे व्यक्ति के कब्जे में था जो खुद को मिस्टर गा-मा-नो नाम से बुलाता था। -उची भूल गया था कि सेंदाई में किसका घर था: "मैंने इस नए व्यक्तित्व के साथ लंबी बातचीत की, जिसने सेंडाई में अपने पूर्व घर का सटीक वर्णन किया, जहां लड़का कभी नहीं गया था।

लड़का कभी-कभी अपने मूल रूप में होता, और कभी-कभी नया व्यक्तित्व उसके माध्यम से बोलता, लेकिन एक समय में केवल एक ही व्यक्तित्व। उसे पुजारियों ने ठीक किया, जिन्होंने उसकी सेवा की, आत्मा को डाँटा और उसे चले जाने का आदेश दिया।

आत्मा ने कुछ बलिदान देने की शर्त पर जाने का वादा किया। -जब वे बलिदान दिए गए, तो लड़के को होश आ गया और धीरे-धीरे उसकी ताकत वापस आ गई और वह फिर से ठीक हो गया।

डॉ. नेवियस हमें यह भी आश्वासन देते हैं कि श्री गा-मा नो-उची साहित्यिक संस्कृति के व्यक्ति हैं, और पेशे से एक चिकित्सक हैं। डॉ. नेविंस ने जापान में दानव विज्ञान पर अपनी गवाही का सारांश निम्नलिखित शब्दों में दिया है: "यह कहना पर्याप्त है कि उपरोक्त अनुभागों में दिए गए तथ्य पिछले अध्यायों में प्रस्तुत तथ्यों से पूरी तरह सहमत हैं;

यह उल्लेखनीय एकरूपता को दर्शाता है, जो नस्लीय विशिष्टताओं और संस्कृति की भिन्नताओं के परिणामस्वरूप मामूली विवरणों में भिन्नता के बावजूद, हमेशा और हर जगह इन अभिव्यक्तियों की विशेषता रही है।

अध्याय VI.

भारत में राक्षसी जुनून और कब्जे।

1878 की उस गर्म जुलाई की सातवीं तारीख को मैं पहली बार भारत की राजधानी कलकत्ता पहुंचा, यह शहर गरीबी और महलों से मिश्रित था। भारत के शहरों में इस यात्रा का एक मुख्य उद्देश्य रहस्यवाद की खोज करना, चमत्कार कार्यकर्ताओं के बहुप्रशंसित जादू को देखना और योगवाद का अध्ययन करना था।

हमारे संयुक्त राज्य अमेरिका के वाणिज्य दूत से पहली मुलाकात के बाद, मैं अगली सुबह एक कमीशन व्यापारी, लेखक और लेखक पीरी चंद मित्रा के घर पहुंचा; और सबके साथ-साथ एक शिक्षित मनोवैज्ञानिक भी।

और फिर भी, वह जितने उदार थे, फिर भी वह ब्राह्मणों के ब्राह्मण थे, और उनके उच्च धार्मिक विश्वासों के ब्राह्मणवादी स्वाद में मेरे लिए हजारों आकर्षण थे। कुछ समय तक वह स्वचालित लेखन के प्रति संवेदनशील थे, लेकिन अब उनकी प्रतिभा आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और प्रेरणा से अधिक चिंतित थी।

उन्होंने मुझे आश्वस्त किया कि उनकी दिवंगत पत्नी एक व्यक्तित्व थीं, जो उनके नश्वर शरीर की तरह ही विभिन्न समयों पर उनके साथ सचेत रूप से मौजूद रहती थीं।

उन्होंने मुझे कई हिंदू शहरों के प्रमुख और प्रतिष्ठित लोगों के परिचय पत्र दिए, जहां मुझे बाद में जादू के प्रदर्शन, मंदिर की लड़कियों के नृत्य, स्वचालित लेखन, सफेद और काले जादू, राक्षसों पर कब्ज़ा और मंदिर के पुजारियों द्वारा "राक्षसों को भगाने" के बारे में पता चला। के कई मामले देखे.

वेदों में ईश्वर के लिए सबसे प्राचीन शब्द देव है। पिता या मृत पूर्वज का सामान्य नाम पितृ था। ऋग्वेद में उन देवताओं को संबोधित प्रार्थनाएँ हैं

जिन्हें अन्य देशों में भूत, पैतृक आत्माएँ, छाया और पूर्वज के रूप में जाना जाता है। मैक्स मुलर कहते हैं, "भारत का संपूर्ण सामाजिक ताना-बाना, विरासत और विवाह के कानूनों के साथ, पूर्वजों, पूर्वजों और पिशाचों में विश्वास पर टिका है।

प्राचीन हिंदू न्यायविद् मनु हमें बताते हैं कि "देवताओं का जन्म पूर्वजों से हुआ था। और पूर्वजों और ऋषियों से।"

भारत की विभिन्न जातियों और जनजातियों के बीच यह विश्वास सार्वभौमिक है कि आत्माएं, अच्छी और बुरी, विशेष रूप से बाद वाली, मनुष्यों तक पहुंचने और उन्हें प्रभावित करने की शक्ति रखती हैं। पहाड़ी जनजातियों में राक्षसी जुनून एक तरह का धर्म बन गया है।

उसी अंत में, डॉ. कैल्डवेल, एक समकालीन समीक्षा में, इस प्रकार लिखते हैं: "मेरा तर्क है कि ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान समय के कुछ राक्षस-विनाशक, जहां तक उनके कष्टों के बाहरी साक्ष्य का संबंध है, अठारह प्रदर्शन सौ साल पहले फ़िलिस्तीन में राक्षसी कब्जे के स्पष्ट संकेत प्रदर्शित करें।

मेरा मानना है कि जहां तक इंद्रियों पर भरोसा किया जा सकता है और इतिहास पर भरोसा किया जा सकता है, कल दक्षिण भारत में ऐसे हजारों लोग पैदा हो सकते हैं, जो, जहां तक पता लगाया जा सकता है, वास्तव में उस आदमी के समान ही दुष्ट राक्षसों से ग्रस्त होंगे, जो स्वयं उसके भीतर के राक्षसों ने उसे चिल्लाने के लिए मजबूर किया कि वह खुद नहीं है, बल्कि उसका नाम लीजन है।

जिन लोगों का मैं उल्लेख कर रहा हूं उनमें से कुछ सामान्य परिस्थितियों में शांत और शांतिप्रिय हैं। उनका अपना व्यवसाय है और वे अक्सर उसे लगन से करते हैं। कभी-कभी, उनके साथ उनकी पत्नियाँ और बच्चे भी होते हैं; उन्हें झोपड़ियाँ, छोटे बगीचे, कुएँ और ताड़ के पेड़ विरासत में मिले हैं। परन्तु रात निकट आती है; एक देहाती शैतान-मंदिर के सामने आग जलाई जाती है; भीड़ इकट्ठी हो जाती है;

सत्र शुरू होता है, पुजारी-माध्यम की प्रतीक्षा होती है। वह अब यहाँ है! उसकी सुस्ती दूर हो गई है, उसके मुँह में शैतान की हँसी आ गई है। वह मंदिर के सामने खड़ा है, राक्षस का दैवज्ञ, राक्षस-ग्रस्त! , ...वह शायद ही

पागल है, क्योंकि जैसे ही सत्र समाप्त होता है, वह समझदारी, शांति और शांति से बोलता है।

तो फिर ये क्या है? आप उन्से पूछिए। वह बस उत्तर देता है: 'किसी शैतान ने मुझे पकड़ लिया है, श्रीमान।' आप खड़े लोगों से पूछिए. वे बस उत्तर देते हैं: 'राक्षस ने उसे पकड़ लिया होगा।' वह राक्षसों के वश में था।' इस चरण में वह आत्माओं का वर्णन करता है और उनके नामों की घोषणा करता है। इस सब से निकलने वाला सबसे उचित निष्कर्ष क्या है? एक बात के बारे में मुझे यकीन है - शैतान-कलाकार कभी भी उत्साहित होने का दिखावा नहीं करता। , ,

चाहे वह शैतान का भूत हो या नहीं, मैं यह टिप्पणी करने से बच नहीं सकता कि मुझे ऐसा लगता है कि नए नियम के समय में निश्चित रूप से ऐसा माना गया होगा। किसी यूरोपियन के लिए ऐसा शैतानी मंजर देखना और समझना बेहद मुश्किल है.

एक नियम के रूप में उसे भेष बदलना चाहिए और स्थानीय लोगों की भाषा बोलने में सक्षम होना चाहिए, तभी वह मंत्रमुग्ध भक्तों के समूह में शामिल हो पाएगा, जिनमें से प्रत्येक व्यक्ति आविष्ट व्यक्ति के पास जाने और उससे अपने बारे में प्रश्न पूछने के लिए उत्सुक होगा। . भविष्य, जबकि दैवीय प्रेरणा उस पर पूर्ण बल में है।

एक दानव को उखाड़ फेंकना कठिन

जब मैं अवध में मजिस्ट्रेट था, तब उन्नीसवीं सदी, 1880 में एक बुद्धिमान तालु खार अब्दुल-कुरीम के साथ बातचीत में डब्ल्यू नाइटन ने लिखा था, "मुझे पता चला कि इस शैतानी या राक्षसी कब्जे पर न केवल किसानों या लोगों द्वारा विश्वास किया गया था।" भारत के लोगों द्वारा, बल्कि उच्च वर्गों, कुलीनों और विद्वान मालिकों द्वारा भी।

विभिन्न ओझाओं की अपनी-अपनी प्रक्रियाएँ होती हैं, लेकिन शैतान को बाहर निकालने के लिए हिंसा और दर्द का उपयोग करना सबसे आम है। जब कोई इलाज नहीं होता है, तो शैतान को दुष्ट और जिद्दी कहा जाता है। फिर गंभीर पिटाई का सहारा लिया जाता है, और कुछ मामलों में तेल में भिगोई हुई रुई की बत्ती जलाकर नाक में ठूंस दी जाती है, आदि।

हिंदू और मुस्लिम दोनों अपने पीड़ित रिश्तेदारों को बुरी आत्माओं से मुक्ति दिलाने के लिए घोस्पोर की दरगाह पर जाते हैं। , , , घोसपुर में विश्वास और राक्षसी आत्माओं से पीड़ित लोगों को ठीक करने में इसकी प्रभावशीलता आसपास के पूरे देश में व्यापक है। श्री नाइटन ने मेलाटा नाम की एक महिला का भी विवरण दिया है, जो अहीर नाम के एक व्यक्ति की पत्नी थी।

शैतान को बाहर निकालने के बाद उसने उस महिला को देखा: "एक अच्छी तरह से जानकारी रखने वाली, सक्रिय, बुद्धिमान महिला, जिसकी बड़ी, चमकदार काली आँखें थीं।" जब उसके पिता और माँ की मृत्यु हो गई, तो वह दुःख में डूब गई।

फिर ऐसा हुआ कि वह वशीभूत हो गई। इस बात को लेकर न तो उन्हें और न ही उनके पति को कोई शक था. , , , "मैंने इस विषय पर कई ग्रामीणों से बातचीत की। बुरी आत्मा के कब्जे का तथ्य उन सभी के लिए स्पष्ट था, और पुरानी चुड़ैल, उसका दुश्मन, जो उसके सामने रहता था, शैतान के कब्जे में था।

कारण बताया गया। वह बीमार, उदास और चुप रहने लगी. आख़िरकार, उनकी बीमारी ने उन्हें गूंगा बना दिया। महिला को घोस्पोर के मंदिर में ले जाया गया, और पहले पिटाई, पूछताछ और जादू टोना द्वारा उसका इलाज किया गया; लेकिन सब व्यर्थ. फिर 'ओजा के आदेश से,' गमगनरन ने कहा, 'मैंने उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बांध दिए। मैंने उसके पैर बांध दिये. तेल में भिगोई हुई रुई की बत्तियाँ तैयार की गईं। उन्हें जला दिया गया और उसकी नाक और कान में भर दिया गया।

इससे वह ठीक हो गयी. इससे शैतान बाहर आ गया. उसने चिल्ला कर कहा. उसे ऐंठन होने लगी और बेहोश हो गई। वह अब ठीक हैं. शैतान ने उसे छोड़ दिया है. और ये सच है. तीन दिन में वह मेरे साथ लौट आई; और बूढ़ी चुड़ैल मर गई, और तब से वह अच्छी है। पहले हमारे घर में नर्क का

अँधेरा था; अब हमारे पास स्वर्ग की रोशनी है।' सभी ग्रामीण इसकी पुष्टि करते हैं; मेलाटा से अधिक विद्वान कोई नहीं है।"

अध्याय VII.

डेमोनियाक के संबंध में अधिक जिद्दी तथ्य
भारत में जुनून.

राक्षसी जुनून की दिशा में मानसिक छात्रों के परिश्रम को भारत के अडयार के कर्नल ओल्कोट ने एक तरह से दोहराया है। भविष्य की दुनिया में अपने मृतकों की स्थिति और रोजगार के संबंध में हिंदुओं से सीधे उनकी मान्यताओं को जानने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने पूरे भारत में हिंदू धर्मशास्त्रियों, हिंदू लेखकों और अन्य लोगों को एक परिपत्र पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने आत्माओं, राक्षसों के साथ संभोग के मुद्दे पर चर्चा की। , काले जादू, ओझाओं, तांत्रिकों और भविष्यवक्ताओं के बारे में बात की गई।

कर्नल ने स्वीकार किया कि इस परिपत्र पत्र पर उन्हें जो उत्तर मिले उनमें "मृतकों के साथ किसी भी हस्तक्षेप के प्रति एशियाई घृणा" के परिणामस्वरूप बहुत कम जानकारी थी। लेकिन संक्षेप में, यह इन बिंदुओं पर पूरी तरह संतुष्ट है:

1. यह कि हिंदू भविष्य के सचेतन अस्तित्व में सबसे अधिक ईमानदारी से विश्वास करता है।

2. जो लोग आत्मा की दुनिया में रहते हैं या रह चुके हैं वे मनुष्यों के साथ बुद्धिमान संबंध बना सकते हैं और बनाते भी हैं। अध्यात्मवाद किसी न किसी रूप में एक ऐसी मान्यता है जो भारत में भी उतनी ही सर्वव्यापी है

जितनी चीन में। प्रसंगवश, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि जहां तक हमारे प्रगतिशील पश्चिम का सवाल है, न्यूयॉर्क में जन्मा यह आधुनिक थियोसोफिकल आंदोलन एक बड़ी विफलता है - यह प्राचीन काल के क्षयकारी अंधविश्वासों की ओर बढ़ने वाला एक केकड़े जैसा पिछड़ा आंदोलन है। रहा है।

ब्राह्मणवाद एक मृत शक्ति है. मुर्दों के बीच जिंदा की तलाश करना कितना बेतुका है. उत्तरी भारत एक अप्रभावी सभ्यता का केंद्र है। पामीर की उन ऊंची पठारी भूमि पर एक समय इतना सशक्त बौद्धिक जीवन अब पश्चिमी गोलार्ध में स्थानांतरित हो गया है, और गंगा के तट पर पुराने जमाने के प्लेग से ग्रस्त शहर, ढहते मंदिर, खंडहर उजाड़, काई से ढके खंडहर और हैं। ऐसी कब्रें हैं जो मृत अतीत को दफनाती हैं और फिर भी, कोई मृत्यु नहीं होती है।

आर्यों की आत्मा कभी नहीं मर सकती। प्रगति बीज में है, खोल में नहीं। आज की स्वर्ग-अवरोही प्रेरणाओं, विज्ञान और पश्चिमी उद्यम के मिश्रण से भारत अपनी सुस्ती से जागकर फिर से उठ खड़ा होगा और एक नया भारत खिलेगा और सुनहरे फल देगा। मुख्य विषय से इस विषयांतर के साथ, मैं यहां कर्नल ओल्कोट के परिपत्र के उत्तरों का एक संक्षिप्त अंश जोड़ूंगा:

जुनून, युगों का दानववाद।
बड़ौदा-राज्य राक्षसवाद.

हिंदू लेखक कहते हैं, "जिस स्थान पर वे रहते हैं (पृथ्वी से घिरा) उसे काम लोक या इच्छाओं की दुनिया कहा जा सकता है। इनमें से कुछ आत्माएं मजबूत इच्छाओं के कारण इस पृथ्वी पर इतनी आकर्षित हो सकती हैं कि वे मनुष्यों के बीच रहने के लिए आती हैं।

योग वशिष्ठ (योग दर्शन पर एक मानक कार्य) ऐसे कई विवरण देता है जिसमें मृत व्यक्तियों का अपने घरों के प्रति विशेष आकर्षण था, और कुछ

ऐसे भी थे जिनकी मृत्यु के समय यह तीव्र इच्छा थी कि वे राजा बनेंगे, आदि। ., और वे इन स्थानों में रहते थे; जिसका परिणाम यह हुआ कि उनकी आत्माएँ भौतिक अस्तित्व से लेकर आध्यात्मिक अवस्था तक के सामान्य विकास से कट गईं, या यूँ कहें कि वे उन स्थानों से बंध गईं। बंध गये.

पृथ्वी से जुड़ी आत्माएं सहानुभूतिपूर्वक हमारे आभामंडल में प्रवेश करके या संभवतः हमारे दृश्यमान भौतिक शरीरों में प्रवेश करके, उन्हें पीड़ा पहुंचाकर और मृत्यु तक हमें पीड़ा पहुंचाकर हमें चोट पहुंचा सकती हैं। ऐसा माना जाता है कि ये सीमावर्ती आत्माएं, जिनमें से सबसे बुरी आत्माओं को भूत या पिशाच कहा जाता है, बुराई के लिए बहुत मजबूत सांसारिक इच्छाएं रखती हैं, लेकिन उनके पास अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए भौतिक साधन नहीं होते हैं, और इसलिए वे भौतिक शरीर में प्रवेश करती हैं। दूसरों को अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए.

हमारे अनुमान में, मनुष्य के लिए अपने पार्थिव, मृत मित्रों या अन्य व्यक्तियों के साथ संभोग को प्रोत्साहित करना बुरी बात है; क्योंकि ये सांसारिक आत्माएं, प्रबल सांसारिक इच्छाओं के कारण पृथ्वी पर कैद हो गई हैं, वास्तव में ऐसा निर्देश नहीं दे सकती हैं जो जीवित मनुष्य की आत्मा को मुक्त कर सके, जो कि सर्वोच्च लक्ष्य है जिसे प्राप्त किया जाना चाहिए; और, दूसरा, क्योंकि ये संभवतः पृथ्वी पर रहने वाली आत्माएं या राक्षस हैं, उनके संभोग से जीवित व्यक्तियों में ऐसी इच्छाएं जागृत होती हैं जो उन्हें उनकी मृत्यु के समय पृथ्वी पर रहने के लिए मजबूर कर देंगी।

निचली आत्माएँ कुछ ऐसे व्यक्तियों से जुड़ जाती हैं या उन पर कब्ज़ा कर लेती हैं जिनकी प्रकृति और स्वभाव उनके समान होते हैं, या जिनकी अत्यधिक निष्क्रियता उनके प्रभाव को आकर्षित करती है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य उन प्राणियों के प्रति आकर्षित होते हैं जो उनके अभ्यस्त विचारों और मजबूत भावनाओं या प्रवृत्तियों से सहानुभूति रखते हैं।

दक्षिणी भारत राक्षसवाद.

.

<u>हैदराबाद।</u>—एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की अदम्य इच्छा, अपने व्याकरण ज्ञान को मानवता को सिखाने की महत्वाकांक्षा का मुख्य लक्ष्य, उसे काम लोक का निवासी बना देता है। अपनी मृत्यु के बाद भी वह अपने घर के पिछले परिसर में एक पेड़ पर रहते थे, जिसके शीर्ष से वह उन छात्रों के ज्ञान के लिए छंदों का पाठ करते थे जो उनके निर्देशों से लाभ उठाने के लिए उत्सुक थे।

"ऐसा कहा जाता है कि जिन छात्रों को उन्हें सुनने का सौभाग्य मिला, वे बाद में वेदों के कुछ संदिग्ध अंशों का सही अर्थ समझने में सक्षम हो गए। शरारत के सैकड़ों उदाहरण हैं और बुरी काम लोक की संस्थाओं द्वारा तमोगुणी लोगों पर अत्याचार किया गया।

मदुरा की अपनी पहली यात्रा पर, मैंने एक ब्राह्मण के साथ कई दिन बिताए, जहाँ मैंने झाड़-फूंक की या दूर राक्षस. नवरात्रि (दशहरा) के दौरान भूत-प्रेत से पीड़ित सभी पुरुष और महिलाएं मदुरा शिवालय में आते हैं। हर साल इनकी संख्या करीब दो सौ होती है. उनकी जंगली हरकतें और चीखें, कुछ मामलों में उनके अलौकिक कृत्य, ये सभी उन नौ दिनों के दौरान शिवालय में नियमित हलचल पैदा करते हैं।

यह टिननेवेल्ली के सैन कारा नैनार कोविल में पूरे वर्ष जारी रहता है। कृष्णा और कूंचा गंगा के संगम पर दत्तात्रेय का एक छोटा सा मंदिर है। करीब पंद्रह साल पहले जब मैं वहां गया था, मैं वहाँ बहुत देखा जुनूनी लोग, जिनमें से कई, जैसा कि उनके रिश्तेदारों ने मुझे बताया (कर्नल एच.एस. ओल्कोट सहित), सुधार की ओर बढ़ रहे थे।

यह जगह जुनून से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए काफी मशहूर है। वहां पौरोहित्य के लिए बहुत अधिक गुंजाइश नहीं है, क्योंकि आमतौर पर आविष्ट व्यक्ति को स्वयं स्वप्न या अभिव्यक्ति मिलती है कि इलाज पाने के लिए उसे क्या करना चाहिए। कहा जाता है कि वहां सैकड़ों मामले ठीक हो गए हैं।

द स्लॉटर्ड रिटर्न टू ऑब्सेस

“मदुरा के परमगुड़ी में रामनाद चुट्टराम में रहने वाले लोग मारे गए। इस घटना के परिणामस्वरूप, चुट्टराम और उसके आसपास के ब्राह्मण क्वार्टर मृतकों की आत्माओं से ग्रस्त हो गए। अग्रहारम के गरीब लोग इन आत्माओं से पीड़ित थे; चुट्टराम में और उसके आस-पास सभी प्रकार की चीखें सुनाई देती थीं; पूरे प्रेतवाधित मैदान में घातक आवाजें और कराहें जोर-जोर से गूँजती थीं। “एक साल तक चुट्टराम के आसपास का इलाका वीरान दिखता था।

लगभग उसी समय उत्तर से एक बैरागी तीर्थयात्री, जो रामसेस मरम की ओर जा रहा था, ने परमागुडी में अपनी यात्रा रोक दी और भुतहा चुट्टराम पर रुक गया। दुष्टात्माओं ने भी उस पर उत्पात मचाया; लेकिन वह ज्योतिषियों, जादूगरों और राक्षसों के खिलाफ सबूत था. "वे अक्सर जो चोट पहुंचाते हैं वह शारीरिक या मानसिक हो सकती है। ऐसा देखा गया है कि चोट धीरे-धीरे कम होती जा रही है-

जीवन गतिविधियों की हानि, जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु हुई। ये मौत कभी-कभी एक पल में ही हो जाती है. लेकिन किसी भी स्थिति में, घाव या बीमारी के तरीके का कोई निशान दिखाई नहीं देगा जिससे मौत हुई। कोई भी भौतिक उपाय इसका सामना नहीं कर सकता; लेकिन संख्यात्मक रूप से इन ताकतों को नियंत्रित करने का आदी कोई भी व्यक्ति बीमारी का इलाज करने में सक्षम होगा।

मन में, मनुष्य धीरे-धीरे एक विशेष दिशा में एक स्वभाव विकसित करता है, और कुछ प्रवृत्तियाँ, या तो अच्छे या बुरे के लिए, जो उसके पास पहले थीं, और जो अब तक नहीं देखी गई थीं, बाकी सभी की कीमत पर तीव्र हो जाती हैं। बढ़ने लगता है. मनुष्य उस आत्मा के अनुसार घबराया हुआ, चिड़चिड़ा, उन्मादी, हानिकारक या हानिरहित हो जाता है जो उसे नियंत्रित करती है। वे पुरुषों, महिलाओं और बच्चों पर अंधाधुंध हमला करते हैं, जिससे बुखार, हिस्टीरिया और कई तंत्रिका संबंधी शिकायतें होती हैं।

मैंने अपने एक मित्र से एक पारिया का मामला भी सुना है जो एक आत्मा के साथ संचार में था। वह बॉम्बे प्रेसीडेंसी में बुलसर से लगभग दस या बारह मील दूर सरुम नामक गाँव में रहते थे। यह व्यक्ति हर मंगलवार और रविवार को प्रार्थना सभा करता था और सैकड़ों लोग वहां इकट्ठा होते थे और उससे कई सवाल पूछते थे। ये प्रश्न मौखिक रूप से नहीं पूछे जाते थे, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति जो प्रश्न पूछना चाहता था, परिया के सामने लकड़ी के टुकड़े पर एक पाई और कुछ चावल रखता था।

काम शुरू होने से पहले लगभग सौ ऐसे पाई पंक्तियों में बिछाए गए थे। शुरू-शुरू में वह अपने बाल खोलता, पीतल की थाली लेता और उसे जोर-जोर से पीटता, इधर-उधर सिर हिलाता। यह सिलसिला करीब आधे घंटे तक चलता रहा, फिर अचानक उसके हाथ से पीतल की थाली गिर जाती और परिया पहले की तरह सिर हिलाकर पूछे गए सवालों का जवाब देता। मेरे मित्र, जिसने स्वयं उस व्यक्ति को देखा था, ने कहा कि प्रश्नों का उत्तर तुरंत और सटीक रूप से दिया गया और पूछने वाले लगभग सभी लोगों ने उत्तर दिया।

उनसे परामर्श लेने आये लोग उनके उत्तरों से संतुष्ट होकर घर लौट गये। “उन्होंने मुझे अपने एक साल के भतीजे को उनके पास लाने का आदेश दिया। बच्चे को हमारे सामने फर्श पर बैठाया गया. उन्होंने कहा कि वह कुछ चमत्कार करने जा रहे हैं और मैं बच्चे से अपनी पसंद की किसी भी भाषा में कोई भी प्रश्न पूछ सकता हूं। फिर उसने खुद को रेटेरियम से ढक लिया और हाथ में पकड़े हल्के रतन से बच्चे को छुआ।

बच्चा तुरंत वीरासनम नामक मुद्रा में बैठ गया और मुझे सुंदर तमिल कविता में राजयोग पर एक ज्ञानवर्धक प्रवचन दिया। मैं इस आश्चर्य से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने तब बच्चे से प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं मांगी, बल्कि एक निष्क्रिय श्रोता बना रहा। जब यह चल रहा था, मैंने योगी की ओर देखा और पाया कि उसका शरीर गतिहीन और कठोर था लेकिन कुछ ही सेकंड में वह खड़ा हो गया और उसी क्षण बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। उनके पहले शब्द थे, 'बच्चे को ले जाओ और उसे तुरंत स्तनपान कराओ।' ऐसा किया गया. वह अदृश्य प्रभावों से थक गया था। , , , ,

एक अन्य अवसर पर जब हम जप कर रहे थे, वह नदी तट पर विभिन्न चीजों के बारे में बात कर रहे थे और अचानक उन्होंने मुझसे अपने सभी पापों को स्वीकार करने के लिए कहा। मैंने उससे कहा कि मेरे पास उसे बताने के लिए कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। फिर उन्होंने मुझे 'ओलाई' और

एक लोहे की लेखनी लाने का आदेश दिया। फिर उसने एक चौकोर आकार बनाया सीट मेरे लिए रेत की, उस पर कुछ अक्षर लिखे और मुझे उस पर बैठने के लिए कहा।

जब मैं बैठ गया तो उसने मुझे डंडे से जोरदार झटका दिया. फिर मैंने अचानक लिखना शुरू कर दिया. मुझे यह तो पता था कि मैं लिख रहा हूं, लेकिन मैं जो लिख रहा हूं उस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। मैं स्वयं नहीं लिख सका; किसी रहस्यमयी ताकत ने मुझे ऐसा करने पर मजबूर किया. मैंने हार मान ली। मुझे एक हल्का सा नशा सा महसूस हुआ.

लगभग आधे घंटे बाद, योगी ने मेरे हाथ से 'ओलाई' छीन ली, मेरे चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का और मुझे टहलने के लिए बाहर ले गए। फिर कुछ देर बाद उन्होंने मुझे 'ओलाई' पढ़ने के लिए दी. लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ, जब मैंने अपनी लिखावट में अपने सभी पापों का विस्तृत और पर्याप्त विवरण पाया, जिसे मैं दुनिया को किसी को नहीं बताना चाहता था। इन प्रभावशाली राक्षसों के विभिन्न समूह हैं। कुछ लोग खोई हुई संपत्ति ढूंढने जैसे परीक्षण देते हैं।

आत्माओं के बारे में मैसूर की गवाही।

.

'आत्माओं को बुलाना और उनसे बात करना बुरी बात है; कोई भी सम्मानित परिवार ऐसे संभोग को प्रोत्साहित नहीं करेगा; केवल जादूगर ही ऐसा करते हैं और उन्हें हमेशा इसके लिए दंडित किया जाता है। यदि वे अपने जादुई अनुष्ठान का थोड़ा सा भी भाग छोड़ देते हैं, या 'आत्माओं' पर अपनी अर्जित इच्छा शक्ति को कमजोर करने के लिए किसी भी तरह से कुछ करते हैं, तो उन्हें तुरंत बाद मार दिया जाता है।

कहा जाता है कि कुछ समय पहले कलकत्ता की सड़कों पर आग लगने से एक जादूगर की मौत हो गई थी। इसे स्वार्थ का एक बुरा कार्य माना जाता है - राक्षसों के साथ बातचीत करना प्रकृति की व्यवस्था और भगवान के कानून में हस्तक्षेप करता है। 'सेक्स के संबंध में, पुरुषों की तुलना में महिलाएं उनके हमलों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं, लेकिन यौवन प्राप्त करने के बाद ही।

पीड़ित, अक्सर स्वास्थ्य, भूख और घरेलू मामलों में रुचि खो देता है, लगातार नियंत्रण करने वाले पिशाच के बारे में सोचता रहता है, और जब इसे नियंत्रित नहीं किया जाता है, तो वह मूर्ख और विचलित लगता है। उसे अक्सर अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए बनाया जाता है, लेकिन वैवाहिक गतिविधि के माध्यम से नहीं। "कभी-कभी हम सुनते हैं कि, किसी जादूगर के हस्तक्षेप से, कोई गंभीर परेशानी खड़ी कर देता है।

अपने शत्रुओं के लिए अप्रिय कार्य करने से (उदाहरण के लिए, चावल की थाली में मलमूत्र डालकर (खाते या परोसते समय), घरों की छतों पर पत्थर गिराकर और अंदर के लोगों को डराकर, आदि) यहां तक कि सबसे सावधानीपूर्वक खोज भी नहीं होगी। पड़ोस में किसी भी इंसान को प्रकट करें। ऐसी बेतुकी घटनाएं होती रहती हैं, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता.

ब्रह्म-पिशाच और पिशाच दोनों ही जीवित व्यक्तियों को अपने वश में करते हैं या नियंत्रित करते हैं; लेकिन पहले वाले दुर्भावनापूर्ण नहीं हैं; बाद वाले द्वारा उत्पीड़न और मूर्खतापूर्ण कार्य किए जाते हैं। 'भूत' की कुछ इच्छा होती है जिसे संतुष्ट किया जाना चाहिए, और यदि वह संतुष्ट हो जाती है, तो वह मुक्त हो जाएगा और चला जाएगा।

पिशाचों को भ्रम और परेशानी पैदा करने, दर्द पहुंचाने, बुनियादी भूख को संतुष्ट करने और लोगों की जान लेने में मजा आता है। एक पूर्णतया शुद्ध और अच्छा व्यक्ति, यदि धार्मिक मन का हो, उस पर दुष्ट आत्मा हमला नहीं करेगी; लेकिन कोई भी बुरी आदत उन्हें आकर्षित करती है. धार्मिक बातों की अज्ञानता भी लोगों को उनके प्रभाव में आने के लिए उत्तरदायी बनाती है। आमतौर पर माना जाता है कि तत्व लोग (भाट और प्रेत) बुरी प्रवृत्ति वाले लोगों को नुकसान पहुंचाते हैं।

मंत्र और राक्षस.

“मैं मैसूर हॉर्स का एक पेंशनभोगी रेसलीडर हूं, और मेरी सेवाएं मुझे शिवमुगा के अलावा कई जिलों में ले गईं, जहां लोगों के लिए पिशाचों के साथ संभोग करना एक आम बात है। “कुछ लोग मंत्रों या जादू का उपयोग करते हैं, जिसके द्वारा वे राक्षसों को नियंत्रित करते हैं। (मंत्र शब्द का अर्थ भजन, प्रार्थना या आहवान हो सकता है।) वे कभी-कभी अपनी संपत्ति की रक्षा करने की मांग करते हैं, या उन्हें मजबूर करते हैं।

यदि कोई चोर किसी व्यक्ति के घर में किसी वस्तु पर या बगीचे में किसी फल पर, जो इस प्रकार संरक्षित है, अपना हाथ रखता है, तो वह उस स्थान से हिल नहीं सकता या मालिक के वापस आने तक अपना हाथ नहीं हटा सकता। नहीं आता, और तब तक नहीं जब तक आत्मा को उसे मुक्त करने का आदेश न दिया जाए।

इस प्रकार नियोजित पिशाच को 'चौरी' कहा जाता है; ऐसे स्वार्थी उद्देश्य के लिए इस सहायता को स्वीकार करके, जादूगर उसे खुद पर मजबूत पकड़ देता है, और उसे अधिक सावधान रहना पड़ता है, ऐसा न हो कि वह एक पल के लिए भी नियंत्रण रखने में विफल हो जाए, और इस तरह अपनी जान गंवा दे।

जादूगर अपने जादूगरों की सेवाएं हस्तांतरित कर सकते हैं, और बगीचे के खरीदार के लिए विक्रेता से मंत्र लेना आम बात है जिसके द्वारा बगीचे के जादूगरों को नियंत्रित किया जाता है; अन्यथा, वह खेत या बगीचे के फलों का आनंद नहीं ले पाएगा। पिशाच कभी-कभी किसी घर, कुएं या पेड़ पर कब्ज़ा कर लेते हैं।

मंत्र विद्या युक्त मंत्रों का जाप, दीवारों, बैंकों या शाखाओं पर जंत्र (ताम्र पत्र पर अंकित षडयंत्रकारी चिहन) लटकाने तथा अन्य टोटकों से उन्हें भगाया जाता है।

कभी-कभी जब पैशाचिकता (आत्मा-नियंत्रण) को किसी माध्यम से बाहर निकाला जाता है, तो मांत्रिक अपने बालों का एक गुच्छा काटता है, इसे लोहे की कील के चारों ओर लपेटता है और कील को एक पेड़ में ठोक देता है;

पिशाच को तब तक एक पेड़ से बांध दिया जाता है जब तक कि कील जंग न खा जाए। “विभिन्न शैव और विष्णुवादी मंदिर हैं जो लोगों को पिशाचों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रसिद्ध हैं।

मैंने स्वयं इस घटना को बेंगलुरु के हनुमंत, विष्णु और दुर्गा मंदिरों में कई बार देखा है। मेरी पत्नी ने मदुरा के मीनाक्षी मंदिर में ऐसा ही देखा है. रानाराना को पढ़ते हुए सुनने के लिए पिशाच माध्यम शांत नहीं बैठेगा; वह कूद कर भाग जायेगी. “1875-76 में मेरे अपने परिवार में एक मामला घटित हुआ, जहां मरीज ने मुझे बताया (मैं उसके पास खड़ा था और मरीज की सहायता कर रहा था) कि वह दिव्य दृष्टि से देख सकती है।

शैतान (तीन की संख्या में) उसके पास और बगल में बैठे थे, साथ ही वह खुद को देख सकती थी। जब शैतान उस पर गिरने वाला होता, तो वह मुझसे कहती: 'अब यहाँ देखो; शैतान मुझ पर गिरने की तैयारी कर रहा है। ध्यान से।' इसके तुरंत बाद मैंने मरीज़ में सामान्य ऐंठन देखी। रोगी पहले से ही शैतान के हमले के घंटों की घोषणा कर देता था, और वह इस बारे में इतनी आश्वस्त थी कि वह हमें, परिचर पुरुषों को, अपने काम के बारे में जाने के लिए कहती थी, लेकिन अनुमानित घंटे और मिनट तक तैयार रहने के लिए।

मैंने भविष्यवाणियों को सदैव सत्य पाया। अंत में, आविष्ट राक्षस ने रोगी के होठों के माध्यम से अपनी अतृप्त इच्छाओं के सभी विवरण हमारे सामने प्रकट किए, इस अनुरोध के साथ कि इससे पहले कि वह उसे मंत्रों द्वारा बाहर निकाले, हम उन्हें संतुष्ट कर देंगे। शैतान ने कहा, वह (यह एक महिला की आत्मा थी) उन इच्छाओं से भरी हुई मर गई जो अभी तक संतुष्ट नहीं हुई थीं।

हमने उनकी इच्छा का पालन किया और अब तक हम किसी भी परेशानी से मुक्त हैं।' शैतान ने अपना वादा निभाया है। जिस व्यक्ति में यह आत्मा थी वह एक प्रसिद्ध 'श्वेत जादूगर' था जिसका जिस समुदाय में वह रहता था वहां सभी लोग सम्मान करते थे। उन्हें असाधारण रूप से अच्छा, धर्मनिष्ठ, सत्य की खोज करने वाला व्यक्ति माना जाता था।

अध्याय आठवां .

हिंदू दानववाद के और भी साक्ष्य।

प्रसाद चटर्जी ने कहा, "मेरी मां मुझे बताती थीं कि उनकी सास, हालांकि वह एक अच्छे स्वभाव की महिला थीं, अपने छोटे बच्चों के प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण धरती पर आईं, जिन्हें वह अपने पीछे छोड़ गई थीं।" उनकी मृत्यु उनके पति एक प्रसिद्ध जादूगर थे, और ऐसा माना जाता था कि इन दर्शनों का उनके, अर्थात् मेरी माँ की सास के पृथ्वी पर आने से कुछ लेना-देना था।

परिवार के कुछ सदस्य अभिव्यक्तियों की सच्चाई पर विश्वास नहीं करते थे, और माध्यम को केवल अपनी सास के प्रति आसक्त एक दिखावा मानते थे। एक दिन उसका पुत्र अचानक बीमार हो गया; सारी दवाइयाँ असफल हो गईं और ऐसा लगने लगा कि वह कुछ ही समय में मर जायेगा। अचानक माध्यम जुनूनी हो गया, और कहा कि अगर परिवार के किसी भी सदस्य को लगता है कि यह जुनून सिर्फ एक दिखावा है, तो वे दुनिया की सभी दवाएं आजमा सकते हैं और अगर उनके पास शक्ति है तो वे अपने बेटे को बचा सकते हैं।

परिवार के सदस्यों ने प्रार्थना की कि सांसारिक आत्मा जो माध्यम से प्रकट हुई थी, और परिवार की अभिभावक देवदूत थी, उनके बेटे को बचा सकती थी। जुनून थोड़ी देर के लिए रुक गया, लेकिन जल्द ही फिर से प्रकट हो गया, और माध्यम ने कहना शुरू कर दिया कि उसे, पृथ्वी से बंधी आत्मा को, एक घर से पृथ्वी से बंधी आत्माओं को बाहर निकालने के लिए बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। एक मूर्ति के साथ प्रवेश किया, जिसे परिवार के लिए दूर देश से लाया गया था, और मूर्ति को तुरंत हटा दिया जाना चाहिए और घर से बाहर ले जाया जाना चाहिए।

यह रात के अंधेरे में किया गया था, और माध्यम ने जमीन से थोड़ी सी मिट्टी खुरच कर अपने मरते हुए बेटे के माथे पर लगा दी, जिसके बाद वह तुरंत ठीक हो गया और स्वस्थ हो गया। जब भी परिवार का कोई भी

सदस्य बहुत खतरे में होता था, तो माध्यम जुनूनी हो जाता था और पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा माध्यम के मुंह से कहती थी कि बच्चों के लिए उसकी तीव्र इच्छा ने उसे भूत या पिस आचा (पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा) बना दिया है।). यह देखते हुए, अस्तित्व की वह स्थिति बिल्कुल भी वांछनीय नहीं है। हमारे साथ एक माध्यम का होना कोई गर्व की बात नहीं है, बल्कि इसके विपरीत है।

काठियावाड़ और हिंदू के चेतावनी शब्द

“यह अजीब है कि भारत में, बहुत ही दुर्लभ मामलों को छोड़कर, हम मीडियमशिप को एक बड़ा दुर्भाग्य मानते हैं, जबकि पश्चिम के अध्यात्मवादी इसे जीवित और मृत के बीच या मनुष्यों और स्वर्गदूतों के बीच संचार के साधन के रूप में प्रोत्साहित करते हैं। क र ते हैं। यह सोचकर दुख होता है कि दोनों दुनियाओं के बीच प्रकृति द्वारा खड़ी की गई बाधाओं को इतनी अज्ञानता से तोड़कर वे अपने विभिन्न समुदायों पर कितना भयानक दुर्भाग्य ला रहे हैं।

हमारा ज्ञान हमारे पूर्वजों के अनुभवों की पीड़ा से खरीदा गया है और शायद पश्चिमी देशों को भी यही रास्ता अपनाना होगा।” भवनगेक. - “हमारे देश में इस बुरे समय के स्पष्ट संकेत के रूप में, हम लगातार सफेद जादू की तुलना में काले जादू के बारे में बहुत कुछ सुनते हैं। "आर।

मेरा एक मित्र है, जो पारसी, दुकानदार और व्यवसायी है। उनका एक बेटा है, पी., जो लगभग बीस साल का है, एक अच्छा युवक है, लेकिन शारीरिक रूप से कमजोर है, जो लगभग एक साल से पागलों की तरह बेतहाशा बातें कर रहा है।

उसके पिता ने हमें आश्वासन दिया कि जब वह इसे पागलों की तरह कर रहा था, अंततः उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध संदेह हुआ कि इसमें आध्यात्मिक रूप से कुछ अजीब था। वह उसे अपने पैतृक स्थान ई. ले गया, जो सूरत से अधिक दूर नहीं था। इस अनोखे मामले में सबसे दिलचस्प बात यह है कि सूरत से बुलाए गए एक ब्राह्मण ओझा के आने के

बाद पहली बार पी. या यूं कहें कि उसका नियंत्रण, ब्राह्मण द्वारा पहले से तैयार किए गए मंत्रमुग्ध पानी के बर्तन को देखकर अत्यधिक उत्तेजित हो गया। उसने चिल्लाकर कहा कि जहाज से आग निकल रही है और उसकी लपटें उस पर घातक प्रभाव डाल रही हैं।

जाहिर है, वह बर्तन से ओझा की विरोधी आभा देख सकता था। ब्राह्मण के निर्देशानुसार पिता ने अपनी छाती पर थोड़ा पानी मला और पी. को राहत महसूस हुई। यह तब भी जारी रहा जब भी लड़के को दौरे या बेहोशी आई, लेकिन नियंत्रण ने उसे हमेशा के लिए नहीं छोड़ा। उनके पिता ने ओझा कहे जाने वाले कई अन्य लोगों से सलाह ली, लेकिन पी. पिशाचों से स्थायी राहत पाने में असफल रहे।

आख़िरकार, उनके पिता को सलाह दी गई कि वे अपने बेटे के साथ आर. एक संत के पास जाएँ और वहाँ एक साधु से सलाह लें। इस पवित्र व्यक्ति ने पी. को एक धागा दिया, जो स्पष्ट रूप से उसके शुद्ध चुंबकत्व से भरा हुआ था, जिसे वह अपनी बांह पर बांधना चाहता था। "जहाँ तक मुझे पता है, सभी खातों के अनुसार, पी. अब बिल्कुल ठीक है।"

भावनगर और आत्मा का प्रभाव।

“भारत के इस हिस्से में मध्यम घटनाएं वास्तव में बहुत आम हैं। भूत-प्रेत और जुनून पूरे शरीर में कंपन के रूप में प्रकट होते हैं। कांपते हुए माध्यम, या कहें तो नियंत्रण, को ओझा द्वारा मंत्रों या धमकियों और झाड़-फूंक के माध्यम से यह घोषित करने के लिए मजबूर किया जाता है कि माध्यम को किस चीज ने अपने वश में कर लिया है, और इसे कैसे शांत किया जाए। जाना।

इन भूत-प्रेतों में निर्णायक बिंदु तक पहुंचने में कभी-कभी कई दिन लग जाते हैं, इस दौरान ओझा अक्सर रोगी को उसकी पसंदीदा माँ की याद दिलाता है, जिसने अपने स्वयं के कंपन के माध्यम से, रोगी को चाहे आदिम या मूल रूप से नियंत्रित कर लिया हो। बलपूर्वक छोड़ने का आह्वान करता है।

निःसंदेह, एक ओझा को अपनी माँ (काली माता) के प्रति सबसे अधिक श्रद्धा होती है; उनके घर में एक जगह पर उनकी एक छवि अनुष्ठानिक रूप से रखी गई है, जिसका वे लगातार सम्मान करते हैं और जिस पर वे अपनी भेंट और बलिदान चढ़ाते हैं। "बुद्धिमान वर्गों का निश्चित रूप से यह मानना है कि मृत व्यक्तियों के साथ संभोग अत्यधिक खतरनाक है।

कोरोमंडल तट और दानववाद के साक्ष्य

"एक व्यापक धारणा प्रतीत होती है कि मृत व्यक्तियों के साथ संभोग से जितना संभव हो सके बचना चाहिए। यदि दिवंगत की आत्मा का आह्वान किया जाता है, तो यह केवल इच्छाओं और उस व्यक्ति के पास मौजूद शैतान के बारे में अन्य विवरणों के माध्यम से होता है। यह पता लगाने के लिए, इलाज 'मांत्रिक' (मंत्रों के बारे में जानने वाला) के हाथों में सौंप दिया जाता है और उन इच्छाओं को पूरा करके या अन्यथा, रोगी को शैतान के चंगुल से बचाया जाता है।

ऐसा उन मंत्रियों द्वारा भी नहीं किया जाता, जिन्हें उच्च वर्ग का माना जाता है। वे बस मंत्रों का जाप करते हैं और शैतान या पिशाच को बिना किसी आह्वान या उसके साथ किसी स्पष्ट संभोग के बाहर निकाल देते हैं। "वे हमें कई तरह से नुकसान पहुंचाने में सक्षम हैं; हमें हमारी आजीविका के साधनों से वंचित करके, हमें हमारे बच्चों और करीबी रिश्तेदारों से वंचित करके; परिवार में बीमारी, पागलपन, कुष्ठ रोग आदि लाकर; ओझाओं या ओझाओं की मृत्यु कराकर; संक्षेप में, हर कल्पनीय तरीके से जो किसी भी रूप में मौत और बर्बादी ला सकता है।

काले जादूगर इससे पैसा कमाते हैं। इन संदेह भरे दिनों में भी यह एक लाभदायक व्यवसाय है। ऐसे लोग हैं जिनका विशेष विषय काला जादू है, जो किसी से भी बुरी आत्माओं को दूर करने में सक्षम हैं, और ऐसे दुष्ट प्राणियों को आगे आने से रोकने के लिए उपाय करते हैं। ऐसे लोग कोयंबटूर और मालाबार जिलों में पाए जाते हैं। "ऐसा माना जाता है कि वे हम पर कब्ज़ा करके, और इस प्रकार हमारे दिमागों को विकृत करके, और कई अन्य तरीकों से हमें नुकसान पहुँचाते हैं।

वे हमारे बक्सों और चावल के बर्तनों में अत्यधिक मात्रा में कचरा जमा करते हैं, हमारे कीमती कपड़े और अन्य ऐसी चीजें फाड़ देते हैं जो मूर्त पदार्थ के विघटन या विनाश का कारण बनते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि 'शैतान' या ये राक्षसी आत्माएं एक बच्चे को घर में कांटों के बीच फेंक देती थीं, जहां वह अक्सर सुबह पाया जाता था।

यह मेरे एक रिश्तेदार के परिवार से जुड़ी घटना है और यह तब की बात है जब मैं लगभग दस साल का लड़का था। कई रिश्तेदार, जो अभी भी जीवित हैं, तथ्यों की गवाही दे सकते हैं, क्योंकि उन्होंने उन्हें देखा था।

कई बार लोगों और घरों पर पत्थर फेंके जाते हैं. मैं एक ऐसे मामले के बारे में जानता हूं जो उस शहर में बहुत बदनामी का विषय था जहां मैं अब रहता हूं। वहाँ एक घर है जो अब मेरे एक करीबी रिश्तेदार का है। इसके पूर्व मालिक के समय में, और इसके वर्तमान मालिक के हाथों में आने के कुछ समय बाद तक, यहाँ रहने वाले कई लोगों द्वारा अक्सर एक अनोखी घटना देखी जाती थी।

यह घर एक मस्जिद के पास स्थित है जहां कुछ मुस्लिम कब्रें हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मस्जिद आज भी प्रेतबाधित है। होता यह था कि मस्जिद से बड़े-बड़े पत्थर इस घर में गिरते थे। कुछ समय तक यह माना जाता रहा कि इसका कारण मानव एजेंसी थी, लेकिन इसे साबित करने के सभी प्रयास विफल रहे। खुफिया जानकारी अदृश्य और खतरनाक थी.

बंगाल और काला जादू.

"जब कोई व्यक्ति किसी तत्व के प्रभाव में आता है तो इसे आम तौर पर आपदा माना जाता है; लेकिन हम कुछ तांत्रिक कार्यों में पाते हैं कि कैसे किसी तत्व को बुलाया जा सकता है और उसे मानव आह्वानकर्ता की आज्ञाओं का पालन करने का आदेश दिया जा सकता है; इसे 'ब्लैक आर्ट' कहा जाता है. जो लोग तत्वों को नियंत्रित करते हैं उनका अधिक सम्मान नहीं किया जाता है, हालाँकि उनसे डर लगता है।

यह एक आम धारणा है कि तत्वों का आहवान करना या उनसे कोई लेना-देना अच्छा नहीं है। कई हिंदू परिवारों में बच्चे खुद को तत्वों से बचाने के लिए मालदुली या कोई अन्य ताबीज पहनते हैं। इस प्रयोजन के लिए धातु, लोहा का उपयोग किया जाता है। इस सुरक्षा से जुड़े कई अनुष्ठान हैं। हर स्थिति में यह संभोग हानिकारक होता है। कोई भी उच्च जाति राक्षसों के साथ संबंध बनाने की कोशिश या प्रयास नहीं करेगी।

जब किसी स्त्री को किसी तत्व से पीड़ित बताया जाता है तो वह पागल स्त्री की तरह व्यवहार करने लगती है और धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य खराब होने लगता है और उसका पूरा स्वरूप ही खराब हो जाता है। “अक्सर मैं अपने गाँव में लोगों को पागल होते देखता था।

डायन या चुड़ैलों द्वारा नियंत्रित, लक्षण आक्षेप और आक्षेप के साथ उन्मादी होते हैं; जब इन मामलों में विशेषज्ञ लोग आते और कुछ मंत्र पढ़ते, तो जिन्न अपना माध्यम छोड़ देते। “किसी भी दुर्भाग्य, घरेलू आपदा या अजीब घटना को पूर्वजों या मृत पूर्वजों के क्रोध के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। 4'बुरी आत्माओं के साथ संभोग से कभी कोई भलाई नहीं हो सकती, जो केवल कमजोर लड़कियों और पुरुषों को 'वश में' करके उनकी शारीरिक वासना को भड़काती हैं, और पेय, मांस और वासना की पेशकश के साथ काले जादूगरों की सहायता करती हैं।

वे उतने ही अज्ञात हैं जितने मालाबार तट पर 'चाथन', जहां ईसाई, ब्राहमण और निश्चित रूप से काले जादूगर भी भूत-प्रेत भगाने का अभ्यास करते हैं। दलपतराम की पुस्तक भुवों का विस्तृत विवरण देती है, और जो, एक नियम के रूप में, स्वयं माध्यम हैं और दूसरों में मध्यम स्थिति पैदा करते हैं, एक अशिक्षित वर्ग होने के कारण, काम लोक के बारे में कोई निश्चित धारणा नहीं रखते हैं। हैं। काम लोक, विचार करें, इच्छाओं के अंधेरे क्षेत्रों को संदर्भित करता है, और प्रेत सभी अशरीरी आत्माओं का संस्कृत नाम है।

केवल शैतान-ग्रस्त लोग ही काले जादूगर विकसित करके कमजोर माध्यमों से जुड़े होते हैं, लेकिन ईश्वर-संरक्षित लोग कभी-कभी अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को केवल देवचन की प्रार्थना के लिए, या स्वर्ग जाने में मदद के लिए परेशान करते हैं। . 'पितृ' मृत योग्य व्यक्तियों एवं पितरों के देवता हैं। “वे ऐसे काम भी कर सकते हैं जो मनुष्य के लिए उसकी वर्तमान स्थिति में असंभव हैं, क्योंकि वे अपने अस्तित्व से संबंधित कुछ कानूनों से अवगत हैं।

ऐसा माना जाता है कि वे किसी भी जानवर का रूप धारण करने में सक्षम हैं, और भौतिक रूप धारण करके खुद को दृश्यमान बना सकते हैं। लेकिन ये सभी चीज़ें उन्हें पुरुषों से श्रेष्ठ नहीं बनातीं; इसके विपरीत, वे आध्यात्मिक रूप से अशिक्षित लोगों के पूर्ण गुलाम हैं।

काम लोक के निवासियों में वे प्राणी शामिल हैं जो कभी मानव थे और भयानक आकार के राक्षस (तत्व), और यम के दूत जो शुद्ध आत्माओं के प्रति दयालु और नम्र हैं। लेकिन वे दुष्टों के प्रति अत्यंत कठोर होते हैं।

भारत में अपनी यात्रा के दौरान, मुझे कभी भी किसी ऐसे बुद्धिमान हिंदू से बात करना याद नहीं पड़ा, जिसे यह दृढ़ विश्वास नहीं था कि अदृश्य क्षेत्रों में परिचित आत्माएं, राक्षस और देवता रहते हैं, जो अगर चाहें तो पृथ्वी के निवासियों तक पहुंच सकते हैं। हैं। एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण ने मुझे बताया कि ऐसे प्राणियों के दस वर्ग हैं, जिनमें से पहले सात का निर्माण संसार के साथ, या उच्च देवताओं के विचारों और कार्यों से हुआ था, जिनकी वे नौकरों के रूप में प्रतीक्षा करते हैं, और कुछ तरीकों से उनकी पूजा करते हैं। प्राप्त करें।

लेकिन अंतिम तीन श्रेणियां पूरी तरह से मानव मूल की थीं, जो कमोबेश अज्ञानी, दुष्ट, लम्पट प्राणी थे, एक अदृश्य मध्यवर्ती स्थिति में भटक रहे थे, मुख्य रूप से जुनून, स्वार्थी संपत्ति या दुष्ट प्रेरणाओं के माध्यम से लोगों को खुश करना, शरारत करना और परेशान करना चाहते थे। "विचारों के हस्तांतरण और स्थानांतरण और पुनर्जन्म" के सिद्धांत का उदाहरण देने के इरादे से।

उपरोक्त तीन वर्गों को भूत, प्रेत और पिशाच के नाम से जाना जाता है, पहला नाम आम तौर पर इन तीनों और कभी-कभी सात सूर्यों पर लागू होता है।पूर्व वर्ग। दूसरों के साथ, उन्हें ग्रीक साहित्य में कभी-कभी राक्षसों और स्वर्गदूतों के रूप में समानार्थी रूप से उपयोग किया जाता है।

लेकिन आम तौर पर, भूत शब्द का प्रयोग बुराई के लिए किया जाता है, विशेष रूप से उन लोगों की आत्माओं के लिए जिनकी असामयिक या हिंसक मृत्यु हो गई है, या जो जीवन भर विकृत या पागल रहे हैं, या नशे में धुत, अय्याश, या विकृत रूप से दुष्ट रहे हैं। आमतौर पर भूत शब्द का अर्थ किसी बच्चे या विकृत, अपूर्ण या राक्षसी पैदा हुए व्यक्ति का भूत होता है।

दूसरी ओर, "वैम्पायर" सीधे तौर पर मानसिक विशेषताओं से लिया गया है, और यह पागलों, आदतन शराबियों, कामुक, विश्वासघाती और हिंसक स्वभाव वाले लोगों का घूमने वाला भूत है, और इस विचार के अनुरूप और मूर्त रूप देता है।

मनुष्य जो बुराइयाँ करते हैं वे उनके बाद भी जीवित रहती हैं और दुर्भावनापूर्ण आत्माओं के रूप में प्रकट होती हैं। भूत सीधे तौर पर उन लोगों को संदर्भित करते हैं जो हिंसा के कारण मरते हैं, युद्ध में मरते हैं, आत्महत्या करते हैं, या जो लुटेरे, कुख्यात दुष्ट और बड़ी क्रूरता के दोषी हैं।

इस संबंध में प्रख्यात श्री एम.जे. वॉल हाउस, एफ.आर.ए.एस. हाल ही में भारत में शैतान-पूजा के बारे में लिखते हुए, उन्होंने कहा: "किसी भी प्रसिद्ध दुष्ट चरित्र की मृत्यु उसके सभी पड़ोसियों के लिए भय का एक स्रोत है, क्योंकि वह आवश्यक रूप से एक भूत या राक्षस बन जाता है, जो उनके जैसा ही शक्तिशाली और घातक होता है।" जीवन में, आज के सबसे डरावने भूतों में से कुछ पुराने समय के प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

ऐसे सभी लोग मरने पर भूत बन जाते हैं, और उच्च क्रम के किसी भी प्राणी से जुड़ जाते हैं, जिनसे वे पहली बार आत्मा-दुनिया में प्रवेश करते समय मिलते हैं, और मनुष्यों और जानवरों को पीड़ा देने और पीड़ा देने की शक्ति रखते हैं। और सहायता प्राप्त करें. उदाहरण के तौर पर कि यह विचार लोगों के मन में कैसे घर कर गया है।

मैं एक हालिया भारतीय अखबार का एक अंश पढ़ूंगा: हमें कोचीन में एक संवाददाता से पता चला कि कुछ दिन पहले, क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान, चेंगन्नूर के एक नायर ने बेवफाई के संदेह में अपनी प्रेमिका की बेरहमी से हत्या कर दी।

इस मामले की उल्लेखनीय और विचित्र विशेषता यह है कि जब उसे सत्र न्यायालय में ले जाया गया और दोषी ठहराया गया, तो उसने आरोप के लिए "दोषी" होने का अनुरोध किया, लेकिन ईमानदारी से प्रार्थना की कि उसे कानून की कड़ी सजा मिल सकती है, जिसे उसने स्वीकार कर लिया। कि वह पूरी तरह से फांसी का हकदार है, न कि सामान्य फांसी की जगह पर।

लेकिन उसके अपराध स्थल पर, ताकि वह आत्मा के पुनर्जन्म के अपने सिद्धांत के अनुसार, एक "राक्षस" का रूप और जीवन धारण कर सके,

और इस आदमी और उसके सहयोगियों से बदला लेने की पूरी गुंजाइश है जो उसके दुर्भाग्यशाली शिकार को गुमराह करने का कारण थे।

यह भी माना जाता है कि कुछ समारोहों और प्रायश्चितों द्वारा, अस्तित्व के इस रूप को भंग किया जा सकता है, और परेशान आत्माओं को पृथ्वी पर उनकी योग्यता के अनुसार इनाम या सजा के दायरे में भेजा जा सकता है। हजारों वर्षों तक ब्राह्मण पुजारियों ने लोहे की छड़ से भारत पर शासन किया। राजा, या यों कहें कि प्रमुख-प्रमुख, उनके एजेंट थे। आम लोग जाति के साथ सामंजस्य बनाए रखते थे, उच्च वर्ग विलासिता में रहता था।

उनके मंदिर पवित्र अवशेषों, मूर्तियों और पुरोहिती खजाने के भंडार थे। मंदिरों में सेवा करने वाले ब्राह्मणों ने लोगों को वेदों की पहली तीन किताबें पढ़ना सिखाया; उन्हें धार्मिक अनुष्ठान और यज्ञ करना सिखाया। युवा पुजारियों - गुरुओं - ने निचली जातियों को भविष्यवाणी के तरीकों, आत्माओं को बुलाने, भूत भगाने और सभी जादुई घटनाओं की प्रकृति को समझाने के लिए जादुई मंत्रों के महान संग्रह अथर्ववेद का इस्तेमाल किया।

अध्याय IX.

प्राचीन यूनानियों और ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों का दानववाद.

इतिहास के किसी भी छात्र को यह बताने की जरूरत नहीं है कि ग्रीस, अपने सबसे अच्छे दिनों में भी, इस बात से अवगत नहीं था कि अदृश्य एजेंसियां - राक्षस - लोगों के साथ घुलमिल गई हैं और उन्हें प्रभावित कर रही हैं। होमर, हेसियोड और सुकरात के समय में, ये राक्षस आवश्यक रूप से बुरी आत्माओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। होमर ने लगभग "राक्षस" शब्द का प्रयोग किया

1000 ईसा पूर्व में एक देवता के रूप में फले-फूले; इसलिए, मिनर्वा ख़ुशी से "अन्य राक्षसों" से मिलने के लिए ज़ीउस के महल में जाती है। हेलेन ("इलियड" iii: 420) के साथ साक्षात्कार के बाद वीनस को "राक्षस" के रूप

में वर्णित किया गया है। "लेकिन," डॉ. अलेक्जेंडर कहते हैं, "इस शब्द को निम्नतर व्यक्तियों पर लागू करने की प्रवृत्ति थी।" हेक्टर ने डायोमेड को धमकी देते हुए जोर देकर कहा, "मैं तुम्हें एक राक्षस को सौंप दूंगा ('इलियड' viii:166)।

राक्षसों को बुरे विचारों का प्रतीक माना जाता था। पीड़ा में पड़ा एक बीमार आदमी "वह है जिस पर एक भयानक राक्षस की नज़र पड़ी है।" ("ओडिसी" iii: 27.) यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि कवि के सभी राक्षस (देखें हेसियोड, लगभग 800 ईसा पूर्व) नेक इरादे वाले थे; तदनुसार, वह तर्कसंगत प्राणियों को अवतरित और अवतरित लोगों, देवताओं, राक्षसों, नायकों (देवताओं) और मनुष्यों में विभाजित करता है।

इन राक्षसों को कभी-कभी "पुरुषों के संरक्षक" कहा जाता था, और ज़ीउस अपने कुछ दोस्तों को उत्साहजनक विचार देता है कि उन्हें कुछ करना चाहिए। समय के साथ राक्षस "राक्षस-जैसे" बन गए ("कार्य और दिन," पृष्ठ 314)। एम्पेडोकल्स ने सिखाया कि राक्षस "मिश्रित और परिवर्तनशील प्रकृति के थे, और एक शुद्धिकरण प्रक्रिया के अधीन थे जो अंततः उच्च निवासों पर उनके आरोहण में समाप्त हो सकता था। और फिर भी, उसने उन्हें मानव जाति की लगभग सभी विपत्तियों, परेशानियों और आपदाओं का कारण बना दिया। के लिए जिम्मेदार ठहराया।

महान कवि-दार्शनिक प्लेटो अच्छे और बुरे राक्षसों के बारे में लिखते हैं। वह हमें सूचित करता है कि राक्षस मनुष्यों के संरक्षक अधिकारी हैं, और स्वर्ग के सबसे महान शासक ज़ीउस के बाद, "देवताओं और राक्षसों की एक कंपनी" थी। भगवान, वह हमें आश्वासन देते हैं, "मनुष्यों से सीधे नहीं मिलते हैं, लेकिन राक्षसों को मध्यस्थों के रूप में उपयोग करते हैं" (परिसंपत्ति 202: डी)। हेसियोडिक राक्षसों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने हमें सूचित किया कि ये "स्वर्ण युग" के अच्छे और महान थे।

उन्होंने "दिव्य राक्षसों" वाक्यांश का उपयोग किया, और एक अन्य अवसर पर उन्होंने "भयंकर और उग्र पुरुषों की बात की जो स्वर्गदूतों को दंडित करने का कार्य करते हैं।" संक्षेप में, प्लेटो के राक्षसों में, जबकि ज्यादातर अच्छे थे, बुराई के अवशेष शामिल थे जो मनुष्यों को भ्रमित और भ्रमित करते थे। अरस्तू, एक चिकित्सक का पुत्र, प्लेटो की तुलना में कम काव्यात्मक और अधिक आध्यात्मिक था, विशेष रूप से भौतिक दुनिया के संबंध में, वह सीधे तौर पर "लोगों को प्रभावित करने और प्रेरित करने वाले राक्षसों से ग्रस्त लोगों" के बारे में बात करता था।

सुकरात (लगभग 470 से 399 ईसा पूर्व) ने दावा किया कि उनके साथ हमेशा एक जागरूक, बोलने वाली इकाई, एक दानव रहता था, जिसे आज "संरक्षक आत्मा" कहा जाता है। लगभग 470 ईसा पूर्व मेलेटस, एक दुखद कवि, ने सुकरात के खिलाफ अभियोग का गठन करने वाले आरोपों का आविष्कार और सूत्रीकरण करके खुद को प्रतिष्ठित किया। हालाँकि वह अपनी आदतों में लापरवाह और नैतिक रूप से भ्रष्ट था, फिर भी लंबे समय तक उसका राजनीतिक प्रभाव काफी रहा।

समय। सुकरात के विरुद्ध वह जो मुख्य आरोप लगाने जा रहा था वे थे:

1. वह यूनानी राज्य द्वारा स्वीकृत देवताओं में विश्वास नहीं करता था।

2. उसने देवताओं के प्रति अनादर की शिक्षा देकर और अजीब देवताओं को प्रोत्साहित करके एथेनियन युवाओं को भ्रष्ट कर दिया।

3. उसने दावा किया कि उसके पास एक अच्छा दानव (आत्मा) है जिसकी सलाह उसने मानी। ये मेलेटस के बयान के एक हिस्से के शब्द थे जो अभियोग का कारण बने: "सुकरात दुष्टता से काम करता है, और पृथ्वी और स्वर्ग में चीजों की खोज करने में आपराधिक रूप से जिज्ञासु है, और दूसरों को वही चीजें सिखाने में जितना बुरा है उतना बेहतर है।" कारण बताता है.

वह एक निश्चित प्राकृतिक प्रेरणा और उत्साह के प्रभाव में, पैगम्बरों और द्रष्टाओं की तरह, अपना ज्ञान प्राप्त करने का दिखावा करता है।" (कैरी का अनुवाद, लंदन) सुकरात, अपने क्षमा या बचाव में, सच्चे ईश्वर के प्रति अनादर से इनकार करते हैं, उनके परामर्शी वचनों को स्वीकार करते हैं इस प्रकार: "इसलिए मैंने दैवज्ञों की ओर से अपने आप से पूछा, क्या मुझे वैसा ही रहना चाहिए जैसा मैं हूं, न तो उनका ज्ञान और न ही उनका अज्ञान, या दोनों के पास; इसलिए मैंने खुद को और दैवज्ञ को उत्तर दिया कि मैं जैसा हूं वैसा ही रहना मेरे लिए बेहतर होगा। , , ,

जब जनरलों, एम्फिपोलिस और अन्य लोगों ने मुझे मेरे पद पर नियुक्त किया, तो मैं किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह, जहां भी उन्होंने मुझे तैनात

किया, मौत की धमकियों का सामना करते हुए बना रहा। लेकिन जब देवता (एक आत्मा) ने, जैसा कि मैंने सोचा और विश्वास किया, मुझे अपना जीवन दर्शन के अध्ययन में और खुद की और दूसरों की जांच करने में बिताने का कर्तव्य सौंपा, तो क्या मुझे उस अवसर पर डर के मारे ऐसा नहीं करना चाहिए?
मौत या किसी और वजह से मैं अपना पद छोड़ दूंगा?

एथेनियो, मैं आपका सम्मान करता हूं और आपको नमन करता हूं; परन्तु मैं तुम्हारे बदले परमेश्वर की आज्ञा मानूंगा। , , , इसका कारण वही है जिसका जिक्र आपने अक्सर और कई जगहों पर सुना होगा; क्योंकि मैं एक निश्चित दैवीय और आध्यात्मिक प्रभाव से प्रेरित हूं जिसे मेलेटस ने एक मजाक के माध्यम से अभियोग में भी प्रस्तुत किया है। इसकी शुरुआत मेरे साथ बचपन में हुई थी, एक तरह की आवाज़ जो वर्तमान में मुझे हमेशा उस चीज़ से विचलित करती है जो मुझे करना चाहिए, लेकिन कभी मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करती।

सुकरात ने युवा एल्सीबीएड्स को यह समझाया: "दैवीय आदेश से, एक निश्चित राक्षस है जो बचपन से मेरे साथ है। यह एक आवाज है (यानी, एक चेतावनी आवाज) जिसे सुनने पर, हमेशा मुझे वही करने के लिए कहता है जो मैं अपुलियस करता हूं एक कारण बताता है कि सुकरात आम तौर पर उसे कुछ भी करने से मना करते हैं, लेकिन यह उसे कभी भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करता है।

सुकरात स्वयं एक बहुत ही आदर्श व्यक्ति थे और उन्हें जो भी करना चाहिए वह करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे, इसलिए उन्हें कभी भी किसी को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती थी, हालांकि कभी-कभी उन्हें उन्हें मना भी करना पड़ता था। अगर उसके किसी काम में ख़तरा छिपा हो तो ये ज़रूरी था. इस तरह से चेतावनी दिए जाने के बाद, वह उचित सावधानी बरतने में सक्षम था, और वर्तमान में अपने प्रयास से दूर हो गया, या तो भविष्य में इसे और अधिक सुरक्षित रूप से फिर से शुरू करने के लिए, या किसी अन्य तरीके से। इसे दर्ज करने के लिए.

उनके लिए उन चेतावनियों को "राक्षस से आने वाली आवाज़ें" के रूप में वर्णित करना आम बात थी - वास्तव में, उनकी संरक्षक भावना। उपरोक्त का सबक यह है कि अतीत वर्तमान में दोहराया जाता है। कुछ अस्पष्ट आरोपों पर सुकरात पर मुकदमा चलाना, यदि यह आज का उदाहरण नहीं है, तो इसका सबक आधिकारिक हस्तक्षेपकर्ताओं के लिए एक चेतावनी है;

इस यूनानी मेलेटस के लिए, जो एक डाकू होने के साथ-साथ एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति भी था, जिसने सुकरात के खिलाफ आरोप लगाए थे, उसे जल्द ही उसके राजनीतिक कार्यालय से मुक्त कर दिया गया और बाद में एथेनियाई लोगों द्वारा उसे दोषी ठहराया गया।

जिसने सुकरात के उत्पीड़न के कड़वे पश्चाताप में मेलेटस को मौत की सजा दी। यह कितना सच है कि जो लोग “हवा बोते हैं, वे बवण्डर काटते हैं।” और पुराने भविष्यवक्ता के शब्द कितने सच हैं "ईश्वर पृथ्वी का न्याय करता है और उसका न्याय करता है।" और सुकरात के ये लगभग अंतिम शब्द कितने सच थे: "तो मेरे लिए, हे मेरे न्यायाधीशों, - और मैं आपको न्यायाधीश कहने में सही कहता हूं, - एक अजीब बात हुई है। मेरे संरक्षक देवता की आदतन भविष्यसूचक आवाज के लिए, हर पर पहले तो छोटी-छोटी बातों में भी मैं कुछ गलत करने जा रहा था, लेकिन अब मेरे साथ क्या हुआ, जिसे आप खुद देख सकते हैं, और जिसकी कोई कल्पना भी कर सकता है और जिसे बुराई की पराकाष्ठा माना जाता है, फिर भी भगवान की चेतावनी नहीं दी गई; जब मैं सुबह घर से निकला, तब मेरा विरोध किया, न ही जब मैं सुनवाई के स्थान पर आया, न ही अपने संबोधन में जब मैं कुछ कहने जा रहा था, फिर भी अन्य अवसरों पर इसने मुझे बोलने के बीच में ही रोक दिया;

लेकिन अब इन कार्यवाहियों के दौरान इसने कभी भी मेरा विरोध नहीं किया, न ही मेरे किसी भी काम में, न ही मैंने कहा। तो फिर, मैं इसका कारण कब बन सकता हूँ? मैं आपको बता दूं: मेरे साथ जो हुआ वह एक आशीर्वाद प्रतीत होता है। और इस प्रकार सुकरात इतिहास में अमर होने के लिए मर गये; जबकि मेलेटस का नाम और अभियोग जीवित है, लेकिन बदनामी में याद किया जाएगा। प्राचीन यूनानियों के राक्षसों और रोमनों के लारेस और मैन्स का उस पुराने धार्मिक सिद्धांत से कोई संबंध नहीं था, न ही वे किसी भी तरह से संबंधित थे।

जॉन मिल्टन द्वारा 4 'गिरे हुए स्वर्गदूतों' के बारे में खूबसूरती से, गंभीर रूप से गाया गया। ईसा मसीह द्वारा स्वर्ग में स्वर्गदूतों की भीड़ के साथ जीता गया युद्ध, जो नरक और पृथ्वी दोनों से ईडन के एक अनदेखे बगीचे में गिर रहे हैं, केवल एक स्वप्निल कवि की डरावनी कल्पना है। लेकिन सभी देशों में, गौरवान्वित शाही रोम से लेकर यूकेलिप्टस-छाया वाले ऑस्ट्रेलियाई झाड़ियों तक, अंधेरे के अपने राक्षस रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया की अपनी विभिन्न यात्राओं के दौरान इन बुशमैनों के बीच काफी समय बिताने के बाद, मैं उनके तौर-तरीकों, रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों और आकाशीय, स्थलीय और राक्षसी सभी प्रकार के आध्यात्मिक प्रभावों में विश्वास के बारे में अधिकारपूर्वक लिख सकता हूं। पूर्वाह्न। महान अच्छी आत्मा, जिसे वे पिरानमेहेल कहते हैं, एक विशाल आत्मा-पुरुष माना जाता है जो बादलों के ऊपर रहता है।

उनका नाम विस्मय और सम्मान से ही लिया जाता है। उसकी आवाज़ गरजती है, और गरज बारिश की भविष्यवाणी करती है, जिससे मनुष्य और जानवर के लाभ के लिए घास और जड़ें उगती हैं। तारे उसकी आँखें हैं. सूर्य और चंद्रमा उनके पुत्र और पुत्री हैं। उस महान दुष्ट आत्मा को वे मुरुरूपा कहते हैं, हालाँकि, कभी-कभी वे उसे वामन भी कहते हैं। यह बदबूदार धुआं पैदा करता है, सूखा, बाढ़ और बीमारी का कारण बनता है। वह बिना देखे हवा में उड़ जाता है।

वे रात में इस दुष्ट राक्षस और उसकी शैतानियों से बहुत डरते हैं। उनका कहना है कि वह उन पर नज़र रखने के लिए उल्लू और अन्य रात्रिचर पक्षियों को काम पर रखते हैं। जब उल्लू की आवाज़ सुनाई देती है, तो बच्चे घास के नीचे रेंगते हैं। इस स्वरूप वाली अनेक हीन आत्माएँ हैं। वे लोगों को बुरा बनने, झूठ बोलने और चोरी करने के लिए उकसाते हैं। ये राक्षस या स्थलीय आत्माएं उन शैतानों, भूतों और प्रेतों के समान हैं जो अधिक प्रबुद्ध देशों में रात में घूमते हैं।

इन राक्षसी आत्माओं में लोगों को नियंत्रित करने की शक्ति होती है। वे उन्हें मोहित कर लेते हैं और फिर आश्चर्यजनक रूप से अजीब बातें कहते हैं। जादू के प्रभाव से वे कभी-कभी मरे हुए की भाँति भूमि पर गिर पड़ते हैं। वे सुनसान सड़कों और रेगिस्तानी इलाकों में भटकते रहते हैं। कभी-कभी वे पागलों जैसे लगते हैं। कभी-कभी वे बस प्रकट होते हैं और फिर दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। जब कोई मरता है तो यह एक आम कहावत है, "वह एक काला आदमी मरता है, वह एक सफेद आदमी बनकर वापस आता है।"

इन आदिवासियों का मानना है कि अगर कोई दुश्मन किसी ऐसी चीज़ पर कब्ज़ा कर लेता है जो कभी उनकी थी, जैसे टूटे हुए हथियार, पंख, कपड़े के टुकड़े, चमड़े के टुकड़े या किसी भी तरह का कचरा, तो वह उसे जादू की मदद से नष्ट कर सकता है। यदि अनुचित तरीके से उपयोग किया जाए तो यह उस व्यक्ति को बीमार कर सकता है और यहां तक कि उसकी मृत्यु का

कारण भी बन सकता है। इसलिए वे शिविर स्थल से बाहर निकलते समय सारा कचरा जलाने में बहुत सावधानी बरतते हैं।

यदि किसी शत्रु को किसी शत्रु जनजाति से संबंधित कोई वस्तु प्राप्त हो जाती है, तो वे उसे शत्रु को घायल करने के लिए जादू के रूप में उपयोग करते हैं। जब वे ताबीज का उपयोग करते हैं, तो वे दुश्मन पर श्राप देते हैं, और जहरीले भाले की नोक और बूमरैंग को उस दिशा में फेंकते हैं जहां दुश्मन होना चाहिए। वे फुफकारते और गालियाँ देते हुए गर्म राख भी उसी दिशा में फेंक देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने सहज रूप से यह जान लिया है कि बुरे विचार चोट पहुँचा सकते हैं या मार भी सकते हैं।

उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें हम जादूगर या निम्न श्रेणी के आध्यात्मिक माध्यम कह सकते हैं। उनका मानना है कि उनके पास अलौकिक शक्तियां हैं। वे उनसे डरते हैं. उनके पास अदृश्य गहराइयों से अच्छी या बुरी आत्माओं को बुलाने की शक्ति है, और वे कहते हैं, एकाग्रता और रहस्यमय ताबीज के माध्यम से, रहस्यमय नींद पैदा करने की शक्ति भी है - मौत जैसा प्रलोभन।

तब नियंत्रित करने वाली आत्मा भविष्य की भविष्यवाणी करती है, दोषी माने जाने वालों पर दोषारोपण करती है, यह बताती है कि छिपे हुए खजाने कहाँ मिलेंगे, बीमार को ठीक करती है, या, यदि कोई दुश्मन है, तो उसकी मृत्यु का कारण बनती है।

यदि किसी मुखिया या उच्च पद के किसी व्यक्ति की पत्नी बीमार है, तो जादूगर-डॉक्टर, उस व्यक्ति के पास जाकर, उसे एक हर्बल पेय देता है, जिससे यदि वह ठीक नहीं होती है, तो उसका शरीर छोड़ देता है और मठ में चला जाता है और दस लाता है आत्माओं को नीचे करो. इन्हें वह बीमार व्यक्ति से लगभग पचास गज की दूरी पर रखता है। फिर वह अपने मरीज़ और अपने द्वारा बुलायी गयी आत्माओं से बातचीत करता है। फिर वह अदृश्य एजेंसियों के निर्देशानुसार रोगी पर सांस लेता है, रोगग्रस्त क्षेत्र को रगड़ता है या मालिश करता है।

इसके अलावा, वह अपने दाहिने हाथ को आग पर गर्म करता है और उसे दर्द वाली जगह पर जोर-जोर से रगड़ता है, साथ ही एक मंत्र भी पढ़ता है। और इस प्रकार रगड़ते हुए, वह अदृश्य लोगों की बातें सुनता है। अपनी

पुष्टि में, वे इस दौरान एक प्रकार का असभ्य घेरा बनाते हैं, अजीब नृत्य करते हैं, उनमें से कुछ तो मृत्यु जैसी समाधि में चले जाते हैं।

उनका कहना है कि उन पर उनके पूर्वजों की आत्माएं सताती हैं। वे बारी-बारी से मुस्कुराते हैं, रोते हैं, चिल्लाते हैं, पेड़ों पर चढ़ते हैं और सभी प्रकार की अजीब और विलक्षण हरकतें करते हैं, कभी-कभी अत्यधिक शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करते हैं, और फिर दुश्मन के प्रति हिंसक क्रोध का प्रदर्शन करते हैं। इस जुनूनी अवस्था में, ये नियंत्रण करने वाले राक्षस दर्शकों को उल्लेखनीय परीक्षण देने और न केवल घायल करने, बल्कि दुश्मन को मारने के लिए जाने जाते हैं। ये जातक अंधेरे के बाद किसी भी प्रकार की आत्माओं, भूत, राक्षसों और प्रेतों से बेहद डरते हैं।

दिन के उजाले के दौरान उन्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। अजीबोगरीब अध्यात्मवाद का यह अपरिष्कृत रूप, जिसे अधिक उचित रूप से दानववाद कहा जाता है, का उपयोग ज्यादातर दुश्मनों को घायल करने या किसी वास्तविक या काल्पनिक गलत का बदला लेने के लिए किया जाता है। उनके पास, या उनके अधिक समृद्ध दिनों में, सभ्यता के पुजारियों के अनुरूप अर्ध-प्रमुखों का एक क्रम था।

कभी-कभी, जब कोरोबोरा खत्म हो जाता है, तो जनजाति के डॉक्टर तीन या चार महिला आत्माओं को बादलों से नीचे आने, भौतिक रूप लेने और पुजारी द्वारा जलाई गई पवित्र अग्नि के चारों ओर नृत्य करने के लिए बुलाते हैं; और, पूछे जाने पर, प्रत्येक अपना नाम जनजाति के किसी मृत सदस्य के रूप में बताता है।

कोई भी उन्हें देख सकता है, लेकिन औपचारिक पोशाक में एक डॉक्टर या पुजारी को छोड़कर कोई भी उनसे बात नहीं कर सकता है, और कोई भी भागने की हिम्मत नहीं करता है। मानव जाति के सबसे निचले तबके में होने वाली उपरोक्त गुप्त घटनाओं को 'प्रकृति दानववाद' कहा जा सकता है और फिर भी, अंतिम विश्लेषण में, वे सैद्धांतिक रूप से कुछ हद तक उच्चतर घटनाओं के अनुरूप हैं, यदि सुसंस्कृत जातियों की मान्यताएँ और परिपक्व स्वीकारोक्तियाँ इसमें नहीं हैं के अनुसार।

मानव स्वभाव एक ही है क्योंकि वह मानव है। उदाहरण के लिए, उस प्रख्यात विद्वान, संपादक और लेखक, डब्ल्यू. स्टैंटन मोसेस (एम.ए. ऑक्सन) से निम्नलिखित को लें: "कौन सी आत्माएं हैं जो पृथ्वी पर लौटती हैं! कौन सी श्रेणी! "मुख्य रूप से वे जो पृथ्वी के सबसे करीब हैं, तीन

निचले क्षेत्र या राज्य। बातचीत में सबसे आसानी से वे लोग शामिल होते हैं जिनके पास धरती पर लौटने की ताकत होती है।

हम आपको इससे अधिक कुछ नहीं बता सकते कि हम उच्च आत्माओं को ऐसा माध्यम ढूंढने में बहुत कठिनाई होती है जिसके माध्यम से हम संवाद कर सकें। कई लोग ख़ुशी-ख़ुशी बातचीत करना चाहेंगे, लेकिन एक उपयुक्त माध्यम की कमी के कारण, और एक के लिए अपने शोध को लम्बा खींचने की अनिच्छा के कारण, वे समय बर्बाद करने का जोखिम नहीं उठाएंगे। इसलिए, संचार कई बार बहुत भिन्न होता है। जो संचार आपको झूठा लगता है वह हमेशा जानबूझकर नहीं किया जाता।

जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, हम संचार को प्रभावित करने वाली स्थितियों के बारे में और अधिक जानेंगे।

“आपने विरोधियों के बारे में बात की है। कौन हैं वे?

“वे शत्रु आत्माएँ जो हमारे मिशन के विरुद्ध खड़ी हैं; जो हमारे प्रभाव और कार्य की नकल करके और लोगों तथा अन्य आत्माओं को हमारे और अपने विरुद्ध खड़ा करके इसकी प्रगति में बाधा डालने का प्रयास करता है। ये वे आत्माएं हैं जिन्होंने बुराई को चुना है, अच्छे के संकेतों और प्रभावों को दरकिनार कर दिया है, और हमें बदनाम करने और हमारे काम में बाधा डालने के लिए और भी बड़ी बुरी बुद्धि के नेतृत्व में खुद को संगठित किया है।

ऐसे लोग शरारत करने में शक्तिशाली होते हैं, और उनकी गतिविधि बुरी भावनाओं में, हमारे काम की नकल करने में, और इस प्रकार भ्रमित लोगों पर प्रभाव प्राप्त करने में, और सबसे ऊपर, जिज्ञासु आत्माओं के सामने घटिया और निराधार बातें प्रस्तुत करने में प्रकट होती है। जहाँ हम उन्हें नेक और परिष्कृत लोगों की ओर ले जाना चाहते हैं।

वे परमेश्वर और मनुष्य के शत्रु हैं; अच्छाई के दुश्मन; बुराई का मंत्री. हम उनके खिलाफ लगातार युद्ध छेड़ते हैं।' “बुराई के ऐसे शक्तिशाली संगठन के बारे में सुनकर हैरानी होती है।

आप जानते हैं, ऐसे कुछ लोग हैं, जो बुराई के अस्तित्व को पूरी तरह से नकारते हैं और सिखाते हैं कि सब कुछ अच्छा है, भले ही वह छिपा हुआ हो। "हाय! हाय! सबसे दुखद बात है अच्छाई का त्याग और बुराई का चयन। आप आश्चर्यचकित हैं कि इतनी बुरी आत्माएं हस्तक्षेप करती हैं। मित्र, यह सच है, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जिस प्रकार आत्मा सांसारिक जीवन में रहती है, इसी प्रकार यह आध्यात्मिक जीवन तक जाता है।

उसकी रुचियाँ, उसकी प्राथमिकताएँ, उसकी आदतें, उसकी शत्रुताएँ, वे सब उसके साथ हैं। शरीर से मुक्त होने के अतिरिक्त इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। पृथ्वी पर जो आत्मा स्वाद में कम और आदतों में अशुद्ध रही है, वह सांसारिक क्षेत्र से गुजरने पर अपना स्वभाव नहीं बदलती है, जैसे कि आत्मा जो सच्ची, शुद्ध और प्रगतिशील रही है वह मृत्यु के बाद नीच और दुष्ट बन जाती है। आश्चर्य है कि आप इस सत्य को नहीं पहचानते! आप एक शुद्ध, ईमानदार आत्मा को पतित होते नहीं देखना चाहेंगे।

वह तुम्हारी दृष्टि से ओझल हो गया है। फिर भी आप उस चीज़ के शुद्धिकरण की कल्पना करते हैं जो आदत से अपवित्र और अपवित्र हो गया है, ईश्वर और अच्छाई से नफरत करता है, और कामुकता और पाप को चुनता है। एक दूसरे से अधिक संभव नहीं है। आत्मा का चरित्र हर दिन, हर घंटे बढ़ता रहता है। यह आत्मा पर पड़ा कोई आवरण नहीं है जिसे हटाया जा सके। बल्कि यह आत्मा की प्रकृति में एक बुनाई है जो उसका हिस्सा बन जाती है, उसकी प्रकृति के साथ पहचानी जाती है, उसके चरित्र से अविभाज्य होती है।

विलुप्त होने की धीमी प्रक्रिया के अलावा उस चरित्र को मिटाना संभव नहीं है, जैसे बुने हुए कपड़े को बेरहमी से काट दिया जाता है और धागे बरकरार रहते हैं। लेकिन उससे भी ज्यादा. आत्मा ने ऐसी आदतें विकसित कर ली हैं जो व्यक्तित्व का अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। जो आत्मा कामुक शरीर की इच्छाओं के आगे झुक जाती है वह अंततः उनकी गुलाम बन जाती है।

वह पवित्रता और परिष्कार के बीच खुश नहीं रह सकता। वह अपने पुराने कामों और आदतों के लिए विलाप करेगा। वे उसका सार हैं. तो आप देख सकते हैं कि विरोधियों की सेना केवल अप्रगतिशील, अविकसित आत्माओं का एक समूह है, जो पवित्र और अच्छी हर चीज़ के प्रति आत्मीयता से एकजुट है।

वे केवल पश्चाताप के माध्यम से, उच्च बुद्धि के निर्देश के माध्यम से, और धीरे-धीरे और श्रमसाध्य रूप से पाप और पापपूर्ण आदतों को समाप्त करके ही प्रगति कर सकते हैं। बहुत सारे हैं, और वे विपरीत हैं।

, , , , , , , "कई आत्माएं समय से पहले शरीर छोड़ देती हैं। फिर वे ठीक होने से पहले ही मर जाती हैं; और प्रस्थान के समय वे बुरी स्थिति में होती हैं, क्रोधित, खून की प्यासी, बुरी वासना से भरी होती हैं। बाद वाली बहुत कुछ करती हैं महान और लंबे समय तक चलने वाली शरारतें। "आत्माओं के लिए उनके भौतिक निवास से क्रूरतापूर्वक अलग किए जाने और आत्मा-जीवन में प्रक्षेपित किए जाने से अधिक खतरनाक कुछ भी नहीं है, क्रोधपूर्ण जुनून और प्रतिशोधात्मक भावनाओं को भड़काना। यह किसी भी व्यक्ति के लिए बुरा है।" उसे अचानक पृथ्वी-जीवन से चले जाना चाहिए, और इससे पहले कि बंधन स्वाभाविक रूप से टूट जाए।

यही कारण है कि भौतिक जीवन का विनाश मूर्खतापूर्ण और असभ्य है: असभ्य, क्योंकि यह जीवन की स्थितियों और उसके बाद के जीवन में प्रगति की बर्बर अज्ञानता को दर्शाता है; मूर्खतापूर्ण, क्योंकि यह एक अविकसित, क्रोधित आत्मा को उसके बंधनों से मुक्त करता है, और उसे शरारत करने की एक विस्तारित क्षमता देता है। ("आध्यात्मिक शिक्षाएँ," पृष्ठ 12, 13, 14, 17.) ब्रह्मांड कंपन और अभिव्यक्तियों की एक विशाल, गूंजती हुई गैलरी है, जिनमें से कई भौतिक कान के लिए अश्रव्य हैं, फिर भी लुप्त नहीं हुई हैं।

एक संगीत स्वर आपके और मेरे कानों से गायब हो सकता है, लेकिन यह प्रणोदन के नियम के अनुसार सद्भाव के एक प्रचारक मिशनरी के रूप में चलता है, और दृश्य या अदृश्य क्षेत्रों में कुछ जीवन को मधुर बनाता है। कोई विचार नहीं मरता. यह जिस ईथर लहर को शुरू करता है और प्रसारित करता है वह दूर-दराज के देशों के दिमागों को प्रभावित कर सकता है।

यदि इसे कुछ समय के लिए दबा दिया जाए तो कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियाँ इसे पुनर्जीवित कर सकती हैं। अदृश्य एजेंट, राक्षस, आत्माएं, देवदूत हमें प्रभावित करते हैं और बदले में हम भी उन्हें प्रभावित कर सकते हैं। मृतकों के लिए कैथोलिक प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं हैं। अच्छे विचार, महान आकांक्षाएँ ही प्रार्थनाएँ हैं। इस उद्देश्य से पौलुस ने कहा, "बिना रूके प्रार्थना करो।"

अध्याय X

यहूदी जुनून और राक्षसों के कार्य

पिछले साल लंदन में कुछ महीने बिताने के दौरान मुझे एक प्रतिष्ठित मिस्रविज्ञानी और असीरोलॉजिस्ट प्रोफेसर बोस्कावेन को मिस्र के चित्रलिपि, असीरियन शिलालेख और पुराने चाल्डियन जादुई फॉर्मूलों को पढ़ते हुए सुनने का सौभाग्य मिला, जो चकमक कब्रों और बेबीलोनियन मिट्टी के सिलेंडरों पर दिखाई देते हैं। लेकिन उत्कीर्ण थे. इन पाठन और अनुवादों ने न केवल मुझे प्रसन्न किया, बल्कि मुझे उत्साहित भी किया।

यहां इतिहास था, प्रेतात्मवाद था, जादू था, वास्तव में प्राचीन का पुनरुद्धार था या उन लोगों के ऐतिहासिक अभिलेखों और परंपराओं की पुनर्प्राप्ति थी जो ईसाई युग से चार और पांच हजार साल पहले रहते थे। निस्संदेह सेमाइट्स का मूल घर मध्य अरब के उच्चभूमि वाले चरागाह थे। स्वाभाविक रूप से एक चरवाहा जाति होने के कारण, वे शिनार के उपजाऊ मैदानों से आकर्षित थे। हिब्रू लोग सेमिटिक परिवार की एक शाखा थे, और सेमिटिक भाषा बेबीलोनियन की एक बोली थी, जैसे सेमिटिक हिब्रू थी।

और व्यापार से संबंधित हिब्रू शब्द 4000 ईसा पूर्व के वाणिज्यिक और धार्मिक ग्रंथों में पाए जाते हैं, प्रोफेसर डब्ल्यू.एस.सी. बोस्कावेन के अनुसार. इन खोजे गए अभिलेखों के अनुसार, बाल और सेट, और चरवाहा राजा, राक्षस बन गए और उनके पास मिस्र और इज़राइल की बाद की जातियों की आत्माएँ थीं।

एक प्रतिष्ठित धर्मशास्त्री और इतिहासकार थोलुक ने लिखा, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यहूदियों को बेबीलोन की कैद से पहले तक बुरी आत्माओं के बारे में कुछ भी पता था। शाऊल "एक दुष्ट आत्मा से परेशान था" और एक कुशल वीणा वादक को राक्षस को बाहर निकालने का आदेश

दिया गया था (1 शमूएल 16:16)। पद तेईसवाँ पढ़ता है, "और जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ी, तब दाऊद ने वीणा लेकर हाथ से बजाया; इस प्रकार शाऊल को ताज़गी मिली और वह चंगा हो गया, और दुष्ट आत्मा उसके पास से हट गई।

बाद में, यह दुष्ट आत्मा शाऊल के पास लौट आई और उसने दाऊद को मारने का प्रयास किया। थियोफ्रेस्टस हमें सूचित करता है कि "संगीत शरीर और मन के कई विकारों को ठीक करता है, और उन राक्षसों को दूर भगाता है जो असंगति और अंधकार दोनों को पसंद करते हैं।" वर्जिल ने सिबिल को झाग उगलते, उग्र और देवताओं के बारे में बेतहाशा बातें करते हुए दर्शाया है; और लूसियन ने पाइथियन पुजारिन को क्रोध से भरा हुआ दर्शाया है, उसके बाल खड़े थे, और उसका शरीर झाग से भरा हुआ था, मुड़ रहा था और उसे भविष्यवाणी करते समय हाँफ रहा था।

इन घटनाओं के बारे में, शेक्सपियर लिखते हैं: "रोम के ऊंचे और राजसी साम्राज्य में, सबसे शक्तिशाली जूलियस के पतन से कुछ समय पहले, कब्रें खाली थीं, और चादरों में लिपटे मृत लोग रोमन सड़कों पर चिल्लाते और बड़बड़ाते थे" ग्रीक और रोमन कवियों ने राक्षसों, बुरी आत्माओं, अशुद्ध आत्माओं और परिचित आत्माओं जैसे शब्दों को पर्यायवाची अभिव्यक्ति के रूप में इस्तेमाल किया। एक्रोन के देवता बील्ज़ेबब को राजकुमार या सबसे शक्तिशाली प्रभावशाली राक्षसों में से एक माना जाता

राक्षसों का अड्डा और कार्य

युगों का साहित्य इस बात पर एकमत है कि सभी प्राचीन वस्तुओं में राक्षस किसी न किसी रूप में प्रकट हुए हैं। चाल्डियन जादुई सूत्र इस प्रकार है:
“घर में गृह देवता स्थापित करना चाहिए; मित्र राक्षस, मित्र देवता घर में प्रवेश करते हैं। दुष्ट राक्षस, दुष्ट अलाद, दुष्ट ग्रिगिम, दुष्ट तेलल, दुष्ट मास्किम, भूत, प्रेत, पिशाच, हे स्वर्ग की आत्मा, उन्हें बुलाओ, हे स्वर्ग की आत्मा, उन्हें बुलाओ, उन्हें दूर भगाओ।

ये राक्षसी आत्माएं सभी गंदगी वाले स्थानों पर रहती हैं। वे चारों ओर समूहों में अँधेरी, गन्दी गुफाओं में रहते हैं। वे गंदे, गंदे मुंह वाले लोगों की कोहनी पर हैं। वे खराब हवादार तहखानों और भूमिगत गुफाओं में छिपे रहते हैं। गंदगी के सभी स्थान इस वर्ग के प्राणियों के लिए अत्यंत अनुकूल

हैं। कब्रिस्तान उनका पसंदीदा सहारा है. वे कब्र-लुटेरों के साथ रहते हैं। एक निश्चित वर्ग रेगिस्तानी भूमि को निवास का आकर्षक स्थान मानता है। वे कुछ जानवरों से जुड़े हो सकते हैं।

वे खंडहर हो चुके रॉक-बाथों और पुराने नम खाली घरों में रहते हैं। वे शराब के अड्डों और अय्याशी के अड्डों में रहना पसंद करते हैं। ये पृथ्वीवासी राक्षस अंधेरे में सबसे अधिक सक्रिय और प्रभावी होते हैं। वे दोपहर की चकाचौंध से दूर भागते हैं। वे सुनहरी धूप से कीड़ों की तरह भागते हैं और जब छाल या पत्थर का एक टुकड़ा उठाया जाता है तो जमीन में छिप जाते हैं, जिससे प्रकाश की किरण उन पर पड़ती है।

इनमें से कुछ राक्षस घातक हैं और जिन लोगों को वे नापसंद करते हैं उन पर दुर्भावनापूर्ण द्वेष फैलाने या अपनी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए उनका उपयोग करने में आनंद लेते हैं। बेन ज़कोहाई टिप्पणी करते हैं, "राक्षसों के पास भाषण का उपहार है और वे अपनी ओर से बोलते हैं। वे अतीत को जानते हैं और भविष्य को जानने का दावा करते हैं।

दोनों ही मामलों में उनसे परामर्श लिया जा सकता है; लेकिन बेहतर होता कि उनसे खोये हुए खज़ाने के बारे में सवाल न पूछे जाते। , , ,

वे अंधेरी जगहों पर रहते हैं. वे बुरे स्वभाव वाले लोगों की गन्दी झोपड़ियों में घुसपैठ करते हैं। वे बच्चों में ऐंठन संबंधी विकार पैदा करते हैं। वे अपने लोगों पर गुलामी के प्रतिबंध लगाते हैं। , , , वे कसाई की दुकानों में रहते हैं, जहां मारे गए बकरों के शव पड़े रहते हैं। उन्हें रक्त बलिदान पसंद है (टार्गम, ओएनसी लेव. 17)। यह मिस्र के राक्षस थे जिन्होंने मूसा का विरोध किया था।

एस्मोडस, टोबिट की किताब का राक्षस, घातक और क्रूर रूप से दुष्ट था। इस वर्ग के राक्षस गहरे गंदे कुओं में रहते हैं। यूनानी कवियों ने कहा है कि राक्षस मिर्गी का कारण बनते हैं। भारत में, आत्महत्या भूतिया प्रतिशोध लेने वाली दुष्ट आत्मा बनने का एक मान्यता प्राप्त तरीका है। एक ब्रिटिश अधिकारी घातक रूप से घायल हो गया, त्रावणकोर और त्रिचनोपोली का एक कुख्यात अपराधी एक साथ एक राक्षसी राज्य में प्रवेश कर गया, पड़ोसी हिंदुओं ने कहा, जिससे उनके दुश्मन पागल हो गए।

कई लोगों ने घोषणा की कि उन्होंने इस अपराधी की मृत्यु के बाद उसकी उपस्थिति को देखा और महसूस किया। वह इतना भौतिक हो गया कि वे उसकी दृष्टि का वर्णन कर सकते थे। मिल्टन ने ऐसे तथ्यों में से एक को पद्य में रखा: "जैसा वे चाहते हैं, वे अपने अंग, रंग, आकार या साइज़ लेते हैं, जैसा उन्हें सबसे अच्छा लगता है, मोटा या दुर्लभ।"

प्राचीन भविष्यवाणियाँ

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ग्रीस के सिबिलीन ओरेकल ही इस युग में लेखन माध्यम कहलाएंगे। उन्हें स्वचालित किया जा सकता है. कुछ भविष्यवाणियाँ संभवतः सच हुईं; लेकिन उनमें से कई राक्षस-प्रेरित लोगों की कोरी कल्पनाएँ मात्र थीं। और फिर भी, सुसंस्कृत यूनानियों और रोमियों ने यदि कुछ सच नहीं बोला तो वे भविष्यवक्ताओं से परामर्श नहीं लेते थे। उच्च वर्गों ने देवताओं और राक्षसों के बीच भेदभाव किया और यहां तक कि परीक्षणों का भी आविष्कार किया। डेल्फ़ी में दैवज्ञ से परामर्श करने से पहले, लिडिया के राजा क्रोएसस ने यह पता लगाने के लिए दूत भेजे कि लिडिया का राजा एक निश्चित दिन और घंटे पर क्या कर रहा था।

उस समय राजा ने पीतल के बर्तन में, पीतल के ढक्कन के साथ, कछुए के मांस के साथ भेड़ के मांस को उबालना शुरू कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि जब राजा इस प्रकार व्यस्त था, तब दैवज्ञ ने उसके दूतों को घटना का विस्तार से वर्णन किया। सम्राट ट्रोजन ने इसी तरह की मांग करते हुए हेलियोपोलिस के दैवज्ञ को एक सीलबंद पत्र भेजा, जिस पर वह प्रतिक्रिया चाहता था।

दैवज्ञ ने सम्राट को कागज का एक खाली टुकड़ा भेजकर जवाब दिया, जो बड़े करीने से मुड़ा हुआ और सील किया हुआ था। ट्रोजन यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उत्तर बिल्कुल भेजे गए पत्र से मेल खाता था, जिसमें कागज की एक खाली शीट के अलावा कुछ भी नहीं था।" जब मैं मदुरा, भारत में था, तो मुझे एक सुसंस्कृत सज्जन ब्राह्मण से निम्नलिखित संदेश मिला, जो बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलता था। .

मेरा पंद्रह वर्षीय बेटा परिवार के एक करीबी दोस्त के संरक्षण में पढ़ रहा था। हालाँकि वह स्वस्थ दिख रहा था, फिर भी उसे अजीब दौरे पड़ते थे। इस दौरान उन्हें कोई दर्द महसूस नहीं हुआ. दौरे की आवृत्ति बढ़ गई, और जब वह उनमें होता तो वह दूसरी आवाज़ में बात करता; कुछ महीनों के बाद, कई आवाजें, और एक जीभ बेतहाशा बकबक करने लगी। कुछ लोग उसे पागल समझते थे; लेकिन जब वह इस मनोवैज्ञानिक प्रभाव में नहीं था, तो उसने अधिक संवेदनशील, घबराए हुए और संदिग्ध होने को छोड़कर, हर तरह से खुद को संभाला।

हालात तब तक बदतर हो गए, जब तक कि मंदिर के पुजारी ने हमें आश्वस्त नहीं कर दिया कि उस पर एक अदृश्य, प्रेतवाधित राक्षस का साया है। बयान ने हमें चौंका दिया; और फिर भी, हमारी कुछ पवित्र पुस्तकें इन बुरे प्रभावों से भरी हुई हैं, जो स्वास्थ्य और खुशी को नष्ट कर रही हैं।

“जैसे-जैसे समय आगे बढ़ा, उसने कई बार बड़ी नैतिक लापरवाही दिखाई और अपना नैतिक संतुलन खो दिया। इन दौरों में वह घर से भाग जाता था, कभी-कभी रात को गंदगी में ढका हुआ लौटता था। उसके पिछले खुशहाल जीवन की पूरी प्रवृत्ति उलट गई थी। उसने उत्तेजक पदार्थों की तलाश की - प्रतिशोधी बन गया, सभी प्राधिकारों की अवहेलना की। अंत में, जबकि वह आंशिक रूप से अपने जैसा ही लग रहा था, वह स्वयं नहीं था, बल्कि एक अन्य व्यक्तित्व था।

अंततः वह धूर्त, धूर्त, अहंकारी और जिद्दी, हिंसक, बोलने में अश्लील और पूरी तरह से बेकाबू हो गया, एक बार तो उसने आत्महत्या करने की कोशिश की। क्या माजरा था? प्रारंभ में, यह लड़का शांत, आज्ञाकारी, अपने वर्ष के लिए प्रतिष्ठित और अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए बहुत उत्सुक था।

अब तो बहुत से लोग उसे पागल समझते थे; और फिर भी, अपने तर्कसंगत घंटों में जब उस पर कोई "जादू" नहीं था, उसने अपने सच्चे स्व की तरह सोचा और कार्य किया, बार-बार घोषणा की कि वह बता सकता है कि सबसे बुरे हमले कब आने वाले थे, क्योंकि वह एक भूत देख सकता था, एक काले चेहरे, लाल, भेदी आँखों वाले एक बालों वाले आदमी की बड़ी आकृति, काले, उलझे बालों के नीचे से झाँक रही है जो उसके कंधों और चेहरे पर खुले हुए थे। जैसे ही उसने उसे देखा, उसे चक्कर आने लगा जैसे वह बेहोश हो गया हो, फिर अंधेरा छा गया और जैसे ही प्रकाश की आखिरी किरण धुंधली हुई वह बेहोश हो गया।

लड़के का मांस खो रहा था। उसका तंत्रिका तंत्र टूट रहा था, उसकी आँखें अपनी चमक खो रही थीं। परिवार ने अब एक बहुत प्रसिद्ध ओझा को बुलाया। वह आया और कुछ पूजा-पाठ या पुरोहिती अभिवादन करते हुए बिस्तर पर गया और लड़के के सिर पर हाथ रखकर किसी अज्ञात भाषा में देवताओं से प्रार्थना की। लड़का डर गया, कांप उठा और बैठ गया। फिर फर्श पर कुछ गोलाकार रेखाएँ खींची गईं और लड़के को मंत्रमुग्ध घेरे में रखा गया। फिर अगरबत्तियां जलाकर सुखा ली गईं और कपूर में जड़ी-बूटियां मिलाकर जला दी गईं।

जब वह जल रहा था तो मंत्री तंत्र-मंत्र कर रहा था। जल्द ही ओझा, एक टन वजन वाले व्यक्ति की तरह सीधा होकर, लड़के की ओर दौड़ा और उसके सिर पर एक मुट्ठी पवित्र राख फेंकते हुए चिल्लाया, "चले जाओ! चले जाओ, काले जादू के राक्षस!" राक्षस ने लड़के के होठों से गंभीर, कठोर स्वर में कहा, - "तुम मेरे साथ यह सब क्यों कर रहे हो?" “क्योंकि आपका यहां कोई काम नहीं है - आप इस युवक को बर्बाद कर रहे हैं।

मुझे बताओ कि तुम कौन हो और तुम यहाँ क्यों अवांछित हो, - मुझे तुरंत बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें एक चट्टान से या एक मरते जादू-शापित नारियल के पेड़ से बाँध दूँगा।" 'मैं शरीर से तमिल था, और एक जादूगर था, मुझे आदेश दिया गया था मेरे एक रिश्तेदार की आलोचना करने और दूसरी जाति में शादी करने के लिए परिवार को दंडित करने के लिए इस आदमी को पागल कर दो, क्योंकि मुझे इस व्यक्ति के साथ या उसके आसपास रहना पसंद है, मैं फिर से भौतिक जीवन का आनंद ले सकता हूं, अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकता हूं और ताकत हासिल कर सकता हूं।

अब इसी क्षण से तुम इस लड़के को छोड़ दो, इस परिवार को छोड़ दो, उसे हमेशा के लिए छोड़ दो! लड़का स्वयं था - वास्तव में स्वयं, कमजोर, लेकिन सुखद और खुश। फिर उसे नहलाया गया, नए कपड़े दिए गए, और पवित्र, तीन धागों वाली जनेऊ डोरी से जुड़ा एक ताबीज दिया गया। यह जुनून का अंत था. युवक ने 'वकील' बनकर अपनी पढ़ाई जारी रखी।

अध्याय XI.

नए नियम का दानववाद और अशुद्ध आत्माएँ।

और वह गलील के कफरनहूम नगर में आया। और वह उन्हें सब्त के दिन सिखाता था; और वे उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि उसके वचन अधिकार से भरे हुए थे। और आराधनालय में एक मनुष्य था जिस में अशुद्ध आत्मा थी, और उस ने ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या आप हमें बर्बाद करने आएं हैं? मैं तुम्हें जानता हूं, तुम कौन हो, ईश्वर के पवित्र व्यक्ति। और यीशु ने उसे डाँटकर कहा, चुप रह और उसके पास से निकल जा।

और जब दुष्टात्मा ने उसे बीच में मारा, तब वह उसमें से निकल गया, और उसकी कुछ हानि न की। और सब लोग चकित होकर आपस में कहने लगे, यह क्या शब्द है? क्या वह अधिकार और सामर्थ से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं? और उसके बारे में अफवाहें हर जगह फैल गईं। लूका 4:31-37. और वे गिरासेनियों के देश में, जो गलील के साम्हने है पहुंचे।

और जब वह उस देश में पहुंचा, तो उसे नगर में एक मनुष्य मिला जिस में दुष्टात्मा समाई हुई थी; और बहुत दिन से न तो उसने कपड़े पहने, और न किसी घर में रहा, वरन कब्रों में रहा। और जब उस ने यीशु को देखा, तो चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम?

मैं तुमसे विनती करता हूँ, मुझे मत सताओ। क्योंकि उसने अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य को छोड़ देने का आदेश दिया था। क्योंकि वह उसे बार-बार जंजीरों से जकड़ती थी, और उस पर पहरा रखा जाता था, और उसे जंजीरों और बेड़ियों से बांधा जाता था, और बेड़ियों को तोड़ने के बाद दुष्ट आत्मा को जंगल में ले जाया जाता था। और यीशु ने उस से पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने कहा, सेना, क्योंकि उसमें बहुत बुरी आत्माएं प्रवेश कर गई थीं।

और उन्होंने उस से बिनती की, कि वह उन्हें अथाह कुण्ड में न जाने दे। लूका 8:26-30. जब वे चेलों के पास आए, तो उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर एक बड़ी भीड़ है, और शास्त्री उनसे पूछताछ कर रहे थे। और तुरन्त सारी भीड़ उसे देखकर चकित हो गई, और उसके पास दौड़कर उसका स्वागत किया।

और उस ने उन से पूछा, तुम उन से क्या प्रश्न पूछ रहे हो? भीड़ में से एक ने उत्तर दिया, "गुरु, मैं अपने बेटे को, जिसमें गूंगी आत्मा है, आपके पास लाया।" और जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं फेंक देती है, और उसके मुंह से झाग निकलने लगता है, वह दांत पीसता है, और सूख जाता है; और मैं ने तेरे चेलों से कहा, कि उसे निकाल दें; लेकिन वे इसे बाहर नहीं निकाल सके.

और उस ने उनको उत्तर दिया, हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? मैं तुम्हें कब तक सहूंगा? उसे मेरे पास लाओ. और वे उसे उसके पास ले आये; और जब उस ने उसे देखा, तो तुरन्त आत्मा ने उसे जोर से मरोड़ा, और वह भूमि पर गिर पड़ा, और मुंह से झाग निकलते हुए लोटने लगा। और उसने अपने पिता से पूछा कि उसके साथ ऐसा कब से हो रहा है? उन्होंने कहा, बचपन से.

और वह उसे नष्ट करने के लिये बारबार आग और पानी में डालती आई है; लेकिन अगर आप कुछ कर सकते हैं तो हम पर दया करें और हमारी मदद करें. यीशु ने उस से कहा, यदि तू कर सके! जो विश्वास करता है उसके लिए सभी चीजें संभव हैं। बालक के पिता ने तुरन्त चिल्लाकर कहा, मुझे विश्वास है; मेरे अविश्वास में मदद करो. और जब यीशु ने भीड़ को आते देखा, तो सब दौड़े, और अशुद्ध आत्मा को डांटकर कहा, हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, इस में से निकल आ, और उस में फिर कभी प्रवेश न करना।

और वह चिल्लाता हुआ और उसे बहुत फाड़ता हुआ बाहर आया, और बच्चा मानो मर गया था, यहां तक कि अधिकांश लोगों ने कहा कि वह मर गया था। परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उठाया, और वह जीवित हो गया। जब वह घर में आया, तो उसके शिष्यों ने अकेले में उससे पूछा, "हम उसे बाहर नहीं निकाल सकते!" उस ने उन से कहा, यह जाति प्रार्थना के सिवा किसी और उपाय से निकल नहीं सकती।

मरकुस 9:14-29 यीशु वहां से निकलकर सूर और सैदा देश को चला गया। और देखो, एक कनानी स्त्री उन देशों से निकलकर चिल्लाकर कहने लगी, “हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर; मेरी बेटी एक बुरी आत्मा से बहुत पीड़ित है. यीशु ने उत्तर दिया, हे नारी, तेरा विश्वास महान है, जैसा तू चाहे वैसा हो।

और उसकी बेटी उसी क्षण ठीक हो गई। मत्ती 15:21, 22, 28. उसके साथ स्त्रियां भी थीं जो दुष्टात्माओं और दुर्बलताओं से दूर हो गई थीं, अर्थात मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिस में से सात दुष्टात्माएं निकल गई थीं। लूका 8:2. और जब हम प्रार्थना करने के स्थान पर जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें अजगर की आत्मा थी, और जो भविष्यवाणी करके अपने स्वामियों को बहुत लाभ पहुंचाती थी।

वह पौलुस और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, ये लोग परमप्रधान परमेश्वर के सेवक हैं, जो तुम्हें मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। और वह ऐसा कई दिनों तक करती रही. परन्तु पौलुस बहुत डर गया, और मुड़कर आत्मा से कहा, मैं यीशु मसीह के नाम से तुझे आज्ञा देता हूं, कि उस में से निकल आ। और वह उसी समय बाहर आ गया। अधिनियम 16:16-18.

और परमेश्वर ने पौलुस के हाथों से विशेष चमत्कार किए: यहां तक कि उसके शरीर में से बीमारों के लिये रूमाल निकाले गए, और उन में से रोग दूर हो गए, और दुष्टात्माएं निकल गईं। परन्तु भटकते हुए यहूदियों में से भी, जो दुष्टात्माओं को निकालते थे, प्रभु यीशु के नाम से दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को यह कहकर पुकारने लगे, “मैं तुम्हें यीशु की शपथ देता हूँ, जिसका प्रचार पौलुस करता है।” , , , अधिनियम 19:11-16.

जब साँझ हुई, तो लोग बहुतोंको जिनमें दुष्टात्माएँ थीं, उसके पास ले आए, और उस ने बोलकर दुष्टात्माओं को निकाला, और सब बीमारों को चंगा किया। मत्ती 8:16. यीशु पूरे गलील में यात्रा कर रहे थे, उनके आराधनालयों में शिक्षा दे रहे थे और राज्य के सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, लोगों की हर बीमारी और हर दुर्बलता को ठीक कर रहे थे। उपदेश दे रहा था और दुष्टात्माओं को निकाल रहा था।

मरकुस 1:39. उसने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाया और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि वे उन्हें निकालें और हर बीमारी और हर दुर्बलता को ठीक करें। यीशु ने उन्हें बीमारों को ठीक करने, कोढ़ियों

को शुद्ध करने, मृतकों को जीवित करने, दुष्टात्माओं को निकालने की आज्ञा दी।

मत्ती 10:1, 5, 8. जाकर लोमड़ी से कह, 'देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालूंगा। लूका 13:32. बीमारों को ठीक करो और बताओ. परमेश्वर का राज्य रात को तुम्हारे पास आ गया है। सत्तर लोग प्रसन्न होकर लौट आए और बोले, हे प्रभु, तेरे नाम से राक्षस भी हमारे वश में हैं।

लूका 10:9, 17. ये अनुच्छेद स्पष्ट रूप से, निश्चित रूप से बताते हैं कि वहाँ "दुष्ट आत्माएँ," "अशुद्ध आत्माएँ," "राक्षस आत्माएँ" थीं। यीशु के समय में शैतानों को स्वयं कहा जाता था, बारह और सत्तर लोगों ने, संकटग्रस्त दलों को विमुद्रीकृत करके, उन्हें बाहर निकाल दिया। नए नियम के राक्षसी जुनूनों का विशेष रूप से उल्लेख नहीं करते हुए, जोसेफस और उस समय के यूनानी लेखकों के अनुसार, यह विश्वास आम था। सदूकी भौतिकवादियों को छोड़कर किसी ने भी इस तथ्य पर विवाद नहीं किया।

इस महत्वपूर्ण मामले पर विचार करते समय, यह अच्छी तरह से ध्यान में रखा जाना चाहिए कि शैतान और दानव विनिमेय शब्द नहीं हैं। प्राचीन लेखकों ने इन्हें कभी भी पर्यायवाची के रूप में प्रयोग नहीं किया। हमारे सर्वश्रेष्ठ विद्वान स्वीकार करते हैं कि मूल ग्रीक लंबे अधिकृत संस्करण के किंग जेम्स संस्करण की तुलना में अधिक स्पष्ट है, जो कभी-कभी डायबोलस, डी मोनियन और डेमन का अनुवाद "शैतान" या शैतान और राक्षसों के रूप में करता है। यह इतना गलत था कि संशोधित संस्करण में डायबोलस का अनुवाद "शैतान" किया गया है और अन्य दो, डेमनियन, राक्षस और डेमन का अनुवाद राक्षस किया गया है।

डायबोलस का अर्थ है "निंदक," "झूठा आरोप लगाने वाला"; निम्नलिखित अंश देखें: "उनकी पत्नियाँ शैतान न बनें।" 1 टिम. 3:11. "अंतिम दिनों में मनुष्य शैतान होंगे।" 2 टिम. 3:3. "बूढ़ी महिलाओं को शैतान नहीं होना चाहिए।" तीतुस 2:3. '4 क्या मैं ने उन बारह को नहीं चुना, और तुम में से एक शैतान है?'
यूहन्ना 6:70.

शैतान बनाम दानव।

डेमन और डेमनियन (दानव) शब्द का प्रयोग न्यू टेस्टामेंट में एकवचन और बहुवचन दोनों में अक्सर किया जाता है; लेकिन डायबोलस (शैतान) के सटीक पर्याय के रूप में कभी नहीं। डायबोलस शब्द न्यू टेस्टामेंट में लगभग छत्तीस बार आता है।

तो, धर्मग्रंथों में केवल एक ही शैतान है, और वह कोई गिरा हुआ देवदूत नहीं है; जबकि राक्षसों की संख्या "सेना" और उससे भी अधिक है। बील्ज़ेबब शैतान नहीं था, बल्कि राजकुमार, राक्षसों का नेता था। नर्क में ऐसे बहुत से नेता हुए हैं और हैं। वे संगठित होते हैं, लड़ते हैं, विवाद करते हैं और असंगठित होते हैं। "सेप्टुआजेंट सेवेंटी" में "राक्षस" शब्द का प्रयोग मृतकों की आत्माओं को दर्शाने के लिए किया गया है; और जोसेफस का कहना है कि राक्षस दुष्ट लोगों की आत्माएं हैं। लेकिन वाक्यांश "परिचित आत्माएं" नए नियम में नहीं पाया जाता है।

इस बात का कोई सबूत नहीं है कि बेबीलोनियों या यहूदियों या यूनानियों का मानना था कि राक्षस गिरे हुए स्वर्गदूत थे जिन्होंने "अपना पहला स्थान नहीं रखा।" यह अजीब सिद्धांत एक मिथक है, - धार्मिक कविता का एक जंगली सपना। राक्षस, दुष्ट आत्माएँ और अशुद्ध आत्माएँ परिवर्तनशील अभिव्यक्तियाँ हैं। प्लेटो "राक्षसों की कब्रें" की बात करता है। प्रेरित ने कहा, अन्यजातियों ने "राक्षसों के लिए बलिदान चढ़ाए।" हेसियोड ने कहा, "इस पीढ़ी के मरने के बाद, बृहस्पति की इच्छा से, वे राक्षस बन गए, नश्वर मनुष्यों के संरक्षक, हवा में कपड़े पहने हुए और हमेशा पृथ्वी पर घूमते रहे।"

ज़ेनोक्रेट्स ने सिखाया कि "आकाश दिव्य है, और तारे आकाशीय देवताओं के निवास हैं, और इनके अलावा, स्थलीय राक्षस भी हैं, देवताओं और मनुष्य के बीच एक मध्य क्रम, जो मनुष्यों की तरह, नश्वर लोगों के लिए जुनून में सक्षम हैं घटिया और ख़तरनाक।"

हेरोडोटस राक्षसों के कब्जे और एक क्लियोमेनस के बर्बर अंग-भंग का रोमांचक विवरण देता है। प्लेटो ने अपने "रिपब्लिक" में न केवल राक्षसों के विभिन्न स्तरों के बारे में बात की है बल्कि उनके पास मौजूद लोगों के लिए उपचार और प्रावधान की विधि का भी उल्लेख किया है।

प्लूटार्क, अपने क्लासिक काम "द फेलियर ऑफ द ओरेकल" में, डेल्फी की पाइथोनेस के मामले का वर्णन करता है, जो अपनी अभिव्यक्तियों के निर्वहन से ग्रस्त हो गई थी, डब्ल्यू मेन्ज़ीस अलेक्जेंडर लिखते हैं, "एक अवाक और बुरी आत्मा ने उसे पकड़ लिया था," और कुछ ही समय बाद मृत्यु हो गई। सोफोकल्स और युरिपिडीज़ दोनों रोमांचक भाषा में राक्षसी प्रभाव के मामलों और आविष्ट लोगों की विलक्षणताओं का वर्णन करते हैं।

रोमन होरेस और सेल्सस, जिन्होंने ईसाइयों की इतनी तीखी आलोचना की (ओरिजन का विस्तृत उत्तर देखें), एक जुनूनी अभिनेता का वर्णन करते हैं जो आक्षेपग्रस्त और राक्षसी हो गया, अपने कपड़े फाड़कर सड़कों पर चिल्लाता हुआ भाग गया। मानव स्वभाव सभी देशों में समान है, और राक्षसी प्रभाव भी समान थे, चाहे वे सेमेटिक, ग्रीक, या रोमन काल में, या आज के विभिन्न प्रबुद्ध देशों में प्रचुर मात्रा में थे।

सुस्त, मूर्ख रूढ़िवादियों के बीच, जुनूनी को पागल घोषित करना फैशनेबल था और है। मनोविज्ञान के जानकार लोग बेहतर जानते हैं. पागलखानों में चिकित्सकों को फ्रेनोलॉजी, फिजियोलॉजी, मनोविज्ञान, मंत्रमुग्धता, सुझाव और ऑटो-सुझाव में अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए; लेकिन, दुख की बात है कि उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं बनाया गया है। ये मनोविज्ञान के अंतिम अध्याय हैं।

जुनून और भूत भगाने के कारकों और विषयों को नए नियम में अलग-अलग नाम दिए गए हैं। निम्नलिखित उदाहरण हैं: "अशुद्ध दानव की आत्मा," "जिस पर आत्मा हावी हो जाती है" (लूका 9:39), "जिस पर आत्मा हमला करती है" (मरकुस 9:18), "जिस पर दानव प्रवेश करता है" (मैथ्यू 12: 45), "राक्षस होना" (मरकुस 1:23), "राक्षस होना" (मरकुस 3:30), "अशुद्ध आत्माओं से परेशान होना" (प्रेरित 5:16)।

"वे दुष्टात्माओं की आत्माएं हैं जो चमत्कार करती हैं" (प्रकाशितवाक्य 16:14), "आत्माओं से व्याकुल होते हैं" (लूका 6:18), "और जिस मनुष्य में दुष्टात्मा थी उस ने उन पर आक्रमण करके उन पर विजय पा ली" (लूका 6:18) . 19:16). यहां दी गई गवाही यहूदियों, यूनानियों, रोमनों और नए नियम के लेखकों से लेकर निम्नलिखित जैसे सकारात्मक तथ्यों तक की लगभग अतिशयोक्ति है:

1. पिछले साहित्य, धर्मनिरपेक्ष और धर्मों में, बहुत कम अपवादों को छोड़कर, दानव शब्द अविकसित दुष्ट मनुष्यों की आत्माओं को संदर्भित करता है।

2. कि इन राक्षसों - इन बुरी आत्माओं - में प्रभावित करने, प्रभावित करने, चोट पहुंचाने की शक्ति थी; और इसके अलावा, स्वार्थी, दुर्भावनापूर्ण ढंग से मनुष्यों को अपने सांसारिक जीवन को अपनी ही आभा में मापने के लिए बार-बार जीने के लिए प्रेरित करना, और फिर से स्वार्थी, घृणित और कामुक प्रवृत्तियों की संतुष्टि में आनंद लेना।

3. ऐसे लोग थे जो प्रकृति द्वारा इतने परिपूर्ण और राजसी रूप से संगठित थे, और मानसिक रूप से इतने प्रतिभाशाली थे, कि अदृश्य, स्वर्गीय सहायकों की सहायता से वे "बाहर ला सकते थे" - यानी, उन लोगों को विचुंबकित और मुक्त कर सकते थे जो परेशानी से ग्रस्त थे, झूठे राक्षस. प्रसिद्ध डॉ. टाइलर ने अपनी पुस्तक 'प्रिमिटिव कल्चर' में स्पष्ट रूप से कहा है, "यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मूलतः समान तथ्यों, समान सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, शैतानी कब्जे का सिद्धांत मानव जाति के आधे हिस्से द्वारा कायम रखा गया है।" जो इस प्रकार आदिम पुरातनता में अपने पूर्वजों के लगातार प्रतिनिधियों के रूप में खड़े हैं।

और फिर भी, तर्कवादियों की इन स्वीकारोक्तियों के साथ, बेबीलोनिया, मिस्र और भारत के अयोग्य बयानों और सबूतों के साथ, यहूदी और शास्त्रीय लेखकों के अवलोकन, अनुसंधान और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध, आधुनिक सदूसी, अज्ञेयवादी, भौतिकवादी रूप से इच्छुक रोगविज्ञानी हैं। एक वर्ग ऐसा है, जो निपुण ज्ञान से भी अधिक आधुनिक दुस्साहस के साथ यह घोषणा करता है कि ये राक्षसी जुनून शारीरिक और मानसिक बीमारियों के अलावा कुछ नहीं थे और हैं;

जैसे कि पागलपन, पागलपन, "हिस्टेरिकल पागलपन", "लाइकेंथ्रोपिक परिवर्तन", "सनकी पागलपन, भविष्यवाणियों का उलटा होना, हिस्टीरिया, मिर्गी और विभिन्न तंत्रिका संबंधी विकार। मान लीजिए, फिर, तथ्यों की यह तनावपूर्ण, तर्कहीन व्याख्या स्पष्ट रूप से इसी से संबंधित है, हम डालते हैं नए नियम के कुछ अंशों में किसी प्रकार की बीमारी, और देखें कि यह तर्कसंगत विचारकों को कैसा लगता है। ल्यूक के आठवें अध्याय को लें, जहां एक आदमी एक ऐसे शहर से आया था जो "राक्षसों" से ग्रस्त था।

इस आदमी ने कुछ समय तक कोई कपड़ा नहीं पहना और कब्रों में रहता रहा। और इसके अलावा, मिर्गी ने उसे कई बार "रेगिस्तान में" धकेल दिया था, और जब यीशु ने उसे देखा, तो उसने "उससे पूछा" - मिर्गी - 6 'तुम्हारा नाम क्या है?' और मृगी ने कहा, “सेना।” और इन "मिर्गी रोगियों" ने यीशु से विनती की कि "उन्हें रसातल में जाने की आज्ञा न दें।"

आप बीमारी का श्रेय राक्षसों को कैसे देते हैं? मार्क के सुसमाचार के नौवें अध्याय पर विचार करें, जहां एक व्यक्ति अपने बेटे को यीशु के पास लाया था जिस पर "एक मूक आत्मा" - उन्मादी - का वास था और पागलों ने "उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया," और "उसके दांत पीसकर उसे झाग में बदल दिया" ।” "और शिष्य उसे (उन्मत्तों को) बाहर नहीं निकाल सके।"

और वे उसे यीशु के पास ले आए। , , और तुरन्त आत्मा ने उसे फाड़ डाला और वह भूमि पर गिर पड़ा और झाग से ढक गया। और जब यीशु ने लोगों को भागते देखा, तो उस ने दुष्टात्मा को डांटा, और उस से कहा, हे गूंगे और बहरे आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, कि उस में से निकल आ। और वह आत्मा (पागल) चिल्ला उठी, और उसे बहुत फाड़ डाला, और उसमें से निकल गई।”

एक अन्य उदाहरण के रूप में, ल्यूक के चौथे अध्याय को लें, जहां आराधनालय में "एक आदमी था जिसमें अशुद्ध शैतान (मिर्गी, पागलपन, कुष्ठ रोग, मतिभ्रम, या कोई अन्य मानसिक बीमारी) की आत्मा थी, जो जोर से चिल्लाता था आवाज़ (ध्यान दें, तेज़ आवाज़ में) और कहा, हमें अकेला छोड़ दो। हे यीशु, हमें, नाज़रेथ को, आपसे क्या लेना-देना है? और यीशु ने उसे डांटा (कोढ़ या जलोदर), और कहा (मिर्गी या जलोदर), चुप रह, और जब दुष्टात्मा (मिर्गी, जलोदर या मतिभ्रम) ने उसे बाहर निकाल दिया, तो वह (मिर्गी) उसमें से निकल गया।

लेकिन बहुत हो गया - यदि संभव हो तो यह दयनीय रूप से बेतुके से भी अधिक है। यह तिरस्कार में बदल जाता है. मनोविज्ञान का छात्र आसानी से समझ सकता है कि "चौदह वर्षों से शैतान द्वारा बंधी हुई दुर्बलता की आत्मा" उस समय तक एक नियंत्रण करने वाले राक्षस के पास थी, और शैतान के दूत, पॉल के "मांस में कांटा", निस्संदेह वह राक्षस था जुनून। जिसने उसे बहुत परेशान किया; क्योंकि अक्सर जब वह अच्छा काम करता था, तो कहता था, "बुराई तो मुझ में थी।"

सामान्य अवस्था से असामान्य अवस्था में संक्रमण में आमतौर पर थोड़े समय के लिए हल्का सा आवेग शामिल होता है, चाहे वह प्रभाव किसी राक्षस का हो या देवदूत का। डॉ. डन के साथ भी ऐसा ही हुआ, जो चौदह वर्षों तक मेरे साथ रहे। याद रखें कि पुराने अनुवादों के अनुसार शैतान (डायबोलोस) और शैतान को अक्सर समानार्थक रूप से उपयोग किया जाता है। यह जॉन के तेरहवें अध्याय में घटित होता है। शैतान ने यीशु को धोखा देने के लिए पहले से ही यहूदा के दिल में डाल दिया था, यानी राक्षस ने उस पर प्रभाव डाला था, और उसी अध्याय के सत्ताईसवें श्लोक में कहा गया है, "और शैतान उसमें प्रवेश कर गया," यानी पूरी तरह से प्रभावित या कब्ज़ा कर लिया गया।

यदि दयालुता सराहनीय है, तो इन जुनूनी मामलों से निपटने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति अपरिहार्य है। ये नाज़रीन के फौलादी-नुकीले शब्द हैं, "चुप रहो, और इससे बाहर आओ।" "मैं तुम्हें आदेश देता हूं, इससे बाहर निकलो।" मसीह की सशक्त, सकारात्मक भाषा ऐसी थी कि वह शैतानों को डांटती थी और उन्हें बोलने से रोकती थी। नाज़रीन काल में फरीसियों के बीच पागलपन की प्रकृति के बारे में कोई संदेह या विचार नहीं था। उदाहरण के लिए, मत्ती 17:14:

"भगवान, मेरे बेटे पर दया करो: क्योंकि वह पागल है, और बहुत परेशान है, क्योंकि वह अक्सर आग में और अक्सर पानी में गिर जाता है।/7 इस मामले में शिष्य बुरी आत्मा या राक्षस को निकालने में विफल रहे थे," क्योंकि उनका अविश्वास/7 और उन्हें याद दिलाया गया कि "यह प्रकार प्रार्थना और उपवास के बिना सामने नहीं आता।"

ल्यूक 10:20 में, हम पढ़ते हैं: "इस बात से खुश मत हो कि आत्माएं तुम्हारे अधीन हैं, बल्कि इस बात से खुश हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। 77 रेवरेंड चार्ल्स बीचर ने अध्यात्मवाद पर आधिकारिक रूप से रिपोर्ट करते हुए कहा, "यह यह पर्याप्त नहीं है कि एक सिद्धांत, महान प्रयास से, दर्शन, रहस्य, प्रेत, भविष्यवाणियाँ, प्रेतवाधित घर उत्पन्न करे। , रैपिंग, आदि; इसे बाइबिल के तथ्यों को भी ध्यान में रखना चाहिए।

इसे बाइबल को उसका स्वाभाविक अर्थ देना चाहिए; इसके शैतानी कब्ज़े का इतिहास, इसका ड्रैगन, इसका कानून, शमूएल का आह्वान और झूठे पैगम्बरों को झूठे समायोजन-सिद्धांतों द्वारा नहीं समझाया जाना चाहिए। सभी युगों में ओडेलिक घटनाओं के लिए जो भी भौतिक नियम जिम्मेदार है, वह अंततः अनिवार्य रूप से संपूर्ण बाइबल में लागू होगा।

...यदि बाइबिल को छोड़कर हर जगह एक सिद्धांत अपनाया गया जिसमें ओडेलिक चैनलों द्वारा आध्यात्मिक हस्तक्षेप को पूरी तरह से छोड़ दिया गया, और सभी चीजों को भौतिक के लिए जिम्मेदार ठहराया गया, तो बाइबिल के कवर केवल पेस्टबोर्ड बाधाएं होंगे। साबित हो जाएगा। ऐसा सिद्धांत बाइबल और उसके अधिकार के माध्यम से अपना रास्ता बनाएगा। , , , आत्मा की अमरता में विश्वास सभी प्राचीन युगों में अदृश्य बुरी एजेंसियों में विश्वास से अधिक स्थायी कभी नहीं रहा। ईसाई युग के बाद से, इन लोगों ने समान रूप से ईसा मसीह का विरोध किया है। वे ऊँचे स्थानों पर दुष्ट आत्माएँ थीं,7 प्रेरित के शब्दों का सही अनुवाद कर रहे थे। तदनुसार,7 7 वह आगे कहते हैं।

"यदि ओडियालिक चैनलों के माध्यम से आध्यात्मिक हस्तक्षेप का सिद्धांत बाइबिल में स्वीकार किया जाता है, तो इसे वहां नहीं रोका जा सकता है।" यह एक ठोस दर्शन है. ओडियालिक या मानसिक चैनलों के माध्यम से "आध्यात्मिक हस्तक्षेप" का सिद्धांत सभी बाइबिल, वैदिक और बौद्ध, यहूदी और ईसाई, और जुनून और निर्विवाद तथ्य के सिद्धांत से भी संबंधित है।

अध्याय XII.

राक्षसी आत्माओं के प्रेतवाधित स्थान।

पानी का समतल होना, या हिलती हुई सुई का उत्तर की ओर इशारा करना उतना ही स्वाभाविक है, जितना कि शरीर में रहने वाले मनुष्यों और उसके बाहर रहने वाले आध्यात्मिक प्राणियों के लिए, अनुकूलन के नियम के अनुसार, उस स्थिति या नैतिक स्थिति के अनुसार। की ओर आकर्षित होना। पंख तैरता है, सीसा डूब जाता है, जबकि हाइड्रोजन गैस से भरा गुब्बारा तेजी से ऊपर उठता है।

इसलिए बुरी मानसिकता वाली, राक्षसी आत्माएं, सांसारिक और स्वार्थी, स्वाभाविक रूप से उतरती हैं, न केवल पृथ्वी के वातावरण में, बल्कि शहर की झुग्गियों और झोपड़ियों के सबसे गंदे और गंदे स्थानों में भी निवास

करती हैं। सम्पूर्ण इतिहास इसकी पुष्टि करता है। हनोक की किताब में हमें बताया गया है कि जो लोग "बुरी आत्माओं और राक्षसों की पूजा करते हैं, उन्हें उनके साथ रहने के लिए निचले स्थानों पर ले जाया जाता है।" सिबिलीन ओरेकल में लिखा है, "तुम्हें अपनी बुरी सलाह के लिए पुरस्कृत किया जाएगा; तुमने पाताल लोक में राक्षसों को बलिदान चढ़ाया है, और हम उनके साथ रहेंगे।"

ऊपर की हवा और नीचे की धरती जादुई यंत्रों यानी हानिकारक लोगों से कंपन करती है। वे निचले स्थानों की तलाश करते हैं। गति। 54 डी. दानव दिखने में ज्यादातर इंसान जैसे होते हैं, लेकिन वे इच्छानुसार विभिन्न रूप धारण कर लेते हैं। इनका प्रतिबिंब इंसानों से अलग होता है. गंदे स्थानों से जुड़े लोग धुएं के बादलों में दिखाई दे रहे हैं।" किड, 72 ए.

इच्छा या अभिलाषा से पुकारे जाने पर वे कभी-कभी अचानक प्रकट हो जाते हैं। वे ख़राब हवा वाले सभी स्थानों पर आक्रमण करते हैं। वातावरण अँधेरे दलदलों और कूड़े-कचरे के ढेरों से भरा पड़ा है।" आबाजी, 7 ए.

चंद्रमा द्वारा डाली गई छाया, धीमी जलधाराओं द्वारा काई से ढके कुछ पेड़ और अंधेरे तहखाने राक्षसों के लिए प्राकृतिक छिपने के स्थान हैं। बेरी. 51.

सभी गंदगी वाले स्थान उनके लिए उपयुक्त हैं। कब्रिस्तान उनका पसंदीदा सहारा है. पुराने खंडहर स्नान स्थल उन्हें आमंत्रित करते हैं।" नी घ। 17 अ.

राक्षस कभी-कभी स्वयं को कुछ जानवरों से जोड़ लेते हैं। इन अदृश्य शत्रुओं के कारण खंडहरों से बचना चाहिए। एडजोरम ने कहा, 'मृतकों का साधक, किसी अशुद्ध आत्मा के संपर्क में न आने के लिए कब्र पर उपवास करता रहा। वह आया और अपने शत्रु को पकड़कर उसे घायल कर दिया।' शब. 151 बी. डॉ. डब्लू. मेन्ज़ीज़ अलेक्जेंडर, अपने व्यापक कार्य, डेमोनिक पोज़िशन में, "हमें विश्वास दिलाते हैं कि राक्षस खुद को गिरोह में बनाते हैं - विनाश के स्वर्गदूतों के 4 समाज" (बेर. 51ए)।

उसी परिच्छेद के अनुसार, एक पूरी सेना इस इंतजार में बैठी है कि कोई आदमी किसी गलती से उनके हाथ आ जाये। इस प्रकार उनका कार्य एक प्रकार का जुनून है, जो वास्तव में कब्जे में बदल सकता है। , , , अंधेरे की

आड़ में, राक्षस घरों को घेर लेते हैं और जो भी उनकी पहुंच में आता है उसे घायल कर देते हैं। ऐसा विशेषकर तब होता है जब घर में अशुद्ध स्थान हो। राक्षस प्रकाश की तुलना में अंधेरे में अधिक सक्रिय होते हैं। मुर्गे के बाँग देने पर उनकी शक्ति कम होने लगती है।

शबरीरी उन लोगों के लिए हमेशा खतरा थी जो रुके हुए तालाबों से पानी पीते थे। लेखक आगे कहता है, "राक्षसों में बोलने की क्षमता होती है; और रब्बी बेन ज़च्चा उनकी भाषा जानते थे। ये राक्षस भविष्य और अतीत को जानते हैं, इसलिए दोनों मामलों में उनसे सलाह ली जा सकती है, लेकिन खोई हुई संपत्ति के संबंध में उनसे पूछना बेहतर नहीं होगा सब्त के दिन प्रश्न।" सारा 101 ए. एक प्रमुख "रोग दानव बाथ-चोरिन है। वह रात में हाथों और निचले अंगों को छूती है।

कई बीमारियाँ राक्षसों के कारण होती हैं।" "राक्षसों में कुष्ठ रोग, रेबीज, अस्थमा, हृदय रोग, तंत्रिका संबंधी रोग शामिल हैं, बाद वाले दुष्ट राक्षसों की विशेषता हैं, जैसे कि मिर्गी।" शब। रब। 67 ए, जोस। एंट vi -8, आठवीं-5.

यह लेखक आगे कहता है, “शारीरिक बीमारियाँ मन को प्रभावित करती हैं, और मन शरीर को प्रभावित करता है, और दुष्ट राक्षस मन में बुरे विचार डालकर उसे प्रभावित करते हैं। 'शिब्ता बच्चों में ऐंठन संबंधी विकारों का कारण बनता है, खासकर रात में। लगनशील आत्मायें सदैव व्यस्त रहती हैं। शेडिम के विनम्र कार्यों में बुरे सपने भेजना, ... या उपवास करके किसी धार्मिक पागल को पीड़ा देना शामिल था।' बाब तनिथ, 22बी।

यीशु के समय और उसके बाद दो या तीन शताब्दियों तक प्रचलित रब्बी की दानव विद्या असहनीय होती यदि अविकसित आत्माओं के पास सब कुछ अपने तरीके से होता। लेकिन सभी सीमित चीज़ों और शक्तियों की अपनी सीमाएँ होती हैं। इसलिए ये राक्षसी प्रभाव पर्यावरण द्वारा प्रतिबंधित थे।

जानबूझकर की गई विकृतियों के कारण दैवीय छवि का आंशिक नुकसान, बाद के मनुष्यों को इन नापाक एजेंसियों के अधीन बना देता है। पारसी लेंडेंट, एक अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति, जो अलौकिक जीवन में था, ने एक बार मुझसे कहा था, 'मन पर काबू पाओ, और तुमने ब्रह्मांड पर कब्ज़ा कर लिया है।

यह निश्चित है कि मन, विचार, उद्देश्य और सुझाव सभी सभ्यताओं और अस्तित्व की सभी अवस्थाओं, अवतार और अजन्मे, सांसारिक जीवन और आत्मा जीवन से संबंधित हैं। आकाशीय स्पंदनों के माध्यम से सुझाव की प्रक्रिया स्वाभाविक है: एजेंट गलत हो सकते हैं और लेखक अच्छे, बुद्धिमान या बुरे हो सकते हैं। टेलीग्राफ़िक तार सच्चा और झूठा दोनों संचार संप्रेषित करने में सहायक हो सकता है।

जब तक आदतों पर विचार नहीं किया जाता, जब तक नैतिक योग्यताओं को आवश्यक नहीं माना जाता, जब तक नैतिक स्वतंत्रता आत्मा की संपत्ति बनी रहती है, और जब तक विद्वान और असंस्कृत दोनों - जो कि अधिकतर असंस्कृत होते हैं - प्रवेश करते हैं आध्यात्मिक जीवन, फिर, तर्क की सादृश्यता से, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि अविकसित आत्माएं आत्मा टेलीग्राफ का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र होंगी, और नश्वर लोगों की आभा में पर्याप्त रूप से अवतरित होंगी।

ताकि उन पर कब्ज़ा किया जा सके और इस तरह हम परोक्ष रूप से भौतिक जीवन पर अपना आंशिक कब्ज़ा बनाये रख सकें। और जैसे पाइथागोरस, सुकरात, जीसस, जोन ऑफ आर्क और स्वीडनबॉर्ग जैसी महान आत्माएं पहाड़ी देशों में पैदा हुईं, जहां के दृश्य शानदार थे और हवा शुद्ध थी।

उसी तरह ये राक्षस-ग्रस्त आत्माएं, जो वासना में माता-पिता द्वारा पैदा हुई थीं, अपने नश्वर शरीर में, गंदे दलदली इलाकों में और अच्छी और बुरी आत्माओं से छिपने के लिए गुफाओं में रहती थीं - गंदे जुए के अड्डों, शराबखानों में, झुग्गियों में रहती थीं और वेश्यालय, जिनके संरक्षक नारकीय आत्माओं से ईर्ष्या करते थे, जिन्होंने "उजाले के बजाय अंधेरे को चुना, क्योंकि उनके काम बुरे थे।"

ये बेचारे मनुष्य, यद्यपि अपने भौतिक संगठनों से वंचित हैं, मरे नहीं हैं - नष्ट नहीं हुए हैं। वे अपनी पहचान बनाए रखते हैं. वे सचेत हैं. वे अस्तित्व की इस दूसरी अवस्था में अपने साथ स्मृति लेकर आए हैं और अक्सर दुर्भावनापूर्ण होने के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक मामलों से अनभिज्ञ होते हैं। उनके विचार, उनके लक्ष्य और इच्छाएँ, देह की ओर मुड़ते हैं - गंदे सांसारिक मामलों की ओर, और वे स्वाभाविक रूप से अच्छे और बुरे, मनुष्यों से चुंबकीय रूप से चिपके रहते हैं, जैसे ज़हर आइवी मजबूत ओक या धूप में चूमने वाली चट्टान से चिपक जाता है। चिपक जाता है.

ऐसा कहा जाता है कि यह स्थिति उस अपरिवर्तनीय कानून का उल्लंघन करती है जो आकर्षित करता है? ऐसा कोई अपरिवर्तनीय नियम नहीं है. समान परिस्थितियों में कोई विशिष्ट तथ्य कोई अपरिवर्तनीय नियम या निश्चित सिद्धांत नहीं है। बिजली साक्ष्य में है. इस प्रकार, सकारात्मकता आकर्षित करने के बजाय प्रतिकर्षित करती है। एक महिला शिक्षक, जो परिष्कार और पवित्रता की प्रतीक है, पर एक उपवन से गुजरते समय एक कामुक आवारा व्यक्ति द्वारा हमला किया जाता है।

इस मामले में "कानून" कहां था? जो आकर्षित करता है पसंद करना? वे दोनों इंसान थे. यहां सड़क के किनारे एक अच्छे मेहनती आदमी का घर है. ईमानदारी और कड़ी मेहनत के कारण वह एक मितव्ययी व्यक्ति है। लुटेरों का एक गिरोह घर में घुस जाता है, घर के निवासियों का मुंह बंद कर देता है और बेरहमी से लूटपाट करता है और फिर अपराध को छिपाने के लिए घर को जला देता है। ऐसा बार-बार किया गया है.

क्या घर में रहने वाले शांतिपूर्ण मेहनतकशों और इन रंगे हाथ हत्यारों के बीच कोई आकर्षण था? तो पृथ्वी-जीवन के इन हत्यारे राक्षसों के अगले चरण में, राक्षस अब, अलग-अलग समय पर, स्वार्थ से प्रेरित इच्छाशक्ति के माध्यम से, मनुष्यों के श्रवण या दिव्य वातावरण में प्रवेश कर सकते हैं और इस तरह धोखेबाज, मानसिक लुटेरे, खलनायक पिशाच बन सकते हैं। की भूमिका निभा सकते हैं.

यह एक पुरानी कहावत है कि "मूर्ख वहाँ भागते हैं जहाँ देवदूत जाने से डरते हैं।" कुछ अच्छी प्रकृति वाली, फिर भी अज्ञानी आत्माएं हो सकती हैं - बुद्धिमान से अधिक भावुक और अहंकारी - जो मानव जीव को तब तक मानसिक रूप से प्रभावित और उपयोग करती हैं जब तक कि वह असंतुलित और विघटित न हो जाए, यदि बर्बाद न हो जाए। चलो यह करते हैं। इन जुनूनों का इलाज बाद में सामने आएगा।

अध्याय XIII.

दुष्ट आत्मा का जुनून दूर और निकट।

इससे गणितीय मान में भारी अंतर आ जाता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि सिफर को इकाई के किस तरफ रखा गया है। यह छोटी रेत है जो चट्टान और परतें बनाती है जो पहाड़ों का निर्माण करती हैं। उपसर्ग और प्रत्यय आनुपातिक रूप से छोटे होते हैं, फिर भी अक्सर वे अर्थ में शक्तिशाली होते हैं। कोई भी भाषाविद् या कोई सामान्य विद्वान भी आत्मा और आध्यात्मिक का पर्यायवाची रूप से प्रयोग नहीं करेगा। आत्मा, अपने व्यापक और उच्चतम अर्थ में, पूर्ण अस्तित्व को दर्शाती है।

सभी प्रतिष्ठित भाषाविदों के अनुसार, तत्वमीमांसा, चेतन, तर्कसंगत और मापने योग्य कर्तव्यनिष्ठ प्राणियों को दर्शाता और संदर्भित करता है। आध्यात्मिक का उपसर्ग एक प्रत्यय है जो एक नैतिक गुण को दर्शाता और इंगित करता है। एक आत्मा-मानव, एक सांसारिक अवतार, यौगिक, कण लेकिन एक नैतिक, आध्यात्मिक या आध्यात्मिक रूप से दिमाग वाला व्यक्ति उच्च जीवन की धार्मिक आज्ञाओं का पालन करता है, सही खातिर सही काम करता है, और उस उच्च व्यवसाय के योग्य चलता है। जो सामंजस्यपूर्ण मनुष्य, परोपकारी अच्छाई का साथी और स्वर्गदूतों का भी निर्माण करता है, जबकि वह नश्वरता में लिपटा हुआ है।

इसलिए, सतह पर कोई चीनी जादू, हिंदू जादू, कम स्वार्थी आत्माओं, जो मनुष्यों को संतुष्टि के लिए पागल कर देता है, और शुद्ध दिमाग वाले, प्रेमपूर्ण, आत्मा-प्रेरणादायक स्वर्गदूतों, जो मसीह-स्वर्ग में रहते हैं, के बीच विशाल, लगभग अनंत अंतर देख सकता है। , अपने विचारों को प्रक्षेपित करना, या दया के स्वर्गदूतों की सेवा करने की मुद्रा में पृथ्वी की ओर अपना उज्ज्वल रास्ता बनाना।

यह पूरी तरह से उचित था कि पुरानी विकृत, जुनूनी आत्माओं के साथ संचार की निंदा की जानी चाहिए। बुरी आत्माओं के साथ स्वैच्छिक संचार, चाहे शरीर के अंदर हो या बाहर, निंदनीय है। जो लोग आज इस तरह के संचार की तलाश में हैं वे बेबीलोन और पुराने नियम के समय के लोगों की तरह ही प्रेतात्मवाद और जादू-टोने के संरक्षक हैं। कानून या स्थिति में कोई भी बदलाव बुरे उद्देश्यों के लिए बुरे संचार को कम बुरा नहीं बना सकता।

सच है, दुनिया में अहंकारी, परिष्कृत अध्यात्मवादियों का एक छोटा समूह है जो ब्रह्मांड में बुराई के निशान के अस्तित्व से इनकार करता है। सब कुछ प्यारा है. सुअर का बाड़ा गुलाब के बगीचे जितना मीठा होता है। वे यह नहीं समझ सकते कि अच्छे और बुरे के गुण विपरीत हैं, जैसे भौतिकी में गर्मी और ठंड के गुण।

संक्षेप में, इन अपरिपक्व विद्वानों के लिए, पाप और पुण्य, जब ठीक से समझे जाते हैं, पर्यायवाची हैं। बलात्कार उतना ही दिव्य है जितना कि धर्म; नर्क स्वर्ग के समान पवित्र है, और केंद्रित द्वेष और हत्या केवल "अविकसित अच्छाई" की अभिव्यक्तियाँ हैं।

सोफिस्टों का यह वर्ग बुढ़ापे के सबसे करीब है या पागलपन के, इसका निर्णय करना कठिन है। लेकिन जब व्यावहारिक रूप से उनके पसंदीदा हठधर्मियों को उजागर किया जाता है, और उनकी दवा लेने के लिए मजबूर किया जाता है, तो ये अर्ध-आशावादी सोफ़िस्ट जीवन की बार-बार होने वाली बुराइयों पर दोष ढूंढने, आलोचना करने और भयानक रूप से प्रलाप करने में माहिर हो जाते हैं। हैं।

जब मैं चीन में था, तो महान चीनी मंदिर और पांच सौ जिन्न के मंदिरों के आसपास अलग-अलग समय पर घंटों बिताते हुए, मेरी आंखें देखते-देखते थक गईं, और मेरे कान मौखिक शब्दजाल सुनते-सुनते थक गए। 'टेंपल ऑफ हॉरर्स' के प्रांगण में प्रवेश करते हुए, कोई नरक और उसके क्रूर राक्षसों की बौद्ध छवियां देख सकता है, जिसकी तुलना में जॉन कैल्विन का नरक, यदि स्वर्ग नहीं, तो काफी आरामदायक जगह होगी।

यहाँ दुष्टों को खौलते तेल में छटपटाते हुए दर्शाया गया है; यहां लाइव स्किनिंग की प्रक्रिया; यहाँ कुछ दुष्टों को ओखली में पीटना; यहां उन्हें दो टुकड़ों में काटा जा रहा है; यहां उन्हें ग्रिडिरोन पर फ्राइये; यहाँ उन्हें टुकड़े-टुकड़े करने और उनके सिर काटने के लिए! और आगे एक अपरिष्कृत पेंटिंग में उसने सबसे निचले जानवरों और सींगों और शल्कों

वाली मछलियों में आत्माओं को वापस लाने की प्रक्रिया देखी होगी। और इससे भी आगे, एक प्रकार के वर्णनातीत बूथ में, मैंने जादू टोना का एक शाब्दिक नमूना देखा।

उपयोग में आने वाले उपकरण सफेद रेत से ढकी गोल मेज़ें थीं, और भावुक महिलाएं चील के बिल के आकार की छड़ियों के साथ संचार लिख रही थीं; यहां भी लकड़ी के दो आधे-अधूरे टुकड़े थे, जिन्हें एक साथ रखने पर किडनी का आकार मिलता था। इन्हें हवा में उछाला गया, और जिस तरह से वे गिरे उसका मतलब हाँ या ना था; और यहाँ धातु का एक ड्रैगन के आकार का टुकड़ा एक डोरी से लटका हुआ था, और किसी आत्मा-देवता का आह्वान करते हुए, छवि दीवार पर कुछ चीनी अक्षरों की ओर इशारा करते हुए आगे बढ़ी।

इन संचारों को वर्तमान लेखकों द्वारा हटा दिया गया था। इन अनियंत्रित सभाओं में, जुआ, सट्टेबाजी, प्रेम-निर्माण, धन-प्राप्ति और आपराधिक अपराधों में सहायता के लिए देवताओं और विभिन्न श्रेणियों की आत्माओं का आह्वान किया जाता है। कभी-कभी, इन जुनूनी, चीनी संवेदनाओं के माध्यम से ऐंठन भरी लड़खड़ाहट, चेहरे की विकृति और जंगली आत्मा की बातचीत की तुलना केवल दांते के "इन्फर्नो" में वर्णित राक्षस-नृत्य से की जा सकती है।

उपरोक्त के अनुरूप, फ्लोरेंस, इटली की रोसिना बर्नार्डी की कलम से, लंदन लाइट में प्रकाशित जुनून के सबसे दर्दनाक मामले का निम्नलिखित विवरण है: "टायरहेनियन समुद्र पर, वेरेगियो और मस्सा डि कैरारा के बीच, एक खड़ा है फोर्टे देई मारिनी नामक छोटी ग्रीष्मकालीन कुटिया। रिज़ॉर्ट में, मैं एक 'राक्षस-ग्रस्त महिला' को जानता हूँ जिसने पिछले बत्तीस वर्षों में कई अजीब और अद्भुत काम किए हैं।

उदाहरण के लिए, वह एक बार अपना मुँह खोलकर दो घंटे तक एक फव्वारे के नीचे बैठी रही ताकि उसमें से बहता पानी उसके शरीर पर लग जाए, और फिर वह पास की एक सराय में गई और नमकीन मांस का एक बड़ा टुकड़ा खरीदा, जिसकी कीमत सात पाउंड थी। अधिक वजन वाले लोगों ने एक बड़ी रोटी खाई, शराब और कॉफी पी और फिर भी और अधिक के लिए चिल्लाते रहे। फिर वह एक जैतून के पेड़ पर चढ़ गई, मुर्गे की तरह बांग दी, अपने हाथों से खून बहते हुए नीचे उतरी, बाड़ पर नंगे पैर चली, बाड़ को अपने वजन के नीचे पकड़ने में सक्षम नहीं थी।

झुक गया, और अंत में निराशा में चिल्लाते हुए मीलों-मील रात तक चलता रहा। "गरीबों के कष्टों को अनुभव से जानने के बाद, मैंने उस दुखी महिला में दिलचस्पी ली और एक महिला की मदद से, उस नई पद्धति के अनुसार उसका इलाज किया जो अच्छी आत्माओं ने हमें सिखाई थी, यानी कि नैतिकता सिखाना अपने भीतर रहने वाले निचले स्व को चुम्बकित करना और सीधे संबोधित करना।

बहुत सारी बातचीत और बहुत धैर्य के बाद, हम उस गरीब महिला के लिए कुछ आराम सुनिश्चित करने में कामयाब रहे। "आत्मा भी खाने की इच्छा में कम लालची हो गई, और इसके साथ कम अहंकारी हो गई, जिससे समय-समय पर उसकी इच्छा अधिक स्वतंत्र हो गई। "हालांकि महिला अनपढ़ है, मैंने उसे लिखने के लिए मजबूर किया, जो उसने मेरे लिए किया। आदेश के तहत किया गया और फिर इतालवी में अनुवाद किया गया।

अब मेरे पास आत्मा पर इतनी मानसिक शक्ति है कि वह मेरी उपस्थिति से कांप जाती है, और मेरी इच्छा के अधीन हो जाती है, जब तक कि वह अंततः उस महिला को नहीं छोड़ देता, जो वह कहता है कि वह ऐसा नहीं कर सकता। "हाल ही में मैंने उसे एक देहाती चर्च में 'होली वर्जिन' की छवि के सामने कुत्ते की तरह भौंकते, बिल्ली की तरह म्याऊ और जंगली की तरह चिल्लाते हुए सुना, और फिर मैंने उसे चर्च के चारों ओर एक जानवर की तरह रेंगते हुए सुना। ऐसा होते देखा.

“जब उस पर इस तरह का भूत सवार होता है, तो वह एक असंभव बोली बोलती है, लेकिन अब मैं उसे इटालियन भाषा बोल सकता हूं, और घंटों तक भावपूर्ण बातचीत कर सकता हूं। इसलिए मैंने यह कहानी सुनी, जिससे मुझे समझ में आया कि मुझे एक गरीब आत्मा से निपटना है, जो अभी भी लगभग मौलिक अवस्था में है, जो अभी तक पदार्थ से बाहर नहीं रह सकती है और सच्चा आध्यात्मिक जीवन नहीं जी सकती है।

“हमें उम्मीद है कि धीरे-धीरे हम उसे खुद को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेंगे, और अस्तित्व के एक नए चरण में प्रवेश करने में उसकी मदद करेंगे। “इटली में बहुत बड़ी संख्या में पीड़ित गरीब महिलाओं की पीड़ा से प्रेरित होकर, मैं आपके भारतीय संवाददाता की इच्छाओं के साथ अपनी हार्दिक शुभकामनाएं जोड़ता हूं, कि कुछ चिकित्सक, या ओझा, मानवता को ऐसी राक्षसी आत्माओं से मुक्त करने में मदद कर सकते हैं। के लिए इटली भी आएं.

"रोसिका बर्नार्डी," फ़्लोरेंस, 19 जून, 1902। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि मैं कई वर्ष पहले कलामज़ू, मिशिगन में रहने वाले एक परिवार को जानता था, जो धन और सामाजिक प्रभाव के लिए जाना जाता था। वह काफी मुखर और आत्मसंतुष्ट भी थे। वह अक्सर धूप से भरे अपने घरों में प्रार्थना सभाएँ आयोजित करते थे, लेकिन अपने किसी भी नौकर को उनमें शामिल होने की अनुमति नहीं देते थे।

वैसे, इनमें से एक नौकर, बेदाग चरित्र की एक हंसमुख, संवेदनशील युवा महिला थी। अचानक और अप्रत्याशित रूप से यह युवा महिला एक माध्यम बन गई, जो अचानक और अनजाने में किसी अज्ञात भाषा में तेजी से बोलकर मंत्रमुग्ध हो गई। अंततः वह एक भारतीय आत्मा के वश में हो गयी, जो कुछ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग कर रही थी।

इससे कुछ महीनों तक परिवार खुश रहा। लेकिन अचानक, एक अन्य गृहिणी के साथ कुछ परेशानी होने के बाद, उसे कुछ कमतर, अदृश्य बुद्धि ने पकड़ लिया, जो एक "बहिष्कृत भारतीय" निकली।

वह कुछ अशोभनीय शब्दों के साथ-साथ बकवास भी कर रही थी, जिससे वहां मौजूद सभी लोग डर गए। वो पूरी तरह से पागल हो गयी थी. कभी-कभी आत्मा इस युवा महिला को फर्श पर गिरा देती थी, उसके बालों को उसके कंधों पर खींचती थी और उसके मुंह के कोनों को नीचे खींचती थी, जब तक कि वह टोकरियाँ बनाने वाली एक भारतीय महिला की तरह न दिखने लगे। मामला और ख़राब हो गया.

यह बिन बुलाए, प्रभावशाली राक्षसी आत्मा फोन करके तंबाकू और आग-पानी की भीख मांगती थी। एक बार उसने उसे चबाने वाले तम्बाकू का एक टुकड़ा दिया, और उसने वास्तव में, अपने मंत्रमुग्ध कर देने वाले उपकरण के माध्यम से, एक घंटे की मुलाकात के दौरान आधे से अधिक तम्बाकू चबा लिया। दूसरी बार उसने व्हिस्की मांगी, जिसे उसने "आग-पानी" कहा। उन्होंने व्हिस्की प्राप्त की, और एक प्रयोग के रूप में, उन्हें व्हिस्की की एक पिंट बोतल दी, और उन्होंने आधे घंटे से भी कम समय में इसे पी लिया।

उत्तेजित होकर यह आत्मा नियंत्रण से बाहर हो गई, अभद्र भाषा का प्रयोग करने लगी और सैमसन जैसी ताकत से उसने चूल्हे के पीछे से लकड़ी के टुकड़े पकड़ लिए और कैदियों को पीटना शुरू कर दिया। इस नाजुक महिला

को पकड़ने में तीन लोगों को लग गया; और इस प्रकार उसे पकड़ते समय, एक मध्यस्थ महिला को इस जुनूनी महिला की गर्दन के पीछे दाहिना हाथ और माथे पर बायां हाथ रखने के लिए मजबूर होना पड़ा, साथ ही वह अपने पैर पटकते हुए चिल्लाने लगी, "जाओ! जाओ! जाओ! जाओ!" " आप एक भारतीय महिला हैं," और वह चली गई। होश में आने पर मध्यस्थ थोड़ा स्तब्ध था, थोड़ा थका हुआ लग रहा था, लेकिन किसी नशे का ज़रा भी असर नहीं था।

यह अस्थायी जुनून का बहुत स्पष्ट मामला था। जब उनके रिश्तेदारों को इस बारे में पता चला, तो वे उन्हें दूसरे क्षेत्र में ले गए, जहां नए माहौल और सुंदर सामाजिक माहौल के कारण अब कोई जुनूनी समस्याएं नहीं थीं।

जुनूनी राक्षसों से बचाया.

ग्रीनॉक, स्कॉटलैंड के श्री जॉनस्टोन, जो एक बुद्धिमान और विश्वसनीय सज्जन थे, का निम्नलिखित पत्र अप्रैल 1903 में लंदन लाइट में छपा था। यह उन सैकड़ों पत्रों के समान है जो मुझे पिछले कुछ वर्षों में यहां और विभिन्न देशों से मिले हैं: 4' सर: अपने जीवन के एक बड़े हिस्से के दौरान मैं रूढ़िवादी तरीकों से भगवान का उपासक था, स्कॉटलैंड के प्रेस्बिटेरियन चर्च का सदस्य था, और मैं दो साल पहले तक काफी खुश था, जब मेरे शरीर और दिमाग ने काम करना बंद करना शुरू कर दिया था। किसी रहस्यमयी शक्ति का प्रभाव और मैंने स्वयं को पूरी तरह से बुरी शक्तियों के प्रभाव में पाया।

मैं अपने इस अजीब दुर्भाग्य से चिंतित था, और स्वाभाविक रूप से मैंने यहां एक चर्च के पादरी से मदद मांगी, लेकिन वह मेरे लिए बस इतना ही

कर सका कि मुझे ईसा मसीह पर भरोसा करने, बाइबिल पढ़ने की सलाह दी और सब ठीक हो गया। लेकिन यह वह था जो मैं नहीं कर सका, क्योंकि बुरी आत्माएं मुझे चुनौती दे रही थीं, उन शब्दों में जो मैंने स्पष्ट रूप से सुने थे, या तो पूजा स्थल में प्रवेश करने के लिए या सड़क पर उपदेशक के पास जाने के लिए, या कोई आध्यात्मिक शिक्षा सुनने के लिए।

हालाँकि, मैंने खुद कुछ समय तक बिना किसी मदद के संघर्ष करना जारी रखा और खुद को निरंतर प्रार्थना में लगाया, और एक अवसर पर मैं छह दिन और पांच रातों तक सड़कों पर भटकता रहा और पानी के अलावा कुछ भी नहीं चखा, प्रार्थना करता रहा और भगवान की प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। "मैं निराश हो गया था और मृत्यु की कामना कर रहा था, क्योंकि जो कष्ट मैंने सहे थे वे मानवीय कल्पना से परे थे।

इस पर शायद ही विश्वास किया जाएगा, लेकिन यह एक सकारात्मक तथ्य है कि बुरी आत्माओं ने मुझे मेरी सामान्य समझ और विवेक के विरुद्ध काम करने के लिए मजबूर किया। मैं इतना व्यथित था कि मैंने सोचा कि शायद अपने उत्पीड़कों को रास्ता देकर मुझे कुछ राहत मिलेगी, क्योंकि मैं उनका विरोध करते-करते पूरी तरह से थक गया था; लेकिन जैसे ही मैंने उसकी बात माननी शुरू की तो उसने मुझ पर कोई रहम नहीं दिखाया.

मेरे दोस्तों ने आत्माओं की धारणा का मज़ाक उड़ाया और मुझे डॉक्टर के पास जाने की सलाह दी, जो मैंने किया, लेकिन मैंने पाया कि डॉक्टर पादरी जितना ही अज्ञानी था; उनमें से चार ने गवाही दी कि मैं शारीरिक रूप से स्वस्थ था, सिवाय इसके कि मुझे अपच की थोड़ी समस्या थी, जो समय के साथ ठीक हो जाएगी, लेकिन वे उस मानसिक यातना का हिसाब नहीं दे सके जिसकी मैंने शिकायत की थी, और जो मेरे लिए बिल्कुल वास्तविक थी। "मुझे अकल्पनीय पीड़ा सहनी पड़ी;

और यद्यपि मेरे साथ प्रार्थना करने वाले पुजारी, पादरी और सभी धर्मों के लोग और यहां तक कि प्रचारक भी थे, फिर भी मुझे कोई राहत नहीं मिल सकी। यहाँ तक कि यहाँ के अध्यात्मवादियों ने भी मुझसे कहा कि वे मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते क्योंकि मेरा जुनून इतना गहरा था कि वे खुद भी जुनूनी होने से डरते थे और लोगों को मेरे साथ बैठने की मनाही थी।

लेकिन इस समय मैं उनमें से श्री क्लेमेंट हार्डिंग, 20 हार्बलडाउन रोड, मुंस्टर पार्क, फुलहम, एस.डब्ल्यू. को ढूंढता हूं। मेरी मुलाकात मेरे एक मित्र से हुई और मैंने तुरंत उन सज्जन को एक पत्र लिखा और भगवान के लिए उनसे अपने साथ मेरे पास आने की प्रार्थना की। आध्यात्मिक मित्रो और मेरी जान बचाओ। उन्होंने तुरंत मुझे एक पत्र भेजा और जब मैं इसे पढ़ रहा था, तो मुझे अपने चारों ओर शक्तिशाली आत्माओं की उपस्थिति महसूस हुई और मेरे अंदर कुछ प्रकार की उपचार शक्तियां प्रवाहित हुईं और मैं एक नए व्यक्ति की तरह महसूस करने लगा।

दुष्ट आत्माओं की आवाजें भी धीरे-धीरे शांत होने लगीं और मैं मजबूत और बहादुर बनने लगा। मैंने मिस्टर हार्डिंग के साथ अपने संबंध बनाए रखे, दिन में दो या तीन बार उनके पत्र पढ़े, और फिर मैं और कुछ दोस्त उनके निर्देशन में बैठे, और तब तक मेरे दुश्मन पूरी तरह से परास्त हो चुके थे। 5 लिंडॉक सेंट, ग्रीनॉक। डेविड जॉनस्टोन.

घर के पास जुनून.

हजारों लोग जानते हैं कि रॉकफोर्ड, इलिनोइस के डॉ. ई. सी. डन, एक धनी, प्रभावशाली नागरिक, नगर परिषद के सदस्य, दुनिया भर में मेरी पहली यात्रा पर मेरे साथ थे। यह युवक, जब लगभग सोलह वर्ष का था, बैटल क्रीक, मिशिगन में रहता था, अशिक्षित था और व्यस्त रूप से "जंगली जई बोने" में लगा हुआ था; इसी समय एक शाम वे प्रोफेसर आई. स्टर्न के मंच पर गये, जहाँ वे सम्मोहन पर सार्वजनिक प्रदर्शन कर रहे थे।

यंग डन प्रोफेसर की चालों को उजागर करने के लिए एक खेल के रूप में गए; लेकिन ऐसा करने के बजाय, वह सम्मोहित हो गया, जिससे एक उत्कृष्ट विषय बन गया। प्रोफेसर ने उसे कई शामों में अजीब जिमनास्टिक गतिविधियों से गुज़रवाया, जिसमें इच्छाशक्ति और बड़े दर्शकों के मनोरंजन दोनों का प्रदर्शन किया गया। कुछ शामों के बाद, दूसरों के साथ सम्मोहित अवस्था में रहते हुए, वह अचानक घबरा गया, और फिर उसके हाथ और शरीर में ऐंठन होने लगी।

प्रोफेसर तुरंत उसके पास आये और बोले, "ठीक है, ठीक है!" लेकिन वह ठीक नहीं थे, यानी सचेत रूप से सामान्य नहीं थे। सम्मोहनकर्ता उसके करीब आया और कोने को घुमाकर और भी जोर से चिल्लाया, "ठीक है, अपनी आँखें खोलो!" दर्शकों में काफी चिंता दिखाई देने लगी और श्रीमती व्हिटनी, एक उत्कृष्ट दिव्यदर्शी, जो अभी भी बैटल क्रीक में रहती हैं, अपने पैरों पर खड़ी हुईं और बोलीं, "माफ करें, सर, लेकिन मुझे उस युवा लड़के से सुनना है। ऐसा प्रतीत होता है कि आस-पास बहुत सारी सकारात्मक भावनाएँ हैं, और मुझे लगता है कि वे लिखना चाहते हैं।

" कागज और पेंसिल मंगवाए गए, उनके सामने एक मेज पर रखे गए, जब उनकी आक्षेप से उत्तेजित और परेशान प्रणाली शांत हो गई, और इस उत्कृष्ट सम्मोहक बुद्धि ने अपने हाथ से पीछे की ओर और नीचे से ऊपर तक कई पंक्तियाँ लिखीं, जो कनाडा से संबंधित थीं। डेट्रॉइट में रेल दुर्घटना, जिसका अगली सुबह डेट्रॉइट के समाचार पत्रों में विस्तार से वर्णन किया गया।

परीक्षण वास्तव में अद्भुत था, और प्रोफेसर से अधिक आश्चर्यचकित कोई नहीं था, जिन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं हार गया हूं - इस बार बुरी तरह से हार गया।" आध्यात्मिक दर्शन को स्वीकार करने में यह उनकी प्रारंभिक बाधा थी। ये डॉ. ई. सी. डन चौदह वर्षों तक मेरे साथ रहे और उनके माध्यम से मध्यम जहाज के लगभग एक दर्जन चरण प्रकट हुए।

मेरे लिए दो सबसे दिलचस्प थे उनका उत्तोलन और अचेतन ट्रान्स। उनके प्रमुख नियंत्रक बुद्धि, आरोन नाइट ने मुझे कई बार बताया कि अंधेरी आत्माएं, सिद्धांतहीन स्वार्थी आत्माएं, और दृढ़ इच्छाशक्ति वाली राक्षस आत्माएं उनके साथ और हमारे साथ थीं, और जब भी माध्यम श्रवण प्रभाव के निचले स्तर तक पहुंच गया, चाहे वह होटल हो, थिएटर हो, या सर्कस. हो में, इन अविकसित आत्माओं ने उसे चुंबकीय रूप से पकड़ने की कोशिश की, ताकि उसे अपनी संतुष्टि के लिए या किसी योजना के कार्यान्वयन के लिए उपयोग किया जा सके।

दुनिया भर में अपनी यात्राओं के दौरान, हम नियमित रूप से हर गुरुवार दोपहर को बैठते थे, और कभी-कभी सप्ताह में दो बार। न्यूजीलैंड छोड़कर चीन के लिए, हमने एक सौ सत्रह चीनी खनिकों को अपने साथ लिया। उनके दो समूह थे, जो बड़े पैमाने पर भिन्न-भिन्न बोलियों का प्रयोग करते थे। और जब समुद्र में लगभग दो सप्ताह हो गए, तो ये विभिन्न चीनी

जनजातियाँ आपस में लड़ने लगीं, और अपनी मुट्ठी के साथ-साथ मार्लिंग-पिन का भी इस्तेमाल करने लगीं।

लड़ाई देखकर कैप्टन ने अपने जहाज़ के साथियों और कुछ नाविकों को नीचे जाकर लड़ाई रोकने को कहा। चीनी मिलिशिया को शांत करने के अपने नेक इरादे वाले प्रयासों में, कप्तान और जहाज के साथियों को चीनी सेना की संयुक्त सेना से लड़ना पड़ा।

हाथापाई की यह स्थिति देखकर डॉ. डन नीचे भागे और संघर्ष में शामिल हो गये। पागल दंगा शांत हो गया, - डॉक्टर दूसरे आदमी के रूप में डेक पर लौट आया - बदल गया, रूपांतरित हो गया, एक अजीब, सकारात्मक अदृश्य नियंत्रण से मंत्रमुग्ध हो गया जो कि स्वर्ग से नरक के रूप में उसकी पूर्व की किसी भी घेरने वाली बुद्धिमत्ता से अलग था। कुछ अलग हैं।

जैसे ही हम अपने केबिन-रूम में कदम रख रहे थे, मैंने एक संवेदनशील व्यक्ति का हाथ पकड़ा और पूछा, "आप कौन हैं!" “उसने अपनी काँच भरी आँखें मेरी ओर घुमाईं, माध्यम का सिर उठाया और व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, - “हा, हा; मैंने उसे पकड़ लिया है - मैंने उसे पकड़ लिया है, और मैं उसे पकड़ लूँगा!”

क्या आपने,' मैंने पूछा, 'इस संवेदनशील आदमी को मोहित करने के लिए मार्गदर्शक आत्माओं के माध्यम मंडल की सहमति प्राप्त की है!' "हा, हा! यह मेरा काम है। मैंने उसे पकड़ लिया है। मैं लंबे समय से इस अवसर की तलाश में था। मुझे वह मिल गया है, और मैं इसके माध्यम से अपना काम करूंगा। "आपका विशेष कार्य क्या है जो आप पूरा करने का प्रस्ताव!" "हा! यही मेरा काम है।

मैं एक फ्रांसीसी दार्शनिक था। मैंने प्रकृति की सभी प्रारंभिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया, राजाओं के नियंत्रण और साम्राज्यों के संतुलन तक। " वह सोमवार था, और तीन दिनों तक इस दिखावटी, घमंडी और सकारात्मक दानव ने डॉ. डन पर अपना प्रभाव बनाए रखा, जो, वैसे, अब डन नहीं, बल्कि जहाज के कप्तान थे। वह इधर-उधर घूम रहा था, उसकी आँखें चमक रही थीं, वह कम खा रहा था, कम सो रहा था, हवा में बातें कर रहा था, उत्तेजित, चिड़चिड़ा, विद्रोही था।

यह जुनून का स्पष्ट मामला था। मुझे आश्चर्य हुआ। यह माध्यम अपनी पहचान खो चुका था। वह मेरे लिए एक अजनबी की तरह था. मैं अपने

कमरे में चला गया - मौन प्रार्थना की शांति में। यह गुरुवार था - हमारे बिना का दिन। तदनुसार, मैंने नैतिक लड़ाई के लिए तैयारी की, प्रबंधक से केबिन को अच्छी तरह से साफ करवाया, बिस्तर बदला, पोर्ट-होल खोले; और फिर, मैंने कमरे के कोनों में नमक छिड़क दिया और दीवारों पर कोलोन छिड़क दिया।

उच्च आत्माओं के लिए शुद्ध, मधुर वातावरण होना चाहिए। हमारे सत्र के समय, दो बजे, मैंने डॉ. डन से, या कहें कि जुनूनी मन से कहा, -4'आओ, यह हमारे सत्र का दिन है - आओ, हम अपने कमरे में चलें।' तत्काल, कठोर उत्तर था, "आप आज अपनी बेसुधता छोड़ देंगे। मेरे पास यह युवक है। मैं उसे पकड़ने और उसके माध्यम से अपना रास्ता बनाने का एक बड़ा काम करने जा रहा हूं - दूर हो जाओ, श्रीमान!" ये उनके विद्रोही शब्द थे.

इस राक्षसी प्रभाव के बावजूद, जिसने चीनी लड़ाई के दौरान पूरी तरह से नियंत्रण कर लिया था, मैंने उस युवक को उसके कोट के कॉलर से पकड़ लिया और दृढ़ता से कहा, "चलो;" और दूसरों द्वारा देखे गए संघर्ष को देखते हुए, मैंने उसे अपने कमरे में खींच लिया और जल्दी से दरवाजा बंद कर दिया। फिर मैंने उसके दोनों हाथों को मजबूती से अपने हाथों में पकड़ लिया और चिल्लाया, “आओ, मार्गदर्शक देवदूत; आओ, आरोन नाइट; आओ, पाव हैटन, - सब आओ, और इस राक्षस को दूर भगाओ, - आओ और अपने उचित अधिकारों का दावा करो! युवक का शरीर जल्द ही कांपने, कांपने, अकड़ने लगा और फिर वह अपनी सीट से फिसल गया और स्टील की छड़ की तरह सख्त होकर फर्श पर गिर गया।

उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी आंखें खून से लाल होकर पीछे मुड़ गईं। यह एक भयानक क्षण था! मैंने सोचा कि वह मर सकता है, और मैं वास्तव में इस तरह से परेशान रहने के बजाय उसे मरना पसंद करता। अपनी पकड़ मजबूत करते हुए, और चुपचाप प्रार्थना करते हुए, जल्द ही उसकी मांसपेशियाँ शिथिल होने लगीं, उसके जोड़ लचीले हो गए, उसकी आँखें कसकर बंद हो गईं, - जब एक भारतीय युद्ध-घोष और छलांग के साथ, वह उछला, और अपने पैरों पर खड़ा होकर चिल्लाया, "मुझे वह मिल गया है - मुझे वह मिल गया है!"

भारतीय प्रभाव के साथ उनकी प्रसन्नचित्त, प्रसिद्ध आवाज में शब्द। राक्षस को बाहर निकाला गया, विजय प्राप्त हुई। उसके उच्चतर, अदृश्य सहायकों ने तब उसे नियंत्रित किया, इस अस्थायी जुनून के कारणों को समझाया, और उसके तंत्रिका तंत्र को यथासंभव सामंजस्यपूर्ण बनाया;

और फिर मानसिक रूप से उसे सामान्य रहने के लिए छोड़ दिया, फिर भी उसके चारों ओर सुरक्षात्मक आत्मा-रक्षकों को बढ़ा दिया।

उसे जुनून के उन तीन काले दिनों की ज़रा भी वस्तुनिष्ठ स्मृति न तो थी और न ही आज तक है। वे शून्य प्रतीत होते थे। असामान्य तंत्रिका तनाव से पूरी तरह उबरने में उन्हें कई सप्ताह लग गए।

अध्याय XIV.

जुनूनी लोगों के दयनीय पत्र।

उपरोक्त शीर्षक के अंतर्गत पहले तीन अक्षर हैं: जे.डब्ल्यू. डेनिस, बफ़ेलो, एन.वाई.वाई. समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, एक संपूर्ण, सफल व्यवसायी, शिविरों और अन्य सार्वजनिक बैठकों में एक उत्कृष्ट पीठासीन अधिकारी, और एक पुराने समय का, पर्याप्त अध्यात्मवादी, जो अभी भी बफ़ेलो शहर को सजाने वाले खूबसूरत पार्कों के बीच रहता है। एक के पास रहो.

यह नहीं समझा जाना चाहिए कि मैं पत्रों की इस शृंखला में दी गई हर बात को बिल्कुल सच मानता हूं, हालांकि मुख्य तौर पर मैं ऐसा मानता हूं। जुनून सामान्य पर्यवेक्षक की अपेक्षा कहीं अधिक सामान्य है। कई घरों में इसे उतनी ही सावधानी से छिपाया जाता है जितनी सावधानी से पूर्व के शुरुआती परिवारों में कुष्ठ रोग को छुपाया जाता था।

इस विषय पर लिखे गये पत्रों के कुछ अंश ही यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं। इनमें से कुछ को व्याकरणिक रूप से पठनीय बनाने के लिए आंशिक रूप से फिर से लिखना पड़ा, लेकिन विचारों को सावधानीपूर्वक बनाए रखा गया है।

बफ़ेलो, एन.वाई., 7 दिसंबर, 1899।" डॉ. पीबल्स: “आपके अनुरोध के उत्तर में मैं आपको अपने कुछ अनुभव लिखूंगा: “कई साल पहले एक सक्षम अभ्यासकर्ता मेरे पास आया और मुझसे पूछा कि क्या मैं उसे अपने हाथ पर काबू कर ऐसी घिनौनी अश्लील बातें लिखीं कि किसी को देखने नहीं दिया। कुछ ही क्षणों में मैंने दिव्य दृष्टि से देखा कि एक अत्यंत सुन्दर भिक्षुणी उनके पास खड़ी है।

उन्होंने कहा कि ये शख्स कोई और नहीं बल्कि उनकी शिकार 'सैली ब्राउन' है. इस साक्षात्कार के बाद, मैं घर गया, और अगली बैठक में यह नन आई, और मेरी आध्यात्मिक पत्नी ने मुझसे उसे, उस जुनूनी आत्मा को, हमारे मंडल में शामिल होने की अनुमति देने, उसे सुधारने का प्रयास करने का आग्रह किया। जा सकते हैं।

मैंने उसे हमारे बैंड की मानसिक आभा में प्रवेश करने की अनुमति दी, और छह महीने के अंत में मैंने उसे भगा दिया, क्योंकि वह इस पूरे समय मुझे चुंबकीय रूप से पकड़ने की कोशिश कर रही थी, और मैं नहीं चाहता था कि वह मेरे पास आए। उसे वैसे ही परेशान या परेशान करें जैसे उसने व्यापारी को किया था। फिर उसने कबूल किया कि पुजारियों ने उसे पृथ्वी पर बुरे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया था, और अभी भी आध्यात्मिक जीवन के अंधेरे क्षेत्रों में उसी तरह के उद्देश्यों के लिए उसका इस्तेमाल कर रहे थे।

मृत्यु नामक घटना के बाद यह पूरी तरह पवित्रता या खुशी नहीं है। "एक बार, जब मैं अस्वस्थ और काफी कमजोर था, मुझे होश आया कि एक पिशाच जैसी आत्मा मेरे अंदर प्रवेश कर गई थी और हर रात मेरे पास आकर मेरी ऊर्जा को सोखने की आदत थी। आखिरकार मैंने दो साल इससे छुटकारा पाया। तेज गैस की रोशनी में सोने से करीब दो साल पहले एक युवती मेरे घर आई, जो मीडियमशिप के लिए बैठी थी।

उसने कहा कि वह लगातार एक अज्ञानी आयरिश आत्मा के प्रभाव में थी। इस आत्मा-नियंत्रक के साथ बातचीत के दौरान, मैंने कहा, 'आप इस माध्यम को क्यों नहीं छोड़ देते, और अपनी निरंतर उपस्थिति से उसे परेशान करते हैं, उसे हर समय प्रभावित करते हैं!' मुझे नहीं पता कैसे. 'कहां जाऊं सर!' 'ऊपर जाओ, उच्च जीवन की ओर एक कदम बढ़ाओ,' मैंने कहा, 'फिर मेरे पास आओ, और उस गरीब महिला को सांत्वना दो।' दो।

मैं अगली सुबह नौ या दस बजे तक नहीं उठा, और फिर मुझे अपने कमरे या अपने आस-पास की किसी भी चीज़ का पता नहीं चला। मैंने एक कप

कॉफ़ी पी और किसी से कुछ नहीं कहा. मैं उस निमंत्रण को भूल गया था जो मैंने उस रात उस प्रेतात्मा को दिया था, और मैं बिना किसी परवाह के सड़क पर निकल गया, और अंततः अपने घर से कुछ ही दूरी पर एक जंगली पार्क में पहुँच गया। दो पुलिसकर्मी आए जिन्हें मैं जानता था, और उन्होंने मुझसे बात की, लेकिन उन्हें देखकर मुझे 'डर' - एक असामान्य डर - महसूस हुआ। अचानक मुझे पैट के बारे में याद आया, और कैसे मैंने उसे अपने पास आने के लिए आमंत्रित किया था, और तुरंत दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ, मैंने उसे अपने से दूर कर दिया।

वह तुरंत महिला के पास लौट आया, और वह अब पागलों के लिए राजकीय अस्पताल में है। एम.डी. इसमें कुछ नहीं कर सकता। "कुछ समय पहले मेरे एक परिचित, एक असामान्य रूप से कट्टर स्कॉटिश प्रेस्बिटेरियन, ने अपनी पत्नी को खो दिया था, और जब उसका शरीर घर पर एक ताबूत में पड़ा हुआ था, मैं उससे मिलने गया। मैंने उसकी आत्मा देखी, और वह एक अंधेरा, अंधा, स्तब्ध था राज्य, और मैं उसे अपने पति को यह बताने के लिए विनती करते हुए सुन सकता था कि वह मरी नहीं है, बल्कि जीवित है और मैं अब उसे नहीं जानता।

जब मैं घर के लिए निकला, तो वह सहानुभूतिपूर्वक और मानसिक रूप से मेरे साथ शामिल हो गई, और मैंने तुरंत एक सत्र आयोजित किया, और जानबूझकर उसे पृथ्वी से ऊंचे क्षेत्र की आत्माओं के हाथों में सौंप दिया। उसने अनिच्छा से मुझे छोड़ दिया, और मैंने उससे फिर कभी नहीं सुना। "कुछ साल पहले लिली डेल कैंप में, मुझे एक बूढ़ी औरत मिली, जिस पर लगभग छह महीने से एक अज्ञानी भारतीय आत्मा का जुनून सवार था, और मदर स्टर्न्स ने मेरी सहायता से, भारतीय आत्मा को हटा दिया, और उसकी प्यारी आत्मा को उसमें डाल दिया गया उसके प्रभारी, और तब से बुढ़िया के साथ सब कुछ ठीक है।

लगभग एक महीने पहले मेरी मुलाकात एक मित्र के घर पर एक युवा जर्मन महिला से हुई, जिसने शिकायत की कि वह दो महीने से मध्यस्थता के लिए बैठी थी, और कभी-कभी एक झूठी आत्मा उस पर कब्ज़ा कर लेती थी जिससे वह लगभग मर जाती थी। मैंने उसे यह बताने की कोशिश की कि उससे कैसे छुटकारा पाया जाए, और कहा 'वह थोड़ी देर के लिए मेरे पास आ सकता है।' 'वह तुरंत मेरे पास आया, और खुद को चुंबकीय रूप से, अच्छे और मजबूत तरीके से जोड़ लिया।

उसने लड़की की तरह मुझे नियंत्रित नहीं किया, बल्कि वह हर समय मेरे आसपास मंडराता रहता था। उसने मुझे परेशान किया. जब हमने नियमित रूप से प्रार्थना की, तो मुझे पता चला कि यह आत्मा जर्मन लूथरन चर्च की सदस्य थी, और वह सम्मोहन या आध्यात्मिक लाइन से जुड़ी किसी भी चीज़ से पूरी तरह से अनभिज्ञ थी, और वास्तव में नहीं जानती थी कि मुझे कैसे छोड़ना है। है, या पता नहीं उसे क्या मामला था.

एक उच्च अधिकारी की सहायता से और एक शिक्षित जर्मन महिला की उपस्थिति में, हमने उसे एक बूढ़ी जर्मन आत्मा की देखभाल में रखा और इस तरह वह हमें छोड़कर चली गई। मैंने सभी मामलों में पाया है कि जुनूनी भावना और एक अन्य उज्ज्वल आत्मा के साथ एक सकारात्मक व्यवस्था बनाना सबसे अच्छा है जो उस गरीब अंधेरे दिमाग की जिम्मेदारी लेगा जिसे आप उच्च स्तर पर भेजना चाहते हैं।

कुछ साल पहले मेरे एक दोस्त की अचानक मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के बाद की रात वह आया और मानसिक रूप से मुझसे जुड़ गया। मुझे लगा कि मैं उसे जबरदस्ती दूर नहीं भेजना चाहता, क्योंकि मैं जानता था कि वह एक बहुत ही होनहार युवक था और उसे अस्तित्व की एक उच्च स्थिति तक पहुंचना चाहिए। मैं बैठ गया और अपने से अधिक उम्र के एक माध्यम को पत्र लिखकर सलाह मांगी।

इससे पहले कि मैं पत्र पूरा कर पाता, आत्मा ने मुझे छोड़ दिया और फिर भी वह तब से हमारी मंडली में नियमित रूप से आती रही है और मेरे अनुरोध पर स्वेच्छा से पृथ्वी पर कहीं भी जा सकती है। मैं नहीं चाहता कि कोई भी आत्मा जिसे मैं ऊपर या नीचे भेजूं वह मुझे पूरी तरह से छोड़ दे, बल्कि बार-बार मुझे और मेरी आत्मा मार्गदर्शकों को वह करने की अनुमति दे जो मैं उनके लिए कर सकता हूं।

जुनून और माध्यमों पर नियंत्रण को आध्यात्मिक लोगों के बीच बहुत कम समझा जाता है और मुझे डर है कि वर्तमान स्थिति में, इसे जल्द ही समझा नहीं जाएगा। जब मैं लिख रहा था, मेरे जर्मन आत्मिक मित्र ने मुझसे मुलाकात की, और मैंने उसे आने की अनुमति दी, लेकिन वह समझता है कि वह अपनी निरंतर उपस्थिति से मुझे रोक नहीं सकता और परेशान नहीं कर सकता, न ही वह ऐसा करना चाहता है।

मृत्यु, तथाकथित, इसे याद रखा जाना चाहिए, आत्मा की प्रकृति या झुकाव में कोई तत्काल परिवर्तन नहीं लाता है। इसलिए अवांछनीय प्रभाव

और जुनून हैं। "भवदीय, जे. डब्ल्यू. डेनिस।" "बफ़ेलो, एन.वाई. "प्रिय भाई: "जुनून या कम आत्मा नियंत्रण के विषय पर आपको फिर से लिखने के लिए आपको मुझे क्षमा करना चाहिए। जब मैं कई वर्षों तक लिली डेल कैंप का ट्रस्टी था, तो मैं बहुत हद तक आत्मा-माध्यमों के साथ बैठा था जिन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया, और तदनुसार मुझे अधिकांश लोगों की तुलना में जुनून के अधिक मामलों को देखने और अध्ययन करने का मौका मिला।

एक बार श्रीमती बर्डिक हमारे घर आईं और कहा कि वह दो महीने से पागलखाने में है, लेकिन उन्होंने कहा कि वह बिल्कुल भी पागल नहीं है। मैंने उन्हें बताया कि वे पागल नहीं हैं, और उनके साथ बैठकर बात की, और जल्द ही पता चला कि वे अपनी मां की आत्मा से परेशान थे, जो पृथ्वी पर पागल हो गई थी और अपने बेटे के बैंक को बर्बाद करने के लिए जेल जा रही थी। के कारण होने वाले कष्ट के कारण।

मैंने बहुत पहले ही पता लगा लिया था कि पृथ्वी के वायुमंडल में लौटने वाली आत्माएँ हमेशा वैसी ही दिखाई देती हैं जैसी वे तब थीं जब वे गई थीं, जब तक कि उन्हें बेहतर शिक्षा न दी जाए और वे अधिक आत्म-संतुलित न हो जाएँ; इसलिए मैंने उस महिला से कहा कि वह कामना करे - लगातार प्रार्थना करती रहे - कि उसकी माँ सही दिमाग में तैयार होकर उसके पास आए। मैंने इस आत्मा माँ से भी बात की, और उसे बताया कि वह उस उत्तेजित अवस्था में आकर और उसे देखने का प्रयास करके अपनी बेटी को सकारात्मक चोट पहुँचा रही थी।

तीन महीने से भी कम समय में बेटी और माँ दोनों ठीक हो गईं, और अब स्वस्थ हैं, फिर भी माँ को बेहतर शिक्षा मिलने से पहले वह लगभग लगातार अपनी बेटी के प्रति आसक्त रहती थी। जुनून अज्ञानता, शरारत या द्वेष का हो सकता है। कुछ साल पहले एक महिला, जो अब मेरे जैसे ही समाज के सामने बोल रही है, विकास के लिए एक माध्यम के रूप में मेरे साथ मेरे घर पर बैठी थी, और वह उस बिंदु पर पहुंची जहां उसे एक अच्छी आत्मा द्वारा नियंत्रित किया गया था जो उसके माध्यम से गाती थी।

एक रात वह किसी आत्मा के वशीभूत या जुनूनी हो गई, जिसने उसे उन्मादी बना दिया, और वह हर समय जोर-जोर से चिल्लाने से खुद को मुश्किल से रोक पाती थी। वह जुनूनी आत्मा की शक्ति से अधिक शक्तिशाली सम्मोहन शक्ति द्वारा नियंत्रित होने के कारण इस परेशानी से उबर गई, फिर भी मेरा मानना है कि वह किसी भी समय फिर से जुनूनी

हो सकती है, जैसा कि सभी नियंत्रित माध्यम कुछ शर्तों के तहत करते हैं। उस खतरे के प्रति खुले हैं.

बी-, ओंटारियो की मार्था पोलक पर कुछ साल पहले अचानक एक शैतानी आत्मा आ गई थी, और जब वह अपने लोगों के साथ युद्ध में नहीं होती थी, तो वह जाकर बिस्तर पर लेट जाती थी, और इस काम में किसी ने मदद नहीं की। वह ठीक हो गई, प्रोफेसर डस्टिन, जो एक बहुत शक्तिशाली सम्मोहनकर्ता थे, द्वारा आत्मा को भगाया गया। "डकोटा में दादी हैथवे ने मुझे लिखा था कि वह एक माध्यम थीं, और उन्होंने कैथोलिक बच्चों को अपने दिल और घर में और अपने बिस्तर में ले लिया था, और परिणामस्वरूप वह तब से कैथोलिक आत्माओं से बहुत प्रभावित हुई हैं।

उसे नींद नहीं आती थी, लेकिन वह बच्चों को नहीं छोड़ती थी। उन्होंने मुझसे कैथोलिक प्रभाव से छुटकारा पाने में मदद करने की अपील की, और इसलिए मैंने कागज को चुम्बकित किया और भेज दिया। इसने, मेरी इच्छाशक्ति और अच्छी आत्माओं के साथ, काम किया, क्योंकि उसने मुझे लिखा था कि वह पूरी रात बिना किसी परेशानी के सो सकती है, और अच्छा महसूस कर रही है। "आप श्रीमती हैमेट को जानते होंगे, जो कैलिफोर्निया के एनसिनिटास में रहती हैं, जो यहां बफ़ेलो में मेरे घर पर रहती हैं।

उसके आसपास हमेशा लगभग बीस राक्षस रहते हैं, लेकिन वह कहती है कि वह सभी आत्माओं के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त है। (हां, मैं उसे अच्छी तरह से जानता था - जानता था कि वह एक मध्यम घर के लिए पैसे मांगने में माहिर था - और ऐसा घर! जो लोग वहां गए वे जल्द ही चले गए। - जे.एम.पी.) "आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. बफ़ेलो की, एक अच्छी छोटी महिला, बफ़ेलो मॉर्निंग एक्सप्रेस के लिए एक रिपोर्टर के रूप में लिली डेल शिविर में गई, और अध्यात्मवाद में परिवर्तित हो गई। वह सभी प्रकार की भौतिक घटनाओं से लड़ने में दूसरों के साथ शामिल हो गई।

इसका परिणाम यह हुआ कि वह उन आत्माओं की एक पूरी भीड़ के वश में हो गई जो भौतिक स्तर पर घटनाओं को क्रियान्वित कर रही थीं। वह इतनी हिंसक रूप से जुनूनी हो गई कि उसे एक निजी वाहन में लिली डेल से बफ़ेलो ले जाया गया, और जैकेट में सीधे शरण में डाल दिया गया। एक खूबसूरत, बुद्धिमान महिला से वह एक ऐसी स्थिति में बदल गई जिसमें अंततः उसकी मृत्यु हो गई।

वह अपने उन दोस्तों पर हंसती और मुस्कुराती थी जो उससे प्यार से बात करते थे। एक दुखद मामला! "मैं सत्तर और अस्सी साल की कई बूढ़ी महिलाओं को जानता हूं जो मुझे गंदी, व्यभिचारी या नीच आत्माओं वाली लगती हैं, जैसे कि नैतिक गंदगी के गड्ढों में घूमती हैं। क्या मुझे इन नैतिक प्रेमियों से आत्मिक जीवन में कोई वापसी मिलनी चाहिए? गंदगी? मुझे आशा है कि नहीं। मुझे गंधक नरक पसंद है, क्योंकि गंधक और अग्नि दोनों ही शुद्ध करने वाले हैं।

मैं एक बार विक्सबर्ग शिविर में था, और हमारे रैंक के प्रमुख चिकित्सकों में से एक मेरे पास आया और कहा, 'मैं चाहता हूं कि आप हमारे तंबू में जाएं और मेरी पत्नी का इलाज करें, वह बीमार है।' मैंने उससे कहा कि वह एक अच्छा डॉक्टर है और उसे अपनी पत्नी का इलाज स्वयं करना चाहिए। अगले दिन वह मुझे अपने तंबू में ले गया। मैं उसकी पत्नी के साथ बैठा और उसे बताया कि उसके सीने में दर्द है और वह किसी आत्मा पर नियंत्रण के लिए संघर्ष कर रही है। उसने कहा कि वह ऐसा कर रही है और उसे इससे प्रभावित होना पसंद नहीं है।

मैंने उससे झुकने और आत्मा को अंदर आने के लिए कहा और वह एक अजीब सी ऐंठन वाली स्थिति में अपनी कुर्सी से फर्श पर गिर गई। आधे घंटे तक यही सिलसिला चलता रहा. जब उसे होश आया और उसने कहा कि वह बेहतर महसूस कर रही है, तो मैंने उसका बिल्कुल भी इलाज नहीं किया। उसने मुझे बाद में बताया कि वह अक्सर अपने एक बेटे के बारे में सोचती थी जो अठारह साल की उम्र में ऐंठन से मर गया था और उसकी स्वास्थ्य स्थिति ने उसकी मानसिकता को बर्बाद कर दिया था, इसलिए उससे जुड़े रहने के कारण उसने उसे छोड़ने की कोशिश नहीं की।

कई मामलों में आत्माओं को ऊपर चढ़ने की कोई इच्छा नहीं होती है और इसलिए वे पृथ्वी के वातावरण में रहती हैं और जब भी संभव हो नश्वर लोगों से जुड़ती हैं और इस तरह आंशिक रूप से अपने सांसारिक जीवन को पुनः प्राप्त करती हैं। 4 4 भाईचारा, 44जे. डब्ल्यू डेनिस.

" डी.के. पीबल्स: "इस भौतिकवादी, धन-प्राप्ति के युग में, बहुत कम लोग जुनून पर ध्यान देते हैं। रूढ़िवादी चिकित्सा समुदाय द्वारा या तो उन्हें नकार दिया जाता है या समझा नहीं जाता है। केवल वही लोग हैं जो मनोविज्ञान से संबंधित जीवन के नियमों के बारे में चिंतित हैं। वे बीमारों की जांच करते हैं और उनका इलाज करते हैं, वे देख और समझ सकते हैं कि आंतरिक और बाहरी दोनों जुनून कितने आम हैं।

कुछ हद तक सभी बीमारियाँ शरीर के किसी भी हिस्से की बजाय मस्तिष्क, मानस में उत्पन्न होती हैं। कारण भीतर हैं, बाह्य स्वरूप बाहर है। "कुछ समय पहले मेरे पास एक मिस्टर गोल्ड आए थे जो लगभग दस वर्षों से घबराहट, आंशिक अंधापन और गठिया से पीड़ित थे। नियमित चिकित्सक उनका कुछ भी भला नहीं कर सकते थे। वह एक माध्यम थे, आत्माओं की उपस्थिति के प्रति सचेत थे।

उसने लगभग लगातार चेहरे देखे। कभी-कभी वे दीवार पर चित्रों का रूप ले लेते थे। अदृश्य बुद्धि द्वारा उत्पन्न विचित्र संवेदनाओं के कारण वह पूरी रात जागता रहा। उन्होंने उसे दुखद आशंकाएँ दीं। वे उसे परेशान करते थे. वह इससे और अधिक प्रभावित होता गया, यहां तक कि उसके मन में सभी मनुष्यों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। वह लगभग लगातार धूम्रपान करता था। उसका मिजाज़ ख़राब होता जा रहा था. वह चिड़चिड़ा हो गया था.

गठिया के कारण वह कई वर्षों तक आंशिक रूप से अपंग हो गया और वह लगभग अंधा हो गया। चेल्सी, मैसाचुसेट्स में एक पुलिस अधिकारी, फ्रैंक आई. गोल्ड की कई वर्षों तक ऐसी ही स्थिति थी - यह सब बाहरी और आंतरिक जुनून के कारण था। मामला बेहद गंभीर था, जिसने मेडिकल प्रोफेशन को असमंजस में डाल दिया.

समय के साथ मेरे आध्यात्मिक उपचारकों ने पर्यावरण से सभी बाहरी प्रभावों और बाद में आंतरिक संस्थाओं को हटा दिया, जो शरीर और मस्तिष्क के तंत्रिका केंद्रों से जुड़ गए थे। इस कार्य के लिए आत्मिक जीवन में शिक्षित वैज्ञानिक बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा इन शक्तियों को खदेड़ दिया गया, बेदखल कर दिया गया।

फिर उन्होंने उसके चारों ओर सुरक्षात्मक आत्मा वाले मित्र रख दिए। , , , , उसने तम्बाकू की आदत छोड़ दी, चिंता कम हो गई, संक्रमित चेहरे गायब हो गए, और अब वह अपने रोजगार के बाद पूरी तरह से ठीक है। यदि उन्हें आमंत्रित किया जाए तो वे ख़ुशी-ख़ुशी इन सब बातों की गवाही देंगे। डॉ. जी.आर. लेस्टर लेन। बोस्टन, मैसाचुसेट्स।

अध्याय **XV**

जुनून से संबंधित अधिक पत्र.

यह कहना उचित होगा कि मेरे पास इन नारकीय प्रभावों का वर्णन करने वाले पत्र-लेखकों के नाम और पते हैं। उनमें से कुछ समाज में प्रमुख और आधिकारिक पदों पर हैं। उनमें से लगभग सभी अध्यात्मवादी हैं, या अध्यात्मवाद या उदारवाद की ओर झुके हुए हैं। चर्च संप्रदायों में जुनूनी लोगों को तुरंत पागल घोषित कर दिया जाता है और पागलखाने में ले जाया जाता है। डोरचेस्टर, मैसाचुसेट्स, 11 दिसंबर, 1899।

डॉ. पीबल्स: आपको याद होगा कि कुछ समय पहले मैंने आपको अपनी एक बीमार प्रेमिका के बारे में लिखा था। एक महीने से भी कम समय में वह शरीर से बाहर हो गई। और अब मामले का अजीब हिस्सा आता है। मंगलवार की शाम थी और हमें अभी तक मेरे दोस्त की मौत की खबर नहीं मिली थी. मैं शाम बिताने के लिए बाहर गया था और अपने बड़े बेटे (पंद्रह साल का लड़का) को वहीं छोड़ आया था।

10 साल की उम्र में) अपने साथ रहने वाली एक महिला के साथ घर पर था। मेरे जाने से पहले, मेरा सबसे छोटा बेटा गायन अभ्यास के लिए गया था। मेरे बेटे ने उदास महसूस करने और रोने की तीव्र इच्छा होने की शिकायत की। वह रोया नहीं, लेकिन उसके गालों से आँसू बह निकले। उसने कहा कि वह बीमार नहीं थी, इसलिए मैं अपने दोस्त से मिलने गया।

मेरे जाने के बाद, मेरा बेटा और जिस महिला के बारे में मैंने बात की थी, वे उस कमरे में थे जिसमें पहले वह बीमार महिला रहती थी जिसकी मृत्यु हो गई थी। उन्होंने दरवाज़ा बंद होने जैसी आवाज़ सुनी और मेरे बेटे ने कहा, 41 को लगता है कि वह फ्रेंकी (मेरा सबसे छोटा बेटा) है। स्त्री ने ऊपर दृष्टि करके कहा, 'हाँ, वह उन पर्दों के पीछे से झाँक रहा है।' और वह उसे पकड़ने के लिये उठी, परन्तु वह वहां न था।

जब वे कमरे से बाहर थे, तो दरवाजा जोर से बंद हो गया और मेरा बेटा दरवाजा खोलकर कमरे में चला गया। किसी अदृश्य शक्ति ने तुरंत उसे पकड़ लिया और संघर्ष हो गया। “उसे उस कमरे से बाहर निकाला गया,

दरवाजा बंद कर दिया गया, रसोई में एक लंबे प्रवेश द्वार के माध्यम से, और उसे फर्श पर फेंक दिया गया और इधर-उधर फेंक दिया गया ताकि महिला घबरा जाए और मदद के लिए पुकारे।

उसे संभालने के लिए तीन लोगों की जरूरत पड़ी - एक मजबूत आदमी - थोड़ी देर बाद वह शांत हो गया। फिर फ्रैंक घर आया. कुछ समय तक फ्रैंक के घर पर रहने के बाद, सबसे बड़े लड़के को फिर से पहले से भी बदतर महसूस हुआ। फ्रैंक मेरे पिता के लिए दौड़ा, और फिर मेरे पीछे आया। जब मैं घर पहुंची, तो वह बिस्तर पर पड़ा हुआ था और खुद को मौत के घाट उतार रहा था। उसे पकड़ना पड़ा, और उसका चेहरा बैंगनी था, उसकी आँखें उसके सिर से बाहर निकली हुई थीं, और बिस्तर पसीने से गीला था।

वह मुझे नहीं जानता था, और फिर कुछ ऐसा हुआ जैसे क्रोध - एक शक्तिशाली शक्ति मेरे ऊपर आ गई, और मैंने पिता से उसे जाने देने के लिए कहा, और मैंने भगवान के नाम पर आदेश दिया कि जो भी प्रभाव उसे जाने के लिए मजबूर कर रहा था, - उसे चले जाना चाहिए, और कभी वापस नहीं आना चाहिए। मेरे लड़के ने एक क्षण के लिए संघर्ष करना बंद कर दिया, और ऊपर देखते हुए कहा, 'क्या हो रहा है, माँ?' मानो वह मीठी नींद सो रहा हो, - केवल वह थका हुआ लग रहा था।

आप इसे कैसे समझा सकते हैं? आपको क्या लगता है यह कौन था! वह तब से परेशान या जुनूनी नहीं है। क्या वह खतरे में है? मुझे बताओ। "वास्तव में, श्रीमती एल.जी.आर." "सेंट्रल सिटी, एस.एच., नवंबर 13, 1899। डॉक्टर: "मैंने जुनून के बारे में बेटर लाइफ में आपका कार्ड देखा। मुझे कहना होगा कि माँ, मैं और मेरी छोटी बहन छह साल से पीड़ा सह रहे हैं, और हमारे अनुभव बहुत भयानक रहे हैं।

संक्षेप में, मैं उनमें से कुछ बताऊंगा. मैंने आत्मा की दुनिया में बहुत सी चीज़ें देखी हैं। मैं भी सुन सकता हूँ, और शब्द भी अलग हैं। मैं देख सकता था कि पुरुष और महिलाएं हम पर हर तरह की घृणित चीजें डालते हैं, और इन समयों के दौरान हमारे शरीर में भावनाएं बहुत भयानक होती हैं। ये शब्द दूर-दूर तक गूंजते हैं और कहते हैं, 'तुम जो लिख रहे हो, मैं उसे बर्बाद कर दूंगा।' वे मुझे भयानक नामों से बुलाते हैं।

उसने मेरी बहन से उसे भयानक परियों की कहानियाँ सुनाने के लिए कहा, और बड़ी मुश्किल से हमने उसे रोका, और वह उन्हें सुनकर पसीने-पसीने हो जाती थी और उत्तेजित हो जाती थी। जब मैंने देखा, तो मुझे उसके

बिस्तर के सिर पर एक जोकर दिखाई दिया, और वह बहुत देर तक उसका पीछा करता रहा। कुछ समय पहले, सात महीने पहले, कई जोकर यहां आए थे, और उन्होंने चाकू जैसी चीजें हमारे शरीर में फेंक दीं, और हर बार जहां चाकू जाता था वहां दर्द होता था।

तभी दो लोग, एक पुरुष और एक महिला, जो बहुत क्रूर थे और जिन्होंने हम पर अत्याचार किया था, अच्छे होने का दावा करते हुए आए और चाकू निकाल लिया, और घावों पर शंकु के आकार की बर्फ लगा दी। इससे पहले भी महिला ने मौत के पेड़ की एक शाखा जलाई, और उसने उसे माँ के चारों ओर रख दिया, और उसका किनारा सिकुड़ने लगा, और मैंने उसे रगड़ा और हमने उस प्रभाव को खत्म करने की कोशिश की, जो हमने किया, और सब ठीक हो गया। गया।

जब महिला ठीक हो गई, तो उसने ऊपर वर्णित पेड़ के समान एक शाखा को जला दिया, जिसे उसने 'जीवन का वृक्ष' कहा। इस सब के बाद भी वह बहुत बुरी थी, और अभी भी हमें परेशान करती थी, और उसका लगातार साथी एक बड़ा, असभ्य आत्मा-पुरुष था। हम बातें करने के लिए बैठे, और घूरते रहे, और फिर हमने बैठना बंद कर दिया, लेकिन दृश्य पूरी तरह से मेरे मन में नहीं आए।

आत्मा वाले लोग भयानक बातें कहते हैं और मुझे डराते हैं। जब मैं मानसिक विकास के लिए बैठता हूं तो एक आवाज कुछ ऐसा कहती है कि मैं कांप उठता हूं, फिर मां के बारे में सोचता हूं तो भारतीयों का एक समूह नजर आता है और फिर कई लोगों पर तंज कसता हूं तो मुझे कातिलाना आवाजें मुझसे बातें करते हुए सुनाई देती हैं। हमने जो देखा, जो सहा और जो सहा, उसका वर्णन करने में कई पन्ने लगेंगे।

यह एक छोटा सा शहर है और हम यहां दो साल से रह रहे हैं। यहां के लगभग सभी निवासियों के कृत्यों और अपराधों को देखकर कोई भी स्वाभाविक रूप से कहेगा, 'यह एक भूतिया शहर है।' इन आत्माओं ने मुझे लिखने की अनुमति नहीं दी है। यहां आने से पहले मैं कभी बीमार नहीं पड़ा था और मां बहुत मजबूत थीं. मेरी छोटी बहन हमेशा थकी रहती है. क्या आप हमें इन भयानक परिस्थितियों से बाहर निकालने में मदद कर सकते हैं? "भवदीय आपका, "एमएलएस।" “कालामाज़ू, मिशिगन, 1 दिसंबर, 1899।

'डॉक्टर पीबल्स: "मैंने आपका कार्ड देखा जिसमें जुनून के मामलों के बारे में पूछा गया था और मैं आपको इस शहर की एक महिला का मामला बताऊंगा। वह जुनूनी हालत में कहती हैं कि वह सबसे अच्छा माध्यम हैं.
दुनिया। वह अजीब कहानियाँ सुनाती है। वह करीब दो साल तक इसी शहर में शरण में रहीं. उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ, लेकिन मानसिक रूप से उनमें कोई बदलाव नहीं आया।

मुझे लगता है कि वह हर समय अधिक जिद्दी होती जा रही है। वह इतनी सारी बातें बताती है जो आत्माएं उससे कहती हैं, मैंने उसे कभी ऐसा कुछ कहते नहीं देखा जिस पर हम भरोसा कर सकें। वह आत्माओं को देखती है और कुछ परीक्षण देती है। वह एक असामान्य रूप से बुद्धिमान महिला थीं, उन्होंने सत्रह साल तक स्कूल में पढ़ाया और एक वकील से शादी की थी।

उसने शराब पी, उसकी और उसके दो छोटे लड़कों की उपेक्षा की। उसने उसे छोड़ दिया, और उसने उसे एक शरण में डाल दिया। वह अब अपने रिश्तेदारों पर निर्भर हैं. वह महिला मेरी बहन है, और अपने पति को छोड़ने के बाद से उसके मन में यह विचार विकसित हो गया है कि मैं परिवार में नहीं हूं - कुछ ऐसा जो तब बदल गया जब वह एक बच्ची थी। जब हम उससे तर्क करते हैं, और उसे यह बताने की कोशिश करते हैं कि दुष्ट आत्माएँ ही उसे ये बातें बताती हैं, तो वह बहुत क्रोधित हो जाती है।

आपके सम्मान से,
“श्रीमती पी.एच.आर.
"बेयर्ड, टेक्सास, 9 जून, 1899।

"चिकित्सक:
“अठारह महीने पहले मैंने स्वचालित रूप से लिखने की कोशिश की, और कुछ बैठकों के बाद मैं सफल हो गया; लेकिन वह एक बहुत बुरी आत्मा थी जिसने बाद में किसी कारण से मेरे हाथ का इस्तेमाल किया। वह झूठा और दुखी व्यक्ति था. उसने कबूल किया कि वह अपने जीवन का हत्यारा है, और उसे बेहतर बनाने और उसके लिए कुछ मिशनरी कार्य करने के लिए मेरे पास भेजा गया था।

चूँकि मैं एक जर्मन हूँ, उसने उस भाषा का प्रयोग किया और मुझे अपने कई कुकर्मों के बारे में बताया। इन घटनाओं से कुछ समय पहले, मैं

अध्यात्मवाद की सच्चाई के प्रति आश्वस्त हो गया था, लेकिन मेरी रुचि दर्शनशास्त्र में अधिक थी। मुझे नहीं पता था, और मैंने ईमानदारी से इस भावना पर विश्वास किया, और उसके लिए कुछ करने की कोशिश की, यह विश्वास करते हुए कि मैं उसकी मदद कर सकता हूं।

लेकिन वह मेरे प्रति अधिकाधिक अहंकारी और द्वेषपूर्ण होता गया, जिसे मैं और अधिक सहन नहीं कर सकती थी। इसके बाद मैंने उससे संवाद तोड़ दिया और उससे साफ कह दिया कि मैं अब उसके साथ कोई रिश्ता नहीं रखूंगा। बदला लेने के लिए वह दिन-रात लगभग लगातार मेरे सिर को छूकर मुझे परेशान करने लगा और पिछले छह महीने से मैं उससे बहुत परेशान हो रही हूं। मैं जानता हूं कि यह वही है, लेकिन मैंने उसके बाद कभी उससे बातचीत नहीं की।

अब मैं थोड़ा बेहतर हूं, लेकिन वह हमेशा मुझे परेशान करता है, और अगर आप उसे भगा देंगे तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा। कृपया मुझे कुछ सुझाव दें। आप मेरे जानने वालों में सबसे अधिक जानकार प्रेतात्मावादियों में से एक हैं, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप इस लगातार भयावह प्रभाव के खिलाफ एक उपाय जानते होंगे। संभवतः इन सभी परेशानियों का कारण प्रेतविद्या के विषय में मेरी अज्ञानता है। मुझे नहीं पता कि उसका विरोध कैसे करूं. मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मुझे इस दिशा में निर्देशित करें।

"भवदीय,
"एफ.डब्ल्यू."
"बेयर्ड, टेक्सास, 27 जून, 1899।

"चिकित्सक:
"आपके पत्र के उत्तर में, मुझे कहना होगा कि यह मेरे लिए बहुत बेहतर होता अगर मैंने एक साल पहले आपसे पत्र-व्यवहार किया होता। हमारे मुद्दे की एक बड़ी समस्या यह है कि बहुत से अशिक्षित और अज्ञानी लोग निर्देश देना और सिखाना चाहते हैं अन्य। कोशिश कर रहे हैं। वे सम्मोहन, मानसिक कानून या जिस मामले का वे इलाज कर रहे हैं, उसके बारे में थोड़ी सी भी जानकारी के बिना लिखते और बात करते हैं।

"जब मैं पहली बार इस नियंत्रित करने वाली आत्मा से परेशान था, तो मैंने पढ़ा कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम हर आत्मा के प्रति मित्रवत रहें, और उनमें से सबसे बुरे लोगों को भी सिखाएं और उनकी मदद करें, ताकि वे

उन्हें ईसाई प्रेम आदि के साथ स्वीकार कर सकें। जब से मैं मैं भूत-विद्या के संबंध में बहुत अनभिज्ञ था, और मेरा मानना था कि ये लेखक और शिक्षक जानते थे कि वे किस बारे में बात कर रहे थे, मैंने सलाह पर ध्यान दिया। आप दुखद परिणाम जानते हैं.

पिछले छह महीनों से, मैंने उस दुष्ट आत्मा को अपने हाथ का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी है, और जब वह मुझे परेशान करती है, तो मैं लाक्षणिक रूप से अपने घर की चट्टान की दीवार पर उसका सिर पटक देता हूं, और मुझे यह उपचार बेहद सफल लगता है। मैं उससे बात नहीं करता, न ही उस पर ध्यान देता हूं।

मैं अपना बदला नहीं लेना चाहता, बल्कि उसे भगाना चाहता हूं और मैं अपनी पूरी शक्ति और मानसिक शक्ति से ऐसा करूंगा। सच है, वह जिद्दी है, लेकिन मेरी इच्छाशक्ति बहुत मजबूत है, और वह इसे कभी नहीं तोड़ पाएगा। उसकी ताकत लगातार कम होती जा रही है. "हालाँकि, मुझे मदद की ज़रूरत है। मैं लगभग 1,000 निवासियों वाले एक छोटे शहर में रहता हूँ।

आप मुझे अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग करने के अलावा, मदद के लिए भारतीय आत्माओं के एक मजबूत समूह को बुलाने की सलाह देते हैं। मैं यह करने के लिए उत्सुक हूं, लेकिन मुझे नहीं पता कि यह कैसे करना है। क्या मुझे अपनी इच्छाओं को अपने अभिभावक आत्माओं को संबोधित करना चाहिए! मैं दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में बहुत पढ़ा-लिखा हूं और खुद एक जर्मन लेखक हूं, लेकिन मैं प्रेतात्मवाद के बारे में ज्यादा नहीं जानता।

वर्षों पहले मैं भूत-विद्या का कट्टर शत्रु था, और शायद मुझे सच्चाई का विश्वास दिलाने के लिए ऐसे उपचार की आवश्यकता थी। कृपया मेरी ख़राब अँग्रेज़ी को क्षमा करें।

भवदीय,
"एफ.डब्ल्यू."

अध्याय XVI

मेथोडिस्ट और अन्य लोगों का जुनून।

मोनोन, इंडियाना, 14 जनवरी 1900।

"डॉ पीबल्स:

“कुछ समय पहले मैंने जुनून के साथ अनुभव के लिए आपका अनुरोध देखा था, और मैं आपको अपना अनुभव देना चाहता हूं;

सबसे पहले, मैं आपको एक ऐसे मामले के बारे में बताऊंगा जो मुझे अच्छी तरह से पता था। “कई साल पहले, वॉटरटाउन, एन.वाई. में नैन्सी हल नाम की एक लड़की थी, जिसके बारे में माना जाता था कि वह अच्छे चरित्र की नहीं थी, हालाँकि वह आम तौर पर अच्छी दिखती थी। . वह अचानक बीमार हो गई, और अपने मरणासन्न बिस्तर पर उसने पड़ोसियों से आने और उससे मिलने का अनुरोध किया, लेकिन एक घमंडी महिला थी जो नहीं आई क्योंकि उसका मानना था कि नैन्सी ने उसके पति को बहकाया था।

उसने नैन्सी को बदनाम किया, और उसकी आत्मा में इस महिला के प्रति गहरी नफरत और आक्रोश की भावनाएँ छोड़ गईं; और तदनुसार उसने इस महिला की बेटियों को उसी स्थिति में लाने का संकल्प लिया जिसमें वह पृथ्वी पर जानी जाती थी। वह अपनी नफरत अपने साथ ले गई। वह बदला लेने जा रही थी. लड़कियों को गुमराह नहीं किया गया था, लेकिन वे इस आत्मा से बुरी तरह ग्रस्त और परेशान थीं। मैं संबंधित सभी पक्षों को जानता था, और वर्षों बाद नैन्सी आत्मा में मेरे पास आई और रोते हुए उससे माफ़ी मांगी।

1887 में एक महिला की मृत्यु हो गई, वह अपने पीछे अपने पति और चार बच्चों को छोड़ गई, जिनमें से तीन सबसे बड़ी लड़कियाँ थीं। उनका पूरा जीवन अपने पति और परिवार के लिए समर्पित था, और उनके करीब रहने और उनकी मदद करने के तरीके की तलाश में, उन्होंने मुझे पाया, और मुझे इस शहर में जाने और उनसे परिचित होने के लिए मानसिक रूप से प्रभावित किया।

उसने मुझ पर इतना प्रभावशाली प्रभाव डाला कि कभी-कभी मेरा शरीर भी उसका हो जाता था, यहां तक कि उसने मुझे उससे शादी करने के लिए भी प्रभावित किया। मैंने ऐसा किया, और ईमानदारी से एक अच्छी सौतेली माँ बनने की कोशिश की, लेकिन विद्रोही बच्चों ने एक खुशहाल घर में बाधा डाली, और परिस्थितियों से मजबूर होकर मुझे छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस वजह से मैं किसी भी तरह से गरीब, टूटे दिल वाली, दुखी महिला नहीं थी। तब फ्रांसिस विलार्ड, जो आत्मा के जीवन में प्रवेश कर चुके थे, और टूटे हुए दिलों को ठीक करने और उजाड़ घरों में विश्वास बहाल करने में हमेशा की तरह सक्रिय थे, मुझे मिले। “मैं घर लौटा, और मुझे घर में आत्मा की उपस्थिति के बारे में पता चला।

एक दिन बगीचे में मुझे यह सन्देश मिला, 'तुम पर जो कुछ तुम सह सकोगे उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं थोपा जाएगा, और तुम्हारी भरपूर मदद की जाएगी। मैंने अपने पति को उनकी पहली पत्नी की ओर से कई संदेश लिखे और उन्होंने उनसे दयालु होने का आग्रह किया। “लगभग दो साल पहले, मैं आध्यात्मिक शक्ति से अभिभूत हो गया था, और तेज़ तूफ़ान में पत्ते की तरह हिल गया था।

मैं अपने घुटनों पर गिर गया और अपने सभी रिश्तेदारों के लिए प्रार्थना की, और दोस्तों और दुश्मनों सभी के प्रति समान रूप से मित्रता महसूस की। तभी मेरे मन में यह विचार आया, 'चलो मैं तुम्हें एक नया नाम देता हूँ,'-"फ्रांसिस विलार्ड।" मुझे बहुत आध्यात्मिक, ऊंचा और प्रेम से भरा हुआ महसूस हुआ।

“कुछ समय बाद, मिस विलार्ड डब्ल्यू.सी.टी.यू. में शामिल हो गईं। परन्तु यह समाचार विदेश में फैल गया कि मैं पागल हो गया हूं, और वे डर गए। तब दुःख हुआ कि 'मैं अपने लोगों के पास आया हूँ, और मेरे अपने लोगों ने मुझे स्वीकार नहीं किया'

अनजाने में, मेरी मानसिक स्थिति की जाँच की गई, और मुझसे पूछा गया, - आप कहते हैं कि मिस विलार्ड यहाँ हैं?

"मैंने उत्तर दिया, 'हां। मुझे पता है।'

"'वह क्या चाहती है? क्या उसके पास कोई संदेश है?'

"'हां, यह है, - मैं चाहता हूं कि चर्च अपने दरवाजे खोले और अपने अंगूर के बगीचे में तीन पेड़ लगाए, - वूमन्स क्रिश्चियन टेंपरेंस एसोसिएशन की आध्यात्मिकता, दिव्य उपचार और पवित्र उद्देश्यों के लिए।'

"इस आध्यात्मिक संदेश के बल पर मुझे पागल, या जुनूनी घोषित कर दिया गया और शरण में भेज दिया गया। लेकिन मेरी सजा के निष्पादन से पहले, मेरी भतीजी सेंट पॉल से आई, और उसने मुझे शिकागो में एक विशेषज्ञ के पास भेजा। मुझे राजी किया गया ले जाने की अनुमति दी जाए, मैं हैनिमैन अस्पताल गया और डॉ. बेली ने मेरी जांच की, जिन्होंने बताया कि मैं ठीक हूं, हालांकि कुछ हद तक घबराया हुआ हूं।

उन्होंने मुझसे व्यक्तिगत रूप से पूर्णता की ओर बढ़ने के लिए कहा, क्योंकि इन आध्यात्मिक प्रमुख समारोहों का जल्द ही उपहास नहीं किया जाएगा, या गलत नहीं समझा जाएगा। हालाँकि, जब मैं घर लौटा, तो मुझे पागल होने के लिए प्रतिष्ठा मिली। मुझे आश्रय स्थल में जाने की सलाह दी गई और मैं चला गया। मुझे बहुत अपमान सहना पड़ा. तीन सप्ताह के बाद, अधीक्षक ने मुझे इस निर्णय के साथ छुट्टी दे दी कि मेरे मामले में कुछ हद तक भावनात्मक संवेदनशीलता को छोड़कर, कोई मानसिक विकार नहीं था।

“मुझे पुनर्जीवित कर दिया गया है, अब मैं भूत-प्रेतों की शक्ति से बाहर हो गया हूँ, लेकिन मेरा वातावरण पूरी तरह से अनुकूल नहीं है। मैं एक मेथोडिस्ट और अध्यात्मवादी भी हूं। मैं अपनी लेखन सामग्री के अंत तक पहुँच गया हूँ, और इस पत्र को पूरा करूँगा, और इसे इसकी सभी खामियों के साथ भेजूँगा।
"वास्तव में आपकी," श्रीमती। एह।"
"पश्चिम लेबनान, 18 जून, 1900।

"चिकित्सक:

“पिछले नवंबर से मैं इतने अजीब मानसिक अनुभव से गुज़रा हूँ कि लगभग ढाई महीने तक मुझे पता ही नहीं चला कि मैं किस तरह का व्यक्ति हूँ। आपके निबंध ने मुझे मेरी मानसिक स्थिति के बारे में कुछ

जानकारी दी है, और मैं आपको अपने अनुभवों और उसके कारणों के बारे में कुछ बताना चाहता हूं।

“मैं बचपन से ही वैज्ञानिक विचारों का उत्साही पाठक और बाइबल का विद्यार्थी रहा हूँ। पिछले कुछ वर्षों में मेरा खाली समय किसी के साथ रहने के बजाय किताबों के साथ बीता है, हालाँकि मैं किसी भी तरह से एकांतवासी नहीं रहा हूँ। अपने घरेलू कामों के अलावा, मैंने चर्च का बहुत सारा काम किया है, और अंत में, मैं अपने पड़ोस में कुछ नए लोगों, एक बूढ़े सज्जन और उनकी पत्नी से मिलने गई। बूढ़े सज्जन को संदेह हुआ।

उन्हें बाइबिल में कोई विश्वास नहीं था, लेकिन वे हमारे आसपास आत्माओं और अदृश्य प्राणियों की उपस्थिति में विश्वास करते थे। मैंने उनसे पूछा कि उन्हें यह ज्ञान कैसे मिला, और उन्होंने मुझे एक प्लैंचेट दिखाया और समझाया। मैंने उसकी पत्नी के साथ उस पर हाथ रखा और थोड़ी देर बाद उस पर लिखा था, 'मैं लिखना नहीं चाहता।' फिर कभी लिखूंगा. यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी और मेरी जिज्ञासा बढ़ गई।

मैंने दूसरों को अनैच्छिक रूप से लिखते हुए सुना था, और इसलिए जब मैं घर आया, तो मैं अपने हाथ में एक पेंसिल लेकर बैठा रहा जब तक कि उसने अपनी इच्छा से यथासंभव आसानी से नहीं लिखा। इसने मुझ पर एक आकर्षक प्रभाव डाला। विरोधाभास और धोखे जल्द ही स्पष्ट हो गए। मेरा विवेक मुझसे दूर चला गया. मेरी उत्तेजित और घबराई हुई स्थिति के कारण, मुझे जल्द ही पागल घोषित कर पागलखाने ले जाया गया।

मैं वहां तीन महीने तक रहा. बाद में मेरा वहां रुकना उन लोगों के सामने अपनी समझदारी साबित करने के लिए था जो मेरी परवाह करते थे। पहले छह हफ्तों तक मुझे घर की कोई परवाह नहीं थी, न ही मैं वहां रहने से थोड़ा भी डरता था।

मेरा दिमाग तेज़ी से काम कर रहा था, और मैं अपने दिमाग में आने वाली चीज़ों, मेरे सामने प्रस्तुत अजीब, दूरदर्शी वस्तुओं और मेरे ध्यान में आने वाले वास्तविक अवलोकनों का वर्णन करते हुए एक संपूर्ण हुक लिख सकता था। कभी-कभी मेरा स्वभाव इतना बदल जाता था कि मेरे मन में किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रह जाती थी। मेरे मन में दो प्रभाव काम कर रहे थे, इतने विरोधाभासी कि कभी-कभी यह मुझे परेशान कर रहे थे।

मेरे हाथ ने एक बार लिखा था कि चुंबकत्व मन का निर्माण करता है, और परी-विद्या इसे तोड़ देती है, और मुझे दुनिया को दिखाना था कि परी-विद्या इसके लिए क्या कर रही थी। मैं इस पर रोया. और हालाँकि मैं हर दिन प्रार्थना करता था, मेरी प्रार्थनाएँ हल्की हो गईं, और मैं प्रार्थना करने से लगभग डरने लगा, और फिर मेरे मन में एक सबसे सुंदर प्रार्थना गूँज उठी, जो किसी अन्य की तरह नहीं थी। कभी-कभी इसका प्रभाव विनाशकारी होता था। मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। मैं खुद नहीं था. मैं जुनूनी था.

लेकिन आख़िरकार मैं उस प्रभाव से बाहर आ गया, जिसका कारण मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया। संगठन ने ऐसा नहीं किया क्योंकि मैंने दवा की कुछ खुराकें लीं और उनके निर्देशों का पालन नहीं किया। लेकिन अचानक, यह नियंत्रित करने वाला प्रभाव मुझसे दूर चला गया और मैं अपने स्वाभाविक स्वरूप में लौट आया। जान में जान आई! "मैं पागल नहीं था, लेकिन किसी मानसिक जादू के प्रभाव में था। मेरे माता-पिता अब मुझे अध्यात्मवाद के विषय पर कुछ भी करने की अनुमति नहीं देते हैं।" आदरपूर्वक आपकी, "मैरी सी।" मैं

डॉ. पीबल्स: "जुनून का एक दुखद मामला (जिसे चिकित्सकों द्वारा मिर्गी कहा जाता है) का इलाज किया गया और चार दिनों में ठीक हो गया। डॉ. ए. ए. किमबॉल। यहां एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

1894 की सर्दियों के दौरान, फ्लोरेंस, मैसाचुसेट्स की एडिथ शेफर्ड नाम की एक छोटी लड़की, जो नौ साल की थी, नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में मेरे कार्यालय में लाई गई थी। उन्होंने जिन मंडलियों में भाग लिया, उनमें उत्कृष्ट परीक्षण उपकरण विकसित किए थे। मैं एक मंडली में मौजूद था, और मैंने इस लड़की के सिर के ऊपर एक बहुत ही काली बुरी शक्ति को देखा, जो उसे अपने कब्जे में लेने की कोशिश कर रही थी।

मैंने उसके भाई से कहा कि उसे उसके बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए और विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके आसपास केवल अच्छे हालात हों। 4'लियोमिन्स्टर, मैसाचुसेट्स में स्थानांतरित होने के कुछ ही समय बाद, लड़की को मिर्गी के दौरे पड़ने लगे। वह फर्श पर पीछे की ओर गिर जाएगी, उसका शरीर पूरी तरह से कठोर हो जाएगा, आंखें बंद हो जाएंगी और जबड़े कड़े हो जाएंगे। इसे रगड़ने से वह कुछ ही देर में इन दौरों से बाहर आ जायेगी; लेकिन वे उस पर बार-बार और अधिक गंभीरता से हमला करते रहे।

एक दिन जब वह असामान्य रूप से गंभीर स्थिति में था, वे उसे बाहर निकालने में असमर्थ थे। अचानक उस पर एक छोटी भारतीय लड़की की आत्मा ने नियंत्रण कर लिया, जिसने कहा, 'मध्यस्थ को जल्दी और जोर से रगड़ो, और हम उसे पकड़ने की कोशिश करेंगे।' उन्होंने अपने प्रयास फिर से शुरू किये, जो सफल रहे।

भारतीय आत्मा वापस लौटी, और उन्हें बताया कि दुष्ट राक्षसी आत्माओं का एक समूह था जो माध्यम की आत्मा को उसके शरीर से बाहर निकालने के लिए दृढ़ थे, और वे अपने माध्यम को उन अंधेरी परिस्थितियों में अधिक समय तक रखने में सक्षम नहीं थे, और यदि वे उसे जीवित रखना चाहते हैं, तो उन्हें तुरंत फ्लोरेंस लौटना होगा। वे फ़्लोरेंस लौट आए, लेकिन 'भ्रमण' जारी रहा। एक महिला मित्र ने माँ को बच्चे को मेरे पास लाने की सलाह दी, जो उसने किया।

जब माँ मुझे बच्चे का हाल बता रही थी, वह कमरे में अलग-अलग वस्तुओं को देख रही थी, तभी अचानक एक चीख के साथ वह फर्श पर पीछे की ओर गिर पड़ी। मैं उसके पास गया और देखा कि उसका शरीर अकड़ रहा था, जबड़े कसकर बंद थे, आँखें बंद थीं और पलक उठाने पर पाया कि आँख ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी, केवल पुतली का एक हिस्सा दिखाई दे रहा था। चेहरे पर गहरी नफरत, प्रतिशोध और द्वेष के भाव थे।

मैंने उसे अपनी बाहों में उठाया और सोफे पर लिटा दिया और उसके बगल में बैठ गया और अपना दाहिना हाथ उसके माथे पर रख दिया। तुरंत उसकी आंखें खुल गईं, और एक भयानक श्राप के साथ, आत्मा ने (क्योंकि ऐसा ही था) मुझसे अपना हाथ हटाने की मांग की, और इस मांग के बाद सबसे कड़वे श्राप और शाप दिए गए जो मैंने कभी किसी भी इंसान के मुंह से सुने थे। , अपने बच्चे को मेरी देखभाल में रखने के लिए माँ के प्रति, और मेरे प्रति भी क्योंकि मैंने चुंबकीय रूप से उस पर उसकी शक्ति को तोड़ दिया।

इसी समय इनमें से छह बुरी आत्माएं आईं, जिनसे मैंने बात की और तर्क किया, उसी समय मेरा समूह उन पर आध्यात्मिक शक्ति फेंक रहा था ताकि वे जिस अंधेरी स्थिति में थे, उसे बाहर निकाल सकें और आध्यात्मिक स्तर के उच्च स्तर पर ले जा सकें। विकास। थे। बच्ची को लगातार चार दिनों तक मेरे पास लाया गया और हर दिन इस वर्ग की कई आत्माओं को उसमें से बाहर निकाला जाता था, जब तक कि बुरी आत्माओं

का यह समूह पूरी तरह से नष्ट नहीं हो गया। उन्हें यह समस्या दोबारा नहीं हुई और वह पिछले पांच वर्षों से बहुत अच्छे स्वास्थ्य का आनंद ले रही हैं।

सलमा, कंसास,
29 दिसंबर, 1899.

चिकित्सक:

X स्वास्थ्य मंदिर में आपका नोट देखा जिसमें जुनून से पीड़ित लोगों के बारे में पूछा गया था। मेरा एक घनिष्ठ मित्र है जो अक्सर मुझसे मिलने आता है और हम एक घेरे में अकेले बैठते हैं। उसके पास बहुत मजबूत मानसिक शक्तियां हैं और वह एक शानदार माध्यम बन सकती है, केवल वह एक अंधेरी, दुर्भावनापूर्ण आत्मा से ग्रस्त है। वह उसे दिव्य दृष्टि से देखती है। मुझे सच में लगता है कि अगर उसे अकेला छोड़ दिया गया तो यह उसे मार डालेगा।

मेरा समूह इतना शक्तिशाली है कि उसे मुझसे दूर रख सकता है, लेकिन नहीं
हमेशा उससे. हमारे उच्च आत्मा मित्रों ने हमें जो बताया है, उसके अनुसार यह भयावह होना चाहिए। वह पूर्ण नियंत्रण लेने का साहस नहीं करती। हमने बहस की, प्रार्थना की, मनाया और डांटा, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। यदि आप हमसे कुछ करने के लिए कह सकते हैं, तो मुझे यकीन है, हम आभारी होंगे। महिला लगभग पचास वर्ष की एक बुद्धिमान महिला है।
"श्रीमती हन्ना डोड्स/'"आर्मेनिया, साल्वाडोर,
मध्य अमेरिका, 24 अक्टूबर 1901।

"डॉ पीबल्स:

"सर: प्रोग्रेसिव थिंकर, नंबर 611, 10 अगस्त में, मुझे आपके लिए डॉ. रॉबर्ट ग्रीर द्वारा निर्देशित एक लेख मिला, जिसका शीर्षक था 'रोमिश स्पिरिट्स/ जिससे मैं समझता हूं कि आप स्पिरिट पजेशन पर एक किताब

प्रकाशित करने वाले हैं; और चूंकि लगभग पन्द्रह साल पहले मैं इस विषय को लेकर बहुत पागल था, ढाई साल तक मैंने आपको इस मामले में अपना अनुभव देने का फैसला किया है, जिसे आप अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सकते हैं।

"मैं वास्तव में एक अध्यात्मवादी नहीं हूं, और मैं केवल दो अध्यात्मवादी सत्रों में उपस्थित रहा हूं, जिनमें से कोई भी मुझे बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगा, लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं दो आत्माओं से बुरी तरह प्रभावित हुआ हूं।, जो एक बार अंदर आए थे वे मानव रूप में थे और वे मुझे मनुष्यों की तरह ही ठोस लगते थे, वे मेरे साथ खाना खाते थे, मेरे साथ एक ही कमरे में सोते थे और मेरे साथ रेल और स्टीमर से आधी दुनिया की यात्रा करते थे।

उन्होंने मेरे आत्मज्ञान के लिए अजीब मानसिक घटनाएँ उत्पन्न कीं; उन्होंने मुझसे उन वैज्ञानिक विषयों पर बहस की और समझाया जिनका मैंने कभी अध्ययन नहीं किया था या जिनके बारे में मैंने सपने में भी नहीं सोचा था, और जब मैंने उन पर अपना पूरा ध्यान देने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने मुझे अपमानित किया और बुरी तरह से दुर्व्यवहार किया, कभी-कभी दुर्लभ तार वाले वाद्ययंत्रों के साथ पुरुषों और महिलाओं के आर्केस्ट्रा को बुलाते थे, जो , मुझे पढ़ना चाहिए, मुझे पढ़ना चाहिए।

कहने का तात्पर्य यह है कि इसने अब तक का सबसे आनंददायक, फिर भी अजीब संगीत प्रस्तुत किया जिसे सुनने का मुझे आनंद मिला है। "पहले मुझे लगा कि जनता 'मूर्ख' है क्योंकि उन्होंने वह नहीं देखा और सुना जो मैंने स्पष्ट रूप से देखा और सुना, लेकिन जब मुझे एहसास हुआ कि जनता मेरे उत्पीड़कों की सलाह पर मेरे दिमाग से बाहर की चीजों की कल्पना करने लगी है, तो मैंने इस मामले पर बात करना बंद कर दिया और इस तरह मैं बच गया.

मैं अच्छी तरह जानता हूं कि अच्छी आत्माएं और बुरी राक्षसी आत्माएं दोनों होती हैं। "मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि आप यह पत्र किसी अच्छे मनोवैज्ञानिक को सौंपेंगे, तो वह आपको बताएगा कि मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं और यदि आप चाहते हैं कि मैं अपने अनुभव के बारे में विस्तार से लिखूं, तो मैं ख़ुशी से ऐसा करूंगा और भेज दूंगा। तुम्हें शपथ दिलाता हूँ, क्योंकि मैं सदैव इसे प्रकाशित करना चाहता था, परन्तु संसार के उपहास के भय से इसे टालता रहा हूँ।

"मैं एक अमेरिकी रोमन कैथोलिक हूं, और धार्मिक रूप से बहुत उदार हूं, और एक समय में अच्छी अंग्रेजी लिख सकता था, लेकिन इतने लंबे समय तक स्पेनिश अमेरिका में रहने के कारण मेरी अच्छी अंग्रेजी लिखने की आदत छूट गई है, इसलिए मैं जो कुछ भी लिखूंगा, वह शायद आपके पास होगा।" इसे फिर से लिखने के लिए.

"सचमुच आपका,
"कर्नल पी.पी.बी."

अध्याय XVII.

जुनून, तम्बाकू और शराब.

"कोलोन, मिशिगन, 27 जून, 1899।
"भाई रे:

“मैं आपको किसान रिले के साथ हुई बैठकों का विवरण देने का प्रयास करूंगा, जिसके बारे में मैंने आपको रेलवे ट्रेन में बताया था। लगभग चार साल पहले, मैं, मेरी पत्नी, बेटी और मिस्टर कॉर्नेल किसान रिले के घर पर एक बैठक में भाग लेने के लिए छत्तीस मील की दूरी तय करके गए थे। बैठक आधे घंटे से अधिक समय तक चली, रिले कैबिनेट में थी, तभी अचानक कैबिनेट से एक स्लेट पास हुई जिस पर कुछ इस तरह लिखा था: पर्दा उठाओ, और माध्यम बाहर निकालो; परिस्थितियों को बदलो, नहीं तो हम आज रात माध्यम को फिर से नियंत्रण में नहीं आने देंगे।

जॉन बेंटन.
“स्लेट श्रीमती रिले को सौंपी गई, जिन्होंने इसे पढ़ा, और फिर श्री बेंटन से कुछ मिनट और प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया। जल्द ही कैबिनेट से एक अलग आवाज आई, 'तुमने वादा किया था कि तुम आज रात दोबारा नहीं आओगे, शैतान।' फिर एक स्पष्ट हाथापाई हुई, जिसमें पर्दा हिंसक रूप से

हिल गया, और एक कैथोलिक पादरी के समान काली बहने वाली आस्तीन पहने एक व्यक्ति का हाथ, कैबिनेट से बहुत स्पष्ट रूप से बाहर निकला हुआ देखा गया।

ऐसा लग रहा था मानो घुसपैठिये को बहुत बुरी तरह से हिलाया जा रहा हो, पूरी तरह से पीटा जा रहा हो। एक क्षण बाद स्पष्ट रूप से कुछ कैबिनेट की दीवार के किनारे से टकराया, जैसे कि एक आदमी ने संघर्ष में दूसरे को उसके खिलाफ फेंक दिया हो। फिर पहले की तरह ही अनुरोध के साथ एक स्लेट सौंपी गई, और कुछ इस तरह, 'वह शापित पुजारी आज रात फिर से यहाँ है। श्रीमती रिले ने फिर कैबिनेट खोली, और माध्यम निकाला।

फिर मिस्टर रिले ने मुझसे स्लेट से पढ़ने का अनुरोध किया और कहा, 'मुझे डर है कि आज रात के लिए बस इतना ही; बूढ़ा जुनूनी पुजारी यदि संभव हो तो सत्र को खराब करने के लिए कृतसंकल्प है। "फिर मैंने मिस्टर रिले से कहा, 'आइए शर्तें बदलें।'" 'हम यह कैसे कर सकते हैं!' उसने पूछा। "मैंने कहा, 'चलो कॉर्नेल को कुछ खुशनुमा गाने गाने और ऑर्गन बजाने के लिए कहें (वह इसमें माहिर है)।

क्योंकि मुझे लगता है कि हमारे आत्मिक मित्र इन पुराने भजन धुनों से थक गए हैं, और मुझे विश्वास है कि यह इस अनियंत्रित पुजारी को दूर भगा देगा।' (तंबाकू और व्हिस्की बुरी आत्माओं को आकर्षित करते हैं। कुछ पुजारी, साथ ही कुछ आम लोग, अपने शरीर में रहते हुए भी शराब पीते हैं।) "मिस्टर रिले ने सोचा कि यह सब ठीक हो जाएगा, और जल्द ही वह कैबिनेट में वापस आ गए। हमारे पास मिस्टर कॉर्नेल थे गाने के लिए भीख माँगना, क्योंकि उसे लगा कि इससे गाने की पवित्रता का उल्लंघन होगा।

उसने अभी गाना शुरू ही किया था कि आत्माएं, उनमें से कई, कैबिनेट से बाहर आने लगीं। मिस्टर एबर पियर्स का बेटा अच्छे कपड़े पहनकर बाहर आया और उसने मेरी पत्नी से हाथ मिलाया, और उससे तब तक मजबूती से चिपका रहा जब तक कि वह उसके हाथ से पूरी तरह अलग नहीं हो गया। हम सभी उसके हाथ और कलाइयां स्पष्ट रूप से देख सकते थे, जबकि उसका बाकी शरीर अदृश्य था। उस घुसपैठिए, जुनूनी पुजारी से छुटकारा पाने के बाद हमने बहुत अच्छा समय बिताया।

इससे मुझे आश्चर्य होता है कि क्या आत्माएं, मनुष्यों की तरह, अभी भी झगड़ती हैं और एक-दूसरे को पीड़ा देती हैं! क्या वह सत्संग में विघ्न डाल

सकती है और उसे भंग कर सकती है! क्या वे मनुष्यों को परेशान, संक्रमित और घायल कर सकते हैं! पिछले पच्चीस वर्षों के अवलोकनों और अनुभवों के आधार पर यह मेरी स्पष्ट मान्यता है।

' बहुत सही मायने में तुम्हारा,
"जैसा। पोबोट्ज़्ट।"

इस सज्जन को तीस से अधिक वर्षों से व्यक्तिगत रूप से जानने के बाद, और श्री पियर्स के बेटे को भी जानने के बाद, जिसके बारे में वह बात करते हैं, मैं श्री प्राउट के बयानों की सच्चाई की पुष्टि कर सकता हूं, जो कि जगह बचाने के लिए बहुत कम कर दिया गया है। इन सत्रों में से एक में भाग लेने वाले एक श्रेष्ठ दिव्यदर्शी ने काले कानों की पोशाक पहने जुनूनी राक्षसों को देखा, जैसे कि उसने अक्सर संदिग्ध घरों, पूल-रूम, शहर के डांस हॉल, शराब सैलून और जुआरियों के रिसॉर्ट्स के आसपास देखा था।

ये सम्मोहित करने वाले, झूठ बोलने वाले, न्याय के लिए आरक्षित जुनूनी राक्षस हैं।

ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन,
10 दिसंबर, 1899.

चिकित्सक:

आपके कार्ड ने मुझे बुरी आत्माओं के साथ अपने अनुभव के बारे में बताने के लिए उकसाया। जब मैं छोटा था तो मुझे शराब पीने की आदत पड़ गई। यह मुझ पर तब तक हावी रहा जब तक यह मेरे और मेरे सहकर्मियों के लिए धरती पर नरक नहीं बन गया। मेरी पत्नी मुझसे भीख माँगती थी और एक बार तो मुझे छोड़ने की धमकी भी देती थी। मैं शराब पीने से खुद से नफरत करता था और वादा करता था कि मैं इसे छोड़ दूंगा, लेकिन एक हफ्ते तक शराब न पीने के बाद मैं फिर से नशे में आ जाता था।

मैं अपनी इच्छा पर काबू नहीं रख सका. “एक अध्यात्मवादी शिविर-बैठक में भाग लेने के दौरान, मेरी मुलाकात एक दिव्यदर्शी से हुई जिसने मुझे बताया कि मैं एक संवेदनशील व्यक्ति था और एक दुष्ट आत्मा से प्रभावित था जो मेरे शरीर के माध्यम से अपनी भूख और तुच्छ इच्छाओं

को संतुष्ट कर रही थी। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कहा कि इस आदत पर काबू पाने की मेरी सच्ची इच्छा ने अच्छी आत्माओं को भी मेरी ओर आकर्षित किया है जो मुझे सही तरीके से प्रभावित करने की कोशिश कर रही हैं।

उन्होंने जोर देकर कहा कि मैं विकास के लिए बैठूं. जब मैं घर गया और भगवान और अच्छे स्वर्गदूतों से मदद मांगी, तो बुरे स्वर्गदूतों को जाना पड़ा। मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा था और कुछ ही समय में हमें कई अद्भुत अभिव्यक्तियाँ प्राप्त हुईं और बाद में मैं उस अविकसित सांसारिक आत्मा से अच्छी तरह परिचित हो गया जिसने मुझे बुरे काम करने के लिए प्रेरित किया और उन कुछ उच्च आत्माओं से भी परिचित हुआ जो मुझे इससे बाहर निकालने की कोशिश कर रही थीं। जुनूनी प्रभाव.

यह अच्छी और बुरी आत्माओं के बीच एक कठिन प्रतियोगिता थी - एक बहुत बड़ी लड़ाई, ऐसा कहा जा सकता है। अच्छी आत्माएँ मुझे नियंत्रित कर रही होंगी और सत्य और ज्ञान की उत्कृष्ट अभिव्यक्तियाँ दे रही होंगी, जब अचानक मुझे अन्य प्रभावों का रोमांच महसूस होगा जो कम और कम सकारात्मक होंगे और अच्छी आत्माएँ दूर चली जाएंगी। यह दुष्ट आत्मा मुझे ठट्ठों में उड़ाती और ठट्ठों में उड़ाती, और मैं उस से वैसे ही विनती करता, जैसे किसी दुष्ट मनुष्य से करता हूँ।

उसने कहा कि उसने मुझे पकड़ लिया है और वह मेरे साथ जो चाहे करेगा। मैं चलता रहा और आख़िरकार मैंने उससे छुटकारा पा लिया। जाने से पहले उन्होंने कहा कि चूंकि मैंने उन्हें चीजों को अलग तरह से देखना सिखाया है, इसलिए वह अब मुझे परेशान नहीं करेंगे। यह लगभग पांच साल पहले की बात है और हमने उनसे केवल एक बार बात की है। "जैसे ही इसका प्रभाव मुझ पर से हट गया, मुझे शराब की उस भयानक प्यास पर काबू पाने में कोई परेशानी नहीं हुई, और शराब की एक बूंद भी पीते हुए मुझे लगभग पांच साल हो गए।

मैं चाहता हूं कि हर माध्यम और दूसरी दुनिया की आत्माओं से प्रभावित हर व्यक्ति यह देखे कि तंबाकू, शराब के सेवन और अन्य बुरी आदतों का गुलाम बनना कितना बड़ा नुकसान है। ये इन बुरी आत्माओं को आकर्षित करने में बहुत मदद करते हैं। "वास्तव में आपका," जे. ई. वॉकर।" (मैं मिस्टर वॉकर को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। वह अब एक न्यायप्रिय, ईमानदार और सम्मानित व्यक्ति हैं। पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा था तो मैंने उनसे बहुत प्यार किया था।

(बैटल क्रीक में अध्यात्मवादियों के मंच पर उन्होंने बहुत ही प्रेरक व्याख्यान दिया था, कई महीने हो गए हैं।) उपरोक्त के संबंध में, विचारशील अध्यात्मवादियों और विशेष रूप से मध्यम संवेदनशीलता वाले लोगों के लिए यह कहना उचित है कि जुनूनी या कभी भी जुनूनी लोगों के ये पत्र न केवल वास्तविक हैं - लेखकों के हस्ताक्षरों के साथ वास्तविक, बल्कि वे यह भी अनुरोध करते हैं कि केवल उनके प्रारंभिक अक्षरों का उपयोग पूर्ण या आंशिक रूप से किया जाए।

पिछले पांच वर्षों में मुझे सैकड़ों पत्र लिखे गए हैं, और शायद उनमें से सबसे दिलचस्प, यदि स्वार्थ, गुप्त भ्रष्टता और जागरूक जीवन की मनोवैज्ञानिक पापपूर्णता के अदृश्य पक्ष से दिलचस्प है, तो मैंने इसके महत्व के कारण प्रकाशित नहीं किया है। "सामाजिक जीवन के उच्च मंडलों" में चलना। अधिकांश पार्टियों ने अपना नाम, अपने नाम के पहले अक्षर, जिस गांव या कस्बे में वे रहते थे, उसका जिक्र करने से पूरी तरह इनकार कर दिया।

इनमें से कई लोगों ने मुझे पत्र लिखकर उन्हें या उनके परिवार के किसी सदस्य को अवांछित, अलौकिक नियंत्रण प्रभाव से मुक्त करने में मदद मांगी।

(जे.एम.पी.) "बेनिंगटन, एन.एच.,
12 नवंबर, 1899*

प्रिय महोदय:

चूँकि मुझे अविकसित या बुरी आत्माओं के साथ कुछ अनुभव है, इसलिए मैं संक्षेप में अपना मामला बताऊंगा;

पाँच साल पहले इस पतझड़ में मुझे पता चला कि मैं एक दिव्यदर्शी हूँ, और बहुत तेजी से एक लेखन माध्यम में विकसित हुआ, पहले स्वचालित, फिर प्रेरणादायक, और अंततः, मैं एक दिव्यदर्शी बन गया। जल्द ही, मेरे पास अचूक परीक्षण थे, और मुझे पता था कि मैं रिश्तेदारों और बहुत प्यारे दोस्तों के साथ संवाद कर रहा था।

अपने पूरे जीवन में एक महान संशयवादी होने के कारण, यह इतना अद्भुत और आश्चर्यजनक था कि मैं पर्याप्त नहीं पा सका, और अपना अधिकांश समय लिखने में बिताया। अनजाने में मैंने सभी प्रकार की आत्माओं के लिए प्रवेश का द्वार खोल दिया।

और स्वार्थी एवं सांसारिक होने के कारण वे मेरे सभी पहचाने हुए मित्रों को बाहर कर मुझ पर नियंत्रण करते रहे। "अंत में, दुखद बात यह थी कि मुझे आध्यात्मिक बुद्धि से सभी संबंध छोड़ना पड़ा, और जब उन्हें पता चला कि मैं उनके लिए नहीं लिखूंगा, तो उन्होंने बातचीत शुरू कर दी, और कई हफ्तों तक वे दिन-रात मुझसे बात करते रहे।" तुम्हें परेशान कर रहा हूं. जितना अधिक उन्हें पता चला कि मैं परेशान हूं, उतना ही वे ऐसा करते रहे और अंततः यह असहनीय हो गया।

इसे रोकने के लिए मुझे अपनी पूरी इच्छाशक्ति लगानी पड़ी और कुछ समय बाद मैं सफल हो गया। उन्होंने मुझे धमकी दी कि अगर मैंने उनसे बात नहीं की तो वे मुझे मार डालेंगे या मुझे पागल कर देंगे। फिर मैंने सोचा कि अब यह देखने का समय आ गया है कि कौन जीतेगा। मेरी इच्छाशक्ति पूरी तरह जागृत हो चुकी थी. मैं उनकी बात नहीं सुनती थी, और जब सिलाई या गाड़ी चलाती थी, तो मैं अकेले में भजन और कविताएँ दोहराती थी, और जब मेज पर होती थी, तो मुझे सारी बातें करने की अनुमति होती थी।

मैं रात को सोने के लिए खुद पढ़ता था. वे मुझे रात में कई बार जगाते थे, लेकिन मेरे पास हमेशा एक किताब होती थी, और मैं उसे पढ़कर दोबारा सो जाता था। अगर मैं एक पल के लिए भी अपनी सतर्कता कम कर दूं, तो वे अपनी चिरस्थायी बकवास और बकवास शुरू करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इस गंभीर, सकारात्मक और कठोर लड़ाई को शुरू करने के लगभग दो सप्ताह बाद मैं उनसे पूरी तरह छुटकारा पा चुका था। तब से मुझे उनकी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता.

"साल में एक या दो बार मैं लिखकर आत्माओं से संवाद करने की कोशिश करता हूं, लेकिन जाहिर तौर पर वही बुरे प्रभाव, वही राक्षस हमेशा आते हैं, और मेरे कुछ दोस्तों का रूप धारण करने की कोशिश करते हैं, लेकिन मैं आसानी से अंतर पहचान सकता हूं। मैंने अपनी प्रतिभा का उपयोग करने की सारी आशा छोड़ दी है, क्योंकि ये दुष्ट, आविष्ट आत्माएँ मुझे ऐसा करने की अनुमति नहीं देंगी।

मैं आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करूंगा कि इस संबंध में मेरा नाम प्रकाशित न करें, क्योंकि मैं इसे लेकर बहुत संवेदनशील हूं। मैंने एक बार एक अध्यात्मवादी समाचार पत्र में एक लेख पढ़ा था जिसमें कहा गया था कि 'जैसा वैसा आकर्षित करता है' मैं इस पर विश्वास नहीं करता। निःसंदेह, मेरे मामले में यह सच नहीं है।

यह अधिक सच है कि 'मूर्ख लोग वहां भागते हैं जहां देवदूत जाने से डरते हैं।' मैं अब यह जुनूनी अध्यात्मवाद नहीं चाहता।

आपका,
"एन। एच।"
"अरोड़ा, III., 7 नवंबर, 1899।

"प्रिय महोदय:

“मैं एक माध्यम (प्रेरणा) हूं, लेकिन मेरे माध्यम में इतनी परेशानी है कि मैं इसके साथ कुछ नहीं कर पा रहा हूं। रूहों के बीच मुझे लेकर लगातार लड़ाई चलती रहती है. पिछले ढाई वर्षों से मुझ पर एक सकारात्मक आत्मा ने चुंबकीय रूप से कब्ज़ा कर रखा है जो मुझे 'दक्ष' बनाने के लिए कृतसंकल्प है। मैं उसे तब से जानता था जब वह धरती पर था। पहचान में कोई गलती नहीं है. वह एक मध्यम, शिक्षित, आध्यात्मिकता के विषय में अच्छी तरह से प्रबुद्ध था, लेकिन वह अन्य सभी आत्माओं को पूरी तरह से बाहर कर मुझ पर तानाशाही शासन करना चाहता है।

मैं उनके सांसारिक जीवन के दौरान उनका माध्यम बनने के बारे में कुछ नहीं जानता था। मेरा उनसे बहुत कम परिचय था. एक आत्मा तुर्क भी मुझे 'ओरिएंटल निपुण' बनाना चाहता है। वह लगभग तीन वर्षों से मेरे साथ है, और मुझे हाल ही में पता चला कि ये आत्माएँ मुझे पूर्वी निपुणता सिखाना चाहती थीं, लेकिन मैंने बिल्कुल मना कर दिया। मेरी कोई इच्छा नहीं है, न ही मैं निपुण बनने के बारे में सोच सकता हूँ। मेरा व्यक्तित्व कायम रहना चाहिए और रहेगा।

कौशल के बारे में मेरे पास जो थोड़ा ज्ञान है वह पर्याप्त है। फिर भी आत्मा के जुनून साथियों ने मुझे मजबूती से पकड़ रखा है। मैंने उसे छोड़ने के लिए हर संभव तरीके का इस्तेमाल किया है, लेकिन मैं चुंबकीय रूप से इतना मजबूत नहीं हूं कि उसका नियंत्रण तोड़ सकूं और उसे दूर भगा सकूं। उसे एक दूसरी आत्मा से मानसिक मदद मिलती है, जो यह भी चाहती है कि वह मुझे छोड़ दे।

मैं एक निपुण व्यक्ति हूं. मेरे पास अदम्य इच्छाशक्ति है, लेकिन कमजोर चुंबकत्व है। मुझे बहुत आसानी से नियंत्रित किया जाता है और मैं काफी हद तक इन तानाशाही सकारात्मक आत्माओं की दया पर निर्भर हूं। मैंने दो मजबूत आत्माओं से पीड़ा झेली है, जो कभी-कभी उनकी जंगली, मूर्खतापूर्ण शिक्षाओं के आगे झुकने के बजाय मौत से भी बदतर होती है। मुझे लगता है कि मैं सुरक्षित रूप से कह सकता हूं कि किसी भी माध्यम ने सच्ची आध्यात्मिकता की भलाई के लिए मुझसे ज्यादा कठिन या बहादुरी से कभी संघर्ष नहीं किया है।

लेकिन मैंने लड़ना लगभग छोड़ ही दिया है. मैंने हमेशा कहा है कि यदि मैं एक ईमानदार, सच्चा माध्यम नहीं बन सकता, तो मैं एक माध्यम भी नहीं बन पाऊंगा। मुझे पकड़कर रखने वाली मजबूत आत्माओं में से एक कई सीधे झूठ बोलती है। तीन अच्छी सैद्धांतिक आत्माएँ हैं जो मेरी रक्षा करने का प्रयास करती हैं, और बाकियों को दूर भगा देती हैं, लेकिन वे हमेशा चुंबकीय रूप से पर्याप्त मजबूत नहीं होती हैं। ऐसे कई अच्छे आत्मा वाले मित्र हैं जो मेरी मदद करना चाहते हैं और मेरे मार्गदर्शक बनना चाहते हैं, लेकिन वे उन दो आत्माओं से डरते हैं जो मुझे वश में करने के लिए दृढ़ हैं।

ढाई साल पहले, जब मेरी मीडियमशिप शुरू हुई, तो मुझे मीडियमशिप के नियमों के बारे में कुछ भी नहीं पता था। मैं यह भी नहीं जानता था कि बुरी आत्माएँ संवाद कर सकती हैं। मैं तो सोचता था कि बुरी आत्माओं को कहीं न कहीं वश में रखा जाता है। और मुझे नहीं पता था कि जुनून जैसी कोई चीज़ होती है, क्योंकि मैंने यह शब्द कभी नहीं सुना था। मैं विकास के लिए कभी नहीं बैठा, और मैंने जो कदम उठाए हैं वे वस्तुतः मुझ पर थोपे गए हैं।

बुद्धिमान आत्माएँ मुझे बताती हैं कि मैं मीडियमशिप के लगभग सभी चरणों को विकसित कर सकता हूँ। एक वर्ष पहले मैं दिव्य दृष्टि से देख सकता था, लेकिन दो शक्तिशाली आत्माएँ - राक्षस, मैं उन्हें क्या कहूँ - मेरे आध्यात्मिक मित्रों को अब मुझे वह सुंदर दृश्य दिखाने की अनुमति नहीं

देतीं। मैं आत्मा का प्रकाश देखता हूं, आत्मा के स्तर पर जीवन के कई रूप देखता हूं, लेकिन मुझे नहीं पता कि उनका क्या मतलब है।

मुझे छोटे-छोटे बादल दिखाई देते हैं, हल्के और गहरे दोनों। मेरा एक अच्छा आत्मिक मित्र मेज पर थपकी दे सकता है, जार को छू सकता है, इत्यादि, ताकि मैं स्पष्ट रूप से सुन सकूं। उनका कहना है कि वह मुझे मुफ्त आवाज और मुफ्त संगीत दे सकते हैं, लेकिन उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं है। मुझे अपने अच्छे आत्मा मित्रों से कई उत्साहजनक और उत्कृष्ट संदेश मिले हैं, और यदि राक्षस आत्माएं जो मुझे पकड़ कर रखती हैं क्योंकि वे मुझे पूर्ण बनाने के लिए दृढ़ हैं, मुझे छोड़ देती हैं, तो मैं अपना माध्यम जारी रख सकता हूं और इस तरह दुनिया में आ सकता हूं। मैं बहुत अच्छा कर सकता हूं.

मैं अपनी व्यक्तिगत पहचान को सुन्न या नष्ट नहीं होने दूँगा। मैं माध्यमों को पढ़ाना और विकसित करना चाहूंगा, लेकिन वर्तमान प्रतिकूल परिस्थितियों में कभी कोई प्रयास नहीं करूंगा। मेरे मीडियमशिप के पहले डेढ़ साल के दौरान, मुझे एक अविकसित सूक्ष्म या पृथ्वी से जुड़ी राक्षस-आत्मा ने बंदी बना लिया था, लेकिन इस गर्मी में मुझे मुक्त कर दिया गया। मैं कभी भी पूर्ण होने पर समझौता नहीं करूंगा।

एक भारतीय है जो मेरे साथ रहता है, लेकिन कभी-कभार ही बोल पाता है। वह एक महान और खूबसूरत आत्मा हैं. ईश्वर से प्रेम करता है और कानून का पालन करता है, और यदि उसे मुझ पर प्रभाव डालने की अनुमति दी जा सकती है, तो मैं आगे बढ़ सकता हूं और प्रगति कर सकता हूं, लेकिन जब तक वह समय नहीं आता (यदि कभी आता है), तो मैं अपने माध्यम से आगे बढ़ने से इनकार करता हूं।

उपस्थित,
श्रीमती जे. टी. टोरंटो, ओंटारियो,
6 नवंबर, 1899.

डॉ. पीबल्स:

बेहतर जीवन में आपके कार्ड का जिक्र करते हुए मैं आपको जुनून के कुछ उदाहरण दूंगा। मेरी एक बहन है, एक ट्रान्स माध्यम, कोई सार्वजनिक

माध्यम नहीं, वास्तव में, केवल उसके सबसे करीबी दोस्तों ने ही उसे ट्रान्स अवस्था में देखा है। दो सर्दियों पहले वह और मैं एक सड़क कार में थे जब वह अचानक उछल पड़ी और कार रोके बिना उतरने की कोशिश की, लेकिन कंडक्टर और मैंने उसे पकड़ लिया और कार रुकने तक उसे पकड़े रखा।

कार में बैठे सभी लोगों को लगा कि वह नशे में है, लेकिन मुझे पता था कि वह नशे में था और उस पर जुनून सवार था। जैसे ही हम फुटपाथ पर पहुँचे, मैंने उस आत्मा से मुझे घर जाने की अनुमति देने की प्रार्थना की, लेकिन कुछ समय के लिए यह सब व्यर्थ था। आख़िरकार मैंने उस शराबी आत्मा को अपने साथ घर चलने के लिए मना लिया। जब हम मेरे घर पहुँचे, तो उसने कहा कि यह पहली बार है कि उसने किसी को वश में किया है, या कभी वहाँ गया है। मुझे डर था कि कहीं वह मेरी बहन को घायल न कर दे या उस पर ज़्यादा ज़ोर न डाल दे, और मैंने खुद पर काबू रखते हुए उसे बिस्तर पर लेटने के लिए मना लिया।

इस पूरे समय, मेरी बहन, हर तरह से, नशे में थी, मेरे लिए अभद्र और बहुत अश्लील भाषा का प्रयोग कर रही थी। उसके वश में होकर वह वास्तव में हर तरह से बहुत अशिष्ट और अशोभनीय व्यवहार कर रही थी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उससे कैसे छुटकारा पाया जाए, और मैं उदास होकर बिस्तर के पास बैठ गया और सोचने लगा कि मेरी बहन फिर से कब होश में आएगी।

मैंने उसे हटाने के लिए वे सभी तरीके आज़माए थे जिनके बारे में मैंने सुना था, जब लगभग दो बजे, मैंने अपने पति से उसे एक हाथ से मजबूती से पकड़ने के लिए कहा, और मैंने दूसरा हाथ लिया और उसके चारों ओर एक घेरा बना लिया। और तुरंत वह फिर से अपने होश में आ गई, लेकिन ओह, वह इतनी थकी हुई, घबराई हुई और थकी हुई थी कि हमने उसे सुला दिया, जो अगले दिन बारह बजे तक चला, जब वह उठी, लेकिन उसे इसके बारे में कुछ भी याद नहीं था। ऐसा नहीं था, इसलिए हमने उसे कभी नहीं बताया।

जब वह बेहोश होती है तो मरने वालों का हाल कर लेती है। यह देखना कभी-कभी बहुत दर्दनाक होता है। ज्यादातर मामलों में उस पर कब्ज़ा करने वाली आत्माएँ रिश्तेदार और दोस्त होती हैं, और वे जितना संभव हो उतना अच्छा करने की कोशिश करती हैं। लेकिन अजीब, दुष्ट, जुनूनी राक्षसों द्वारा उसके साथ पांच बार दुर्व्यवहार किया गया है, जिनमें से एक मामले का ऊपर उल्लेख किया गया है, हालांकि, सभी अलग-अलग हैं।

इन जुनूनी स्थितियों और धमकियों के कारण, वह खुद को किसी भी तरह के बहकावे में नहीं आने देगी। वह हर आत्मा के आने का विरोध करती है, और इसलिए दुनिया को मेरे द्वारा ज्ञात सबसे अच्छे ट्रान्स माध्यमों में से एक के बिना ही काम करना पड़ता है।

'भवदीय,
"इडा ई.सी."
“विक्टोरिया, बी. सी., 24 अक्टूबर 1900.

"प्रिय महोदय:

“लगभग सात महीने से मुझे एक दुखद और भ्रमित करने वाला अनुभव हो रहा है। मैं ईमानदारी से और उत्सुकता से आशा और विश्वास करता हूं कि आप अपनी सुविधानुसार जल्द से जल्द इस मामले पर गंभीरता और ईमानदारी से विचार करेंगे। लगभग एक साल पहले मैंने अध्यात्मवाद की जांच शुरू की, और इसके दर्शन द्वारा सिखाए गए जीवन में गहरी दिलचस्पी हो गई। मैंने इसके दर्शन के बारे में बहुत कुछ पढ़ा, लेकिन केवल कुछ ही बार घटनाओं को देखा।

पिछले मई के शुरुआती दिनों में, मुझे वह मिला जिसे मैं स्वचालित लेखन मानता था, और आध्यात्मिक दुनिया से आवाज़ें सुनीं (जैसा कि मैं मानता था)। यह लेखन मेरी दिवंगत पत्नी के लेखन से काफी मिलता-जुलता था, लेकिन लगभग बिना किसी अपवाद के, यह बेहद निंदनीय और अश्लील था। सबसे पहले मुझे लगा कि मेरे चारों ओर बहुत-सी आवाजें हैं, बिल्कुल धीमी, फिर भी अलग-अलग, मुझसे अलग-अलग दूरी पर। ये परिचितों की आवाजें जैसी थीं (उनके नाम ऐसे बताए गए थे मानो वे बातचीत कर रहे हों), और बातचीत बेहद अश्लील प्रकृति की थी।

थोड़ी देर बाद, मुझे एहसास हुआ कि यह सिर्फ एक ध्वनि थी, और तब से मेरा निरंतर अनुभव उस धारणा की पुष्टि करता है। मैं इसके बारे में सकारात्मक हो गया हूं और मेरा मानना है कि यह वही आवाज है। जब से मैंने पहली बार इसे बोलते हुए सुना है, तब से लेकर आज तक, कुछ अपवादों को छोड़कर, मैंने जघन्य निन्दा और अश्लीलता के अलावा कुछ नहीं सुना है, जिसके साथ लगातार एक समान चरित्र के मानसिक प्रभाव या प्रतिबिंब मिलते रहते हैं।

अभिनेता। कुछ हफ़्तों तक उन्होंने ईश्वर का रूप धारण किया और मुझे यह समझाने का अथक प्रयास किया कि मेरी आत्मा ही ईश्वर है; वह या वह प्रायश्चित के बाद से मनुष्य में निवास कर रहा था, एक निश्चित जाति के माध्यम से एक आत्मा के रूप में नीचे आ रहा था; कि मैं उस दौड़ में अंतिम था, और मुझे भगवान बनना था और 1 मार्च 1901 को उसकी शक्ति प्राप्त करनी थी; और उसे एक हजार वर्ष तक बारी-बारी से पृथ्वी और स्वर्ग पर शासन करना था, और मेरी मृत पत्नी को राज्यों की रानी बनना था और मेरे साथ रहना था।

बाद में, उसने बोलकर या आवाज़ देकर ईश्वर और मसीह दोनों का रूप धारण कर लिया, मानो मसीह स्वर्ग में मेरी आत्मा से या मेरे भीतर के ईश्वर से बात कर रहा हो। और फिर भी, बातचीत अधिकतर बेहद अश्लील थी। वह मेरे सिर में झुनझुनी पैदा कर सकता है, जो वह आमतौर पर 'देखो' शब्द को दोहराकर करता है, और जो लगभग लगातार मौजूद रहता है। वह अपनी इच्छानुसार स्पष्ट और बुद्धिमानी से बात कर सकता है और उन चीज़ों के बारे में भी जिनके बारे में मैं नहीं सोच रहा हूँ; वह अपनी इच्छा से बोलना बंद कर सकता है, लेकिन ऐसा करने से बिल्कुल भी इनकार कर सकता है।

पहली बार आवाज सुनने के बाद से (मई की शुरुआत में) मैंने अपना अधिकांश समय एकांत में बिताया है, यानी, मैंने बहुत कम और कोई बातचीत नहीं की है, बहुत कम या बिल्कुल नहीं पढ़ा है, और यह आवाज लगभग लगातार मेरे दिमाग में रहती है या जाहिर तौर पर मेरे चारों ओर गूंजती रहती है। वह मेरे जीवन में वह सब कुछ जानता है जो मुझे याद है, और वह बार-बार उनका और दोस्तों का उल्लेख करता है, शब्दों में और मानसिक दृष्टि या प्रभाव से, केवल मुझे चिढ़ाने और परेशान करने के लिए।

उनकी बातचीत आम तौर पर बेहद अश्लील और अश्लील होती है और उत्तेजित करने के लिए बोली जाती है। पढ़ते समय वह मेरे साथ पढ़ता है। लिखते, सोचते या बातचीत करते समय, वह मुझे एक सीमा तक भ्रमित करने की क्षमता रखता है - अगर वह चाहे तो मेरे पढ़ते या लिखते समय पढ़ना या बोलना बंद कर सकता है, लेकिन अभी तक उसने ऐसा करने से पूरी तरह इनकार नहीं किया है। मुझे लगता है कि मेरे पास दो व्यक्तित्व हैं।

उसमें मेरे स्वभाव और भावनाओं को गहराई से प्रभावित करने की शक्ति है, और वह भी उन तरीकों से जिन्हें मैं समझ नहीं सकता। उसके पास मेरी कमर के ठीक नीचे हल्का सा दर्द पैदा करने की शक्ति है, इससे पहले कि वह मेरी जान खा कर मुझे मारने की धमकी दे। उसके पास मेरी सांस लेने में थोड़ी सी भी रुकावट डालने की शक्ति है; इसमें चेहरे पर ऐसा प्रभाव छोड़ने की ताकत भी है, यह सिर्फ मैं ही जानता हूं।' वह एक जुनूनी शैतान है. "वह अलग तरह से बोलता और गाता है।

वह बुद्धिमान है, लेकिन दुष्ट है। मैं उसकी आवाज लगभग लगातार सुनता हूं, लेकिन इसका मुझ पर रात में अधिक प्रभाव पड़ता है, जब मैं आमतौर पर थकान के कारण सो जाता हूं। यह मेरे पूरे शरीर में ऐंठन पैदा कर सकता है और अक्सर होता भी है। वह मुझसे कहता है कि वह नहीं जानता कि वह यह सब कैसे करता है, फिर भी वह जानता है कि वह उनमें से कई या सभी का कारण बनता है; लेकिन उन्होंने बात करना बंद करने से बिल्कुल इनकार कर दिया, जो मुझे लगता है कि पूरी समस्या का समाधान हो सकता है।

जब से मैंने पहली बार उसकी आवाज़ सुनी, तब से आज तक, मैंने उसे आध्यात्मिक रूप से बातचीत करने के लिए प्रेरित करने और तब तक बातचीत न करने के लिए बहुत प्रयास किए हैं जब तक कि यह उसके और मेरे लिए फायदेमंद न हो। . लेकिन मेरी तमाम मिन्नतों के बावजूद, वह मुझे दिन-रात परेशान करता रहता है, और कुछ भी उचित या सही काम करने से इनकार करता है। वह आमतौर पर काम करने से पहले उसे करने की धमकी देता है।

आपके सम्मान से,
"सी.डब्ल्यू.डी."

अध्याय XVIII.

रोमन कैथोलिक जुनून और आत्माओं के झूठे नाम।

शिकागो, इलिनोइस, 25 मई, 1901।

"प्रिय महोदय और भाई:

आपने मुझसे यह बताने के लिए कहा है कि मैं अध्यात्मवाद में अपने चालीस वर्षों और उससे भी अधिक के व्यापक अनुभव से आत्माओं और आत्मा-जीवन के बारे में क्या जानता हूं। जवाब में मैं कहूंगा कि मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि अच्छी और बुरी आत्माएं मौजूद हैं, क्योंकि मैंने उन्हें अपनी आंखों से देखा है, और अपने कानों से मैंने उनकी आवाज सुनी है, और कई बार उनसे आमने-सामने बात की है।

कुछ लोग पूछ सकते हैं, 'आत्माएँ कैसी दिखती हैं?' मैं उत्तर देता हूं, बिल्कुल इंसानों की तरह; कुछ ने विभिन्न प्रकार के कपड़े पहने हुए हैं, कुछ नग्न हैं। कुछ सुनहरे दिन की तरह नग्न, पारदर्शी और उज्ज्वल हैं, - अन्य रात की तरह अपारदर्शी और काले हैं। हालाँकि, व्यक्तिगत रूप से, आप हमेशा अच्छी और बुरी आत्माओं के बीच सटीक निर्णय नहीं कर सकते। केवल उनकी आभा और विशिष्ट कार्यों से ही आप उनका आकलन कर सकते हैं।

जो आत्माएँ दिव्य इरादे से आपके सामने आती हैं वे अच्छी होती हैं; जो आत्माएं स्वार्थी, बुरे इरादों के साथ प्रकट होती हैं वे बुरी होती हैं। "दुष्ट आत्माएँ झूठे नाम धारण करेंगी, झूठ बोलेंगी और विश्वासघात करेंगी। अच्छी आत्माएँ कभी नहीं! शुद्ध मन वाली आत्माएं उन सभी चीजों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो अच्छी, सच्ची, सुंदर, नैतिक और आध्यात्मिक

हैं। प्रेम और प्रकाश के देवदूत हमेशा मानवता के साथ परोपकार का व्यवहार करते हैं, जबकि बुरी आत्माओं का आचरण हमेशा धूर्त, स्वार्थी और दुर्भावनापूर्ण होता है।

दुष्ट आत्माएँ नैतिक रूप से बुरी चीज़ों का मिश्रण हैं। वे क्रूर और निर्दयी हैं. वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, और चोर, झूठ बोलने वाली आत्माएं अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमें सम्मोहित करेंगी, सुझाव देंगी, प्रभावित करेंगी, मूर्ख बनाएंगी, जुनूनी बनाएंगी और अन्यथा हमें दुर्भाग्य की ओर ले जाएंगी। लेगा। उसने कई बार मेरे साथ ऐसा किया है.'

पिछले चालीस वर्षों में वे मेरे सबसे बड़े और एकमात्र वास्तविक दुश्मन रहे हैं, और अक्सर मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि जीवन जीने लायक नहीं है। मैं जानता हूं कि जुनून एक सच्चाई है और मेरे लिए सबसे दुखद भी। "पांच साल पहले उन्होंने मुझे बुरी तरह गिरा दिया था, और पहले ही धमकी दे चुके थे कि वे भी ऐसा ही करने जा रहे हैं। इस गिरावट से मुझे काफी शारीरिक क्षति हुई, मुझे व्यवसाय से बाहर होना पड़ा और मुझे लगभग एक वर्ष तक बिस्तर पर पड़ा रहना पड़ा। मैं अभी तक पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ हूं.

आत्माएं बीमार कर सकती हैं, और ठीक भी कर सकती हैं। एक सप्ताह बाद, जब मैं दर्द से कराहते हुए बिस्तर पर लेटा था, मेरी मुलाकात साफ चेहरे वाले और पादरी की पोशाक पहने तीन आध्यात्मिक लोगों से हुई। वह मेरे सामने मेरे बिस्तर के नीचे खड़ा था और उसकी नज़र मुझ पर टिकी हुई थी। वे उतने ही वास्तविक थे जितने किसी भी नश्वर प्राणी को मैंने कभी देखा हो। मेरे बायीं ओर निकटतम व्यक्ति विजयी होकर चिल्लाया, 'हा, हा! हमने तुमसे कहा था कि हम तुम्हें ठीक कर देंगे!'

'हाँ,' मैंने उत्तर दिया, 'लेकिन सज्जनों, मैंने ऐसा क्या किया है कि आप मुझे इतना कष्ट दे रहे हैं! मुझे बताओ, और अगर मैं इसका प्रायश्चित कर सकता हूं, तो मैं करूंगा।' 'उनका उत्तर था, 'अभी आप इसका प्रायश्चित कर रहे हैं, और पिछले चालीस वर्षों में आपने इसका प्रायश्चित बहुत अच्छे से किया है। जब आप युवा थे और अपने जीवन के चरम पर थे, प्रोटेस्टेंटिज़्म के उत्साह से भरे हुए थे, तो आपने एकमात्र सच्चे चर्च - ईसाई धर्म के पुराने अद्वितीय नेता और अनुग्रह और शाश्वत गौरव का एकमात्र मार्ग - का कड़ा विरोध किया था। आपने कई अनुयायियों को आकर्षित किया और बदले में इन लोगों ने भी कई लोगों को आकर्षित किया।

जिनमें से कुछ अब यहां आध्यात्मिक जीवन में हैं - लेकिन हम नहीं हैं। वे अपने परिवार के पूर्वजों की बड़ी असुविधा के लिए, अन्य तीर्थस्थलों पर पूजा करते हैं। आध्यात्मिक जीवन में, मानव जीवन की तरह, कई संप्रदाय और कई संगठन हैं, लेकिन हम पवित्र मदर चर्च से संबंधित हैं और किसी भी धार्मिक समाज या किसी ऐसे व्यक्ति से बहुत ईर्ष्या करते हैं जो हमारे पवित्र क्षेत्र पर आक्रमण करता है, और हमारे अनुयायियों के विश्वास को कमजोर करता है।

चर्च के हमारे सबसे दूर के पूर्वज अपने सभी वंशजों और चर्च में पैदा हुए सभी लोगों को अपने साथ रखना चाहते हैं, और चर्च में बाधा डालने या विरोध करने वाले सभी लोगों के खिलाफ हमेशा एक निरंतर युद्ध छेड़ा जाता है। उन सभी धर्मत्यागी पुजारियों और बिशपों के सामने सांसारिक जीवन में हमारी पीड़ा को देखें जो हमसे अलग हो गए हैं। हम उनके प्रति क्रूर और निर्दयी हैं. लेकिन, जैसा कि आप अक्सर कहते हैं, आप कहते हैं कि "मदर चर्च ईसाई नहीं है, बल्कि बुतपरस्त है।"

शायद आप, एक आम आदमी होने के बावजूद, सोच सकते हैं कि आप मदर चर्च की शुरुआत से ही हमारे पवित्र पुरोहिताई के बारे में अधिक जानते हैं। वे हमें शिक्षित करते हैं, वे हमारे लिए सोचते हैं, और हमें बताते हैं कि हम ईसाई हैं; हम विश्वास करते हैं और संतुष्ट हैं। परन्तु मुद्दा यह है: चालीस वर्षों से हम तुम्हारा पीछा कर रहे हैं और तुम्हारे प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं, और तुम यह जानते थे, लेकिन यह नहीं जानते थे कि क्यों, और फिर भी तुमने गुप्त रूप से हमें अपने सभी दुर्भाग्य के लिए दोषी ठहराया। जिम्मेदार ठहराया।

आपकी ख़ुशी को ख़त्म करने के लिए, हम अक्सर आपको बीमार बनाते हैं और अस्थायी रूप से आपकी ऊर्जा छीन लेते हैं। अक्सर, जब आप नींद में लिपटे होते थे, तो हम आपके सपनों में प्रवेश करते थे, आपको तरह-तरह के संकेत देते थे कि कैसे अटकलें लगाई जाएं, लेकिन केवल आपको बर्बाद करने के लिए। हमने आपकी आपूर्ति में कटौती करने के लिए आपको एक से अधिक बार दिवालिया बनाया, और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि हमें ऐसा करने के लिए हमारी मातृ चर्च की सरकार से सीधे आदेश प्राप्त हुए थे।

हालाँकि, आपको हमारे धर्म में परिवर्तित करने के उद्देश्य से नहीं, क्योंकि यह असंभव होगा, अब, इसके अलावा, यदि हम कर सकते तो हम आपको

नहीं चाहेंगे, क्योंकि हमारे साथ आप कभी भी एक परेशानी भरा, विधर्मी तत्व नहीं बन सकते। हमारा अनुशासन, - आपका अनुसरण - आपको जीवन का एक महत्वपूर्ण सबक सिखाने के लिए था, अर्थात्, अपने काम से काम रखना और मदर चर्च और उसके संचारकों को अकेला छोड़ देना। "'हम जानते हैं कि आपके प्रति हमारा व्यवहार काफी कठोर रहा है, लेकिन हमारे चर्च के दृष्टिकोण से यह अच्छा था। आपने इसे अच्छी तरह से सहन किया, और अब आपके साथ हमारा मिशनरी कार्य समाप्त हो गया है।

यह आपके विरुद्ध हमारा अंतिम कारनामा होगा। इसलिए अब हम तुम्हें छोड़ देंगे और फिर कभी तुम्हें परेशान नहीं करेंगे. आप को क्या कहना है? "मैंने उत्तर दिया, 'सज्जनों, सबसे पहले तो मैं यह कह दूं कि इस भयानक पतन में, जब मैं अपने ही दरवाजे से नीचे उतर रहा था, जिससे मुझे इतनी पीड़ा हुई, मुझे लगता है कि आपने मेरे साथ घृणित, घृणित व्यवहार किया। सत्य के प्रति अपनी ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ धार्मिक निष्ठा के लिए, मुझे लगता है कि मैंने एक गंभीर अन्यायपूर्ण कीमत चुकाई है, और आप इसे ईसाई कहते हैं, है ना?

सज्जनों, मैं सब कुछ जानने का दावा नहीं करता, लेकिन चर्च के इतिहास के बारे में मैंने जो पढ़ा है, उससे मैं जानता हूं कि ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह ने प्रेम का धर्म सिखाया था और उन्होंने जिस चर्च की स्थापना की, वह चर्च था। सुनहरा नियम। मैंने जो पढ़ा है उससे मुझे यह भी पता है कि पहली शताब्दी के तुरंत बाद, पुरोहितवाद के भ्रष्टाचार के कारण, पवित्र आत्मा, स्वर्गीय प्रेरणादायक आत्माओं के साथ, वापस चली गई और मूल चर्च मसीह के नाम पर अपनी शुद्धता में मौजूद नहीं रहा। तीसरी शताब्दी के आसपास तक कुछ कट्टरपंथी पुजारी दूसरों के साथ जुड़ गए और खुद को ईसाई कहने लगे।

वे शीघ्र ही दुष्ट और सांसारिक हो गये। उन्होंने एक महान पुरोहिती पदानुक्रम का निर्माण किया। गुरु की व्याख्या को लेकर वे आपस में लड़ते-झगड़ते रहे, जब तक कि उस अंधकार युग के दौरान लगभग 50,000,000 लोगों की हत्या नहीं कर दी गई, उनका कत्ल कर दिया गया और उन्हें जिंदा जला दिया गया।

कहा जाता है कि ये मदर चर्च के आदेश पर है. सोलह सौ वर्षों से इसने कमोबेश इस धार्मिक युद्ध और उत्पीड़न को जारी रखा है। बेशक, प्रगति के इन बाद के वर्षों में उनके तरीके बदल गए हैं, लेकिन विधर्मियों के प्रति

उनकी द्वेषपूर्ण, सांप्रदायिक भावना अभी भी वैसी ही है, और अगर उन्होंने हिम्मत की तो आज भी अपनी क्रूरता को दोहराएंगे। जहाँ तक मेरी बात है, मेरे मन में आपकी मातृ कलीसिया के प्रति कोई सम्मान नहीं है।"

मैं उसे एक महान धार्मिक जुआ संस्था और उसके चर्च उपासक मानता हूँ मूर्ख और कट्टरपंथी, और उसके पुजारी कब्र से परे भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं जानते। इस मौके पर स्पीकर ने कहा, भाईयों, चलिए. यह आदमी अपूरणीय है. आइए इसे हमेशा के लिए खो जाने दें, और इसलिए इसे अलविदा कहें।9 वह इस सरल कथन से स्तब्ध लग रहा था। वे ऐसी जगहों पर गायब हो गए जहां से मुझे उम्मीद है कि वे कभी वापस नहीं लौटेंगे।

डॉ. रॉबर्ट ग्रीर
डेनविल, एन.वाई., 6 नवंबर, 1899।

डॉ. पीबल्स:

क्या आप मुझे इन जुनूनी आत्माओं से मुक्त करा सकते हैं जो मेरी जीवन शक्ति को नष्ट कर रही हैं? पांच साल पहले मुझे एक खूबसूरत महिला कहा जाता था, मेरे मिलनसार स्त्री स्वभाव के कारण मुझे प्यार किया जाता था। मैं कसाडागा शिविर-बैठक में गया, और एक सत्र में भाग लिया। सत्र से घर आने के बाद, मैं पूरी रात भयभीत, आधा सचेत और आधा मंत्रमुग्ध होकर बिस्तर पर लेटा रहा। जब मैं घर आया, तो मैंने पाया कि मुझे दूरदर्शिता और दूरदर्शिता प्राप्त हुई थी, और कई उल्लेखनीय चीजें मुझे दी गई थीं।

मैं कुछ समय के लिए एक माध्यम बनकर बहुत खुश था, और अगर मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से बात कर पाता तो मैं आपको बहुत कुछ बता सकता था। वे कहते हैं कि आप जुनून का इलाज कर सकते हैं। क्या आप कृपया मुझे इस जुनून से मुक्त करेंगे और इन आत्माओं को उनके द्वारा बनाए गए नरक में भेज देंगे? मैं पागल हो जाऊँगा अगर मैं उन्हें मुझे चोट पहुँचाने और मेरे शरीर में अपने अदृश्य दाँत गड़ाने से नहीं रोक सका। मैं नरक की भीषण यातनाएँ सहता हूँ और रात में केवल दो या तीन घंटे ही सो पाता हूँ।

मैं इतनी पतली होती जा रही हूं कि मुझे पता है कि अगर मुझे मदद नहीं मिली तो वे मुझे मार डालेंगे। आप मेरी मदद करेंगे, ठीक है! मैं एक कुंवारी

लड़की हूं और अकेली रहती हूं. मैं इन गंदी, संक्रमित आत्माओं को दूर नहीं भगा सकता। मैं कोशिश करती हूं और वे मुझ पर हमला करते हैं, मुझे गालियां देते हैं और अपनी अश्लील, गंदी बातें कहते हैं और कभी-कभी मुझे शारीरिक रूप से परेशान करते हैं (मेरे शरीर पर लौट आते हैं और और भी गंदी चीजें करते हैं, वे नहीं हैं, उनमें से कई हैं)। मुझे सुबह से रात तक और कभी-कभी लगभग पूरी रात उन्हें सुनना पड़ता है।

हे भगवान, डॉ. पीबल्स, मैं इससे बदतर नरक के बारे में सोच भी नहीं सकता, इसलिए इन शैतानों को मेरे शरीर और मेरी आत्मा दोनों को चोट पहुँचाने से दूर भगाओ। अगर मुझे कुछ मदद नहीं मिली तो यह मुझे मार डालेगा। क्या आत्मा-नियंत्रण अभिशाप नहीं है? वहाँ दो दुष्ट युवक हैं, और उनके साथ एक दुष्ट स्त्री भी है। मैं नहीं जानता कि आप उन्हें दिव्य दृष्टि से देख पाते हैं या नहीं। वे भयानक आकार में मेरी ओर दौड़ते हैं, और यदि मैं उन्हें दूर भगाता हूँ तो वे फिर वापस आ जाते हैं।

मुझे लगता है कि वे पुराने बाइबिल के समय के राक्षस हैं। नेता एक चतुर दुष्ट आत्मा है जिसे मज़ाक करना पसंद है, और फिर वे घृणित रूप से गंदी बातें कहेंगे, और अगर मैं उन्हें रुकने का आदेश दूं, तो वे सड़क पर एक घृणित, गंदे आवारा की तरह मुझे गाली देंगे। वे मेरा मज़ाक उड़ाएँगे और मुझे इतना दुःख पहुँचाएँगे कि मैं दर्द से चिल्लाऊँगा। मैं दिल से बहुत बीमार हूँ. वे पहले ही मेरी सेहत को नुकसान पहुंचा चुके हैं।'

क्या तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते?
'कृपया अपना,

"मिस सारा सी-।"
"न्यूयॉर्क, 6 नवंबर, 1899।

डॉ. पीबल्स:

मैं आपको अपने व्यक्तित्व में जुनून का एक बहुत ही असाधारण मामला बता सकता हूं। यदि आप विवरण प्रकाशित करने की सोच रहे हैं, तो कृपया सभी नाम छोड़ दें, क्योंकि अभी भी ऐसे लोग हैं जो इसे सार्वजनिक करने

से सामाजिक रूप से आहत होंगे। अब मैं यथासंभव सटीक और सरसरी तौर पर बोलूंगा। मैं बताऊँगा।

आठ साल पहले अक्टूबर में मुझे पहली बार अध्यात्मवाद की सच्चाई का एहसास हुआ। एपिस्कोपेलियन होने के कारण, मैंने कभी नहीं सुना था कि अध्यात्मवाद जैसी कोई घटना या दर्शन है। यह तथ्य मेरी पोती में विकसित मीडियमशिप के माध्यम से मेरे सामने आया। मेरी बेटी, जो इंग्लैंड में रहती है, ने मुझे इन आश्चर्यजनक खुलासों के बारे में लिखा। इस समय मैं पंथ की सच्चाई के बारे में कुछ संदेह में था - मैं कह सकता हूं, सभी पंथ।

मैंने प्रार्थना की, या यूँ कहें कि कामना की, कि यदि कोई बेहतर रहस्योद्घाटन संभव होता, तो यह मेरे पास आता, और ऐसा हुआ। यह मेरे लिए, एक वर्तमान स्वर्ग था, और मैं उत्सुकता से आगे के ज्ञान के हर साधन की तलाश में था। मैं प्लैंचेट लेकर बैठ गया और कुछ देर सब्र करने के बाद मेरा हाथ चलने लगा। थोड़ी देर बाद, मैंने एक पेंसिल उठाई और पाया कि मैं प्रेरित होकर लिख सकता हूँ, स्वचालित रूप से नहीं। तब मैं

जोश में आकर उन्होंने अपनी युवावस्था के कई दोस्तों को संदेश लिखना शुरू कर दिया। मेरा माध्यमत्व और भी विकसित हुआ। मैंने अपने दोस्तों को मुझसे बात करते हुए सुना। मैंने उनके साथ सुखद बातचीत की, और उनकी आवाज़ें उतनी ही स्पष्ट थीं जितनी वे सांसारिक जीवन में थीं। मैं उन्हें देख नहीं सका, लेकिन उन्हें और एक-दूसरे के साथ उनकी बातचीत को सुन सकता था।

अफ़सोस! लेकिन ये अद्भुत ख़ुशी थोड़े समय के लिए ही रही. मैंने दूसरों को भी बात करते हुए सुनना शुरू कर दिया, न कि केवल अपने दोस्तों को - मेरे आस-पास बहुत सारे लोग थे। बाद में, मैंने हर तरह की बकवास सुनी। मुझे लगा कि मेरे चारों ओर भीड़ है, और लिखित संदेशों में हस्तक्षेप किया जा रहा है, और बातचीत बाधित हो रही है। एक सुबह, इस माध्यम को विकसित करने के लगभग एक महीने बाद, जब मैं अपने कमरे में सोफे पर लेटा हुआ था (मैं उस समय बोर्डिंग कर रहा था), मुझे लगा कि एक अजीब आत्मा ने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया है।

यह एक नया अनुभव था. यह एक ऐसी अनुभूति थी, और उसकी आवाज़ मेरे आस-पास के मेरे दोस्तों को स्पष्ट और स्पष्ट लग रही थी, जो मेरे आराम करते समय मुझसे बहुत धीरे से बात कर रहे थे। "अब आपका

माध्यम कहां है? 'यह जीत में कहा गया था! फिर पृथ्वी पर नरक की शुरुआत हुई, जिसमें सबसे क्रूर यातनाएँ शामिल थीं। उस समय से लेकर आज तक यह कमोबेश मेरे दिमाग पर छाया हुआ है। मैं कभी भी कोई लिखित या ध्वनि संदेश बिना बदले, जोड़े या किसी तरह से नष्ट किए बिना प्राप्त नहीं कर पाया।

मुझे कंपनी के अंदर और बाहर, हर जगह, दिन-रात परेशान किया गया है। वह मेरे द्वारा पढ़े या लिखे गए हर शब्द का अनुसरण करता है और हमेशा बोलता रहता है। वह शायद एक समय में कुछ सेकंड के लिए चुप रहता है, और फिर बकवास, बकवास, अपवित्रता, गंदगी, अश्लीलता आदि बोलता है। मैंने राहत पाने की कोशिश में बहुत समय बिताया है, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आत्मिक मित्रों का आकर्षण ही एकमात्र ऐसी चीज़ थी जिसने मुझे उसे बाहर लाने और मेरे पास आने में मदद की। मैं इस जुनूनी राक्षस से लगभग विचलित हो गया हूं। मैं कह सकता हूं कि बिना रोए एक दिन भी नहीं गुजरता.

मैं रात को दर्द से कराहते हुए कमरे में घूम रहा हूं। मैंने जो दर्द सहा है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। मेरी अविवाहित बेटी जो मेरे साथ रहती थी, मुझे समझ नहीं पाती थी। 4 'मेरे आध्यात्मिक मित्रों ने मुझे इसे गुप्त रखने की सलाह दी, और मैंने दो साल तक ऐसा किया, लेकिन बाद में एक भयानक परीक्षण से गुज़रने के बाद, मुझे यह बताना पड़ा कि मेरी परेशानी का कारण क्या था। बेशक, ऐसा मतिभ्रम के कारण माना जाता था।

दुनिया आध्यात्मिक शक्तियों के प्रति अंधी है। जैसा कि मैंने कहा, मेरी विवाहित बेटी ने अपने परिवार में माध्यमशिप विकसित कर ली थी, और इससे उसे साबित हुआ कि यह कोई भ्रम नहीं था। “मैं चार साल से कुछ अधिक समय तक पीड़ित रहा, जब मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया, तो इस दुष्ट आत्मा ने मुझ पर पूरी तरह से नियंत्रण कर लिया, जिससे मैं बहुत ही मूर्खतापूर्ण तरीके से काम करने और बात करने लगा, जिसे मेरी बेटी पागलपन समझती थी।

उन्होंने पागलखाने से कई डॉक्टरों को बुलाया, जिन्होंने मुझे पागल घोषित कर दिया। उन्होंने जबरन त्वचा के नीचे मॉर्फिन की एक मजबूत खुराक इंजेक्ट की, क्योंकि मैंने कुछ भी निगलने से इनकार कर दिया था, और मुझे आधा बेहोश होकर ब्लूमिंगडेल शरण में ले जाया गया। कुछ ही दिनों में पेट के दौरे से उबरने के बाद मेरा मानसिक नियंत्रण कमजोर हो गया

और मैं अपने सामान्य स्वरूप में लौट आया। मुझे वहां तीन महीने तक रखा गया - एक पूरी तरह से स्वस्थ महिला!

मैं कभी पागल नहीं हुआ, या ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, न ही मेरे परिवार में कभी इस बीमारी के करीब आने की प्रवृत्ति थी। अगर मैं इच्छुक होता, तो जो कुछ मैं झेल चुका हूं, उसके कारण मुझे इस बीमारी का खतरा अधिक होता। मेरी सारी छोटी सी जिंदगी मेरी बेटी की इस भयानक भूल में ही गुजर गई, इसलिए मैं जिंदगी भर एक बहुत गरीब औरत बनकर रह गई।

मैं कई बार यहां एक माध्यम में गया हूं, और उसके आत्मा नियंत्रण ने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। आत्मा को नियंत्रित करने वाले डॉ. वाइज ने स्वतंत्र स्वर में बोलते हुए मुझे बताया कि यह बेचारी, विक्षिप्त आत्मा जो मुझे जुनूनी रूप से पीड़ा देती है, एक कैथोलिक पादरी है, और वह कुछ व्यक्तिगत बदला लेने की योजना बना रही है। मैंने अपने जीवन में कभी कोई दुश्मन नहीं बनाया, इसलिए उसका बदला मुझसे नहीं, बल्कि कुछ अन्य लोगों से है, जिन्हें वह मेरे माध्यम से चोट पहुँचा सकता है।

मुझे पकड़ने और मेरे माध्यम में बाधा डालने के इस कार्य में तीन राक्षसी आत्माएं शामिल हैं। निःसंदेह, आप जानते हैं कि कैथोलिक आध्यात्मिक जगत में सभी माध्यमों का विरोध बहुत प्रबल है। डॉ. वाइज ने मुझे बताया कि (जैसा कि मैंने कहा है) प्रत्येक ग्रह के साथ अंधेरे उपग्रह या गोले जुड़े हुए हैं, और यह आत्मा पृथ्वी के अनुरूप गोले में हटा दी गई है, लेकिन चुंबकीय बंधन जो उसने अपने और मेरे बीच बनाया है , यह इतना मजबूत होता है कि इसे हटाने पर यह पूरी तरह से टूट नहीं पाता है।

अब वह मुझसे कहता है कि वे उसे पूरी तरह से दूसरे क्षेत्र में ले जाने के लिए बाध्य हैं, ताकि इस चुंबकीय आकर्षण को तोड़ा जा सके। “पिछले मार्च या अप्रैल में, मुझे बताया गया था कि पूरी तरह से मुक्त होने में कुछ महीने लग सकते हैं। हालाँकि, मैं यहाँ हूँ, अभी भी कभी-कभी यह भयानक आवाज़ सुन रहा हूँ, और इतना ही नहीं, बल्कि अपने विचारों को विकृत होते हुए भी महसूस कर रहा हूँ, ताकि मेरी आत्मा पूरी तरह से मेरी अपनी न रह जाए। मैं घिरा हुआ हूं.

मैं हमेशा उत्साही लोगों के एक समूह से घिरा रहता हूं जो अपनी पूरी ताकत से मेरी मदद करते हैं। यदि ऐसा नहीं हुआ होता, तो मैं वास्तव में अभी भी पागलखाने में होता। मैं हर शाम इस प्रभाव के लिए बैठता हूं, और कभी-कभी प्रियजनों की करीबी उपस्थिति महसूस करता हूं। सम्मोहन के

कारण मैंने अपनी सारी दिव्य शक्ति खो दी है। अब मैं किसी माध्यम से मदद नहीं मांगता क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं हैं. मेरे आध्यात्मिक मित्र अपने संस्कारों और चुंबकीय प्रभाव से मेरी कुछ मदद करते हैं, लेकिन उनके पास पूरी शक्ति नहीं है।

मुझे यकीन है कि अस्तित्व के अगले चरण में भी विभाजन और नैतिक लड़ाइयाँ लड़ी जाएंगी, जैसे इस चरण में हैं। मुझे लगता है कि मानसिक अस्पतालों में अधिकांश लोग मेरे जैसे ही जुनूनी हैं। डॉक्टर इन बातों को नहीं समझते हैं, और न ही मेरी बेटी जिसने मुझे पागलखाने में रखा है।

"भवदीय,-
"मायर्स,
फ्लोरिडा, 5 जून, 1899।

"प्रिय महोदय:

प्रोग्रेसिव थिंकर में आपका नाम देखकर मैं आपको मदद के लिए लिख रहा हूं। मैं अपने जीवन में अब तक सुनी सबसे भयानक परीक्षाओं में से एक से गुज़र रहा हूँ।

करीब दस महीने से मुझे हर तरह से परेशान किया जा रहा है. मैंने सबसे घृणित भाषा सुनी है और लगभग हर संभावित अपराध का आरोप लगाया गया है। जिन चीज़ों के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था, वे मेरे दिमाग में घुस गई हैं; और मेरी और मेरे परिवार की जान को भी खतरा है. सबसे पहले मेरी दृष्टि अच्छी थी, और मुझे अपनी दृष्टि बनाए रखने के लिए पूरी रात रोशनी जलाकर लड़ना पड़ा, और वे मुझसे कहते रहे कि वे मेरा जीवन बर्बाद करने जा रहे थे, और इस तरह लड़ाई चलती रही।

मैं इन राक्षसों को अलग-अलग लोगों से बात करते हुए सुन सकता था। वे सबसे अंधेरे इलाकों से थे. उन्होंने मेरी दृष्टि लगभग पूरी तरह छीन ली, लेकिन मैं अभी भी अकेले और बड़े समूहों में फूल और विभिन्न प्रकार की तस्वीरें देख पा रहा था। मेरी सुनने की शक्ति अच्छी है. मैं जानना चाहता हूं कि इन सबकी सजा मुझे क्यों दी जा रही है? मैं काम करने में असमर्थ

हूं, और मैं एक गरीब आदमी हूं, और अगर जल्द ही उन्हें मुझसे नहीं लिया गया तो हम अभाव और भूख से पीड़ित होंगे।

मैं शराब नहीं पीता और न ही मुझे कभी दुर्व्यवहार की लत लगी है। यह माध्यम, या जो कुछ भी है, मुझ पर थोपा गया था। जब पहली बार लड़ाई शुरू हुई, तो हमने अपने परिवार के साथ प्रार्थना की और यीशु मसीह के नाम पर भगवान से मदद मांगी, और वादा किया गया कि अगर मैंने अपनी प्रार्थना जारी रखी तो बुराई बहुत जल्द दूर हो जाएगी, लेकिन इसके बजाय, सज़ा और अधिक गंभीर हो गई। जब तक मैं इसे बिल्कुल भी सहन नहीं कर सका। वह कहता रहा कि प्रभु यीशु मसीह ही मेरे पापों के लिये यह सब मुझ पर डाल रहा है। फिर मैंने अपनी प्रार्थनाएँ अलग तरीके से कहना शुरू कर दिया। इसका कोई फायदा नहीं हुआ.

इन राक्षसों ने घोषणा की कि वे मेरे दो भाई थे जो लगभग चौवालीस साल पहले छोटे बच्चों के रूप में आत्मा में चले गए थे, और ऐसा इसलिए था क्योंकि मैंने उन्हें याद नहीं किया था कि मैं उन्हें पीड़ा दे रहा था। उन्होंने कहा कि यह प्रभु यीशु हैं जो उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर कर रहे हैं, और यह चलता रहा। हर निंदनीय बात जिसके बारे में सोचा जा सकता है वह मुझ पर थोपी जाती है।

मेरे लिए उनकी सभी भयानक बातचीत और क्रूर धमकियों का वर्णन करना असंभव होगा, और मुझे लगता है कि मुझे राहत मिलनी चाहिए। यदि आप या पृथ्वी पर या स्वर्ग में आपका कोई मित्र आत्माओं का एक समूह यहां भेज सकता है, तो मुझे निश्चित रूप से उन्हें दूर करना होगा इससे पहले कि मैं यह पता लगा सकूं कि कौन बात कर रहा था।

मुझे लगता है कि कई बार दूसरी आत्माएं मेरी मदद के लिए आई हैं। वह कभी-कभी मुझ पर बाहर आने के लिए चिल्लाती है, वह मुझे बताना चाहती है कि मुझे क्या करना है। जब मैं बाहर जाता हूं तो चिल्लाने और घुलने-मिलने की परस्पर विरोधी आवाजें आती हैं; कुछ लोग मुझे एक काम करने के लिए कहते हैं, और कुछ लोग कुछ और, जब तक मैं थक नहीं जाता और सुनते-सुनते पागल नहीं हो जाता। “अब क्या आप या आपके कुछ मित्र उन्हें ले जाने के लिए अच्छी, शक्तिशाली आत्माओं का एक समूह भेजेंगे!

"आपका अपना,
"जे। सी. बेकर।”

उपरोक्त पत्र का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से मेरे स्वभाव में सहानुभूति का संचार हुआ। शायद ही कोई महीना जाता हो जब मुझे ऐसे पत्र न मिलते हों। मैं उनमें से कुछ का उत्तर नहीं देता. हर आदमी के समय की एक सीमा होती है. और फिर इस तरह से पीड़ित लगभग हर व्यक्ति को अलग सलाह और अलग मानसिक उपचार की आवश्यकता होती है।

चूँकि मिस्टर बेकर को मेरे द्वारा उनके नाम का उपयोग करने पर कोई आपत्ति नहीं थी, इसलिए मैं वह उत्तर यहाँ प्रकाशित कर रहा हूँ जो मैंने उन्हें तुरंत भेजा था: "बैटल क्रीक, मिशिगन, 8 जून, 1899। "मि. जे. सी. बेकर, "मायर्स, फ़्लोरिडा।" मेरे प्रिय महोदय: "मुझे आपका पत्र कई दिन पहले मिला और मैंने इस पर बहुत विचार किया है। आपका अप्रिय मानसिक अनुभव मेरे लिए कोई अजीब बात नहीं है, क्योंकि मेरे पास ये निम्नलिखित हैं जिन्होंने जुनूनी प्रभावों की विशेषताओं को देखा और अध्ययन किया है, जो आमतौर पर होते हैं राक्षसी आत्माओं के कारण.

ये केवल अपने भौतिक शरीर में नश्वर हैं, और मैं उन्हें उनके आचरण, शिक्षाओं और प्रभावों के आधार पर नश्वर लोगों की तरह ही देखता और आंकता हूं। ये कठोर, अनियंत्रित अभिव्यक्तियाँ अक्सर माध्यमशिप की शुरुआत में नहीं होती हैं, और विशेष रूप से जहां लोग पहले एक संकीर्ण धार्मिक संप्रदाय से जुड़े थे। ये कष्टप्रद नियंत्रित करने वाली आत्माएं जो मानसिक रूप से आपसे जुड़ी हुई हैं, मैं उन्हें बेचैन, बीमार, बुरी आत्माएं कहता हूं।

वे हमारे ग्रह की सीमा पर रहते हैं। उन्होंने निश्चित रूप से आपके साथ बुरा व्यवहार किया और उन्हें खुद पर शर्म आनी चाहिए। यदि वे दुर्भावनापूर्ण शैतान नहीं हैं, तो वे अज्ञानी और नैतिक रूप से मूर्ख हैं। किसी भी स्थिति में वे नैतिक रूप से जिम्मेदार हैं। “क्या वे इस तथ्य से अवगत नहीं हैं कि जो कुछ वे बोते हैं, वही उन्हें काटना भी होगा? क्या उन्हें अपने ऊपर शुद्ध देवदूत की उपस्थिति का कोई एहसास नहीं है? क्या वे नहीं जानते कि दूसरों के प्रति अच्छा व्यवहार करने के अलावा खुश रहने का कोई रास्ता नहीं है?

नहीं! मेरे भाई, जैसा कि आप सुझाव देते हैं, भगवान ने "यह सज़ा आप पर नहीं थोपी है"। भगवान अच्छे लोगों के घरों में डाका डालने के लिए चोरों को

नहीं भेजता, बल्कि अच्छी आत्माएं, अच्छे लोग और लुटेरे भी जीवन के क्षेत्र में हैं, नैतिक अभिनेता हैं और कठोर कानून के विषय हैं।

अब मेरे माता-पिता की सलाह सुनो. सबसे पहले, यह देखें कि आपका घर और आपके आस-पास का वातावरण स्वच्छ, स्वागत योग्य, सुखद और सौहार्दपूर्ण हो। ईश्वर में, मसीह की प्रेम-भावना में, बड़प्पन में पूर्ण विश्वास रखें। मानवता की पवित्रता और धर्म की धार्मिकता में विश्वास रखें।

"वर्तमान में आध्यात्मिकता के बारे में मत सोचो, न ही उन जुनूनी नियंत्रणों के बारे में। उन्हें अपने चेतन मन से हटा दें। आप 'उन्हें सुनने के लिए बाहर जाने' की बात करते हैं। ऐसा कुछ मत करो. उनकी बात मत सुनो. उन्हें नजरअंदाज करो। उनके साथ उसी शांत, गरिमापूर्ण उदासीनता का व्यवहार करें जैसा आप हवा के साथ करते हैं।

मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि तुम उनसे मत लड़ो, क्योंकि लड़ने से लड़ाई ही पैदा होती है। जाहिर है वे अज्ञानी और लगभग तर्कहीन आत्माएं हैं। वे ये काम शायद मौज-मस्ती या मनोरंजन के लिए करते हैं, या शायद शुद्ध द्वेष के कारण करते हैं। किसी भी हालत में उन पर ध्यान न दें.

सभी उत्तेजक पदार्थों, शराब, कॉफी और चाय से बचें। ये महँगे और बेकार उत्तेजक हैं। शांत रहें, धैर्य रखें और अपना दैनिक कार्य यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से करें। यदि आपका कोई सुखद, मिलनसार और आध्यात्मिक विचारधारा वाला मित्र है, तो उससे बात करें। वैज्ञानिक विषयों, खेती, फूल, शिक्षा और प्रकृति के शानदार कार्यों पर बातचीत; लेकिन इन आत्माओं के बारे में न तो सोचें और न ही उनसे एक शब्द भी बात करें।

निःसंदेह, ये निम्न-श्रेणी की आत्माएँ कसम खाएँगी और झूठ बोलेंगी, और इतने सारे झूठों को मारने के अलावा, झूठ बोलने वाली आत्माओं को आध्यात्मिक रूप से घेरने वाली आत्मा-दुनिया से हमारे पास आने से रोकने का कोई तरीका नहीं है। वहां लोगों को भेजना बंद करो. "अपनी समझ का उपयोग करें^ आत्माएं, अच्छी या बुरी, क्या कह सकती हैं, इसके लिए हमेशा अपनी समझ का उपयोग करें।

वास्तविक बने रहें; मर्दाना बनो; सकारात्मक रहो; आकांक्षी बनें. आकांक्षा प्रार्थना है. भगवान ने आपको उपयोग करने के लिए आपकी समझ और विवेक दिया है, और आपको उन्हें बुद्धिमानी और दृढ़ता से उपयोग करना चाहिए। अच्छे विचार सोचो; अच्छी किताबें पढ़ें. मधुर आत्मा-प्रेरक गीत

गाएँ। अपने घर को प्यार का स्वर्ग बनाएं. “मैं चाहूंगा कि आप सप्ताह में दो बार मंगलवार को आधे घंटे के लिए बैठें।

दिन के दौरान और गुरुवार की शाम को, लगभग नौ बजे, शांत और निष्क्रिय होकर, अपना बायां हाथ मेरे हस्ताक्षर पर रखें। आराम करें और अच्छे और सच्चे, सुंदर और पवित्र के बारे में सोचें। उसी समय, या लगभग उसी समय, मैं आपकी राहत के लिए, अपने अच्छे विचारों, प्रेरणादायक प्रार्थनाओं और भगवान की इच्छा को पूरा करने वाले देवदूत समूहों के आह्वान की कंपन ईथर-तरंगों के माध्यम से प्रोजेक्ट करूंगा। ईश्वर में विश्वास रखें - मसीह में विश्वास - प्रेम की भावना और अधिकार के शाही शासनकाल में विश्वास; और जल्द ही - मैं नहीं बता सकता कि कब तक - आप उन मनोवैज्ञानिक जंजीरों के ढीले होने के प्रति सचेत होंगे जिन्होंने आपको बांध रखा है।

तुम निश्चय ही इन आसुरी प्रभावों से मुक्त हो जाओगे। ईश्वर शासन करता है, और स्वर्ग न केवल नरक से ऊँचा है, बल्कि वे असीम रूप से अधिक शक्तिशाली हैं। मैंने देश-विदेश में आपसे भी बदतर सैकड़ों केस ठीक किये हैं। निराश मत होइए. “क्या आपको मेरे द्वारा आपके पत्र का एक अंश प्रकाशित करने और उस पर उचित टिप्पणियाँ करने पर कोई आपत्ति है!

मेरे पास इस तरह के बहुत सारे पत्र हैं, इसलिए शायद मेरे ओटीएफ-हैंड उत्तर को प्रकाशित करने से दूसरों को लाभ हो सकता है। यदि आप नहीं चाहते कि मैं आपके नाम का उपयोग करूँ, तो मैं ऐसा नहीं करूँगा। "बहुत, बहुत हार्दिक," जे.एम. पीबल्स, एम.डी. "बैटल क्रीक, मिशिगन 9 मिस नोरा बैचलर की गवाही।

एशलैंड, ओरेगॉन की यह सुसंस्कृत महिला, लेखिका और लेखिका अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं और अपने कुछ अनुभव इस प्रकार साझा करती हैं: "मुझे पता है कि अंधेरे की इन अदृश्य ताकतों से लड़ना कैसा होता है। "मैं यह जानती हूं। चरम सीमा तक लड़ने का मतलब है अपने स्वयं के जीवित-जागरूक स्व के नियंत्रण के लिए धैर्य रखना।

“मुझे पता है कि डरावनी रातें और अकथनीय दर्द के दिन बिताना कैसा होता है। “मुझे पता है पागलपन क्या है. मैं जानता हूँ कि दुष्ट आत्माएँ क्या कर सकती हैं। “मैं जानता हूं कि आत्महत्या के लिए क्या प्रेरित करता है, क्योंकि मैं रसातल के बिल्कुल किनारे पर पहुंच चुका हूं; और फिर भी क्या

मैं मीडियमशिप और इससे मिलने वाली मदद, प्रेरणा और मन की उच्च अवस्था को छोड़ दूंगा? नहीं!

मैं बहुमूल्य मोती से भरी सीप को नहीं फेंकूँगा, क्योंकि उसमें एक छोटा सा जहरीला साँप लिपटा हुआ है। मैं घुसपैठिए को हर संभव गति से भगाऊंगा, और मोती को अपने शाश्वत आनंद और संतुष्टि के लिए रखूंगा। हर माध्यम को यही करना चाहिए, जुनूनी प्रभावों को उनकी पहली शुरुआत में दबा देना चाहिए, और हमेशा आध्यात्मिक जीवन के उच्च क्षेत्रों से आने वाले शुद्ध और सुंदर, उच्च प्रभावों की ओर अपना रुख करना चाहिए।

अध्यात्मवाद को एक महान कार्य करना है, एक ऐसा कार्य जो अभी तक शुरू नहीं हुआ है, अदृश्य और अप्रत्याशित आध्यात्मिक प्रभावों और मानव जीवन और मानव समाज में उनकी भूमिका के विषय पर अज्ञानी मानवता को प्रबुद्ध करने का कार्य। जुनून के इस विषय पर कई अध्यात्मवादी अभी भी बहुत अनभिज्ञ हैं। वे मुझे मानसिक रूप से मूर्ख लगते हैं।

जो लोग समझते हैं वे अधिकतर बोलने से डरते हैं। क्योंकि एक सिद्धांत सामने रखा गया है (तथ्यों से अनभिज्ञ लोगों द्वारा) और बहुत विश्वसनीयता प्राप्त कर ली है, कि बुरे प्रभाव उस व्यक्ति को परेशान नहीं करेंगे जिसके इरादे शुद्ध और नेक हैं, और जिसका चरित्र दोषारोपण योग्य नहीं है; बुरे स्वभाव, अशुद्ध जीवन, बुरे इरादे, बुरी भावनाओं वाले लोग ही अपने चारों ओर अंधेरे की ताकतों को लाते हैं। 'जैसे-'ऐसा कहा जाता है। यदि आप भ्रष्ट और बुरी आत्माओं से परेशान हैं, तो इसका कारण यह है कि आपके अपने जीवन और चरित्र में कुछ गड़बड़ है।

आपके सबसे घनिष्ठ मित्र आपको एक पवित्र और प्यारी आत्मा के रूप में सोच सकते हैं, लेकिन वास्तव में, उनकी दृष्टि से दूर, आप में कुछ बहुत ही दुष्ट गुण हैं, अन्यथा आप कभी भी ऐसे बुरे प्रभावों को आकर्षित नहीं कर पाते! यह कितना अपमानजनक है! एक परिष्कृत, संवेदनशील, पीड़ित और उत्पीड़ित माध्यम को यह बताना कितना क्रूर और हृदयहीन है कि उसने उन दुष्ट राक्षसों को 'आकर्षित' कर लिया है जिनके चंगुल में वह अज्ञानता के कारण फंस गई है! यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब इस तरह के अनिश्चित विचार प्रचलित हैं तो इस विषय पर इतना घना अज्ञान और अंधकार मौजूद है।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि माध्यम केवल एक-दूसरे को अपने अनुभव बताते हैं, और वह भी अत्यंत गोपनीयता के साथ और कई चेतावनियों के

साथ, इस डर से कि कहीं दूसरे सुन न लें और निंदा न कर दें। इस राय से दूर रहें. ये बिल्कुल गलत है. "प्रगतिशील विचारक के पिछले अंक में इस प्रकार का एक कथन है: एक दुष्ट आत्मा एक अच्छे और शुद्ध व्यक्ति के मानसिक वातावरण को बर्दाश्त नहीं कर सकती; उसके पास नहीं जा सकती या उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

अब, यह एक साहसिक धारणा है, एक मात्र सिद्धांत है, जिसके समर्थन में एक भी तथ्य नहीं है। अगर मैं चाहूं तो अपने कम से कम नौ निजी परिचितों के नाम बता सकती हूं, जो इस हरी-भरी धरती पर चलने वाली सबसे अच्छी और पवित्र महिलाएं हैं, जो इन अदृश्य शक्तियों - इन शैतानों से परेशान और परेशान हैं। "जितनी जल्दी हम इस ग़लतफ़हमी को दूर करेंगे उतना बेहतर होगा।

इससे जांच की प्रगति बाधित होती है; यह तथ्यों की अनदेखी करता है! यह उस ज्ञान को रोकने का एक कारण है जिसकी युवा और अविकसित माध्यमों को अनिवार्य रूप से आवश्यकता है, क्योंकि माध्यम में खतरा है। अज्ञानी माध्यम में अनकहा और बेशुमार खतरा है।

शुद्धता और पवित्रता अवतारी राक्षसों के प्रवेश में बाधा नहीं हैं; न ही वे अवतारी राक्षसों के प्रवेश में बाधक हैं। एक संवेदनशील वाद्ययंत्र को देवदूत या दानव द्वारा बजाया जा सकता है, और जब तक वह वाद्ययंत्र दोनों के बीच अंतर करने के लिए मानसिक रूप से पर्याप्त रूप से विकसित नहीं होता है, तब तक यह एक के हाथों में पड़ने के लिए उतना ही उत्तरदायी होता है जितना कि दूसरे के हाथों में। दूसरे का.

दुनिया दुष्टता, भ्रष्टाचार, अनगिनत अपराधों के बारे में बहुत कम जानती है जो सीधे तौर पर हवा की अदृश्य शक्तियों के लिए जिम्मेदार हैं। कई कमजोर इरादों वाले, अज्ञानी, असावधान नश्वर लोग बदनामी और शर्मिंदगी की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि मानसिक शक्तियों का जुनून उन्हें कब्र के दूसरी तरफ बुरी और आपराधिक आत्माओं के हाथों का एक आसान उपकरण बना देता है।

अध्याय XIX.

एक सुसंस्कृत महिला का जुनूनी इतिहास

मैं डॉक्टर: "जो लोग मुझे एक चौथाई सदी से जानते हैं, वे स्वेच्छा से मेरे सामान्य अच्छे स्वास्थ्य, संतुलित स्वभाव, सामान्य मिलनसारिता, अच्छे चरित्र और हंसमुख स्वभाव की गवाही देंगे... एक प्राकृतिक खोजकर्ता थे। ऐसी कोई समस्या नहीं है। मैंने कोशिश की ब्रह्मांड की पहेलियों को सुलझाने के लिए मैंने जीवन, पूर्व-अस्तित्व और मानसिक अनुसंधान के रहस्यों की जांच करने की कोशिश की और मेरे लिए अन्य आकर्षण भी थे।

"अनुभव किए गए जुनूनी प्रभावों के पहले लक्षण थे बेचैनी, घबराहट की अनुभूति, थकान, अनिद्रा, किसी अदृश्य बोझ से दबे होने की भावना; जीवन के हल्के कर्तव्य असंभव लग रहे थे। मैं चकित था। इन भावनाओं के बाद उदासी, संदेह और असामान्यता आई परेशान करने वाली प्रवृत्ति, राहत की चाहत, कभी-कभी देखी जाती थी। 'एक या दो चिकित्सकों की तरह, यह मत कहो कि मैं एक महिला के जीवन में एक अजीब दौर के करीब पहुंच रहा हूं।

महिलाएं ही महिलाओं को सबसे अच्छी तरह से जानती हैं, और विशेष रूप से यदि वह अपने शरीर विज्ञान और ऊतक विज्ञान में अच्छी तरह से प्रशिक्षित हो। अधिकांश चिकित्सक अपनी ग़लतफ़हमियों के लिए प्रसिद्ध हैं। “अन्य मामलों में मैंने देखा और अध्ययन किया है कि इन भटकती, सिद्धांतहीन, धरती की भूखी, धरती से बंधी आत्माओं के प्रभाव से मुक्त होने के बाद, हर चीज और हर किसी के प्रति एक अप्राकृतिक असंतोष था।

उन्हें वातावरण सघन लग रहा था और कई वस्तुएँ अपने आसपास बिना किसी उद्देश्य के कंपन करती हुई प्रतीत हो रही थीं। मन में गुप्त रूप से असंगत विचार आएंगे। चुंबकीय धाराएं मस्तिष्क पर जमा हो जाएंगी, जिससे दर्द और असुविधा होगी। “इच्छाशक्ति और निर्णयों की गतिविधि

कमज़ोर होने लगी, या कभी-कभी इतनी अलग-थलग पड़ गई कि सर्वोत्तम संकल्प पूरी तरह से विफल हो गए।

भय और अविश्वास ऐसी बढ़ती हुई भावनाएँ थीं कि एक असंगत शब्द, एक कठोर नज़र, या एक तीखी आवाज़ इस आधे-जुनूनी व्यक्ति को रोने या दुःख की घुटन भरी संवेदनाओं को महसूस करने पर मजबूर कर देती थी, जिसके बाद तीव्र आक्रोश होता था और कभी-कभी व्यंग्यात्मक, कास्टिक विशेषण भी होते थे। . “पिछले सभी लक्षण बिना किसी जैविक बीमारी के मौजूद हो सकते हैं। फिर भी चिकित्सक इस पर नजर रखते हैं।

इन मामलों में, चीजों का बाहरी उद्देश्य पक्ष 'सुस्त जिगर', 'मलेरिया' या 'क्षीण जीवन शक्ति' की बात करेगा। आमतौर पर यह कमी उनके अपने अज्ञानी मन में होती है। 'जुनून के अधिक उन्नत चरणों में, पीड़ित आत्मा की बड़ी निराशा के अधीन हो जाता है; जीवन एक बोझ लगता है, और कल्पना, आत्मा के निचले स्तरों में अदृश्य उपस्थिति से प्रेरित होकर उत्पात मचाती है। उन्हें अपने दोस्तों पर शक होने लगता है. वे अधीर हो जाते हैं. उसका संदेह उसके तर्क पर हावी हो जाता है।

वे जिद्दी हैं. उन्हें उनके आजीवन दोस्तों के ख़िलाफ़ कर दिया जाता है, और उन्हें प्रभावित किया जाता है, अक्सर उनके बेहतर, अधिक सामान्य क्षणों में उनके अपने तर्क के विपरीत बातें कहने और करने के लिए मजबूर किया जाता है। वे क्रोध में चिड़चिड़े हो जाते हैं, जादू-टोने से पीड़ित होते हैं, आत्महत्या के बारे में सोचते हैं। 'ये लोग अब जुनूनी हो गए हैं। वे गुलाम हैं. वे आवाज़ें सुन सकते हैं, अजीब चेहरे देख सकते हैं, सबसे बेतुकी योजनाएँ, दुष्ट योजनाएँ बना सकते हैं, अपवित्र हो सकते हैं, सबसे अश्लील भाषा का उपयोग कर सकते हैं, और हज़ारों सबसे असामान्य धारणाएँ बना सकते हैं।

अक्सर ये जुनूनी आत्माएं, ढोंगी और झूठे लोग मानते हैं कि वे पृथ्वी पर महान लोग थे। वे अद्भुत वादे करते हैं. वे राक्षसी धारणाओं के तहत अपने गरीब, सम्मोहित विषयों की चापलूसी करते हैं। वे कभी-कभी दिखावा करते हैं कि भगवान उन्हें कुछ अतार्किक, घृणित और राक्षसी कार्य करने का आदेश देते हैं, जैसे कि हत्या करना। गारफ़ील्ड का हत्यारा गुइटो निस्संदेह जुनूनी था। "आंशिक रूप से जुनूनी लोग अक्सर अपने बेहतर, उच्च स्वभाव और अदृश्य प्रभावशाली प्रभावों के बीच संघर्ष के प्रति सचेत होते हैं, जो उन्हें अपने जीवन के संपूर्ण शांत स्वर के विपरीत जाने के लिए प्रोत्साहित और मजबूर भी करते हैं। क र ते हैं।

उन्हें भ्रमपूर्ण विचारों, भयावह पूर्वाभास और अकल्पनीय अपराध करने के प्रलोभन से प्रताड़ित किया जाता है। ओह, मानव जाति के अधिकांश लोग उन खतरों के बारे में कितना कम जानते हैं जो तंत्र-मंत्र और गलत तरीके से लागू किए गए अध्यात्मवाद की सीमा-भूमि पर छिपते और संक्रमित करते हैं!

"शिकागो,
श्रीमती एच--।"

एक व्यक्तिगत जुनूनी अनुभव.

ये महिला आगे लिखती है:

दस वर्षों से मैं आत्माओं की उपस्थिति के प्रति सचेत रहा हूँ। मैं निश्चित रूप से आत्माओं के अस्तित्व के बारे में जानता हूं, और यह भी कि कुछ अदृश्य बुद्धि हमेशा मेरे साथ रहती है। लेकिन आध्यात्मिक कानूनों और जादू-टोना से संबंधित किताबों के बारे में मेरे सीमित ज्ञान ने मुझे केवल यह विचार दिया कि उच्च दुनिया से आने वाली आत्माएं स्वर्ग और पृथ्वी के बीच सच्ची और प्रेमपूर्ण मध्यस्थ शक्तियां हैं। मैंने मान लिया कि वे सभी अच्छे थे।

"मेरी मानसिक शक्तियाँ, जैसे दूरदर्शिता और दूरदर्शिता, धीरे-धीरे विकसित हुईं। अंततः मुझे कई आध्यात्मिक उपहार प्राप्त हुए; लेकिन मुझे जल्द ही पता चला कि कभी-कभी मैं जो कुछ भी प्राप्त करता हूं उस पर भरोसा नहीं कर सकता। फिर भी मैंने आत्माओं से सवाल नहीं किया. मुझे लगा कि परिस्थितियाँ सही नहीं थीं, या शायद मेरे विचारों ने अनजाने में बिल्कुल सही संदेशों को अवरुद्ध कर दिया था। अभी भी विकास करते हुए, मैं एक ऐसे बिंदु पर पहुंच गया जहां ये अदृश्य व्यक्ति - मेरे आस-पास के लोगों के लिए अदृश्य - बातचीत करने, पढ़ने और गाने के लिए मेरे मुखर अंगों का उपयोग कर सकते थे।

ये आत्माएँ मेरी आँखों से देखती थीं, या मेरी आँखों से देखती थीं, मेरे कानों से सुनती थीं, और मेरे हाथ स्वचालित रूप से लेखन और संगीत दोनों के

लिए उपयोग किए जाते थे। "कभी-कभी मेरी दृष्टि बहुत स्पष्ट होती थी, और मैं अपने मस्तिष्क में और उसके माध्यम से, अपने आप से स्वतंत्र, असंख्य विचारों के प्रति सचेत रहता था। मैंने जो कुछ भी सोचा या किया वह एक भावना, या घबराहट, बेचैनी थी। जो मेरे सामान्य बेहतर स्व के लिए विदेशी है। "अलग-अलग नियंत्रणों ने मुझे अलग-अलग तरीकों से प्रभावित किया।

जो लोग अभी-अभी आध्यात्मिक जीवन में आए थे, वे अक्सर अपनी अनोखी आदतें मुझमें स्थानांतरित कर देते थे। कुछ ने मुझे घुटन, घुटन का अहसास कराया। एक आत्मा लड़की, जो मेरी अभिभावक नियंत्रण होने का दावा करती है, मेरी जीवन शक्ति का उपयोग केवल अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए कर रही थी, साथ ही अन्य लोग जो मुझे चोट पहुँचा रहे थे, मैं यह नहीं कहूंगा कि यह अज्ञानता या द्वेष से था। एक कारण था.

"एक और आत्मा, जो स्पष्ट रूप से मेरी बायीं ओर से आ रही थी, जिसे मेरी दिव्य दृष्टि से स्पष्ट रूप से पहचाना गया था, मेरी महत्वपूर्ण शक्तियों को तब तक अवशोषित करती रही जब तक कि मुझे नहीं लगा कि उसका पूरा पक्ष कमजोर हो गया है। पक्षाघात आसन्न लग रहा था. फिर भी एक और प्रभावशाली आत्मा, बहुत पवित्र होने का दावा करते हुए, सफेद कपड़े पहनकर मेरे पास आई, फिर भी उसने मेरी रीढ़ से कुछ सुनने की शक्ति प्राप्त कर ली। कमजोरी कष्टदायक हो गयी. इसने मेरे चारों ओर एक चुंबकीय जाल बिछा दिया, जिससे मैं लगभग स्तब्ध हो गया या बेहोश हो गया।

मैं अब एक दिव्यदर्शी बन गया था, जो उनके विचारों की धाराओं को समझने, उनकी गतिविधियों को देखने और उनके उद्देश्यों को समझने के प्रति संवेदनशील था। वे छायादार और काले रंग के थे, जो अपने पीछे गहरे, फिल्मी पदार्थ का निशान छोड़ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यह मेरे कमरे की दीवारों में व्याप्त हो गया है। उसने मुझे यह एहसास कराया कि मैं उसका नौकर था, कि मैं उसकी शक्ति की दीवारों के भीतर बंद था - एक ऐसी शक्ति जिसे मैं पूरी तरह से अस्वीकार नहीं कर सकता था।

उन्होंने मेरे मन में घृणित जुनून और पागलपन की धमकियां डाल दीं। अंत में, उन्होंने सकारात्मक रूप से कहा कि वे मुझे पागल कर देंगे। "उन्होंने मेरी इच्छा को छीनने और मेरे विवेक को नष्ट करने के लिए दिन-रात काम किया। स्वाभाविक रूप से कामुक या अनैतिक नहीं होने के कारण, वे मेरे दिमाग को गंभीरता से प्रभावित नहीं कर सके।

आदतें या मेरा नैतिक स्वभाव। वे मेरे साथ चर्च, संगीत समारोहों, थिएटरों में गए, दूसरों के श्रवण चुंबकत्व का आनंद लिया, कुछ उसी तरह जैसे हम फूलों की खुशबू में सांस लेते हैं। “तुमने देखा कि बड़े लड़के ने छोटे को लात मारी, मालिक ने नौकर को गरम करके आज्ञाकारी बना दिया; इसलिए उन्होंने मुझे शारीरिक और मानसिक रूप से नियंत्रित करने का अधिकार मांगते हुए मुझे प्रताड़ित किया।

उन्होंने मेरी दृष्टि को प्रभावित किया, मेरे चारों ओर धुंध जैसा पदार्थ फेंक दिया जो लगभग दम घुटने वाला और कभी-कभी अंधा कर देने वाला था। “ईसाई वैज्ञानिक, मानसिक वैज्ञानिक, विचारोत्तेजक चिकित्सक, मेरा कुछ भला नहीं कर सके। उनके प्रयास विफल रहे. तर्कों, सुझावों, नैतिक शुद्धता द्वारा अपने उत्पीड़कों का विरोध करके और अपने सिर पर एक चुंबकीय पास बनाकर और वातावरण को बदलकर, मैंने कुछ हद तक उन्हें मुझ पर अपना सम्मोहक प्रभाव डालने से रोका; लेकिन वे भयानक मानसिक पीड़ा और यातनापूर्ण दर्द पैदा करने के लिए बहुत आगे बढ़ गए।

इस दुखद मानसिक स्थिति में मैं बिल्कुल अकेला नहीं था। मेरे साथ यह व्यक्तित्व, स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन की लड़ाई थी। निःसंदेह, वहाँ अच्छी तरह से सहानुभूति रखने वाली संरक्षक आत्माएँ थीं, जो मेरी सहायता करने और मेरी रक्षा करने के लिए उत्सुक थीं; परन्तु उनके पास वह कपटी, सांसारिक, सम्मोहित करने वाली शक्ति नहीं थी जो इन धोखेबाज, स्वार्थी राक्षसों के पास थी। जैसा कि मैंने साबित किया, उनके इरादे घटिया और भयावह थे। उनकी शक्ति शारीरिक और सम्मोहक शक्ति थी।

एक आयरिश या इटालियन रेलवे मजदूर के पास एक कंडक्टर या डिवीजन अधीक्षक की तुलना में कुदाल और फावड़े पर कहीं अधिक शारीरिक शक्ति होती है। सम्मोहन की शक्ति खतरनाक है जब तक कि यह अच्छाई और ज्ञान द्वारा निर्देशित न हो। यहां इन भावुक आत्माओं को एक बड़ा फायदा है, और खासकर जब हम गरीब प्राणियों को खराब हवा में सांस लेना पड़ता है, गंदगी, सड़कों पर शोर और सार्वजनिक वाहनों पर भीड़ के उत्तेजित माहौल के सामने झुकना पड़ता है। ...

रहस्यवाद के विचारकों और विद्यार्थियों के लिए यह जानना दिलचस्प हो सकता है कि मुझे कैसे राहत मिली और मेरे शरीर और दिमाग का सामान्य स्वास्थ्य कैसे वापस आया। यह डॉ. जी.एस. लेन, बोस्टन के माध्यम से

संभव हुआ। वह एक उत्कृष्ट व्यक्ति हैं, जो आध्यात्मिक दिमागों, चिकित्सकों, सर्जनों और ओरिएंटल चिकित्सकों के एक उच्च और सुंदर समूह से घिरे हुए हैं। उनके स्वर्गीय मार्गदर्शकों के प्रभाव में आते ही मेरी स्थिति बदल गई। मेरे ऊपर से बोझिल वातावरण हट गया, मेरी प्राकृतिक शक्ति वापस आ गई, मेरी तर्क करने की शक्ति उज्जवल हो गई, मेरी इच्छाशक्ति बहाल हो गई और मेरी दृष्टि स्पष्ट हो गई।

जब डॉ. लेन मेरा इलाज कर रहे थे, मैंने उनके बायीं ओर एक शानदार भारतीय आत्मा को खड़ा देखा, और उनके चारों ओर और ऊपर चिकित्सकों का एक शानदार घेरा था, जो मेरे चारों ओर फैले अंधेरे, धुंधले, जहरीले वातावरण को हटा रहा था - जिसके बारे में मैं कह सकता हूं कि वह प्रक्षेपित था। इन घूमती हुई जीवन शक्ति द्वारा मेरे मस्तिष्क की गहराइयाँ पृथ्वी-आधारित राक्षसों को ख़त्म कर रही हैं।

अंत में, मैं चाहता हूं कि मेरी सकारात्मक गवाही बताई जाए, और आत्मा के संभोग, आत्मा के प्रभाव, आत्मा के नियंत्रण, आत्मा के वातावरण के साथ-साथ अंधेरे जुनून, बाहरी और आंतरिक, खतरनाक और पृथ्वी के जीवन स्तर पर मनोबल गिराने वाला। लेकिन उस सच्चाई के स्थायी गवाह बने रहें जो मानवता को चोट पहुँचाती है। निःसंदेह, इन सबका एक उजला पक्ष भी है, लेकिन सभी तथ्यों को अवश्य जानना चाहिए।

यदि किसी अजनबी देश में किसी यात्री के सामने कोई खाई हो तो उसे इसके बारे में चेतावनी देनी चाहिए। "शुद्ध और उचित आध्यात्मिकता न केवल एक महान सत्य है, बल्कि एक महान आशीर्वाद है, जब इसे भविष्य के अस्तित्व के प्रदर्शन के रूप में और हमारे पुनर्जीवित रिश्तेदारों और दोस्तों की ओर से एक सांत्वना, सहानुभूति के रूप में उपयोग किया जाता है, जो कोमलता के सुंदर संदेश लाता है और प्यारी यादें.

यदि इतिहास पर विश्वास किया जाए तो जुनून सभी देशों और सभी युगों में मौजूद था। ऐसा पहले भी हुआ था. यह वर्तमान में प्रचलित है; बहुत से लोग जुनूनी हैं, बीमार हैं और कारण एजेंसियों को नहीं जानते हैं। हमारे वक्ताओं और लेखकों को सत्य की तलवार तब तक नहीं छोड़नी चाहिए जब तक कि लोग मानसिक मामलों पर बेहतर शिक्षित न हो जाएं, और भूत-प्रेत वाले लोग अंधेरे की बुरी, पृथ्वी से बंधी आत्माओं के बंधन से मुक्त न हो जाएं। (शिकागो, तृतीय। श्रीमती एच-) उपरोक्त कुछ हद तक लंबा संचार, एक बहुत ही बुद्धिमान महिला से, जिसे मुझे व्यक्तिगत रूप

से जानने का सौभाग्य मिला है, उसकी पांडुलिपि से लगभग शब्दशः पुन: प्रस्तुत किया गया है।

वह एक अच्छी लेखिका हैं. जहां संक्षिप्तीकरण किया गया है, या शब्दों को संशोधित किया गया है, वहां तथ्य और विचार को सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया है। बोस्टन के डॉ. लेन, मेन के डॉ. किमबॉल, मॉर्गन हिल, कैलिफोर्निया की श्रीमती एम. बर्गेन ब्राउन, शिकागो के डॉ. येट्स और कई अन्य संवेदनशील मध्यस्थ हैं, जो इन प्रभावों को दूर करने में लगे हुए हैं, एक की प्रतिकूल संस्थाएँ भ्रामक, स्वार्थी प्रणाली, और ये बुरी आत्माओं को प्रकट होने के लिए बेहतर परिस्थितियों में रखने की आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न हैं। पूर्ण और अंतहीन बुराई का कोई सवाल ही नहीं है।

कोई भी, यहाँ या उसके बाद के जीवन में, पूरी तरह से भ्रष्ट नहीं है; सबसे बुरे लोगों में कुछ चमकदार गुण होते हैं। ईश्वर की छवि अविनाशी है. दिव्य हीरे की चिंगारी, हालांकि मंद और गहराई से दबी हुई है, प्रेरणा की उज्ज्वल आग की प्रतीक्षा में, भीतर चमक रही है। पॉलीन सत्य को ध्यान में रखते हुए कि एक आदमी जो बोता है, मुझे लगता है कि उसे शरीर में रहते हुए शुद्ध, उच्च उद्देश्य, मसीह जैसे जीवन की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए।

अब बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का प्रचुर और पर्याप्त संचय होना चाहिए। यह अविनाशी है, और इसमें से एक प्रवाहमान, महत्वपूर्ण, आध्यात्मिक वातावरण निकलता है जो अच्छाई को आकर्षित करता है। यह स्पष्ट रूप से दिखाने के लिए मेरे महान साहित्यिक प्रयासों में से एक रहा है कि हम, आज जीवित लोग, नैतिक अभिनेता हैं - जिम्मेदार प्राणी जो अपने भीतर एक अदृश्य वातावरण बनाते हैं और घेरते हैं, गहरे भूरे, सुस्त या सुनहरे, या सफेद और स्वर्गदूतों के वस्त्रों की तरह चमकते हैं। .

दृश्य और अदृश्य दोनों संसार इस अलौकिक वातावरण के माध्यम से कंपन करते हैं। यह एक ऐसा वातावरण है जो शुद्ध, सुंदर और पवित्र के लिए स्पष्ट, उज्ज्वल और सकारात्मक है, शांति और खुशी और अच्छे निर्णय और व्यक्तिगत शक्ति लाता है; लेकिन दूसरी ओर यदि यह अशुद्ध, स्वार्थी और दागी है, तो यह अशांति, चिड़चिड़ापन और नैतिक कमजोरी की फसल पैदा करता है जो पाताल लोक के जुनूनी निवासियों के लिए प्रवेश द्वार खोलता है।

इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि सभी जुनून आसपास की अदृश्य बुद्धि से नहीं होते हैं। एक प्रकार का विचार जुनून असंतुलित, कमजोर संगठन के कारण होता है। हर चीज़ वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक रूप से इन व्यक्तियों को प्रभावित करती है।

वे कांपते ऐस्पन के समान हैं। वे आंशिक रूप से अपनी अव्यवस्थित कल्पना के शिकार हैं। वे भावुक, संदेहवादी, निराशावादी, सनसनीखेज, रुग्णता के हाशिये को छूने वाले, अनसुने को सुनने वाले और वास्तविक वास्तविकताओं के बजाय काल्पनिक चित्रात्मक प्रस्तुतियों को देखने वाले हैं।

इस तरह के जुनून का इलाज आत्म-सुझाव, इच्छा शक्ति और वैज्ञानिक रूप से प्रशासित सम्मोहन चिकित्सा द्वारा किया जाता है। किसी अस्वस्थ या नैतिक रूप से अशुद्ध व्यक्ति को सम्मोहित करने का प्रयास कभी नहीं करना चाहिए। ये बहुत खतरनाक होगा.

लगभग सभी मामलों में उपचार सम्मोहन विधि से बेहतर होता है। मैंने दोनों को सफलतापूर्वक आजमाया है, और दिव्य बुद्धि की सहायता से, महत्वपूर्ण शक्ति की एक बैटरी बनाकर, मैंने जुनूनी लोगों को विचुंबकित किया है, उन्हें जुनूनी गुलामी से मुक्त किया है, उन्हें सही दिमाग दिया है, उनके स्वास्थ्य को बहाल किया है, इस प्रकार फूल बोए हैं शांति, समृद्धि और खुशहाली की, जहां खून बहते पैरों में कांटे चुभे थे।

अध्याय XX.

दुष्ट आत्माओं द्वारा प्रेरित मनोवैज्ञानिक अपराध।

यह कथन कि "जैसा आकर्षित करता है" तर्कशास्त्रियों के सार्वभौमिक डोमेन से संबंधित नहीं है। इसकी निश्चित सीमाएँ हैं। बिजली के दो सकारात्मक ध्रुव "पसंद" शब्द के अंतर्गत आते हैं, और फिर भी वे जल्दी से

विकर्षित हो जाते हैं। सभी स्वर्गों के अंतर्गत मनुष्य एक ही मूल के हैं, एक ही प्रजाति के हैं, और स्वाभाविक रूप से खुशी के समान प्रेम से संपन्न हैं; और फिर भी कई देशों में नापसंदगी, और भयानक, क्रूर युद्ध हुए हैं, या हो रहे हैं, शक्तिशाली लोग कमजोरों पर अत्याचार कर रहे हैं, शक्तिशाली लोग कमजोरों को उनकी इच्छा के विरुद्ध मजबूर कर रहे हैं।

निचले क्षेत्रों में, जैसे पृथ्वी, शक्ति सही बनाती है। इच्छाशक्ति शक्तिशाली है. कुछ समय के लिए बुराई हावी हो सकती है। भीड़ अस्थायी तौर पर शासन कर सकती है. नरक अहंकारी और द्वेषपूर्ण होते हैं। एक बार ताज पहनाया गया प्रमुख, शक्तिशाली संप्रभु, राजसी सामाजिक शासक, पुरस्कार की अंगूठी का ताकतवर, अपने शारीरिक वस्त्र उतार दिए जाने के बाद भी अपना चलन जारी रखता है।

आध्यात्मिक गुरुत्व का नियम उन्हें हमारे दैनिक रोजगार में लाता है
और पर्यावरण. वे अतिसंवेदनशील लोगों को सुझाव देते हैं, सम्मोहित करते हैं, नियंत्रित करते हैं और उनके साथ जबरदस्ती करते हैं, चाहे यह नैतिक व्यवस्था के लिए कितना भी विध्वंसक क्यों न हो, वे निस्संदेह उन्हें आपराधिक कृत्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। रिकॉर्ड पर ऐसे कई स्पष्ट, प्रमाणित मामले हैं। संभवतः इस बात से इंकार किया जा सकता है. हालाँकि, नकारात्मकता सस्ती है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

यह पुष्टिकरण है, जो प्रदर्शनों और अनुभवों से जुड़ा है जो बताता है - और समझाने के लिए कहता है। मानसिक रूप से अशिक्षित लोगों द्वारा कभी-कभी नरम उपशामक बात सामने रखी जाती है, कि एक बुरी आत्मा किसी को तब तक नुकसान नहीं पहुंचा सकती जब तक कि अंदर सक्रिय या छिपी हुई बुराई न हो जो बाहर से बुराई को आकर्षित करती हो, केवल गलत नहीं है। और अतार्किक, नहीं, सर्वथा मूर्खतापूर्ण। "हम जो जानते हैं उसके अलावा हम कैसे तर्क कर सकते हैं?

सुकरात ने पूछा. बच्चे को कुल्हाड़ी से मारने वाला वहशी वहशी इस सिद्धांत को झूठा साबित करता है। जहां एक गरीब विधवा को भोजन और कुछ सिक्के देने वाले दयालु व्यक्ति को डाकू अपने वश में कर लेता है और उसे लूट लेता है, क्या यह इस दयालु सुधारक के स्वभाव में मौजूद बुराई के कारण है? ऐसी धारणाओं को नष्ट कर देना चाहिए! यह सुझाव घृणित है! यदि उपरोक्त चीजें नश्वर जीवन में, कारण की समानता और कानून के अनुरूप होने के माध्यम से, या उच्च कानून के उल्लंघन के माध्यम से

घटित होती हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से आत्मा के जीवन में घटित हो सकती हैं।

आत्माएं शरीर के बाहर आत्माओं को प्रभावित करती हैं और आत्माएं शरीर के अंदर होती हैं। यदि आत्माएं ठीक हो सकती हैं, तो वे बीमार भी हो सकती हैं। यदि वह आशीर्वाद दे सकती है, तो वह शाप भी दे सकती है - वह मार भी सकती है। न्यूयॉर्क के ऐलिस हॉफमैन के प्रसिद्ध मामले पर विचार करें। वह एक उज्ज्वल, खुश लड़की थी, लेकिन उसने एक ऐसे युवक से शादी करने से इनकार कर दिया जो उसका हाथ और दिल चाहता था। पहले तो उन्होंने उसका हौसला बढ़ाया.

फिर उसकी घृणित, अनैतिक आदतों के बारे में जानकर उसने उससे मिलने से इनकार कर दिया। इसके तुरंत बाद नशे में धुत्त होकर वह कार से गिर गया और मारा गया। इसके कुछ महीनों के बाद वह घबरा गई, बेचैन हो गई, उदास हो गई और अंततः उसने घोषणा की कि उसने इस युवक की आत्मा देखी है। वह उसके कदमों के ऊपर तब तक घूमता रहा जब तक कि उसकी नसें तनाव दूर करने के लिए उत्सुक नहीं हो गईं। उन्होंने उसे देखा भी और सुना भी. उसने उसे वे बातें बताईं जो वह स्वयं नहीं जानता था।

उन्होंने कई तरीकों से अपनी पहचान पूरी तरह प्रदर्शित की। उसने उससे यह वादा करने पर जोर दिया कि जब वह उसकी आत्मा के जीवन स्तर पर आएगी तो वह उससे शादी करेगा। उसने इनकार कर दिया और उसे दूर भगाने की कोशिश की। एक प्रमुख दिव्यदर्शी माध्यम ने उसे चारों ओर देखा - उसे उसके करीब आते देखा - उसे उसे आकर्षित करने की कोशिश करते देखा। पारिवारिक चिकित्सक ने सुझाव दिया कि यह "मतिभ्रम" हो सकता है। उन्होंने इस विचार को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि उनका दिमाग डॉक्टर या उनके कुछ दूर के दोस्तों की तरह ही स्पष्ट और संतुलित है।

यह आविष्ट आत्मा उसे नियंत्रित करने और वादे करने में विफल रही, क्रोधित हो गई, अश्लील बातें करने लगी, उसे कोसने लगी, धमकी देने लगी। डाक्टरों ने उसे पागल घोषित कर दिया। उसके दोस्तों ने उसे शरण में ले जाने का विरोध किया, इस बीच उसने तर्क दिया कि यह हैरी का भूत था जिसने उसे यह सब करने के लिए मजबूर किया, और जिसने उसे कभी-कभी तीन आदमियों की ताकत दी।

अपने एक और स्पष्ट क्षण में, उसने एक बहन से कहा, "मैं ठीक हो जाऊंगी। मैं पागल नहीं हूं। मैं खुद को ये भयानक चीजें करने से नहीं रोक सकती। मैं कभी-कभी हवा में सभी प्रकार की आत्माओं को देख सकती हूं, और वहाँ एक महान भारतीय है जिसे मेरी परी माँ लेकर आई है और वह मेरे और प्रेतवाधित हैरी के बीच आता है, और उसके पास एक महान युद्ध क्लब है, लेकिन वह अपनी पंख वाली पोशाक के बाहर बदसूरत दिखता है, जो मैं जानता था और एक बार सोचा था उससे कहीं अधिक उज्ज्वल प्यार किया।

मै ठीक रहूंगी। कल रात एक दर्जन भारतीय अपनी माताओं के साथ आये। ऐसा लगता है मानो सफेद धुंध छाई हुई है. तब से मैं बेहतर महसूस कर रहा हूं, - अपने बारे में और भी बेहतर महसूस कर रहा हूं। और माँ ने कहा कि ये उज्ज्वल आत्माएँ हैरी को अपने साथ अपने देश ले गई हैं, और उसे स्कूल में डालने जा रही हैं। आप देखिए, उन्होंने मुझे पागलखाने में नहीं रखा। मैं ठीक हो जाऊंगा और अब बेहतर हूं। वह भारी बादल पूरी तरह से गायब हो गया है।

यह परिवार अध्यात्म से अनभिज्ञ था। कुछ ही हफ्तों में युवती लगभग ठीक हो गई थी, हालाँकि वह थोड़ी घबराई हुई थी और बहुत संवेदनशील थी। अभी भी दिव्यदृष्टि होने के कारण, वह आत्माओं की उपस्थिति देखती है, और न केवल ठीक हो जाती है, बल्कि खुश भी होती है। यह संक्षिप्त विवरण मुझे उनकी बहन से मिला, जो उनसे कई वर्ष बड़ी हैं और बहुत सम्मानित हैं, जो आध्यात्मिक दर्शन का पुरजोर समर्थन करती हैं।

यहां नर्क के एक समूह द्वारा नैप के चौंकाने वाले, जानलेवा आचरण का एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है। यह आदमी, जो आम सहमति से एक राक्षस था, ने पाँच महिलाओं की हत्या करने की बात कबूल की। हत्या का उसका पसंदीदा तरीका गला घोंटना था। जब उसे गिरफ्तार किया गया तो उसे अपने अपराध बताने में आनंद आया।

28 फरवरी, 1903 को हैमिल्टन, ओहियो में एक रिपोर्टर को उनके कथित शब्द थे: "मैं हमेशा पीछे से मारता हूं," वह अपने दांतों के बीच कहते हैं। "मैं उन्हें अपने सामने लाता हूं। फिर मैं उन्हें गर्दन से पकड़ता हूं, पीठ पर अपना घुटना रखता हूं और उन्हें झुकाता हूं। वे संघर्ष करते हैं, लेकिन लंबे समय तक नहीं। वे मेरे चेहरे को देखते हैं, लेकिन उनमें कोई दया नहीं दिखती "मैं उन्हें मार देता हूं और बस इतना ही। मुझे कैसे पता चलेगा कि वे कब मर चुके हैं? मुझे नहीं पता।

जब वे सांस लेना बंद कर देते हैं, तो मेरा दम घुटना बंद हो जाता है। मैं दिल की आवाज़ सुनता हूं, और अगर यह धड़कना बंद कर दे तो मैं मर जाऊंगा। उनमें से कोई भी कभी दया की याचना नहीं करता। वे ऐसा नहीं कर सकते थे, और इसका कोई फायदा नहीं होता। मैं तब तक नहीं रुक सका जब तक वे मर नहीं गए। उन्हें मारने का आपका मकसद क्या था! यह पैसा नहीं हो सकता, क्योंकि उसके पास कुछ भी नहीं था।

नहीं, मैं किसी को नहीं बता सकता कि मैंने उन्हें क्यों मारा। मेरे पीछे कुछ था जो मुझे आगे बढ़ा रहा था, और मैं उस भावना का विरोध नहीं कर सका। इसने मुझे आगे बढ़ाया और मैंने उन्हें मार डाला। हाँ, इसके ख़त्म होने के बाद मुझे अच्छा महसूस हुआ। यह जल्दी से हुआ. जब काम पूरा हो गया, तो मुझे कोई पछतावा नहीं था। मुझे यह करना ही पड़ा।

मुझे महिलाओं से नफरत थी. मुझे उन्हें मारने के लिए मजबूर किया गया. मैं शक्ति का विरोध नहीं कर सका।" यह दुखी आदमी किस हद तक मोहग्रस्त था, किस हद तक जिम्मेदार था, इसका निर्णय हर किसी को स्वयं करना होगा। उसने एक दर्जन से अधिक बार घोषणा की कि जिन लोगों की उसने हत्या की उनके प्रति उसके मन में कोई दुर्भावना नहीं है। उसने उन्हें मार डाला, उसने कहा, "क्योंकि उसे ऐसा करना पड़ा," "क्योंकि किसी शक्ति ने उसे खूनी काम करने के लिए मजबूर किया"। “क्या यह सब संभव है! क्या अविकसित आत्माओं के लिए इतना जुनूनी होना, अपने आध्यात्मिक निवास से इतना अपराध भड़काना संभव है!

इस संसार में यह निश्चित रूप से संभव है। हमारे बीच ऐसे लोग हैं जो पक्षियों को मारते हैं, जानवरों को मारते हैं, द्वंद्वयुद्ध में एक-दूसरे को मारते हैं, युद्ध में अपने साथियों को मारते हैं, जानबूझकर उन्हें गोली मारते हैं, उनके छटपटाते शरीर पर पैर रखते हैं और उनकी मरती हुई कराहों पर खुशी मनाते हैं। मुझे यह पसंद है।

इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है - विक्षिप्त बर्बर लोगों द्वारा अपने पीड़ितों को नोचने, उन्हें प्रताड़ित करने, उन्हें जलाने के अनगिनत उदाहरण। ये मानव राक्षस मरें.

क्या उनका मर जाना ही बेहतर है! क्या किसी झूठे व्यक्ति का ओवरकोट उतारकर उसे सच्चा बनाना संभव है? क्या मृत्युदंड उन लोगों को आदर्श बनाता है जिन्हें फाँसी दी जाती है या बिजली के झटके दिए जाते हैं? यदि

इस दुनिया में अपराध संभव और निश्चित है, तो भविष्य की दुनिया में क्यों नहीं? यथार्थ के दायरे में कोई भविष्य की दुनिया नहीं है। एक ही दुनिया है जिसके दो-अनेक पहलू हैं।

अब सब कुछ ईश्वर के साथ एक अनंत काल तक है। अस्तित्व के दूसरे चरण में स्थानांतरित होकर, अपनी पहचान बनाए रखते हुए, अंधेरे क्षेत्रों के बुरे स्वभाव वाले, भावुक, धोखेबाज निवासी स्वाभाविक रूप से अपने स्वार्थी, बुरे काम को बाद के जीवन में जारी रखेंगे, जो यहां और अभी समय और स्थान में है। डाइका की तरह, वे चोट पहुंचाने के मजे के लिए चोट पहुंचाएंगे। वे केवल विनाश के राक्षस हैं, जो ईर्ष्या, जुनून, छल और द्वेष से जल रहे हैं।

लेकिन अच्छी आत्माएं और देवदूत इन भ्रष्ट आत्माओं के सम्मोहक जुनून को क्यों नहीं रोकते! एक उचित प्रश्न! सत्ता से लैस सीनेटर, कांग्रेसी, मार्शल और पुलिसकर्मी इस दुनिया में नशे, जुआ, डकैती और हत्या को क्यों नहीं रोकते! क्या ऐसा कहा जाता है, "वे वही करते हैं जो वे कर सकते हैं!" यही तो बात है! अच्छी आत्माएँ और दया के अच्छे देवदूत वही करते हैं जो वे कर सकते हैं। वे पूर्णतः सर्वशक्तिमान नहीं हैं।

उसकी शक्ति अनन्त नहीं है. वे कानून द्वारा सीमित हैं. वे अपनी परिष्कार, नैतिक कानून, नैतिक कर्तव्य और धार्मिक जिम्मेदारी के अनुसार यथासंभव सेवा करते हैं। लीवर को आधार की आवश्यकता होती है। जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है उसे मदद के लिए पुकारना चाहिए। जब उड़ाऊ पुत्र ने खुद को संतुष्ट किया कि सूअरों द्वारा अस्वीकार किया गया भूसा खाना सबसे स्वादिष्ट, स्वास्थ्यप्रद भोजन नहीं है, तो वह उठा, "अपने होश में आया" और स्वर्गदूत द्वारा निर्देशित होकर अपने पिता के पास लौट आया।

निम्नलिखित विशिष्ट कथन द प्रोग्रेसिव थिंकर, शिकागो में छपा: “ऐसे मामले हैं जहां किसी पंथ के जुनूनी प्रभावों से छुटकारा पाना बहुत मुश्किल है। मैं उनमें से एक से नेब्रास्का में मिला। चास डेविस से बात करते समय एक युवक आया और सम्मोहन द्वारा उसका उपचार किया गया। जब इलाज चल रहा था, मैंने उस युवक के पास एक काले रंग का आदमी देखा, जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वह उन मनहूस, दुर्भाग्यपूर्ण प्राणियों में से एक था, एक आदमी से भी ज्यादा एक जानवर, जिसे कुछ महीनों के लिए पहले ही पीट-पीट कर मार डाला गया था और जला दिया गया था। टेक्सास में मौत.

लड़के को मिर्गी ने ज़मीन पर गिरा दिया और जैसे ही दौरे ख़त्म हुए, उसने हमेशा अपराध की ओर झुकाव दिखाया। वह बदला लेने के लिए तैयार लग रहा था. इससे पता चलता है कि प्राणियों के उस वर्ग को उनकी वासनापूर्ण प्रकृति को जलाने से पहले आत्मा-दुनिया में भेजना मूर्खता थी। मुझे बहुत कम उम्मीद है कि दयालुता से ऐसी आत्माओं तक पहुंचा जा सकता है, फिर भी प्रयास करना अच्छा होगा, क्योंकि यदि आप सफल होते हैं तो आप किसी अन्य व्यक्ति को बचा सकते हैं, जिसे एक व्यक्ति द्वारा निष्कासित किए जाने के बाद उसके द्वारा पीड़ा दी जा रही है। यह संभव है

मेरा मानना है कि इस लड़के को अंततः राहत मिल गई, या आत्मा उसे ले गई। मैं ऐसे कई पागल लोगों को जानता हूं जो केवल जुनूनी थे, और अध्यात्मवाद का एक उद्देश्य न केवल इन गरीब पीड़ितों की राहत होना चाहिए, बल्कि जुनूनी आत्माओं का उद्धार भी होना चाहिए। जीवन के अधिक व्यक्तिपरक, अदृश्य पक्ष के ये अज्ञानी, सम्मोहित करने वाले संचालक अक्सर स्मृति को इतना सुस्त कर देते हैं, व्यक्तित्व को इतना धूमिल कर देते हैं कि व्यक्तित्व अस्थायी रूप से खो जाता है। इस तरह से जुनूनी लोग भटकते रहते हैं, उन्हें पता नहीं होता कि वे कहां हैं।

आत्म-ज्ञान का कार्य और स्मृति की गुणवत्ता, कुछ समय के लिए, पूरी तरह से ग्रहण हो गई है। उदाहरण के लिए: श्रीमती जी, विल्केस बर्रे की एक धनी विधवा। वालेस ने "पिछले नवंबर में दोपहर की खरीदारी के बाद कुछ दोस्तों को नॉर्थम्प्टन स्ट्रीट पर छोड़ दिया और चार ब्लॉक दूर अपने घर चली गई। उसने अच्छे कपड़े पहने थे, उसकी जेब में 10 डॉलर थे और वह खुश और प्रसन्न दिख रही थी।" रह रहा था।

घर लौटते समय उस पर एक अजीब सा प्रभाव पड़ा। यह इतना भयंकर था कि उसके बाद उसे कुछ भी याद नहीं रहा कि उसने क्या किया। छह रातों के बाद वह एक अजीब शहर की सड़कों पर भटक रही थी, दरिद्र और भूखी, उसे नहीं पता था कि वह कौन थी और न ही वह वहां क्यों थी। वह केवल इतना जानता था कि उसे आश्रय की आवश्यकता है। न तो उसे अतीत की कोई स्मृति थी और न ही उसके मन में वर्तमान का कोई बोध था। यह ऐसा था मानो मृतक बिना किसी स्मृति के जीवित हो गया हो, जैसे एक पूरी तरह से विकसित महिला एक नई दुनिया में जन्म ले रही हो।

यहाँ उसका कथन है, जितना उसे याद है: “मैं केवल यह कहकर अपनी अजीब स्मृति हानि को समझा सकती हूँ कि एक वर्ष या उससे अधिक

समय से मैं अपने प्यारे पति की मृत्यु का शोक मना रही थी। मैं उसकी संपत्ति के निपटान को लेकर बहुत चिंतित था। मुझे अब याद है कि जब मैं 21 नवंबर की दोपहर को खरीदारी के लिए बाहर गया था, तो मैं बहुत अच्छा और स्वस्थ महसूस कर रहा था। घर लौटते समय मुझे दो रेलवे डिपो से होकर गुजरना पड़ा और जब मेरी याददाश्त चली गई, तो मैं शायद इनमें से एक स्टेशन पर गया और पूर्व की ओर जाने वाला टिकट खरीदा।

जब पाँच दिन का खाली समय समाप्त हुआ, तो मैंने स्वयं को एक अजनबी शहर की सड़कों पर चलते हुए पाया। तब से मुझे पता चला कि यह नेवार्क था: मुझे नहीं पता था कि मैं वहां क्यों था। मुझे यह अजीब नहीं लगा. न ही मुझे पता था कि मेरे पास कभी कोई घर था। दरअसल, मैंने पूछताछ करने के बारे में नहीं सोचा। मुझे लगा कि मेरे पास यह जानने की बुद्धि नहीं है कि मुझे जीना चाहिए और जीने के लिए मुझे काम करना चाहिए।

रिमझिम बारिश हो रही थी और सड़कें पिघली हुई बर्फ और कीचड़ से भरी हुई थीं। यह बिल्कुल स्वाभाविक लग रहा था कि मुझे सड़कों पर घूमना चाहिए। मैंने नहीं सोचा था कि मैं वहां जाऊंगा. मैं जानता था कि मेरे और अतीत के बीच एक भयानक खाई थी। मैं नामों या परिस्थितियों का मूल्य नहीं जानता था। "मैं अपने नए जीवन की अज्ञात यादों को उस समय से जोड़ता हूं जब मैंने खुद को नेवार्क की बरसाती सड़कों पर चलते हुए पाया था।

मैं इतना थक गया था कि मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था, लेकिन कोई मेरी ओर ध्यान नहीं दे रहा था। मंद और दूरदर्शी तरीके से मेरे मन में सहायता के लिए किसी व्यक्ति से आवेदन करने का विचार आया होगा। मुझे याद है कि मैंने एक ऐसे परिवार के लिए आवेदन किया था जो एक बड़े चर्च के पास रहता था। वे बहुत दयालु थे, लेकिन जब उन्होंने मुझसे मेरा नाम पूछा और मैं जवाब नहीं दे सका, तो उन्होंने मुझे दूर कर दिया। फिर भी मुझे ये अजीब नहीं लगा कि मेरा नाम वहां नहीं होना चाहिए. मैं अपने मन से कुछ-कुछ बच्चे जैसा रहा होऊंगा।

हालाँकि, यह सौभाग्य की बात थी कि मुझे घर के कामों के बारे में इतना याद था कि मैं उन्हें बाद में बता सकी। उस बरसात के दिन की शाम, भाग्य ने मेरे कदम सुमनेर स्ट्रीट की ओर बढ़ा दिये। बाद में मुझे बताया गया कि यह थैंक्सगिविंग ईव था। मैंने दो-तीन घरों के दरवाजे बजाए, जहां भोजन

और आश्रय देने से इनकार कर दिया गया। आखिरी जगह जिसके लिए मैंने आवेदन किया था वह 629 सुमनेर स्ट्रीट थी, जो मिस्टर और मिसेज विलियम स्टर्न का घर था।

मेरी दयनीय उपस्थिति में अवश्य ही कुछ ऐसा रहा होगा जिससे श्रीमती स्टर्न को दया आ गई होगी। किसी भी तरह, उन्होंने मुझे अंदर बुलाया और भोजन और आश्रय दिया, जिसके लिए मैंने काम से भुगतान करने की पेशकश की। उन्होंने कहा, "हम इसके बारे में सुबह बात करेंगे।" "अगले दिन, इस तथ्य के बावजूद कि मुझे अपना नाम याद नहीं आ रहा था, श्रीमती स्टर्न ने मुझे घर के काम में नियोजित करने की पेशकश की, और मैंने गहरी कृतज्ञता के साथ प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि और क्या करना है। कई दिनों तक और मैंने श्रीमती स्टर्न के नौकर के रूप में कई सप्ताह, और शायद महीनों तक काम किया।

एक बार, एक लंबे, कठिन दिन के काम के बाद, मेरे बच्चे की किसी भी स्मृति की अजीब अनुपस्थिति - मुझे एहसास हुआ कि मेरा कोई अतीत नहीं था। मैंने अपने चारों ओर अन्य महिलाओं को बच्चों के साथ, अन्य महिलाओं को खुशहाल घरों में, अन्य महिलाओं को पतियों के साथ देखा। मेरा बचपन, मेरा घर, मेरे पति कहाँ थे? इन विचारों से मुझे बड़ी बेचैनी महसूस हुई। मुझे अपना जीवन अजीब और रहस्यमय लगने लगा। मुझे एहसास होने लगा कि नवंबर की उस उदास सुबह में मुझे न्यूआर्क की बरसाती सड़कों के अलावा कुछ भी याद नहीं है।

निरंतर चिंतन के माध्यम से, मुझे धीरे-धीरे एहसास हुआ कि मैं एक पेशेवर नौकर नहीं था, कि मैं एक और जीवन जी चुका था, कि मैं तब कोई और था, कि बच्चे कहीं मेरा इंतजार कर रहे थे, और यह कि मेरे रिश्तेदार और दोस्त और एक घर था। “धीरे-धीरे यह एहसास मुझ पर हावी होने लगा। इसने मुझे अपने काम में इतना व्यस्त कर दिया कि श्रीमती स्टर्न ने इस पर ध्यान दिया और मुझसे पूछा कि क्या मैं बीमार हूं।

मेरी पुनर्जीवित स्मृति नये उगे पौधों की कोपलों जैसी लग रही थी। लेकिन वे लगातार बढ़ रहे थे, और हर दिन मैं एक भयानक रहस्य के समाधान के करीब महसूस कर रहा था। मेरा मानना है कि, सबसे पहले, मुझे अपने बचपन के दृश्य याद आए - पुराना घर, स्कूल के आसपास के फूल, मेरे स्कूल के दिन और मेरे स्कूल के दोस्त। लेकिन फिर भी मुझे अपना नाम याद नहीं आ रहा था. जैसे-जैसे समय बीतता गया, श्रीमती स्टर्न ने देखा कि मैं मानसिक रूप से अधिक व्यस्त होता जा रहा था। अब मुझे पता है

कि मैं मानसिक रूप से अपने पिछले जन्मों की यात्रा कर रहा था और अंततः मैं अपने पूरे इतिहास का पता लगाने में सफल हो जाऊंगा।

एक दिन रसोई में काम करते समय मेरे मन में यह बात कौंधी, बादल छट गया। एक आवाज़ मुझसे कह रही थी, 'आप श्रीमती जॉर्ज वालेस हैं, और आपका घर विल्केसबार में है।' "मेरी याददाश्त स्पष्ट हो गई, जैसे कि सूरज की रोशनी को अंदर आने देने के लिए एक अंधेरा पर्दा हटा दिया गया हो। मुझे याद है कि मुझे अपने बच्चों की याद आई और मैं खुशी से चिल्लाया। श्रीमती स्टर्न मेरे पास आईं। मैंने कहा, "मैं जानता हूं कि मैं कौन हूं। मैं विल्केसबर में रहता हूं और वहां मेरे छह बच्चे हैं। मुझे तुरंत उनके पास जाना चाहिए।"

मैं इतना उत्साहित था कि मैं अपना काम नहीं कर सका. श्रीमती स्टर्न मेरे प्रति बहुत दयालु थीं। मैं पहले तो डर गया था. मुझे नहीं पता था कि दुनिया मेरे बारे में क्या सोचेगी, क्योंकि मैं नहीं बता सकता कि अपनी अजीब हालत में मैं क्या कर सकता हूं। लेकिन श्रीमती स्टर्न ने मुझे सलाह दी और मुझे शांत किया और अंततः मेरी बहन, श्रीमती केट क्रॉस्ली, जो सायरे, पेनसिल्वेनिया में रहती हैं, को एक संदेश भेजा।

यह पहला कदम था जिसने मुझे अपने परिवार से दोबारा जोड़ा। "कुछ दिनों बाद दरवाजे की घंटी बजी और मेरी बहन केट और मेरी सबसे बड़ी बेटी एलिजाबेथ अंदर आईं। शब्दों में मेरी भावनाओं का वर्णन नहीं किया जा सकता। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कब्र से बाहर आ गया हूं। अगले दिन हम अपनी बहन के घर गए। सायरे, जहां मैं अपने बाकी बच्चों से मिला। तब मुझे पता चला कि मेरे लापता होने के कई हफ्तों के दुःख के बाद विल्केसबैरे में मेरा घर किराए पर दे दिया गया था।

मेरे बच्चों को सायरे में रिश्तेदारों के पास ले जाया गया, क्योंकि आम धारणा यह थी कि मैं मर चुका था। "मैं अपने बच्चों के साथ तब तक सेईर में रहूंगी जब तक मैं पूरी तरह से ठीक और स्वस्थ नहीं हो जाती। मैं यह नहीं बता सकती कि मैंने अपनी याददाश्त क्यों खो दी है। मेरे बच्चों का मानना है कि यह मेरे पति की मृत्यु के दुःख के कारण है। ऐसा ही हुआ।" इस भटकती माँ की बेटी, मिस एलिज़ाबेथ वालेस, प्रेस में कहती है: "हालाँकि जब मेरी माँ पाँच महीने पहले घर से निकली थी, तब उसका कोई पता नहीं था,

लेकिन मैंने एक पल के लिए भी उसे दोबारा देखने की उम्मीद नहीं छोड़ी। हफ्तों तक मैंने हर जगह तलाश की, और तब भी जब पुलिस ने उम्मीद छोड़ दी और मुझे बताया कि वे लापता हैं। मैंने उनसे बार-बार कहा, तुम जो चाहो सोच सकते हो, लेकिन माँ मरी नहीं हैं। मुझे लगता है कि वह जीवित है और हमारे पास वापस आएगी।' मैं नहीं जानता कि कब और कैसे, लेकिन मुझे चिंता नहीं करनी चाहिए। ,

मेरे विश्वास को सत्यापित करने में पाँच महीने लग गए, और जब अगले दिन मैंने अपनी लंबे समय से अनुपस्थित माँ को अपनी बाहों में लिया, तो मैंने जो पहले शब्द कहे, वे थे, 41 मुझे पता था कि मैं तुम्हें ढूंढ लूँगा, माँ। मैंने हमेशा सोचा कि आप जीवित और स्वस्थ हैं।' " यह आत्मा सम्मोहन का एक स्पष्ट मामला था - आत्मा का सम्मोहन, जहां जुनून कब्जे के साथ विलीन हो जाता है।

अक्सर अपने सम्मोहन प्रयोगों में मैंने अपने विषय का नाम अस्थायी रूप से मिटा दिया है, जो धीरे-धीरे वापस आ जाएगा जब तक कि मैं सकारात्मक रूप से इसके विपरीत की इच्छा न कर लूं। कई बार मैंने अपने सम्मोहन विषय के नाम को किसी अन्य नाम से बदल दिया, जिससे मुझे बहुत भ्रम और दर्दनाक जलन हुई, जब तक कि मैंने सम्मोहन मंत्र को हटाकर सही नाम नहीं रख दिया।

इतिहास में श्रीमती वालेस के मामले के समान कई मामले दर्ज हैं - आत्मा सम्मोहन के मामले, स्मृति की हानि, व्यक्तित्व की हानि, दूसरे व्यक्तित्व का प्रतिस्थापन, त्रि-व्यक्तित्व और सात गुना व्यक्तित्व, मध्यम नियंत्रण और आकर्षण के विभिन्न स्तर। मामले. तत्वमीमांसा के मानसिक क्षेत्र में सम्मोहन और समाधि जुड़वां प्रक्रियाएं हैं।

विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक इन असामान्य स्थितियों को पहचान कर अपराध और पागलपन के संबंध में अपनी स्थिति में संशोधन कर रहे हैं। मनोविज्ञान सभी देशों के साहित्यकारों के अध्ययन का विषय बनता जा रहा है। तथ्य यह है कि कई मामलों में जिन्हें स्मृति की कमी कहा जाता है, पार्टियों ने अजीब, विशिष्ट विशेषताओं और असामान्य आचरण के साथ पूरी तरह से अलग-अलग नाम रखे हैं, न केवल विश्वास को जन्म देता है बल्कि एक निश्चित दृढ़ विश्वास को भी जन्म देता है कि कुछ विदेशी हैं आत्मा बुद्धि शरीर और मन को नियंत्रित करती है। यह धारणा तर्कसंगत है.

सचेत बुद्धि ने इन मानव वाहनों को उधार लिया होगा, या उन्होंने मनुष्यों के लिए अज्ञात किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें बलपूर्वक ले लिया होगा। रॉफ़ परिवार में "वाटसेका वंडर"9 एक उदाहरण था - दुनिया के कब्जे और विनिमय का एक उल्लेखनीय मामला। ये घटनाएँ पुरानी प्रेरितिक शिक्षा को पुनर्जीवित करती हैं, "आत्माओं का परीक्षण करें", क्योंकि राक्षस अपराध की आग को धोखा देते हैं, संतुष्ट करने और खिलाने के लिए स्वर्गदूतों के नाम धारण कर सकते हैं।

अध्याय XXI.

सभी युगों में जुनून और जादू टोना.

तर्कवादी लेकी ने अपने यूरोपीय नैतिकता के इतिहास में राय व्यक्त की है कि दुष्ट राक्षसों का सिद्धांत, अन्य ओरिएंटल हठधर्मियों के साथ, ईसा मसीह के आगमन के समय रोम में लाया गया था। इस पर गंभीर संदेह है. वास्तव में, एम्पेडोकल्स, ज़ेनोक्रेट्स, क्रि स्काइप्सम और अन्य लोग लेची के बयान का खंडन करते हैं। प्लूटार्क, वस्तुतः नियो प्लैटोनिस्टों के संस्थापक, ने सिखाया कि देवता अमर थे, जुनून से मुक्त, शुद्ध दिमाग वाले और पाप से मुक्त थे; जबकि राक्षस आध्यात्मिक प्राणियों के निचले, निचले क्रम के थे, नश्वर जुनून के विषय थे। उन्होंने कहा कि "भाड़े के इरादे" उन्हें मनुष्यों से जुड़ने और उन पर हमला करने के लिए प्रेरित करते हैं।

उन्होंने लिखा, 'राक्षस देवताओं को मना सकते हैं। वे भटकन, निर्वासन, स्वैच्छिक दासता, बलात्कार और अन्य गंभीर अपराधों की प्रेरक शक्तियाँ हैं। वह आगे लिखते हैं कि कुछ अत्याचारी राक्षसों को अपनी खुशी के लिए

किसी ऐसी आत्मा की आवश्यकता होती है जो अभी भी अवतरित हो, क्योंकि वे किसी अन्य तरीके से अपने जुनून को संतुष्ट करने में असमर्थ हैं, वे विद्रोह, वासना, विजय के युद्धों को भड़काते हैं। और इस तरह उन्हें वह मिलता है जो वे चाहते हैं।

डेमेट्रियस, जिन्होंने ब्रिटेन के कुछ सुदूर द्वीपों का दौरा किया, उन्हें राक्षसों और देवताओं के द्वीप कहा, राक्षस जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और उन पर शासन करते हैं। ज़ुल्म शब्द में बहुत कुछ है. निम्न, स्वार्थी वर्ग के लोग स्वाभाविक रूप से अत्याचारी होते हैं। जानवरों की तरह उन्हें मैदान पर राज करना पसंद है. जो लोग अगले जन्म में सेवा करते हैं वे अत्याचारी होते हैं। यह इतिहास के जादुई काल की एक अनूठी विशेषता थी

ओरिएंटल जादू टोना.

बेबीलोनिया और असीरिया में जादू-टोना आम बात थी। यह प्राचीन बेबीलोनिया के पत्थर पुस्तकालयों में हाल ही में मिली गोलियों की रीडिंग से साबित होता है। यहूदियों ने अपने धार्मिक विचार मुख्यतः मिस्र और बेबीलोनिया से लिए। पुराने नियम में चुड़ैलों के कई संदर्भ हैं। जादू-टोना का उल्लेख चार बार किया गया है। ऐसा माना जाता था कि चुड़ैलें वे साधन हैं जिनके माध्यम से राक्षस काम करते हैं। शब्द "जादू टोना" नए नियम में केवल एक बार आता है।

ग्रीक शब्द फार्माकिया है, जिसका अर्थ है जादू-टोना, और इसे संशोधित संस्करण में इसी तरह लिखा गया है। लॉर्ड कोक, अपने इंस्टीट्यूट्स के छठे अध्याय में, एक डायन को इस प्रकार परिभाषित करते हैं: एक व्यक्ति जो शैतान के साथ साम्य रखता है उसे डायन कहा जाता है। अर्नोल्ड ने इसे "एक बुरे आदमी या उसके बुरे सहयोगियों के बीच एक समझौता" के रूप में वर्णित किया।

1642 में कनेक्टिकट के कैपिटल कोड में एक चुड़ैल को "वह व्यक्ति जो अपने परिचित साथियों के साथ रहती है या उनके साथ रहती है" के रूप में परिभाषित किया गया है। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान जादू-टोने के सभी मुकदमे उपरोक्त सिद्धांत पर आधारित थे। अधिकारियों ने बुरी आत्माओं

के माध्यम से कुछ हानिकारक स्थितियों, चोटों या पीड़ाओं को पैदा करने के लिए कथित चुड़ैलों के खिलाफ विशिष्ट आरोप प्रस्तुत किए।

कुछ हलकों में यह धारणा देने का बेहद अनुचित प्रयास किया गया है कि उस जादू-टोने के समय की परेशानियाँ बुरी कल्पनाओं, झूठी कल्पनाओं और "कुछ अपाहिज महिलाओं और मूर्ख बच्चों की कर्कश आवाज़ों" के कारण थीं। मनोवैज्ञानिक प्रभावों से अनभिज्ञ लोग ही इस सिद्धांत को स्वीकार करते हैं। सदियों के तथ्य इसके विरुद्ध हैं। वे अलौकिक नहीं थे; लेकिन यह उस मानसिक स्तर के लिए स्वाभाविक है जो उन्हें पैदा करता है।

सबूत जादू टोना का.

अमेरिकी इतिहास में सलेम और अन्य जादू टोना परीक्षणों से अधिक निंदनीय प्रकरण शायद ही कभी हुए हों। कई मामलों की औपचारिक, कानूनी सुनवाई की गई और अच्छे और ठोस सबूतों के आधार पर आरोपियों को मौत की सजा सुनाई गई। कॉटन माथेर के अनुसार, इन परीक्षणों में, "बार में कैदी पर जादू टोना करने के लिए, इस्तेमाल किया जाने वाला पहला सबूत जादू से प्रभावित (जुनूनी) व्यक्ति की गवाही थी।" उन्होंने अपने नियंत्रण में तथ्यों की गवाही दी।

उन्होंने शपथ के तहत गंभीरता से घोषणा की कि उन्हें ये अजीब बातें कहने के लिए मजबूर किया गया था। ऐसा लगता था कि न्यायाधीश वे लोग थे जिनके पास जादू-टोने का निर्णय करने का अधिकार था।

जिम्मेदारी का गहरा एहसास. हो सकता है कि वे अपने निर्णयों में पक्षपाती रहे हों; लेकिन वे सिर्फ ऐसे लोग थे, जो ईमानदारी से सही काम करना चाहते थे। न्यायालय के निर्णयों को लोगों की सामान्य भावना का समर्थन प्राप्त था।

मोहित का आचरण.

पुराने अभिलेखों के अनुसार, जादू-टोना के शिकार लोग-अर्थात सम्मोहित व्यक्ति-अपने आरोप लगाने वालों की उपस्थिति में और यहां तक कि गवाही देने के लिए अदालत में लाए जाने पर भी 4 'बरामदगी' में पड़ जाते थे। वे आज के भूतिया माध्यमों की तरह अचेत और मूर्छित हो जाते थे। वे भविष्यवाणी करते थे. उनके चेहरे बदल जायेंगे. इन सभी घटनाओं को इस बात का पर्याप्त सबूत माना गया कि अभियुक्तों पर एक रहस्यमय, अलौकिक शक्ति काम कर रही थी।

उस दौर के एक लेखक ने कहा, “अदालत को पीड़ितों की गवाही सुनने के लिए बहुत परेशानी उठानी पड़ी, क्योंकि जब वे अपनी गवाही देने जा रहे थे, तो वे लंबे समय तक दौरे (डिमेंशिया) से पीड़ित थे, जिसके कारण वे कुछ भी नहीं कह पा रहे थे। ” असमर्थ हो जायेंगे.

ये जुनूनी मोह, जो आत्माओं के एक निश्चित वर्ग के बीच अधिक आम थे, को तब "दौरे", "बेहोशी", "मतिभ्रम" और "हिस्टीरिया" कहा जाता था। लोग इन घटनाओं की वास्तविकता में नहीं, बल्कि उनके कारणों में गलत थे। वे अक्सर भारतीय आत्माओं को शैतान समझ लेते थे;* और इस और इसी तरह की गलतियों से गैलोज़ हिल की भयावहता और घातक गलतियाँ हुईं।

न्यू इंग्लैंड जादू टोना।

न्यू इंग्लैण्ड के वे लोग धार्मिक एवं वीर थे। वह कर्तव्यपरायण था. जादू-टोने के ये नज़ारे वाकई देखने लायक थे. आवाजें सुनी गईं और असाधारण कार्य किए गए। ज़माने को उनकी हकीकत पर यकीन था. उन्हें नकारना बेकार था. उन्नीस लोगों को फाँसी दी गई; और गाइल्स कोरी, एक हृष्ट-पुष्ट, वृद्ध अस्सी वर्षीय, को जानबूझकर पीट-पीट कर मार डाला गया।

ये जादुई कार्य और चमत्कार प्राचीन डेल्फ़िक भविष्यवाणियों, मध्ययुगीन युग की राक्षसी प्रेतों और प्रेतों, अमेरिकी आदिवासियों की अजीब अभिव्यक्तियों, बुतपरस्त, अफ्रीका के बारिश लाने वाले पुजारियों और भारत के काले जादूगरों से पूरी तरह मेल खाते थे।

वे हिंदू चमत्कार कार्यकर्ता पूर्वी जादू-टोना के एक रूप का अभ्यास करते थे और अब भी करते हैं जिसे काला जादू कहा जाता है। इसे भूरे और उच्च सफेद रूपों की गुप्त प्रथाओं से अलग करने के लिए काला नाम दिया गया है। काला जादू भूत-प्रेत के कब्जे का एक और शब्द है।

और ये कम इरादे वाले, हाथ हिलाने वाले, कामुक, गहरे अंधेरे, आधी रात के सत्र जो मलमल से बनी आत्माओं के चेहरे दिखाते हैं, दफन खजाने की खोज या "सामाजिक समानताएं/" खोजने के स्थान का सुझाव देते हैं, सभी एक ही श्रेणी में आते हैं।

ऐसी आत्मा-नारी राक्षसवाद के बीज बोने की भूमि हैं। उनकी अभिव्यक्तियाँ नर्क से आती हैं। इनसे उसी प्रकार बचना चाहिए जैसे दुष्ट साँपों के बिल से बचा जाता है। वे अधिक परिष्कृत नाम के तहत जादू टोने का सार हैं। प्रोफेसर ब्रिटन के त्रैमासिक जर्नल में प्रकाशित एक साक्षात्कार में, डॉ. जे.एफ. ग्रे और उनके साथ, "सुकरात और बुरी आत्माओं" के संबंध में, अध्यात्मवाद के सबसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से एक, प्रोफेसर ब्रिटन ने बयान दिया कि सुकरात राक्षसों में विश्वास करते थे, दोनों अच्छे थे और बुरा, और फिर प्लेटो और ज़ेनोफोन के उद्धरण से अपनी स्थिति स्थापित की।

अपनी विशिष्ट क्लासिक शैली में, उन्होंने कहा, "मैं 'बुराई' शब्द का उपयोग वैध रूप से उन गुणों का प्रतिनिधित्व करने के लिए करता हूं जो चोट पहुंचाते हैं या शरारती परिणाम उत्पन्न करते हैं, चाहे आत्माओं या नश्वर लोगों पर लागू हो, मैं इसे किसी भी पूर्ण अर्थ में उपयोग नहीं करता हूं। मैं आदी हूं कुछ लोग जो अपने अराजक जुनून और स्वार्थी, शराबी और परित्यक्त जीवन से समाज के सद्भाव को बिगाड़ते हैं, उनके बारे में यह कहना कि वे दूसरों की तुलना में बदतर हैं, जिनका जीवन दैवीय कानून के मानकों के करीब है, और जो परिणामस्वरूप कभी भी सामाजिक विघटन नहीं करते हैं सद्भाव।

अब जब मैं कहता हूं कि सुकरात अच्छे और बुरे राक्षसों में विश्वास करते थे, तो मेरा मतलब आपके पत्र में वस्तुतः स्वीकार की गई बातों से अधिक

कुछ नहीं होगा, अर्थात्, कुछ मनुष्य जो इस जीवन से चले गए हैं वे अभी भी बुरे या बुरे हैं। , उन लोगों की तुलना में जो इस विश्वास के साथ पृथ्वी पर जीवन जीते थे कि पुण्य ही एकमात्र महानता है।

दूसरे शब्दों में, जो लोग इस दुनिया में 'खुद को पशुवत इच्छाओं, चोरी और अपराध के हवाले कर देते हैं, वे अनिवार्य रूप से अपनी बेलगाम वासनाओं के नैतिक परिणामों को अपने साथ लेकर चलते हैं। यह वह वर्ग था जिसमें जादू टोने के समय में राक्षसी आत्माएं लोगों को प्रभावित और नियंत्रित करती थीं; और यह सब नैतिक कानून, भीतर की दिव्यता और आत्मा की अंतहीन प्रगति के बारे में हमारे विचारों से पूरी तरह सुसंगत है।

कई मानव आत्माएं इतनी अज्ञानी हैं कि उन्हें दिव्य जीवन की कोई अवधारणा नहीं है - वे अभी तक स्पष्ट रूप से देखने और वास्तव में जीने के लिए तैयार नहीं हैं, और यह तथ्य इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि कुछ आत्माएं अभी हैं, और लंबे समय तक रहेंगी, अपेक्षाकृत खराब .

अध्याय XXII

क्या पुरुषों को मृतकों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? क्या हम राक्षसी आत्माओं के लिए प्रार्थना करें?

पूजा-प्रार्थना लगभग सार्वभौमिक है। वे मानव आत्मा में सहज भावनाएं प्रतीत होती हैं, जो जीवित झरनों से क्रिस्टल धाराओं की तरह अनायास उभरती हैं। दुष्ट, ईश्वरविहीन राक्षस प्रार्थना नहीं करते। वे बहुत आत्मनिर्भर हैं. वे घमंडी हैं. संवेदनशील लोगों से संपर्क करते और उन्हें नियंत्रित करते समय, वे आमतौर पर बड़े नाम अपनाते हैं। अक्सर वे यूनानी दार्शनिक होने का दिखावा करते हैं, और एक महान मिशन की उपलब्धि से ईर्ष्या करते हैं।

कुछ वर्ष पहले सुकरात का दौर बहुत उदारवादी था। महान ऐतिहासिक नाम मध्यम हवा में थे। ट्रॉय, एन.वाई. में सुकरात ने अपने माध्यम से मुझसे पैसे उधार लिए, लेकिन वापस नहीं किए; और जब कोई ग्रीक शब्द का उच्चारण करने में असमर्थ था, या किसी को यह बताने में असमर्थ था कि वह कौन है।

प्राचीन एथेंस (अपने शहद और संगमरमर के लिए प्रसिद्ध) के हाइमेटस के आदेश पर, वह मुझ पर इस हद तक क्रोधित हो गया कि उसने अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया और मेरी पहचान पर संदेह जताया। ये सुकरात अंग्रेजी में शपथ ले सकते थे. बाद में, उन्होंने ब्रह्मांडीय विनाश के कुटिल तरीकों को अपना लिया। यह आदमी दुष्टात्मा से ग्रसित था। क्या उसे (राक्षस को) मुक्ति मिल सकती है? क्या प्रार्थना से उसे मदद मिलेगी? सच्ची प्रार्थना क्या है?

ऐसा कहा जाता है कि छछूंदर कभी भी रोशनी को देखने के लिए ऊपर नहीं देखता। बिल खोदने वाले छछूंदरों से ऐसी अपेक्षा की जा सकती है; और इसलिए, शरद ऋतु में गिरे हुए फलों का आनंद लेने वाले सूअर, भारी मात्रा में फलों से लदे हुए पेड़ों के प्रति कभी भी विचारशील कृतज्ञता से नहीं देखते हैं, जहां से वे गिरते हैं। मनुष्य सूअरों से कहीं अधिक हैं - जानवरों से अनंत गुना अधिक। वे, जब पृथ्वी के उपहारों का आनंद लेते हैं, यदि कोरोनल मस्तिष्क क्षेत्र में अत्यधिक प्रकट होते हैं, तो स्वाभाविक रूप से दिव्य उपस्थिति के प्रति कृतज्ञता से देखते हैं।

उदास या सपाट दिमाग वाले लोग शायद ही कभी प्रार्थना या आह्वान के शब्द बोलते हैं। वे आत्मनिर्भर हैं. जबकि प्रार्थना शब्दों की ठंडी पुनरावृत्ति नहीं है; जबकि यह किसी दूर के राजा के सामने डरकर घुटने टेकना नहीं है; हालाँकि यह स्वार्थी उद्देश्यों के लिए अपरिवर्तनीय कानून को बदलना नहीं है, - यही आकांक्षा है, - मैं दोहराता हूं, यह शुद्ध और पवित्र आकांक्षा है। ये अच्छे विचार हैं, बोले गए या अव्यक्त।

यह अनंत सर्वोच्च सत्ता, पूर्ण एक के प्रति कृतज्ञता में हृदय की दिव्य भावनाओं का उत्थान है। इसके अलावा, यह एक उच्च और स्वर्गीय उद्देश्य से प्रज्वलित केंद्रित विचार है, जो ईथर कंपन के माध्यम से आध्यात्मिक बुद्धि के असंख्य क्षेत्रों तक पहुंचता है, जो नश्वर आंखों के लिए अदृश्य हैं, और जिसका मिशन आशीर्वाद देना और मदद करना है। इन दिव्य बुद्धियों को दिव्य सहायक कहा जा सकता है। दुनिया के सच्चे महान लोग आस्था और प्रार्थना करने वाले लोग रहे हैं। अंधकार के राक्षस और कई मध्यमवादी अध्यात्मवादी इस वर्ग के अंधकार और अज्ञान से प्रभावित हैं।

विकसित आत्माएँ प्रार्थना का उपहास करती हैं। वे ईशनिंदा की भावना से लिखते और बोलते हैं। कुछ वर्ष पहले शिकागो प्रोग्रेसिव थिंकर के संपादक ने प्रार्थना के विषय पर एक अध्यात्मवादी सेमिनार बुलाया था। अधिकांश

प्रतिक्रियाओं को केवल बकवास का एक भयानक मिश्रण के रूप में वर्णित किया जा सकता है। वे भौतिकवादी अध्यात्मवादी कौन थे जिन्होंने प्रार्थना की निंदा की - मैं उनके नाम का उल्लेख नहीं करना चाहता; लेकिन यहाँ उपरोक्त पत्रिका में प्रकाशित उनकी कुछ भावनाएँ और कथन हैं:

प्रार्थना एक बुतपरस्त अभ्यास है; -भय और प्रार्थना ने मानवता को अन्य सभी धार्मिक प्रथाओं से अधिक अपमानित, हतोत्साहित और गुलाम बनाया है; फेंक दिया जाना;" "प्रार्थना सबसे बड़ा पाखंड है;" "प्रार्थना अभिमान को संतुष्ट करती है" "प्रार्थना जुनून से भरी है" "यह कट्टरता की ओर ले जाती है" "यह जंगल में बाघ है, प्रकृति प्रेमी" प्रार्थना घातक नुकीले दांतों वाला एक कुंडलित सांप है जो मारने के लिए तैयार है" "प्रार्थना एक अंधेरी और घातक छाया है" दीवार पर" "प्रार्थना अपने विषयों को नारकीय कार्यों के लिए तैयार करती है" "प्रार्थना हमें हमारी स्वतंत्रता से वंचित करती है" "यह अपमानजनक है और यह अपमानजनक है।

प्रार्थना चर्च के अंधविश्वास के प्रति झुकना और उसकी चाटुकारिता है ""प्रार्थना या तो पूर्ण पाखंडी बनाती है या आज्ञाकारी बनाती है या समर्पण पुरुष स्वतंत्रता का. यह अधिकारों की हमारी सहज भावना को नष्ट कर देता है" "यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी से मुक्त कर देता है और सभी प्रकार की क्रूरता के लिए मार्ग प्रशस्त करता है" लेकिन बहुत हो गया! भौतिकवादी अध्यात्मवादियों और कुछ आध्यात्मिक माध्यमों के भक्तों के इसी तरह के बयान, जो राक्षसवाद की कड़वाहट में डूबी हुई कलम से प्रार्थना पर लिखते हैं, नरक के झाग और फेन का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस पर विचार करें - इस पर विचार करें! वे बिना छुपाये अपनी टिप्पणियाँ और नैतिक भर्त्सना करते हैं।

यह कहना उचित होगा कि डॉ. एच.वी. स्वियरिंगन, लूथर बी. मार्श, ई.डब्ल्यू. बॉन्ड, जियो। डब्ल्यू. केट्स, ई.डब्ल्यू. स्प्रैग, मोसेस हल, श्रीमती बिचमंड, डॉ. जॉर्ज ए. फुलर और अन्य प्रख्यात अध्यात्मवादियों ने इस विषय पर बहुत अलग दृष्टिकोण अपनाया। ये और अन्य धार्मिक अध्यात्मवादी उस चीज़ से संपन्न हैं जिसे फ्रेनोलॉजिस्ट "विश्वास" कहते हैं। वे इतने राक्षसी नहीं हैं कि प्रार्थनाओं, आह्वानों और सभी आत्म-महसूस की गई धार्मिक भावनाओं का उपहास करें - वे भावनाएँ जिन्हें प्रबुद्ध दुनिया मानता है और पवित्र मानता है।

क्या हम नीच, भ्रष्ट और दुष्ट आत्माओं के लिए प्रार्थना करें**?**

यरूशलेम में अपोस्टोलिक कॉलेज के प्रमुख सेंट जेम्स ने आदेश दिया, 41 एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें, और क्यों नहीं? हमें जीवितों और मृतकों के लिए सद्भावना की प्रार्थना क्यों नहीं करनी चाहिए? यीशु ने "जेल में आत्माओं" को उपदेश दिया; निःसंदेह उन्होंने उनके लिए भी प्रार्थना की। और क्या बोमन का कैथोलिक संतों और स्वर्गदूतों से प्रार्थना करना उचित नहीं है?

यदि प्रार्थनाएँ स्वर्ग तक चढ़ सकती हैं, तो वे पाताल तक भी उतर सकती हैं, रात के दस सबसे गहरे स्वरों से लेकर सिम्मेरियन क्षेत्रों तक पहुँच सकती हैं। ओसिरिस, जब नश्वर वस्त्र पहनते थे, अक्सर सहायता के लिए संरक्षक देवताओं से प्रार्थना करते थे, और नदी पार करने वालों पर आशीर्वाद के लिए (चारोन द्वारा) प्रार्थना करते थे। क्रेटन ने जीवित और मृत लोगों की मदद के लिए बृहस्पति और अन्य देवताओं से प्रार्थना की। ज़ेनोफ़न ने गवाही दी कि साइरस ने अपने युद्धों में मारे गए नायकों के लिए प्रार्थना की थी।

प्रारंभिक चर्च फादरों ने "दुष्ट मृतकों" के लिए प्रार्थना की - विश्वासियों को परेशान करने वाले विश्वासघाती राक्षसों के उद्धार के लिए प्रार्थना की। सेंट हिलेरी, सिरिल के साथी, जिन्होंने 315 ई.पू. के बारे में लिखा
एडी। कहते हैं: “जो लोग दृढ़ रहना चाहते हैं उन्हें संतों की हिरासत या स्वर्गदूतों की धन्य सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है।

, , , कई आध्यात्मिक शक्तियां हैं जिन्हें स्वर्गदूत और धर्मी लोगों की आत्माएं कहा जाता है, जो चर्चों और व्यक्तियों की अध्यक्षता करती हैं। वे हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, और हम मृतकों के लिए प्रार्थना करते हैं।” सेंट साइप्रियन, जिन्होंने वर्ष 248 ईस्वी में लिखा था, ने यह उपदेश दिया: “आइए हम अपनी प्रार्थनाओं में एक दूसरे के प्रति दयालु रहें; इस दुनिया और अगली दुनिया में एक दिमाग और एक दिल के साथ। आइए हम हमेशा पारस्परिक परोपकार के साथ प्रार्थना करें, आइए हम अपने कष्टों पर विजय पाएं, और अपने भाइयों और बहनों के लिए हमारी प्रार्थनाएं, चाहे वे किसी भी दुनिया में हों, कभी बंद न हों।

ओरिजन, जो दूसरी शताब्दी के अंत में प्रार्थनाओं, अभिभावक आत्माओं और नश्वर लोगों पर उनके प्रभाव का वर्णन करते हुए फले-फूले, ने लिखा: 11 कौन संदेह कर सकता है कि हमारे पवित्र पिता अपनी प्रार्थनाओं और अपने उदाहरणों से हमारी मदद करते हैं और अपने लेखों से हमें मजबूत और प्रोत्साहित करते हैं। पीछे छोड़ा। मुक्ति के देवदूत और सेवा करने वाली आत्माएं हमेशा मौजूद रहती हैं; तो आओ, हे देवदूत या स्वर्गदूतों, उसे स्वीकार करो जो अपने पूर्व भ्रम और राक्षसों के सिद्धांत से फिर गया है।

...मैं मृतकों के लिए प्रार्थना करूंगा। मैं गिरे हुए राक्षसों के लिए प्रार्थना करूंगा। सेंट क्राइसोस्टॉम, जिन्हें "स्वर्ण-चेहरे" के रूप में जाना जाता है, घोषणा करते हैं कि "यह व्यर्थ नहीं है कि बलिदान और प्रार्थनाएं की जाती हैं और मृतकों के लिए भिक्षा दी जाती है... इसलिए, आइए हम मृतकों की मदद करने में थकें नहीं। उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए.

जुनून पर एक महान अंग्रेजी अध्यात्मवादी।

प्रतिष्ठित विलियम हॉविट, इंग्लैंड में जुनून और कुछ माध्यमों के संक्रमण के बारे में बात करते हुए कहते हैं: “आत्माओं का उनके साथ आना कोई समस्या नहीं है;

वे सिर्फ एक दृष्टि नहीं हैं, बल्कि एक प्रवेश द्वार हैं। जैसे ही दरवाजे खुलते हैं, वे झुंड में, भीड़ में, दंगाई हमलों में आ जाते हैं। वे दौड़ते हैं, कूदते हैं, इशारा करते हैं, गाते हैं, चिल्लाते हैं, शाप देते हैं। वे सबसे अधिक प्रसन्न और सबसे अधिक उपहास करने वाले होते हैं। उनके शब्दों में बुद्धि नारकीय बिजली की तरह चमकती है। उनके कार्यों में मूकाभिनय शामिल हैं; उसकी आँखों में हँसी है; और एक भय है, जिसे निर्दोषता का कोई भी अनुमान छिपा नहीं सकता, जो उसकी उपस्थिति से उत्पन्न होता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके भयानक हमलों के दयनीय पीड़ित नरक का जीवन और सार हैं। न ही यह केवल दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति का मन है जिसे वे पीड़ा देते हैं; उसकी शारीरिक गतिविधियों पर उनका अधिकार है. वे

वस्तुओं को हिलाते और हटाते हैं; वे फेंकते और उछालते हैं; वे छुपते और चोरी करते हैं; वे चीज़ें वहां रखते हैं जहां उन्हें नहीं होना चाहिए; वे उन्हें वहां से ले जाते हैं जहां उन्हें हमेशा रहना चाहिए। मन, शरीर, आत्मा, स्मृति और कल्पना - बल्कि, यहाँ तक कि हृदय भी - भूतिया ट्यूब द्वारा प्रदूषित हो जाता है; और जीवन के पवित्र स्थान और निवास पर उनके द्वारा आक्रमण किया जाता है, अव्यवस्थित किया जाता है, अपवित्र किया जाता है और दुखी किया जाता है।

हम ऐसे पीड़ितों को जानते हैं और अब भी जानते हैं। वे राक्षसों के वश में हैं, जैसे ईसा के समय में थे। और फिर भी, वे अनुशासन, पश्चाताप और प्रार्थना के माध्यम से भविष्य की स्थिति में मुक्ति पा सकते हैं। मसीह का मिशन जीवित और मृत दोनों तक फैला हुआ है, और प्रेरित ने घोषणा की कि अंततः 6 6 हर घुटने को झुकना होगा, और हर जीभ को स्वीकार करना होगा कि मसीह भगवान है, परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए। प्रसिद्ध जंग-स्टिलिंग ने उन जुनूनी मामलों की एक लंबी सूची प्रस्तुत की जो उनके तत्काल अवलोकन के अंतर्गत आए।

मैंने कई संवेदनशील लोगों को देखा है जो आध्यात्मिकता का दावा नहीं करते हैं, लेकिन पूरी तरह या आंशिक रूप से, अंधेरे, अविकसित आत्माओं से ग्रस्त हैं। मैंने न केवल इस देश में इन घटनाओं को देखा है, बल्कि मैंने भारत में भी कई उल्लेखनीय मामले देखे हैं। दीया, और मुझे एक शिव पुजारी से मिलवाया गया जो हर शुक्रवार दोपहर को राक्षसों को बाहर निकालने के लिए समर्पित था।

जुनून पर एक इकाईवादी उपदेशक.

विद्वान और शोकाकुल यूनिटेरियन उपदेशक, रेव. जेम्स फ्रीमैन क्लार्क ने लिखा: "जहाँ तक राक्षसी कब्ज़े का सवाल है, मुझे लगता है कि यीशु इस पर विश्वास करते थे, और उन्होंने बुरी आत्माओं से ऐसे बात की जैसे वे उनकी बात सुन रहे हों। कुछ साल पहले मैंने सोचा था कि वे इस मामले में एक लोकप्रिय गलती कर रहे थे, जिसे हमारी सदी ने पीछे छोड़ दिया है।

लेकिन कुछ ही वर्षों में मुझे भूत-प्रेत की वास्तविकता पर विश्वास हो गया है। मैं स्वयं व्यक्तिगत रूप से और विश्वसनीय गवाही के आधार पर कम से कम आधा दर्जन ऐसे लोगों को जानता हूं जिन पर किसी दुष्ट और अशुद्ध आत्मा का साया था। और जब वे खुद की मदद करने में असमर्थ हो गए, तो उनकी मदद करने का सबसे अच्छा तरीका किसी अन्य व्यक्ति से अधिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करना था जो वही करेगा जो यीशु ने किया था, यानी आत्मा को दूर जाने दिया। आदेश देना।

मेरा मानना है कि कुछ स्थानों और कालखंडों में, मनुष्यों की घबराहट की स्थिति ऐसी होती है कि भूतों का निम्न वर्ग उन पर नियंत्रण कर सकता है, और जब यीशु आए, तो वह बिल्कुल ऐसा ही समय और स्थान था। लेकिन मसीह का राज्य सभी दुनियाओं तक फैला हुआ है, और इसलिए राक्षसों से ग्रस्त लोगों को मुक्ति मिल सकती है। अब तक की सबसे वीभत्स हत्याएं उन अपराधियों द्वारा की गई हैं जो किसी अपराध के लिए जेल में बंद थे।

हाल ही में एक पश्चिमी जेल में, इन बदमाशों में से एक, जो उन्नीस साल से कैद था और हमेशा परेशान रहता था, ने अपने दो साथी अपराधियों की चाकू मारकर हत्या कर दी; और जब गार्ड को मारने के लिए पागलों की तरह संघर्ष करते समय उसे गोली मार दी गई, तो उसका अंतिम शब्द एक शपथ था! कहां-क्या थी उनकी हालत? क्या तत्काल नैतिक परिवर्तन की उम्मीद करने का कोई कारण है?

ऐसे किरदार में लोशन! ये लोग इस समय और भविष्य के राक्षस हैं। डांट-फटकार, सलाह, जेलों की सज़ा ने उसे नहीं बचाया। सज़ा कभी नहीं बचाती. यह स्तब्ध कर देता है; यह कुछ समय के लिए दुष्टों को उनके रास्ते पर रोक सकता है, और इससे गंभीर चिंतन भी हो सकता है; लेकिन प्रेम, पश्चाताप, नम्रता, आकांक्षा, नैतिक प्रयास, ज्ञान की मसीह-शक्ति - ये बचाने वाले अनुग्रह हैं!

मेरे पास पाताल लोक के राक्षस मेरे पास आ रहे हैं, पश्चाताप की कड़वी, कुतरने वाली, कष्टदायी पीड़ा सह रहे हैं, चिल्ला रहे हैं, "मेरी मदद करो - मेरे लिए प्रार्थना करो, ओह, मेरे लिए प्रार्थना करो! मुझे रोशनी चाहिए 'मैं देखना चाहता हूं और उनके साथ रहना चाहता हूं मैं एक बार जानता था.' दिव्य चिंगारी अमर है, और इसे प्रेम के शक्तिशाली सिद्धांतों से छुआ जा सकता है।

दूसरे के शरीर पर कब्ज़ा करना

जेम्स बर्न्स, लंदन द्वारा प्रकाशित "एसेज़ फ्रॉम द अनसीन" में एक प्रेत का यह उल्लेखनीय विवरण थोड़ा संक्षिप्त रूप में पाया जा सकता है। यह एक बहुत प्रसिद्ध माध्यम से आत्मा का आत्म-इतिहास है: 4 'किसी भी दुनिया में एक व्यक्ति नीचे की ओर भी चढ़ सकता है और ऊपर की ओर भी। शरीरधारी मनुष्यों और उन्नत आत्माओं द्वारा भी यह दावा किया जाता है कि आत्मा की उत्तरार्द्ध अवस्था निरंतर प्रगति की अवस्था है। अब मैं इससे इनकार करता हूं.

मैं अपने आध्यात्मिक जीवन से पीछे हट गया; कई सांसारिक पापों पर, मैंने एक मुकुट रखा - मैं फिर से पृथ्वी पर लौट आया। मैंने पीछे मुड़कर देखा और एक घर में रहने लगा और करीब साढ़े चार साल तक उस घर में रहा। “मैं एक बच्चे के लिए रोते हुए पिता और माँ के पास खड़ा था, जिसकी आत्मा शरीर छोड़ रही थी। उनके सांसारिक अनुभव की आयु या समय चार दिन था; मेरा मतलब है, शरीर को आत्मा के स्वागत के लिए बनाया गया था, चार दिनों में मैंने बच्चे के स्वर्गीय मार्गदर्शक और संरक्षक आत्मा को देखा, और जैसे ही बच्चे की आत्मा ने अपना घर छोड़ा, मैंने उसके मार्गदर्शक को अपनी बाहों में उसे स्वर्ग के क्षेत्र में ले जाते देखा। क्योंकि दार्शनिक मन ने मेरे अस्तित्व के दौरान किसी भी अन्य घटना की तुलना में शरीर के बाहर अधिक अद्भुत घटनाएँ देखी थीं, इसलिए मेरे लिए यह अद्भुत तथ्य शरीर के बाहर एक सचेत व्यक्तित्व का मात्र तथ्य था, जो मुझे सर्वोच्च शासक मन की अवधारणा के करीब नहीं ले आया। . वितरित किया गया, जैसा सितारों ने किया।

जिन्हें मैंने पृथ्वी-जीवन में देखा और अवलोकन किया था, और जिनकी गतियाँ मेरे पसंदीदा अध्ययनों में से एक थीं - जिनकी विशाल दूरी की मैंने दूसरों के साथ गणना की थी। संक्षेप में, मुझे लगा कि अंतरिक्ष में घूमने वाले विशाल द्रव्यमान का तथ्य मेरे लिए पृथ्वी पर एक अनंत, गतिशील और हमेशा मौजूद रहने वाला तथ्य था, जिसके अलावा यह तथ्य कि मैं आध्यात्मिक जीवन में था, महत्वहीन हो गया।

एक मुझे दूसरे की तुलना में ईश्वर के करीब नहीं ले गया। अपने पार्थिव शरीर में रहते हुए मैं धार्मिक नहीं था; और जब मैंने आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश किया, तो मुझे संगति की परवाह नहीं थी। मैं फिर से सांसारिक अनुभवों की लालसा करने लगा। "भगवान से प्रार्थना या प्रार्थना के बिना, मैं अपने लिए एक निवास स्थान चुनने के लिए दृढ़ हूं, जिसमें मैं फिर से रह सकूं और पृथ्वी के दृश्यों पर फिर से घूम सकूं, उन भावनाओं को फिर से महसूस कर सकूं जो फीकी पड़ गई थीं, लेकिन अभी भी दबी हुई थीं।

मैंने इस नवजात शिशु के शरीर में अपनी आत्मा के लिए घर खोजने का फैसला किया। इसके संक्रमण में मैंने उस अवस्था का लाभ उठाया जिसमें बच्चे की आत्मा शरीर छोड़ रही थी, इससे पहले कि शारीरिक संगठन के तंत्र काम करना बंद कर देते। मैं सफल हुआ, और इस नाजुक निवास में, मैं, पृथ्वी के पिछले सड़सठ वर्षों के अनुभवों की आत्मा, ने अपना निवास शुरू किया। मेरी सक्रिय, बेचैन आत्मा पूरी तरह से इस शरीर में कैद हो गई थी।

केवल दस महीने बाद ही मैं इसके माध्यम से बोलने की शक्ति व्यक्त कर सका। मुझे डर था कि कहीं अधिक कठोरता से प्रयोग करने से मस्तिष्क के कोमल तंतु कुचल न जायें। दस महीने की उम्र में मैं धाराप्रवाह बोलने में सक्षम हो गया। दो साल की उम्र में मैं मसीहा के आगमन के संबंध में भविष्यसूचक हिब्रू लेखों द्वारा प्रदान किए गए सबूतों के आधार पर धर्मशास्त्र के डॉक्टरों के साथ बहस कर सकता था। चार साल की उम्र में मैं इस शरीर के माध्यम से धाराप्रवाह अंग्रेजी और लगभग चार हजार लैटिन शब्द बोलने में सक्षम था।

उस उम्र में मैंने महानतम शरीर रचना विज्ञानियों के साथ अध्ययन करना शुरू किया। तब मैं बाइबिल के रिकॉर्ड की प्रामाणिकता को नजरअंदाज करते हुए सबसे प्रसिद्ध देवताओं पर बहस करने में सक्षम था। मैं उनके निवास में अपनी प्रतिभा को आगे लाने के लिए बहुत उत्सुक था: मेरा वास्तुशिल्प अध्ययन, मेरे गणितीय अभ्यास, जो चार साल और चार महीने की उम्र में किए गए थे, सभी अग्रणी दिमागों के लिए एक आश्चर्य थे। मैं इतिहास के सभी प्रश्नों का उत्तर धाराप्रवाह दे सकता था।

गणितीय अध्ययन का बहुत शौकीन था, जब तक मानसिक ढाँचा ढह नहीं गया - टूट नहीं गया - मुझे पूरी तरह समझ लो, क्योंकि मैं अपने विचारों को बाहरी दुनिया तक पहुँचाने में असमर्थ हूँ, क्योंकि इस गिलास के माध्यम से (टेबल से गिलास उठाते समय) पानी को रोकने में असमर्थ होने

पर मैंने उसे हाथ से पकड़कर फर्श पर पटक दिया। लिफाफा अब आत्मा को समेटने लायक नहीं रहा; चार साल और नौ महीने तक एक और सांसारिक जीवन जीने के बाद मैंने इसे छोड़ दिया।

इस स्व-चुने हुए निवास पर केवल चार वर्ष और नौ महीने बड़ी कठिनाई और असमर्थता के साथ रहने के बाद, जब पहली बार यह तथ्य सामने आया - ईश्वर अवश्य है।" इस आत्मा की आत्मकथा को आधिकारिक माना जाए या नहीं, मैं कोई राय व्यक्त नहीं करता। यह निश्चित रूप से संभव के दायरे में आता है, और कई स्पष्ट, संतोषजनक पुष्टियाँ हैं।

इस शिशु शरीर पर कब्ज़ा करने से पहले इस आत्मा ने अपना नाम प्रकट करने से इनकार कर दिया; लेकिन कहा कि वह एक प्रमुख यूरोपीय परिवार से थे। यह ध्यान दिया जाएगा कि इस आत्मा ने स्वीकार किया कि वह एक शारीरिक शरीर में वापस आ गई है। यह पुनर्जन्म नहीं था, बल्कि एक मौसम के लिए मानव शरीर पर पुनः कब्ज़ा था।

रैनी वेन्नम और मैरी रॉफ़।

उपरोक्त के समान रॉफ़ परिवार का उल्लेखनीय मामला था, जिसे "वात्सेका आश्चर्य" के नाम से जाना जाता था। हार्वर्ड के प्रोफेसर जेम्स और एच.आर. हॉजसन द्वारा संदर्भित भूत-प्रेत के इस मामले के बारे में, मैं जानबूझकर, सकारात्मक रूप से बोल सकता हूं, क्योंकि श्री आसा बी. रॉफ, जिनका हाल ही में निधन हो गया, कई साल पहले मेरे रोगियों में से एक थे। मैं न केवल उन्हें करीब से जानता था, बल्कि उनकी संस्कारी बेटी मिनर्वा ऑल्टर, मैरी रॉफ की बहन, जिसने मैरी ल्यूसर्न वेनोम के शरीर पर कब्जा कर लिया था, को भी करीब से जानता था।

उत्कृष्ट रॉफ़ परिवार के अन्य सदस्यों और वॉटसेका के कुछ नागरिकों को जानना मेरा सौभाग्य था, जो इस विलक्षण मानसिक शक्ति के गवाह थे - "दोहरी चेतना" के नहीं, बल्कि मानव शरीर के वास्तविक पुन: कब्जे के। एक आत्मा द्वारा. इतिहास का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है: जब मिस वेनम चौदह वर्ष की थीं, तब उन्हें हिस्टीरिया के कई दौरों का सामना करना पड़ा। रात के सन्नाटे में अपना नाम पुकारे जाने पर वह इतनी परेशान हो जाती थी कि उसकी माँ अक्सर उसके साथ सोती थी।

जुलाई के ग्यारहवें दिन जब उसकी तबीयत ठीक नहीं हुई तो वह फर्श पर गिर पड़ी और ऐसा लगा जैसे उसकी मौत हो गयी हो. इस तरह वह पांच घंटे तक लेटी रही. कभी-कभी गिरते समय वह कहती थी कि उसने किसी को मरा हुआ देखा है। आत्माओं का वर्णन और पहचान करना। इन आगे की अवस्थाओं में उन्होंने स्वर्गदूतों और सुंदर आत्माओं के दर्शन देखे। डॉक्टरों, रेवरेंड मिस्टर बेकर और अन्य लोगों ने उन्हें पागल घोषित कर दिया और उन्हें पागलखाने में भेजने का प्रस्ताव रखा।

संकट के समय, जेन्सविले के मिस्टर रॉल्फ और डॉ. स्टीवंस ने उन्हें स्टोव के पास बैठे पाया, उनके हाथ घुटनों पर थे, आँखें बेतहाशा घूर रही थीं, पूरी तरह से जुनूनी थीं। डॉ. स्टीवंस ने चुंबकीय उपचार और दृढ़ इच्छाशक्ति से बुरे प्रभावों को दूर भगाया; और फिर मिस वेनोम ने कहा, "मैं यहां कई अच्छी, उज्ज्वल आत्माओं को देखती हूं, और उनमें से एक मैरी रॉफ है," जिस पर मिस्टर रॉफ ने तुरंत टिप्पणी की, "यह मेरी बेटी मैरी है। वह इन बारह वर्षों से स्वर्ग में है।

आत्माओं से परामर्श करने के बाद, यहां यह व्यवस्था की गई कि मैरी रॉफ़ पूर्व जंगली राक्षस प्रभावों की जगह लेंगी। आत्मा की दुनिया में जाने से पहले मिस रोटफ़ को कई अजीब अनुभव हुए। 1 फरवरी, 1878 को, उसने ल्यूरेंसी के शरीर पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया और मिस्टर रॉफ के घर जाने के लिए तैयार हो गई। इस समय से रेनी वेनोम अपने माता-पिता को नहीं जानती थी और पारिवारिक मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं लेती थी। वास्तव में, यह वह नहीं, बल्कि मैरी रॉफ थी जो उसके शरीर में रहती थी और वह हर घंटे घर जाने की भीख मांगती थी।

श्रीमती रोटॉफ और उनकी बेटी, श्रीमती ऑल्टर ने इन अजीब चीजों के बारे में सुना और मिस्टर वेनोम के घर बुलाया, जब मैरी रोटॉफ, लॉरेंस के शरीर में, उनसे मिलने के लिए दौड़ीं। उसने अपनी बाहें उसके गले में डाल दीं और खुशी से रोने लगी। 11 फरवरी, 1878 को, वेनोम ने अपनी बेटी (उसका शरीर मैरी रॉफ के पास था) को मिस्टर रॉफ के घर भेजा, जहां वह पूरी तरह से खुश पाई गई। वह घर की हर चीज़ के बारे में जानती थी और अपने बचपन में हुई सैकड़ों चीज़ों के बारे में बात करती थी।

शरीर - उसने कहा कि स्वर्गदूतों ने उससे कहा था कि वह मई में किसी समय उनके साथ रहेगी, "उधार के शरीर में एक खुश, संतुष्ट बेटी और एक प्यारी बहन।" मिस्टर रॉफ़ के घर में रहते हुए, वह वैन नेम्स को नहीं

जानती थी, न ही वह उसे पहचान पा रही थी। उसने घोषणा की कि वह अक्सर आत्माओं को देखती है, अक्सर स्वर्ग जाती है, और वहां मिले लोगों के नाम बताती है। उनके कुछ परीक्षण उल्लेखनीय थे।

7 मई को, उसने श्रीमती रोटफ़ को बताया कि ल्यूरेंसी यानम फिर से उसके शरीर में वापस आ रही है। यह दुखद और अश्रुपूरित समय था। अलविदा कहकर बैठी मैरी मंत्रमुग्ध हो गई थी और ल्यूसर्न ने उसके शरीर पर कब्ज़ा कर लिया था। उसने उत्सुकतापूर्वक, बेतहाशा इधर-उधर देखा और पूछा, "मैं कहाँ हूँ? मैं यहाँ पहले कभी नहीं आई।" मिस्टर रोटॉफ ने उत्तर दिया, "आप मिस्टर रोटॉफ में हैं, मैरी आपके शरीर को ठीक करने के लिए यहां लाई है।" ल्यूरेंसी ने रोते हुए कहा, "मैं घर जाना चाहती हूं।

लगभग पांच मिनट में फिर से परिवर्तन हुआ और मैरी एक बार फिर ल्यूरेंसी के शरीर में थी। वह बहुत खुश थी, उसने उनसे अपने बचपन का गीत गाने के लिए कहा, "हम आ रहे हैं, सिस्टर मैरी।" इस समय उनकी बातचीत आनंद भरी होते हुए भी बहुत गंभीर थी. उसने उन्हें बताया कि अच्छे स्वर्गदूतों ने उससे कहा था कि वह अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकती, क्योंकि उसका काम लगभग पूरा हो चुका था; लेकिन उसने उन्हें आश्वासन दिया कि उसे अक्सर एक प्रेमपूर्ण आत्मा के रूप में उनके पास लौटना चाहिए, और यह डर भी व्यक्त किया कि वे उसे पहचान नहीं पाएंगे।

वह स्वर्गदूतों के मार्गदर्शन में ल्यूरेंसी के स्वास्थ्य को बहाल करने, उसके माता-पिता और रिश्तेदारों को लगभग असीमित खुशी देने और भविष्य के अमर अस्तित्व के ठोस सबूत जोड़ने का साधन थी।

मैरी रेनॉल्ड्स का कब्ज़ा।

पहले रिपोर्ट की गई कहानियों के समान अन्य प्रमाणित कहानियों में मैरी रेनॉल्ड्स की कहानी शामिल है, जिसका उल्लेख या वर्णन रेव डब्ल्यू.एस. द्वारा किया गया है। प्लमर, प्रोफेसर उपम, मेजर एलिकॉट, वेस्ट पॉइंट पर यूनाइटेड स्टेट्स मिलिट्री अकादमी में गणित के प्रोफेसर, और अन्य।

लगभग अठारह वर्ष की आयु में, मिस रेनॉल्ड्स को "ऐंठन" नामक बीमारी ने घेर लिया। डॉक्टर "दौरे" और बेहोशी के बीच अंतर करने में असमर्थ थे, इसलिए उनका चिकित्सकीय उपचार किया गया।

जब वह ऐसी अचेतन या गहरी नींद में चला जाता था, तो उसे जगाना असंभव था; लेकिन कुछ घंटों के बाद वह खुद ही जाग गई, लेकिन तब तक वह अपनी पूर्व चेतना खो चुकी थी। वह न तो अपने माता-पिता को जानती थी और न ही अपने परिवार के रिश्तेदारों को। वह दैनिक जीवन की बारीकियों से अनभिज्ञ थी; लेकिन उन्होंने एक परिपक्व महिला होने की तीव्रता के साथ ज्ञान प्राप्त किया। हर तरह से वह एक अलग इंसान थीं. उनकी चेतना की अवस्थाएँ हर कुछ महीनों में बदल जाती थीं, और परिणामस्वरूप हमेशा अचेतन निद्रा में चले जाते थे।

इन्हें उनका पहला और दूसरा चरण कहा गया - प्रत्येक एक अलग व्यक्तित्व - एक जुनून। यह कोई "दोहरी चेतना" नहीं थी, जैसा कि कुछ छद्म वैज्ञानिकों ने कहा है, बल्कि दो एकल चेतनाएँ, दो अलग-अलग व्यक्तित्वों के रूप में प्रकट होकर, बारी-बारी से एक शरीर में निवास करती हैं। डॉ. प्लमर ने मामले का सारांश दिया: "प्रस्तुत घटनाएँ ऐसी थीं कि उनका शरीर दो आत्माओं का घर था, दोनों एक ही समय में नहीं, बल्कि बारी-बारी से, पहले एक द्वारा फिर दूसरे द्वारा, आख़िरकार पंद्रह वर्षों के बाद। संघर्ष के कारण सूदखोर ने आत्मसमर्पण कर दिया और कब्ज़ा कर लिया।

क्योंकि ये न केवल उसकी दो स्मृतियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार सक्रिय और फिर निष्क्रिय हो जाती है; लेकिन उसके मन और चेतना की पूरी संरचना और उनके संचालन का तरीका उसकी अवस्थाओं के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है। उनकी सहानुभूति, उनके तर्क करने का तरीका, उनकी रुचियाँ, उनकी मित्रताएँ और उनके बनने के कारण, एक राज्य में दूसरे की तुलना में बिल्कुल अलग थे। उसकी अलग-अलग इच्छाएं थीं, जीवन के बारे में उसके अलग-अलग विचार थे, वह अपनी स्थिति के आधार पर चीजों को अलग-अलग तरीके से देखती थी।

ऊपर उल्लिखित दिलचस्प उदाहरण, मनोवैज्ञानिक और रहस्यमय, और समान प्रकृति के अन्य उदाहरण जिन्हें नाम दिया जा सकता है, मेरे दिमाग में इस बात का जबरदस्त सबूत पेश करते हैं कि वे गुण शुद्ध और सरल थे। ये चमत्कार नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक नियम के अनुरूप हैं।

जुनून अक्सर पूर्ण कब्जे में विलीन हो जाते हैं, और अच्छे या बुरे के लिए उनकी विशेषताएं काफी हद तक सांसारिक वातावरण और नियंत्रित करने वाली बुद्धि के प्रभुत्व पर निर्भर करती हैं। “उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।

इस अध्याय को अच्छे क्वेकर कवि, व्हिटियर के सौम्य, आशापूर्ण शब्दों का उपयोग करने से बेहतर ढंग से बंद नहीं किया जा सकता है: "ईश्वर की अर्थव्यवस्था में, कोई भी प्रयास, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, सही कारण के लिए आगे नहीं बढ़ाया जाता है, विफल नहीं होता है इसका प्रभाव, सत्य के लिए उठाई गई कोई भी आवाज, चाहे वह कितनी भी कमजोर क्यों न हो, समय की भ्रमित आवाजों के बीच कभी नहीं मरती।

पाप और दुःख, दर्द और अन्याय के विवादों के माध्यम से, एक अमर संगीत उत्पन्न होता है, जिसके विलाप के स्वर बाद में विजय के स्वर में बदल जाते हैं, क्योंकि वे एक सामंजस्यपूर्ण ब्रह्मांड के महान सामंजस्य के साथ मिल जाते हैं! "

अध्याय XXIII

क्या राक्षसी आत्माएँ पहले सम्मोहित करती हैं**,** फिर उन पर मोहित हो जाती हैं और विषयों पर कब्ज़ा कर लेती हैं**?**

मनुष्य एकता में त्रिमूर्ति है, जो एक भौतिक शरीर, एक ईथर आत्मा-शरीर और एक शुद्ध, आवश्यक आत्मा से बना है। आत्मा गद्दीनशीन राजा है। यह ईश्वर का एक शक्तिशाली हिस्सा है; यह अमर है. यह अनादि और अनंत है. शरीर इसका बाहरी वाहन है, क्योंकि विभिन्न स्तरों पर परिष्कृत पदार्थ भगवान का परिधान है। पदार्थ, अक्रिय और अक्रिय होने के कारण, चेतन आत्मा द्वारा बाहरी, भौतिक अभिव्यक्तियों के उद्देश्य से

परमाणुओं, आयनों और ईथर पदार्थों को बनाने और हेरफेर करने के लिए उपयोग किया जाता है।

यह सोचना, महसूस करना, सचेत रूप से महसूस करना अद्भुत है कि व्यक्ति के पास स्वयं एक आत्मा है - एक आध्यात्मिक इकाई - एक सोचने वाला, तर्क करने वाला ईश्वर का पुत्र, विस्तार की शक्तिशाली शक्तियों और आदर्शों को उठाने की संभावनाओं से संपन्न, जो हमेशा लक्ष्य की ओर इशारा करता है एक सुखद पूर्णता का. और फिर भी, मनुष्य अस्तित्व के एक सीमित स्तर पर कार्य करता है; वह चमकती बिजली, गरजती हुई गड़गड़ाहट, पागलपन में फूटने वाले ज्वालामुखी, शहरों को डुबाने वाली बाढ़ या समुद्र के चक्रवाती तूफानों को नियंत्रित नहीं कर सकता।

वह सामाजिक परिवेश और अदृश्य स्रोतों से बहने वाले कानूनों, चुंबकीय धाराओं, असंख्य मानसिक प्रभावों और असंख्य मानसिक सांद्रता का विषय है। यह सीधे तौर पर सम्मोहन या शैतानी आत्माओं के मानसिक प्रभाव की ओर ले जाता है।

सम्मोहन क्या है**?**

कोई भी गहन छात्र कभी भी सम्मोहन और मंत्रमुग्धता का परस्पर उपयोग नहीं करता है। वे पर्यायवाची नहीं हैं. कई वर्षों तक इनमें से किसी एक का अभ्यास करने के बाद, और आधिकारिक तौर पर लंदन की साइको-थेराप्यूटिक सोसाइटी से जुड़ा होने के कारण, कभी-कभी उसी पर व्याख्यान देते हुए, मैं एक नियम के रूप में बोलता हूं, और वर्णन करता हूं सम्मोहन परिभाषित के रूप में: अलग-अलग डिग्री की एक अस्थायी नींद; किसी जागरूक संचालक द्वारा किसी संवेदनशील विषय पर थोपी गई मानसिक स्थिति स्वैच्छिक शक्तियों को प्रभावित या नियंत्रित करती है। कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर क्वाकेनबोस ने अपने खंड "मानसिक और नैतिक संस्कृति" की शुरुआत में इसे इसी तरह परिभाषित किया है।

हालाँकि, इस विषय पर उनके अलग-अलग विचार विरोधाभासी नहीं तो थोड़े भ्रमित करने वाले जरूर हैं। लेकिन पुस्तक के अंत में उन्होंने अपने तर्क के सूत्र को संक्षेप में प्रस्तुत किया है और स्पष्ट भाषा में कहा है, "इच्छाशक्ति का सम्मोहक सुझाव से कोई लेना-देना नहीं है; न तो

संचालक की इच्छा और न ही विषय की। सबसे ऊपर, वह (द) प्रभावित पक्ष) किसी भी हद तक किसी अन्य वसीयत के अधीन नहीं है" (पृ. 268)।

सच है, सकारात्मक संचालिका पूरी तरह से नष्ट नहीं करती - नकारात्मक संचालिका विषय की इच्छा को पूरी तरह से पंगु नहीं बनाती; लेकिन इसका असर उस पर पड़ता है. यहां फिर से मुझे दृढ़ता से पुष्टि करनी चाहिए कि सम्मोहन, पशु चुंबकत्व और मंत्रमुग्धता, हालांकि समान हैं, सभी उत्पत्ति, शक्ति और प्रभाव में भिन्न हैं। अंतिम दो के अभ्यास में, जीवन देने वाला, ओडिलिक द्रव मेस्मेरिस्ट से युक्त होता है। सम्मोहन - सुझावात्मक सम्मोहन - पूर्णतः मानसिक है। इसकी अपनी सीमाएं हैं.

इसका उपयोग बुद्धिमानी से या दुष्टता से किया जा सकता है। यह मूलतः एक कार है- यह एक मजबूत प्रवृत्ति या से जुड़ी है नैतिक ऑपरेटर का रंग, चाहे दृश्य या अदृश्य दुनिया में हो।

क्या आत्माएं सम्मोहित कर सकती हैं**?** क्या वह आकर्षित कर सकती हैं**?**

ज़रूर, वे ऐसा कर सकते हैं। उनमें से अधिकांश न तो देवता हैं और न ही देवदूत, बल्कि पुरुष और महिलाएं हैं जो आज सड़कों पर घूमते हैं, खरीद-फरोख्त करते हैं, अटकलें लगाते हैं और सिद्धांत बनाते हैं, धर्मोपदेश देते हैं और धुएं से भरे पूल-कक्षों में रहते हैं। नीचे गिराएं, ये पुरुष और महिलाएं, अपने भौतिक शरीर से अलग होकर, अपनी पहचान, अपनी यादें, अपने जीवन-उद्देश्यों को बरकरार रखते हुए, तत्काल, व्यापक, आध्यात्मिक दुनिया में रहते हैं।

इसलिए, वे स्वाभाविक रूप से और अनिवार्य रूप से पीछे मुड़कर देखते हैं - स्वाभाविक रूप से उन लोगों को प्रभावित करते हैं, सम्मोहित करते हैं और उन पर अपनी इच्छा जताते हैं जिनके प्रति वे आकर्षित होते हैं। यहां माध्यम का सम्मोहक शासन और राक्षसी प्रभावों का खतरा आता है।

वसीयत क्या है**?**

मनुष्य एक आत्म-जागरूक बुद्धि है, जबकि इच्छाशक्ति उसके व्यक्तित्व का एक अनिवार्य और प्रमुख गुण है। एक नैतिक व्यक्ति के लिए इच्छाशक्ति या आत्मनिर्णय की शक्ति आवश्यक है। इच्छाशक्ति भीतर

से दिशा निर्देशित करने वाली ऊर्जा है। इच्छाशक्ति हमारी अपनी जागरूक गतिविधियों का मार्गदर्शन है। इच्छा का कोई भी पूर्वचिन्तित कार्य आंतरिक, दिव्य मनुष्य की अभिव्यक्ति है। अब सवाल यह उठता है कि क्या सम्मोहन प्रभाव, चाहे वह कितना भी खतरनाक क्यों न हो, - क्या निचली आत्मा का प्रभाव, भटकाव करते हुए, मानवीय इच्छा को पूरी तरह से पंगु बना सकता है या नष्ट कर सकता है?

निश्चित रूप से नहीं! इच्छा, चेतना, नैतिक विवेक, आवश्यक आत्मा और स्वयं ईश्वर से जुड़ा हुआ है, उसे नष्ट नहीं किया जा सकता, नष्ट नहीं किया जा सकता। इसे छायांकित किया जा सकता है - इसे ग्रहण किया जा सकता है, प्रभावित किया जा सकता है, कुछ समय के लिए नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन इसे पूरी तरह और हमेशा के लिए पंगु नहीं बनाया जा सकता - नष्ट नहीं किया जा सकता। सकना।

इस संबंध में आधिकारिक मैन्सेल अपने मेटाफिजिक्स में कहते हैं, "इच्छाशक्ति संपूर्ण व्यक्तित्व का केवल एक आवश्यक तत्व है, और इसे कभी भी पूरी तरह से नष्ट नहीं किया जा सकता है, न ही इसे विचार के किसी भी प्रयास या सामान्य कानून द्वारा नष्ट किया जा सकता है। द्वारा नष्ट किया जा सकता है।" विचलन।" नश्वर या अमर द्वारा मानव इच्छा का विनाश अकल्पनीय है।

जैसा कि पूर्वोक्त कहा गया है, इसे कमजोर किया जा सकता है, इसे विकृत किया जा सकता है, लेकिन मनुष्य या आत्मा द्वारा इसे पुनर्स्थापन से परे कभी भी पूरी तरह से पंगु नहीं बनाया जा सकता है। हजारों गालियाँ एक दैवीय सिद्धांत - पवित्र प्रयोजनों के लिए एक सही उपयोग - को निष्प्रभावी नहीं कर सकतीं।

एंजेलिक मंत्रालय, दिव्य आदेश की पंक्ति में मधुर आत्मा प्रभाव, पवित्र और अधिक स्वर्गीय कार्य की इच्छा को उत्तेजित और तेज करते हैं; जबकि राक्षसी प्रभाव विचलित करते हैं, भ्रमित करते हैं, अपमानित करते हैं, भ्रमित करते हैं और भ्रमित करते हैं, जिससे विकृति, त्रुटि, बुराई और सबसे दर्दनाक जुनून पैदा होता है।

क्या सम्मोहित किये गये व्यक्ति से अपराध करवाया जा सकता है**?**

विषयों के साथ मेरा ऐसा कोई निजी अनुभव नहीं है. लेकिन मेरा अनुभव दूसरों का नहीं है. इससे पहले कि मैं अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग करूं, मैं अपने विषयों को सार्वभौमिक रूप से बताता हूं कि मेरे इरादे अच्छे हैं, कि मेरे लक्ष्य नैतिक और कर्तव्यनिष्ठ हैं - कि अगर उन्हें दर्द है, तो मैं इसे दूर कर दूंगा, और मैं उन्हें स्वस्थ बनाऊंगा, प्रभावित करूंगा प्रसन्न, प्रसन्न, उत्थानकारी प्रभाव। मैं ऐसा करता हूं, और मैंने हमेशा इसे कर्तव्यनिष्ठा से किया है।

और यहां मैं अब तक मिले सबसे शक्तिशाली सम्मोहन विशेषज्ञों में से एक की गवाही प्रस्तुत करना चाहूंगा - जो तीस वर्षों से अधिक समय से निजी और सार्वजनिक रूप से व्यावहारिक सम्मोहन और मनोविज्ञान का प्रदर्शन कर रहा है। मैं बोस-टन, मैसाचुसेट्स के लेखक और सम्मोहन चिकित्सक, प्रो. ए. ई. कारपेंटर का उल्लेख कर रहा हूँ।

वह बिना किसी मानसिक आपत्ति के कहते हैं, कि “पहले यह सोचा जाता था कि सम्मोहित व्यक्ति से कोई भी पाप कराया जा सकता है, और एक महिला का सम्मान सम्मोहित करने वाले की दया पर निर्भर होता है।

वास्तव में, यह सोचा गया था कि एक बार जब कोई व्यक्ति सम्मोहित अवस्था में आ जाता है, तो उसके साथ कुछ भी किया जा सकता है। अपराधियों से इकबालिया बयान निकाले जा सकते हैं, और किसी व्यक्ति के अचेतन से बिना किसी हिचकिचाहट के महत्वपूर्ण रहस्य निकाले जा सकते हैं। यह काफी हद तक एक गलती है, क्योंकि शुरुआती ऑपरेटरों ने इस देश में बहुत पहले सीखे गए सम्मोहन को अपनाया था। "इसे सम्मोहन सुझाव की सीमाओं के संबंध में एक नियम के रूप में निर्धारित किया जा सकता है। किसी भी निश्चित नैतिक विश्वास को दूर नहीं किया जा सकता है, न ही सम्मोहन के किसी भी चरण में व्यक्ति द्वारा कोई महत्वपूर्ण रहस्य प्रकट किया जा सकता है। है।

हमेशा एक गुप्त इच्छा होती है जिसे चरम सीमा तक क्रियान्वित किया जाता है, अंतरात्मा का एक मौजूदा आत्म-सुझाव जिसे पूरी तरह से तोड़ा नहीं जा सकता है। इस सामान्य प्रस्ताव के विपरीत कोई भी कहानी जो आपने पढ़ी या सुनी है, आप सुरक्षित रूप से किसी की कल्पना का परिणाम मान सकते हैं। ऐसा ही होना चाहिए। यह एक भयानक दुर्भाग्य होगा यदि हम इस प्रकार निर्मित हो जाएं कि हम ऐसी मनःस्थिति में पहुंच जाएं जिसमें हम पूरी तरह से दूसरे की बुरी इच्छा के अधीन हो जाएं।

यद्यपि विषय के लाभ के लिए सुझाव की शक्ति की कोई सीमा नहीं है, फिर भी आत्म-संरक्षण और सहज न्याय की प्रवृत्ति द्वारा समर्थित एक आरक्षित नैतिक दृढ़ विश्वास है जो आत्म-सुझाव के रूप में कार्य करता है, "जो इस उच्च में है सम्मोहन विषय को खुद को या दूसरों को चोट पहुँचाने से रोकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि डी पुइसेगुर से, ब्रूस से, कर्नल डी रोचास से, प्रोफेसर अलेक्जेंडर वाइल्डर से, एक अन्य प्रतिष्ठित सम्मोहनकर्ता, मनोवैज्ञानिक और तत्वमीमांसा, प्रोफेसर कारपेंटर के विचारों को कुछ समर्थन देते हैं।

प्रसिद्ध मानसिक वैज्ञानिक और लेखक, प्रोफेसर वाइल्डर, इस प्रकार लिखते हैं, "सम्मोहित व्यक्ति, जिसका व्यक्तित्व अस्थायी रूप से निष्क्रिय हो जाता है, उन लोगों की आभा और प्रभाव के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है जिनका प्रभाव उस पर केंद्रित होता है। इसी तरह, हम अक्सर एक-दूसरे पर काम करते हैं हमारी उपस्थिति की मूक ऊर्जा और हमारी इच्छा के माध्यम से हमारे ध्यान की एकाग्रता। सम्मोहित व्यक्ति, या सम्मोहित ट्रान्स में व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा निष्क्रिय है, लेकिन वास्तविक आंतरिक आत्मा पहले की तरह जागृत है, और व्यक्ति जाग नहीं सकता है किसी दुर्भावनापूर्ण अपराध को करने के लिए किसी आवेग के तहत प्रेरित होना।

अंतरात्मा, जो भीतर का आधिकारिक 'चाहिए' है, इसे रोकती है। किसी भी कार्य को करने का प्रलोभन उस कार्य को करने का कमीशन नहीं है। प्रेरित प्रवृत्ति कोई सिद्ध वास्तविकता नहीं है। प्रोफेसर वाइल्डर हमें आगे आश्वस्त करते हैं कि "प्रभाव पारस्परिक होता है, और जिस तरह एक आत्मा किसी इंसान या मध्यस्थ को प्रभावित कर सकती है, उसी तरह यह मान लेना उचित है कि एक इंसान भी बदले में किसी आत्मा को प्रभावित कर सकता है।" इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सम्मोहन का शर्मनाक दुरुपयोग किया जाता है।

स्वार्थी, दुष्ट व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति अत्यंत खतरनाक होती है। वह उस जहरीली शक्ति को बाहर लाता है जो कैद कर सकती है। अफ़्रीकी वेश्याएँ सम्मोहित करने वाली होती हैं। सम्मोहन अक्सर परिवारों को तोड़ने में कारगर रहा है। और प्रोफेसर कारपेंटर की गवाही के बावजूद, उच्च अधिकारियों - मानसिक अध्ययन और प्रयोगों के विशेषज्ञों - की सर्वसम्मत गवाही से मेरा मानना है कि निम्न नैतिक स्तर पर लगातार काम करने वाले सम्मोहनकर्ता प्रेरित कर सकते हैं - सबसे काले अपराध कर सकते हैं। हैं। मेरे लिए यह एक परिपक्व विश्वास है.

इन घुमंतू सम्मोहनकर्ताओं से, जो सर्दियों के मौसम में शहर और देहात में घूमते हैं, मनोरंजन के लिए या पैसे कमाने के लिए सार्वजनिक हॉलों में अजनबियों को सम्मोहित करते हैं, उनसे उसी तरह बचना चाहिए जैसे कोई भड़कती आग या पानी की तेज बाढ़ से बचता है। . ये धोखेबाज और भटकते पिशाच हैं। यदि उनका जीवन भ्रष्ट है, तो वे जुनूनी राक्षसों के लिए रास्ता खोलते हैं। उनके सुझाव और उनके तरीके मौत की ओर ले जाते हैं।

त्रि-व्यक्तित्व और आत्मा नियंत्रण।

रहस्यमय चरित्र के दोहरे और तिहरे व्यक्तित्वों के बारे में मानसिक अनुसंधान समितियों द्वारा बहुत शोर मचाया गया है। प्रयुक्त शब्द, जो अक्सर बहु-अक्षरीय होते हैं, घटित होने वाली घटनाओं को स्पष्ट करने के बजाय उन्हें रहस्यमय बनाने की प्रवृत्ति रखते हैं। इस रहस्य का अधिकांश भाग व्यक्तित्व और व्यक्तिपरकता के बीच ठीक से अंतर न करने के कारण उत्पन्न हुआ है।

वे पर्यायवाची नहीं हैं. व्यक्तित्व (व्यक्तित्व, लैटिन) चेतना, गुणवत्ता, प्रदत्त विशेषताओं और विरासत में मिली, अर्जित या हस्तांतरित अन्य विशेषताओं से बना है। किसी आत्मा से ग्रसित व्यक्ति का रूप-रंग तो अलग होता है, लेकिन वह दूसरा व्यक्तित्व नहीं होता।

तर्कसंगत अध्यात्मवाद का प्रत्येक छात्र जानता है कि एक आत्मा में प्रवेश करने वाले व्यक्ति, और विशेष रूप से अगर अनजाने में प्रवेश किया जाता है, तो उसके पास एक और व्यक्तित्व, एक दोहरा व्यक्तित्व, एक त्रि-व्यक्तित्व, या सात गुना व्यक्तित्व हो सकता है, जो बदले में, सात अलग-अलग आत्माओं को अलग-अलग स्तरों पर रखता है। आत्मा का अस्तित्व बुद्धि प्रदान करता है, मानसिकता को नियंत्रित करता है। लेकिन कहा गया व्यक्ति कभी भी दोहरे या तिहरे व्यक्तित्व वाला नहीं होता। और क्यों? - क्योंकि व्यक्तित्व ही मनुष्य का मूल है।

शब्दकोश की दृष्टि से परिभाषित, यह एक इकाई, अस्तित्व, एकता, पृथक अस्तित्व है। इसलिए, यह दिव्य अहंकार, जीवन के असंयुक्त, अदृश्य,

अविभाज्य आध्यात्मिक केंद्र - भगवान के अवतार के बराबर है। यह, हालांकि प्राकृतिक या सम्मोहक नींद में अव्यक्त है, फिर भी, केंद्रीय चेतन शक्ति है - आवश्यक शक्ति - अपने सिंहासन पर अमर राजा! व्यक्तितत्व आवश्यक है. व्यक्तितत्व का सम्बन्ध उसकी मानसिक वेशभूषा तथा विभिन्न प्रकार के वातावरण से अधिक होता है।

इन्हें सुझाव, सम्मोहन और इच्छाशक्ति द्वारा ऐसे सुधारों में संशोधित किया जा सकता है जो विभिन्न व्यक्तित्वों को प्रकट करते हैं। बहुचर्चित "अवचेतन" एक मिथक है। हीरा चाहे कितनी भी गहराई में दबा हो, चाहे कितना भी कूड़े-कचरे से ढका हो, वह हीरा ही होता है। और इसलिए व्यक्तितत्व, चेतन आत्मा, अभी भी आत्मा है, और इस तरह यह बिल्कुल अविनाशी है।

जुनून, शब्द के एक महत्वपूर्ण अर्थ में, गर्भधारण से शुरू हो सकता है। एक निश्चित आत्मा, किसी उद्देश्य को पूरा करने की इच्छा रखते हुए, गर्भाधान के क्षण में ही भ्रूण को मानसिक शक्तियों, गुणों और पूर्व-मानसिक संस्कारों से भर सकती है - माँ को इस तरह से प्रभावित कर सकती है कि बच्चे को जीवन-प्रवृत्ति प्रदान कर सके। .

यह हिंदू पुनर्जन्म के बजाय बच्चों में असमानता के कारणों की व्याख्या करता है, और वह कुंजी प्रदान करता है, जिसे खोलने पर, जन्मजात प्रतिभा के कारण और तरीके का पता चलता है। प्रतिभा या नैतिक राक्षस के पीछे एक प्रेरक व्यक्तितत्व छिपा होता है। और इसलिए जुनून का संबंध व्यक्तितत्व से होता है, व्यक्तितत्व से नहीं। विचारोत्तेजक बीज बोने के बाद, यदि वे ऐसा करने के लिए तैयार हैं, तो वे सम्मोहित रूप से व्यक्ति की जीवन-योजनाओं और आचरण को प्रभावित, विकृत, विकृत और ढाल सकते हैं, चाहे वह स्वर्गीय हो, या निचले, मनहूस प्रकार का - वास्तव में राक्षसी।

इन प्रतिकूल प्रभावों के संबंध में, मिस एस.सी. क्लार्क, लिन, मैसाचुसेट्स, अपनी पुस्तक में लिखते हैं। "पिलेट्स क्वेरी/" शीर्षक वाला बहुत दिलचस्प खंड पढ़ता है: "हम सचेत आत्मा-अस्तित्व के क्षेत्रों में, आत्मा-जीवन के उबलते समुद्र में डूबे हुए हैं। हर घंटे कई आत्माएं सांसारिक अवतार से गुजरती हैं।

उनमें से अधिकांश सांसारिक अस्तित्व की सीमा पर रहते हैं; उनके आकर्षण यहीं हैं; वे दूर नहीं जा सकते. हमारे वायुमंडल में तैरते हुए, इन

भटकती संस्थाओं को किसी विशेष व्यक्तित्व से मिलने या आकर्षित होने का मौका मिलता है।

वे उस व्यक्ति के आस-पास की आभा में उलझ जाते हैं; कभी-कभी वे ज़्यादा दूर तक नहीं जा पाते; जैसा कि आप जानते हैं, अक्सर वे शरीर पाने की चाहत से बुरी तरह चिपके रहते हैं। ऐसे व्यक्ति को मुक्त करने की क्षमता आज के उपचारक के कार्य में एक अनिवार्य आवश्यकता है। जब तक वह अशुद्ध आत्माओं को बाहर नहीं निकालता, वह मसीह का सही कार्य नहीं कर रहा है। 'उसने आत्माओं को निकाला और अपने वचन से सभी बीमारों को चंगा किया।'

इन विभिन्न आवश्यकताओं के बीच स्पष्ट अंतर किया गया है। शिष्यों को बीमारों को ठीक करने, कोढ़ियों को शुद्ध करने और अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकालने का भी आदेश दिया गया था।

शिकागो की मिस कॉन्सिडिनो ने अपने दोस्तों को आश्वासन दिया कि जब वह बहुत स्वस्थ महसूस कर रही थी, तो धीरे-धीरे एक भावना ने उसे जकड़ लिया और वह बेहोश होकर आगे गिर पड़ी। उन्होंने टिप्पणी की, "मुझे पहले भी इसी तरह के दौरे (ट्रांस) हुए हैं।" वह एक मानसिक रोगी थी. अट्ठाईस घंटे बाद उसने खुद को एक अस्पताल में पाया। उपस्थित चिकित्सकों ने इसे "कोमा का एक अजीब मामला" घोषित किया।

चूंकि चिकित्सक आम तौर पर हमारे आसपास मनोविकृति, ट्रान्स और जुनूनी प्रभावों से अनभिज्ञ होते हैं, वे इसे और क्या घोषित कर सकते थे! यदि जुनून नहीं तो जुनून के निम्नलिखित चिह्नित मामले थे: "डॉ. विलियम क्लिफ़ोर्ड मैकडोनाल्ड ने अप्रैल 1901 में इस शहर (न्यूयॉर्क) के क्लब में शामिल होने के लिए हार्वर्ड छोड़ दिया, और तब से उन्हें नहीं देखा गया है। दिसंबर में आर्थर डेविड हैमंड पार्क, 1902 आरओ इमारत से गायब हो गया।

वह एक संवेदनशील व्यक्ति थे. "रेव. विलियम एच. डेक्सटर, नॉर्मल एकेडमी, न्याक के प्रिंसिपल, नवंबर 1899 में फिफ्थ एवेन्यू होटल से गायब हो गए।" "यूनिवर्सिटी सेटलमेंट के रेव. ए. वाल्डो को छह साल की अनुपस्थिति के बाद फरवरी, 1902 में पाया गया था। वह निस्संदेह सम्मोहित थे या किसी आत्मा के वश में थे।" यहाँ जुनून का एक मामला है जो उच्च अधिकार में है। जब स्पेन के राजा अल्फोंसो की मां, रानी डोवेगर मारिया क्रिस्टीना, हाल ही में वियना के लिए रवाना हुईं, तो निम्नलिखित

अंग्रेजी और महाद्वीपीय पत्रिकाओं में छपा था: "अपने राज्यारोहण के समय तक, अल्फोंसो एक समर्पित और कर्तव्यनिष्ठ पुत्र थे, और वह और उनके माँ के सबसे सौहार्दपूर्ण संबंध उनके पति और पत्नी के बीच थे, जो उनके अल्पसंख्यक होने के दौरान रीजेंट थे।

हाल ही में उसके प्रति उसका व्यवहार इतना अपमानजनक, क्रूर नहीं तो, रहा है कि इसने मानसिक टूटने की कहानियों को जन्म दिया है। वर्षों तक उसने उसकी देखभाल की, उसकी देखभाल की, और उसकी रक्षा की, और उसे बचपन की दुर्बलताओं और बीमारियों से बचाया और अंततः उसे उसके पिता के स्पेनिश सिंहासन पर बैठाया, और अब, जब उसे अपनी माँ की प्रेमपूर्ण देखभाल मिली , कम से कम आंशिक रूप से, भुगतान करने का अवसर मिलने पर, वह उसके खिलाफ हो जाता है, यहां तक कि अपने गार्डों को उसे महल से बाहर निकालने की धमकी भी देता है।

"इस माँ के साथ उनका व्यवहार, इसे हल्के शब्दों में कहें तो, सनकीपन का एकमात्र संकेत नहीं है जो राजा ने दिखाया है। उन्होंने सभी मिसालों, विशेषकर सैन्य मिसालों के प्रति घोर उपेक्षा दिखाई है, और बीच में अचानक समीक्षा का आह्वान किया है दिन ने सैनिकों को बैरकों से बाहर निकाल दिया है - प्रकाश, और अपने मंत्रियों के साथ झगड़ा किया है, कई प्रस्तावों पर उनका विरोध किया है और उन कागजात पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है जो उन्होंने उसे प्रस्तुत किए थे।

उनकी हाल की विलक्षणताओं में से एक यह थी कि वह अपने अपार्टमेंट से बिल्कुल नग्न होकर आए, यह घोषणा करते हुए कि कपड़े अनावश्यक थे, और आधे दिन तक नग्न होकर महल में घूमते रहे, किसी को भी उनके पवित्र व्यक्तित्व को छूने से रोक दिया। पागलपन की सीमा तक जुनून का इससे स्पष्ट मामला शायद ही कोई हो सकता है। जैसा कि पहले इस खंड में व्यक्त किया गया है, शरणस्थलों में रहने वाले पागलों का एक बड़ा हिस्सा अज्ञानी है या स्वार्थी, दुर्भावनापूर्ण संस्थानों से ग्रस्त है जो आस-पास के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहते हैं।

क्या इन भयानक स्थितियों से बचा जा सकता है? क्या जुनूनी कैदियों को रिहा किया जा सकता है? क्या इन आत्माओं को स्वयं उनकी आत्म-कारावास से मुक्त किया जा सकता है और मोक्ष दिया जा सकता है? इन प्रश्नों के उत्तर अगले अध्यायों में दिये गये हैं।

अध्याय XXIV.

क्या जुनूनी लोगों को राहत मिल सकती है, और नीच, जुनूनी आत्माओं को बचाया जा सकता है?

हर्बर्ट स्पेंसर की वास्तविकता की कसौटी दृढ़ता है। यह मानदंड भूतों, आत्माओं, राक्षसों और स्वर्गदूतों की अभिव्यक्तियों पर उतना ही लागू होता है जितना कि सभी जनजातियों और राष्ट्रों के बीच आत्मा की अमरता में सार्वभौमिक विश्वास पर। केवल अशिक्षित या हठधर्मी लोग ही इससे इनकार करते हैं।

समय का वर्तमान चक्र, संस्थाओं का अस्तित्व, हमारे बीच अदृश्य उपस्थिति के विभिन्न नैतिक स्तर। ये अदृश्य परिचारक कौन हैं - उनका उद्देश्य क्या है, और वे हमें किस हद तक प्रभावित करते हैं! ये सवाल कम नहीं होंगे. डॉ. लाइमन एबॉट ने आउटलुक में लिखा: "मेरे 'लाइफ ऑफ क्राइस्ट' में बताए गए कारणों से, मेरा मानना है कि न केवल वास्तव में भूत-प्रेत जैसी घटनाएं थीं, बल्कि वास्तव में अभी भी हैं।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर विलियम जेम्स, "साइकिकल रिसर्च सोसाइटी" के संबंध में मीडियमिस्टिक ट्रान्स पर लिखते हुए कहते हैं, "हम प्रकृति के सभी प्रकार के नियमों में विश्वास करते हैं जिन्हें हम खुद नहीं समझ सकते हैं, केवल इसलिए कि जिन लोगों की हम प्रशंसा करते हैं और लेकिन वे उनकी जिम्मेदारी लेते हैं। उन्हें।

यदि श्री हेल्महोल्ट्ज़, हक्सले, पाश्चर और एडिसन एक साथ घोषणा करें कि वे दूरदर्शिता, विचार-स्थानांतरण और भूत भगाने में परिवर्तित हो गए हैं, तो इसमें कौन संदेह कर सकता है कि इस दिशा में हाहाकार मच जाएगा! हमें वैज्ञानिक प्रेस में 'टेलीपैथी' पर उतनी ही चर्चा करनी चाहिए जितनी अब मेडिकल प्रेस में 'सुझावों' पर होती है।

समाज में हमें उत्सुकता से यह कहना चाहिए कि हमने हमेशा सोचा है कि भुतहा घरों का आधार सत्य होता है, और जहां तक हमें याद है, हम शैतानी कब्जे में विश्वास करते रहे हैं।" उपरोक्त औसत अमेरिकी की कायरता का एक उचित बयान है। लोग क्या कहेंगे! यह एक सामान्य टिप्पणी है. जब कुछ, प्रतिष्ठित लोग, सूँघते हैं, तो बहुसंख्यक छींकते हैं।

“क्या फरीसियों के हाकिमों में से किसी ने उस पर विश्वास किया!” प्रेरितों के समय में पूछताछ की जाती थी। आज भी अनेक अध्यात्मवादी हैं, उनमें से अनेक इस तथ्य से परिचित हैं - यह अत्यंत दुःखद तथ्य है कि आजकल हजारों लोग स्वार्थी, दुष्ट हैं - एनाक्सागोरस, सुकरात तथा वर्जिल के क्यूमियन सिबिल के समय में भी यही प्रवृत्ति थी।

लेकिन वे इन तथ्यों को नकारते हैं, जो जितना जिद्दी है उतना ही दर्दनाक भी। उनके स्टॉक वर्ड्स हैं, "इससे अध्यात्मवाद को नुकसान होगा।" ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ प्रतिक्रिया यह है, "यदि तथ्य - यदि स्पष्ट रूप से कहा गया सत्य - अध्यात्मवाद को नुकसान पहुँचाता है, तो, इसे नुकसान पहुँचाएँ।" बार्नाकल हटने के बाद जहाज बेहतर हो जाता है. किसी भी सत्य को नष्ट नहीं किया जा सकता.

मचान गिरने के बाद भी इमारत खड़ी रहती है। ये जुनूनी मामले अक्सर जनता के ध्यान में लाए जाते हैं। डॉ. जी.एल. निम्नलिखित एक मामले का विवरण है जो लेन, बोस्टन द्वारा उनके उपचार के तहत आया था।

कुछ साल पहले एक खूबसूरत अधेड़ उम्र की महिला का कहर मेरे पास आया था। उन्होंने कहा, "उसकी बहन आखिरी उपाय के तौर पर उसे मेरे पास ले गई।" वह एक दयनीय चीज़ थी. उसे वर्षों से शांति या अच्छी रात की नींद नहीं मिली थी। गिरी हुई, राक्षसी आत्माओं ने उससे बात की, और उसकी आंखों में बदसूरत और अश्लील तस्वीरें डाल दीं, जिससे वह अपने पति और बच्चों के खिलाफ हो गई। उनके पति बोस्टन के पास एक बड़े शहर में पोस्टमास्टर थे और हैं।

उसने उसके नाम पर भारी कर्ज लिया, रात में खिड़कियों से बाहर कूद जाती थी और मीलों दूर रिश्तेदारों से मिलने जाती थी, और अंततः उसे अपने बिस्तर से बांध दिया गया था। उनके पति ने उन्हें पागलखाने में रखने का पूरी तरह से फैसला कर लिया था. वह अपनी परेशानियों और सुधार की कहानी इस प्रकार बताती है: “मैं पंद्रह वर्षों तक विकलांग थी, इस दौरान मुझे कमोबेश गंभीर सिरदर्द का सामना करना पड़ा।

मैं कई हफ़्तों तक अपने दोस्तों या परिवार से नहीं मिल पाता था और प्रशिक्षित नर्सों की देखभाल में था। फिर न्यूयॉर्क में एक विशेषज्ञ द्वारा एक वर्ष से अधिक समय तक मेरा इलाज किया गया। विभिन्न उपचार आज़माने के बाद मुझे आंशिक राहत मिली।

कुछ देर राहत महसूस करने के बाद मैं अपनी पुरानी स्थिति में लौट आता. मैंने मानसिकता और ईसाई विज्ञान की ओर रुख किया और अलग-अलग समय पर एक दर्जन या अधिक लोगों द्वारा इलाज किया गया, थोड़ी देर के लिए कुछ राहत महसूस हुई, फिर निराशा की अपनी पुरानी स्थिति में वापस चला गया। मैं कई हफ्तों तक सो नहीं सका और अंततः मेरी स्थिति निराशाजनक घोषित कर दी गई।

मेरे शरीर में स्नायु द्रव लगभग समाप्त हो चुके थे; मेरे मन की पीड़ा भयानक थी और मेरा कमरा, मेरे शांत क्षणों में, अजीब चेहरों और रूपों से भरा हुआ था। मैं लगातार मुझे संबोधित आवाजें सुन सकता था, मुझे आतंक और निराशा से भर रहा था, जब तक कि मेरा एकमात्र विचार अपना जीवन समाप्त करने का नहीं था। किसी को मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि ये चेहरे और ये आवाज़ें मतिभ्रम थीं। मुझे ज़्यादा अच्छी तरह पता है।

मैं दिव्यदर्शी था. मैंने देखा, मैंने सुना, मैं जानता था और मैं अब भी स्थिति और उसके कारणों को जानता हूं। यह जुनून था. इस गंभीर स्थिति में बोस्टन के डॉ. जी.एल.लेन ने मुझे राहत दी और अब मैं एक स्वस्थ एवं खुशहाल महिला हूं।

"'श्रीमती।-'।"

जुनूनी लोगों को बेदखल करने का सबसे प्रभावी साधन क्या है**?**

मद्रास, बैंगलोर और दक्षिण भारत के अन्य शहरों में कुछ महीने बिताए, कभी-कभी पहाड़ों में समूहों के साथ और दूरदराज के पुराने मंदिरों की तीर्थयात्रा की, जो कभी पवित्र स्थान थे और अब आंशिक रूप से खंडहर हो गए हैं। ऐसा करते समय मैंने वहां बहुत विशिष्ट जुनूनी दृश्य देखे।

मानसिक रूप से प्रभावित मूल निवासी को अंग्रेजी बोलने वाले लोगों के बीच एक माध्यम या मध्यस्थ संवेदनशील प्राणी कहा जाता था। एशियाई

तुर्की में अपने अमेरिकी कांसुलर कार्यालय को भरने के दौरान मैंने दरवेशों के बीच इसी तरह की घटनाएँ देखीं।

बौद्ध लड़कियों के लिए म्यूज़ियस स्कूल (कोलंबो, सीलोन में दालचीनी गार्डन में) की श्रीमती हिगिंस और अन्य लोगों के साथ, मैंने एक राक्षस नृत्य दृश्य में भाग लिया और देखा, और बाद में कैंडी, सीलोन के उत्तर में एक पुराने बौद्ध रॉक मंदिर का दौरा किया। पास के जंगलों में, मैंने इन जुनूनी मूल निवासियों को अजीब, जंगली विकृतियों के साथ, राक्षस देवताओं की भविष्यवाणियां और अश्लील कविताएं लेकर गुजरते देखा। वे केवल अद्वितीय जुनून का प्रदर्शन थे, भूतों के अव्यवस्थित अंधेरे घेरे के विपरीत नहीं, जहां भाग्य के बारे में बताया जाता है, और कुछ निर्दोष कंजूस के छिपे हुए खजाने को सुरक्षित करने के लिए मंत्रमुग्ध करने वाली योजनाएं बनाई जाती हैं। हैं।

जैसा कि पहले कहा गया है, यह भूत-प्रेत भगाने की विद्या एक प्रकार की आधुनिक बेबीलोनियाई जादू-टोना है। इसके भक्त, पाताल के अवतारी निवासियों से सम्मोहित होकर, पैसे के लिए दिव्य ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह उच्च टैरिफ के साथ अनैतिक आत्मा व्यापार है। यह नीचे से है और स्वाभाविक रूप से अदृश्य के अंधेरे और अंधेरे क्षेत्रों की ओर आकर्षित होता है। कैंटन, चीन में, जब हम चिकित्सक और मिशनरी इर से मिले। केर, हमें अमेरिका में आत्मा की अभिव्यक्तियों के बारे में बात करने का अवसर मिला, जब उन्होंने शांतिपूर्वक कहा: 'क्यों, श्रीमान, इस देश में ये अभिव्यक्तियाँ बहुत पुरानी हैं।

चीन अध्यात्मवादियों का साम्राज्य है। और इसे साबित करने के लिए वह मुझे मंदिरों, तीर्थस्थलों और बूथों पर ले गए जहां मैंने आत्मा-लेखन और आध्यात्मिक घटनाओं के अन्य रूप देखे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज प्रबुद्ध दुनिया भर में आम सहमति है कि ये मानसिक घटनाएं काफी हद तक अदृश्य आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का काम हैं, जो कि राक्षसी उपद्रवों के समान हैं जो ईसा मसीह के समय के यहूदी लोगों की विशेषता थीं। ये अजीब जुनून सभी देशों, सभी कालों और जीवन की सभी स्थितियों से संबंधित हैं, निम्नतम से निम्नतम तक।

शीर्ष। प्रत्येक राष्ट्रीयता, प्रत्येक शहर का अपना विशिष्ट श्रवण क्षेत्र होता है। न्यूयॉर्क क्षेत्र, श्रवण उत्सर्जन, फिलाडेल्फिया से बहुत अलग है, और फिलाडेल्फिया के क्षेत्र निश्चित रूप से लंदन से अलग हैं। संवेदनशील लोग

इन विविध स्थितियों को तुरंत पहचान लेते हैं। और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का अपना परिवेश क्षेत्र होता है।

स्वीडनबॉर्ग टिप्पणी करते हैं कि "ये क्षेत्र हर किसी के विचारों से प्रवाहित होते हैं। स्वर्गदूतों से जो निकलता है वह इतना प्रेम और ज्ञान से भरा होता है कि वे उन सभी के आंतरिक जीवन को प्रभावित करते हैं जिनके साथ वे मौजूद होते हैं। मैंने कभी भी उन्हें महसूस नहीं किया है और मैंने खुद भी ऐसा किया है।" खुशी से छुआ गया।" * स्वार्थी, सम्मोहित करने वाली आत्माएं अक्सर इन व्यक्तिगत क्षेत्रों में अपना रास्ता बनाती हैं, और इस तरह व्यक्तित्व पर कब्ज़ा कर लेती हैं, पहले जुनूनी बनती हैं, फिर संभवतः व्यक्ति को बर्बादी के कगार पर पहुंचा देती हैं।

यहां स्वाभाविक रूप से यह सवाल उठता है कि आपके ओझा कहां हैं? पृथ्वी पर रहने वाली इन बेचारी आत्माओं को बाहर लाने, भगाने और उनकी स्थिति को बेहतर बनाने का अधिकार किसके पास है? पुराना सन्देश सुनो: '4और उस ने अपने बारह चेलों को बुलाकर उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें, और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।

मरकुस 10:1. 'और जब सांझ हुई, तो लोग बहुतोंको जिनमें दुष्टात्माएं थीं, उसके पास लाए; और उस ने अपने वचन से दुष्टात्माओंको निकाला, और सब बीमारोंको चंगा किया। मैट 13:10. वाक्यांश पर ध्यान दें, "उसका वचन," और उस मुखर शब्द के पीछे था "7 इच्छा, शुद्ध किया जाएगा, और इसके पीछे मूसा और एलिजा की शानदार आत्माएं थीं, -

और उनके पीछे स्वर्गदूतों की सेनाएं हैं, और उनके पीछे मसीह के "गवाहों के बादल" हैं - स्वर्ग, और उनके पीछे और ऊपर सर्वशक्तिमान ईश्वर, केंद्रीय चेतना, जीवन, शक्ति, प्रेम और ब्रह्मांड का ज्ञान है। अंधेरी राक्षसी आत्माओं में अज्ञानता या स्वार्थ के माध्यम से, जीवन शक्ति को परेशान करने या अवशोषित करने, तंत्रिका संबंधी चिड़चिड़ापन पैदा करने, आंशिक रूप से पंगु बनाने, उन लोगों के उत्सर्जित क्षेत्रों में जहरीली आभा डालने की शक्ति होती है जिन्हें वे किसी उद्देश्य के लिए अपने पास रखते हैं। वे अपने नारकीय स्वभाव के लिए जाने जाते हैं, जो घायल करना या बीमार करना चाहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे मनोविकृति और गुप्त अध्ययन की विभिन्न शाखाओं में पारंगत हैं।

ऊपर उद्धृत अंशों में यह देखा जाएगा कि इन आत्माओं को "अशुद्ध आत्माएं" कहा जाता है, और उन्हें बाहर निकालना "सभी प्रकार की बीमारियों" से जुड़ा है। ईसाई धर्म के शुरुआती दिनों में, जब यह पुरोहिती के बजाय आध्यात्मिक था, और जब भगवान और मनुष्य का प्यार शिष्यत्व की एकमात्र परीक्षा थी, बुराई को प्रभावित करने वाली आत्माओं को चुंबकीय रूप से अलग कर दिया गया था, या शिष्यों से निष्कासित कर दिया गया था और कई सच्चे प्रेरितिक विश्वासियों द्वारा उन्हें बाहर निकाल दिया गया था। . इसलिए यह अंश: "और सत्तर लोग आनन्द के साथ फिर लौट आए, और कहा, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हो गए हैं।

इस बात से आनन्दित न हो कि आत्माएँ तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं। ल्यूक 10:17, 20। इंजीलवादियों के बारे में और कुछ न कहते हुए, यह कहा गया है (प्रेरितों 19) कि "पौलुस के हाथों से विशेष चमत्कार (आध्यात्मिक अभिव्यक्तियाँ) किए गए; यहाँ तक कि बीमार लोग भी उसके शरीर के माध्यम से ठीक हो गए।" उनके पास रूमाल या रूमाल लाए जाते थे, और उन में से रोग दूर हो जाते थे, और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाती थीं।"

जुनून की अनुमति क्यों है**?**

यह पूछा जा सकता है कि अच्छे, शुद्ध-मन वाले, उच्च आत्माएं वासनाओं को रोकने की कोशिश में हस्तक्षेप क्यों नहीं करते? इसलिए समझदारी से यह पूछा जा सकता है कि पृथ्वी पर अच्छे, ईमानदार अधिकारी सभी बुरे और गलत कामों को क्यों नहीं रोकते। आत्माओं और स्वर्गदूतों को असीमित शक्ति नहीं दी जाती है। वे वही करते हैं जो वे उचित रूप से कर सकते हैं। मनोवृत्ति, इच्छाशक्ति काफी हद तक दोनों को नियंत्रित करती है वहाँ और यहां।

एक स्वार्थी, सकारात्मक आत्मा, आधार उद्देश्यों और एक शक्तिशाली इच्छाशक्ति के साथ, जुनूनी हो सकती है जहां एक संवेदनशील, परिष्कृत, नकारात्मक मातृ आत्मा का जीवन जुनूनी प्रभाव का मुकाबला करने में विफल हो सकता है। कुल्हाड़ियों और कुदाल के साथ कॉर्क आयरिश लोगों

का एक गिरोह न केवल रेलमार्ग पर समान संख्या में कलाकारों या येल प्रोफेसरों को मात दे सकता है, बल्कि वे निस्संदेह किसी भी शारीरिक लड़ाई में कुछ समय के लिए उन्हें हरा सकते हैं।

आत्मा की दुनिया में प्राकृतिक कानून है; लेकिन सभी स्वार्थी गलत कामों को रोकने के लिए, स्वर्गदूतों को छोड़कर, किसी भी दुनिया में कानून हमेशा पर्याप्त नहीं होता है। ईश्वर सार्वभौमिक नियमों के अनुसार शासन करता है, विशेष नियमों के अनुसार नहीं। मुझे लगता है कि आपकी पूछताछ यह है, 6 6 मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं किसी अच्छी या बुरी आत्मा से प्रभावित या नियंत्रित हूं?

आपकी संवेदनशील धारणाओं, आपके अंतर्ज्ञान, आपके कारण और आपके उच्चतम निर्णय से; अन्यथा व्यक्त किया गया, यदि किसी आत्मा का दृष्टिकोण और प्रभाव तंत्रिका संबंधी चिड़चिड़ापन, जीवन शक्ति की स्थायी थकावट और निराशाजनक निराशाजनक पूर्वाभास का कारण बनता है; या यदि यह ईर्ष्या, ईर्ष्या और बुरी भावनाओं को प्रेरित करता है, तो, कुछ महान नाम लेते हुए, इसे एक परजीवी, एक भूखा जलकाग, एक सिमेरियन दानव मानें, और तुरंत, सकारात्मक रूप से कहें, ((मेरे पीछे हट जाओ, शैतान!)

क्या पृथ्वी पर कहीं भी बुराई है**?**

यह दुखद है कि ऐसे सार्वजनिक शिक्षक हैं जो सिखाते हैं कि इस या भविष्य के जीवन में कोई बुराई नहीं है, - सब कुछ सही है - "सब कुछ अच्छा है," वे कहते हैं। जिसे बुराई कहा जाता है वह बस "अविकसित अच्छाई" है, जिसका कारण हमें यह कहने के लिए मजबूर करता है कि जानबूझकर झूठ बोलना अविकसित सत्य है, और बलात्कार अविकसित गुण है। ये सिद्धांत सबसे अंधकारमय राक्षसों के सिद्धांत हैं। यह तुलनाओं की दुनिया है. वहाँ घाटियाँ और दलदल हैं जहाँ चिपचिपे साँप रेंगते हैं, और धूप में चूमते ऊँचे पहाड़ हैं जहाँ हवा हमेशा शुद्ध और स्फूर्तिदायक होती है।

विरोधाभास हमारे चारों तरफ मौजूद हैं। वे असली हैं। उग्र पागलपन उतना ही सकारात्मक भाव है जितना कि शांत, संयमित सहानुभूति। जो लोग महसूस नहीं कर सकते, जो नहीं जानते, जो गर्मी और ठंड के बीच अंतर नहीं समझ सकते वे शारीरिक रूप से पंगु हैं, और जो लोग अच्छे और बुरे के बीच अंतर नहीं समझ सकते वे पहले से ही सबसे निंदनीय नैतिक पक्षाघात से पीड़ित हैं। उनका आध्यात्मिक स्वभाव सुन्न हो गया है। यह प्रेरित यशायाह ही था जिसने कहा, "हाय उन पर जो बुरे को अच्छा और अच्छे को बुरा कहते हैं, और जो अन्धकार को प्रकाश और अन्धकार को प्रकाश कहते हैं।" ये सिद्धांत तर्कहीन राक्षसों के सिद्धांत हैं।

जुनून में क्या कदम उठाने चाहिए**?**

जो लोग स्वयं को नैतिक अंधकार की इन आत्माओं से परेशान और वशीभूत मानते हैं, उन्हें स्वच्छता, संगति और विचारों के संबंध में अपनी दैनिक आदतों में सुधार करना चाहिए। उन्हें किसी सुखद अपार्टमेंट में जाना चाहिए और दरवाज़ा बंद करके उनसे विनम्रता से, स्पष्ट रूप से बात करनी चाहिए, जैसे कि उन्होंने अपने भौतिक वस्त्र पहने हों।

उन्हें बताएं कि उनकी जरूरत नहीं है. उनसे पीछे हटने और दिशा-निर्देश के लिए उच्च बुद्धि की ओर देखने का आग्रह करें। उनके मन में यह बात बिठा दें कि वे अमर हैं और अनंत काल तक अमर रहेंगे। प्रगति, सौंदर्य और वैभव उनके सामने खुलते हैं। उन्हें बताएं कि संतुष्टि उन्हें आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद करने के बजाय डुबो देगी। यदि यह विधि पर्याप्त नहीं है, तो अधिक सकारात्मक बनें, उन्हें उन सभी के नाम पर प्रस्थान करने का आदेश दें जो उच्च, पवित्र और दिव्य हैं।

मेरे लंबे जीवन के अनुभव में कई वर्षों के ऐसे समय थे जब मुझे इन चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले, फिर भी षडयंत्रकारी, झूठे राक्षसों द्वारा पीड़ा और पीड़ा दी गई थी। जैसे पॉल ने इफिसुस में जानवरों से लड़ाई की, मैंने विचारों, प्रार्थनाओं और एक शक्तिशाली, सकारात्मक इच्छाशक्ति के साथ इन भटकते भूतों से लड़ाई की। मैंने उन्हें आदेश दिया और उनसे जाने

की मांग की, इस बीच भगवान के स्वर्गदूतों, जीवित मसीह के स्वर्गदूतों को बुलाया, ताकि वे उनसे मिल सकें, और उन्हें हटाने में सहायता कर सकें - उन्हें हटा दें, उन्हें मानसिक और आध्यात्मिक उपचार के लिए अनुशासनात्मक क्षेत्रों में ले जाएं। चल दर।

मुक्ति का कार्य किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, यीशु ने जेल में आत्माओं को उपदेश दिया। और स्वर्ग में आनन्द होता है जब कोई पापी पश्चाताप करता है, जब कोई दानव प्रकाश के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ता है। यदि कोई व्यक्ति खुद को राक्षसों के इन सम्मोहक नियंत्रण से मुक्त करने में विफल रहता है, तो उसे क्या करना चाहिए? किसी ओझा को बुलाएँ - जो सम्मोहन को दूर करने और कारण को दूर करने में सक्षम हो।

मिस्र, ग्रीस और रोम, अपने सबसे अच्छे दिनों में, अपने स्वयं के आधिकारिक ओझा थे। तीसरी शताब्दी के मध्य में, रोम के कॉर्नेलियस के पास पचास ओझा, पाठक, संचालक और द्वारपाल थे। हेलेनिस्टिक काल में ओझाओं की बहुत प्रशंसा की जाती थी।

प्लूटार्क का कहना है कि मैगी ने राक्षसों से पीड़ित लोगों को अकेले और मौन में इफिसियों को पढ़ने और दोहराने की सलाह दी थी (सारांश vii:5)। ऐसा कहा जाता है कि क्रोएसस ने ये बातें अंतिम संस्कार की चिता पर कही थीं। अलेक्जेंड्रिया के हेसिचियस और क्लेमेंट ने इन पत्रों का उल्लेख किया और भूत भगाने में सहायता के रूप में संगीत के उपयोग के तथ्य का भी उल्लेख किया।

जस्टिन शहीद त्रिप्लियो से कहते हैं: “यद्यपि तुम यहूदियों को अपने बीच के लोगों के नाम पर किसी भी राक्षस को बाहर निकालना चाहिए, चाहे वे राजा हों, धर्मी लोग हों, भविष्यवक्ता हों या कुलपिता हों, वह तुम्हारे अधीन नहीं होगा। परन्तु यदि तुम में से कोई इब्राहीम के परमेश्वर और इसहाक के परमेश्वर के नाम से दुष्टात्मा को निकाले, तो वह संभवतः तुम्हारे अधीन हो जाएगा” (संवाद, ई. 85)। हालाँकि प्राचीन काल में ओझाओं की पद्धतियों में बहुत अधिक अंधविश्वास और कई विचित्र धारणाएँ शामिल थीं, फिर भी झाड़-फूंक और झाड़-फूंक के मूल तथ्य आज भी अचल चट्टान की तरह बने हुए हैं।

यह सच हो सकता है कि एंटोनिन के रोमन काल में, विशेष रूप से मार्कस ऑरेलियस एंटोनिनस के समय में, और प्रारंभिक ईसाई पिताओं के समय में भी, ओझा सुसंस्कृत और प्रभावशाली वर्गों में से थे। उनमें से कुछ के

पास अलौकिक शक्तियां थीं। उनकी शक्तियाँ जो भी हों, वे अस्तित्व के आध्यात्मिक स्तर के लिए स्वाभाविक थीं। यदि कोई परेशान करने वाले, जुनूनी प्रभावों के प्रति सचेत है, यदि अदृश्य परिचित परेशान कर रहे हैं, तो उनसे बात करें।

उन्हें स्पष्ट रूप से बताएं कि वे आपको नुकसान पहुंचा रहे हैं। फिर अपना परिवेश बदलें. एक पहाड़ी क्षेत्र की तलाश करें जहाँ हवा शुद्ध हो; सभी कामुक आत्माओं से दूर रहो; नैतिक और आध्यात्मिक चीज़ों के प्रति सचेत रहें, सभी स्वस्थ आदतों का पालन करें और ईश्वरीय सहायता के लिए प्रार्थना करें। प्रेम और सच्चाई की मसीही भावना में ये सब काम करने के बाद और राहत पाने में असफल रहने पर, राक्षसों को बाहर निकालने और बीमारों को ठीक करने के लिए स्वर्गदूतों के काफिले द्वारा नियुक्त एक चिकित्सक को बुलाएँ। जब मैं दूसरी बार भारत आया तो कई महीनों तक मैंने अपना अधिकांश समय "राक्षसों को भगाने" अर्थात पीड़ित को चुम्बकित करने और जुनूनी राक्षसों को बाहर निकालने में बिताया। मेरी सफलता मेरे लिए लगभग आश्चर्यजनक थी।

मैं केवल एक असफलता के प्रति सचेत था। मैंने टारटेरियन क्षेत्रों से उन सैकड़ों लोगों को भी हटाया है जो राक्षसों से ग्रस्त और पीड़ित थे। मैं आज्ञा देता हूं - मैं मसीह के नाम पर "शब्द" बोलता हूं। रोग संक्रमित प्रवृत्ति, जलवायु परिस्थितियों, अज्ञानता और प्राकृतिक नियमों के उल्लंघन के कारण हो सकता है; इसलिए, यह हमेशा वैसा नहीं होता जैसा कि कुछ चरमपंथियों ने सिखाया है, विचार द्वारा - विचार हस्तांतरण, सम्मोहक शक्तियों और जुनूनी प्रभावों द्वारा।

साइक्लोप्स, ज़ाइमोटिक रोग हैं जिनका सम्मोहन से उतना ही लेना-देना है जितना कैल्विनिज़्म या यूनिटेरियनिज़्म से है, जबकि हिस्टीरिया, मिथ्याचार, अतिसंवेदनशीलता, मिर्गी का एक रूप, अनिद्रा में मूर्खतापूर्ण बड़बड़ाना, जंगली कल्पनाएँ, तंत्रिका आक्षेप, तंत्रिका जीवन शक्ति की हानि, नींद पागलपन और पागलपन के कई चरण मुख्य रूप से जुनून और जुनून की श्रेणी में आते हैं। ओझा - एक व्यक्ति जो जुनून का इलाज करता है।

आचरण में आदर्श, आदतों में स्वच्छ, धार्मिक रूप से आध्यात्मिक और आध्यात्मिक विचारधारा वाला होना चाहिए। उसे अपने विश्वासों में दृढ़ और सकारात्मक होना चाहिए, स्वर्गदूतों की एक सेना द्वारा सहायता

प्राप्त होनी चाहिए - स्वर्गदूत जो ईश्वर की इच्छा को पूरा करने में प्रसन्न होते हैं।

अध्याय XXV.

दयालु परिवीक्षाएँ और गंभीर जुनून

प्रेरित भविष्यवक्ता ओबद्याह ने कहा, "और उद्धारकर्ता सिय्योन पर्वत पर आएगा।" उद्धारकर्ता आत्मा बचाने वाले होते हैं। वे दानशील कार्यकर्ता और मददगार हैं। दूत स्वर्गदूत ने कहा, "तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा;" उनके पापों के कारण उचित और पर्याप्त दंड देकर नहीं, बल्कि उन्हें नैतिक कानून का पालन करना सिखाकर, वह उन्हें पाप से या पाप करने से बचाएगा। प्रेरित पौलुस ने कहा, "सुलह होने से, हम उसके जीवन से बच गए हैं।" यह चरित्र है, यह जीवन है, पवित्रता है और जीवन की पवित्रता दृश्य और अदृश्य सभी दुनियाओं में बचाता है।

मृत्यु नामक घटना एक दुनिया के दो पहलुओं को जोड़ने वाली एक हाइफ़न है; यह उस साम्य का विच्छेद है जो सांसारिक और अधिक परिष्कृत, ईथर आध्यात्मिक शरीर के बीच मौजूद है। यह किसी भी तरह से व्यक्ति की विशेषताओं या प्राकृतिक प्रवृत्तियों को नहीं बदलता है।

अज्ञानी व्यक्ति ज्ञान में नहीं मरता, न ही बर्बर व्यक्ति आनंदमय देवदूत में मरता है। पहचान सितारों की तरह स्थायी होती है। और ईश्वर का अवतारी आत्माओं के साथ भी वैसा ही प्रेमपूर्ण रिश्ता है जैसा कि वह देहधारी आत्माओं के साथ रखता है, दिव्य वाणी है, "आज्ञा मानो, - जियो और आनंद लो, या पाप करो और भुगतो," पीड़ा प्रतिशोधात्मक के बजाय अनुशासनात्मक है। .

मृत्यु के समय मनुष्य बिल्कुल ठोस शरीरों के साथ पाताल या ऊपरी दुनिया में प्रवेश करते हैं जैसे कि वे अब हैं, लेकिन फिर भी अधिक अलौकिक होते हैं। तारों की चमक अलग-अलग होती है। भविष्य की

दुनिया में आत्माओं की आभा अलग होती है। कुछ उत्कृष्ट चमक के साथ चमकते हैं, अन्य एरेबस की छाया की तरह अंधेरे हैं। उन गडरीन क्षेत्रों में तीव्र पीड़ा है। स्मृति एक अमर कीड़ा है. ईश्वर कोई नर्क नहीं बनाता, यहां किसी की उंगलियां नहीं जलाता, वहां किसी आत्मा को श्राप नहीं देता। प्रभाव आचरण का अनुसरण करते हैं और आदतें, जैसे धूल गाड़ी के पहियों का अनुसरण करती है।

मनुष्य अपने नरक और स्वर्ग का निर्माता स्वयं है; वे जो बोते हैं वही काटते हैं। वे नैतिक प्राणी हैं, जिनके पास चुनने की शक्ति है। दया का द्वार कभी बंद नहीं होता। परमेश्वर की कोमल दया सदैव बनी रहती है। वह अपरिवर्तनीय है. देवदूत पुकारते हैं, और आत्माएँ लगातार ऊपर आ रही हैं, कुछ हद तक धीरे-धीरे, फिर भी निश्चित रूप से, गहरे कष्टों के माध्यम से। गैलिली के मसीह अभी भी अविकसित, जुनूनी आत्माओं को छुड़ाने के लिए लाखों एजेंसियों के माध्यम से काम कर रहे हैं। बहुत से लोग, प्रकाश सुनकर, तुरंत, खुशी से, आंशिक रूप से जागते हैं, और पश्चाताप करते हुए और अधिक प्रकाश के लिए प्रार्थना करते हैं।

मध्यस्थों के माध्यम से आत्माएं मेरे पास आई हैं, जो पश्चाताप की कड़वी, चुभने वाली, जलती हुई पीड़ा से पीड़ित हैं, और विनती कर रही हैं, "मेरे लिए प्रार्थना करो, ओह, मेरी मदद करो!" मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे रोशनी दिखाएँ!" ऐसे लोगों से मैं हमेशा दृढ़ता से बात करता हूं, फिर भी सहानुभूति और दयालुता के सबसे कोमल स्वर में, उन्हें आश्वासन देता हूं कि हम सभी भाई हैं; यह कि सबसे बुद्धिमान लोग गलतियाँ करते हैं, कि सबसे बुरे लोगों के पास बेहतर क्षण होते हैं और उनके अच्छे विचार होते हैं, यह दर्शाता है कि ईश्वरीय सिद्धांत कभी भी पूरी तरह से नष्ट नहीं होता है;

कि अभी भी उम्मीद बाकी है; कि युगों का मसीह अभी भी कह रहा है, "हे सभी परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें आराम दूंगा," कि स्वर्ग में देवदूत माताएं अभी भी प्यार करती हैं, और वह सभी दुनिया में शुद्ध हैं, निःस्वार्थ प्रेम अमर है, अमर है। इन सहानुभूतिपूर्ण शब्दों के साथ मैं भाईचारे की दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूं और जोड़ता हूं,

ऊपर आओ भाई, जहां ज्ञान का सूरज हमेशा चमकता है, जहां स्नेह के फूल हमेशा खिलते हैं, और जहां हर हलचल में माधुर्य और संगीत है। सच्चे अध्यात्मवाद का सुसमाचार, शुद्ध ईसाई धर्म का पर्याय, हमेशा आदेशात्मक शब्द बोलता है, "किसी का तिरस्कार मत करो, किसी की

निराशा मत करो; उड़ाऊ पुत्र को उसके पिता के पास जाने में मदद करो।" सभी दुनियाओं में, स्वर्गदूतों के कदमों की गूँजती आवाज़ से दिल नरम हो जाता है, नरम हो जाता है क्योंकि वे बताते हैं कि आत्मा का जीवन वास्तविक जीवन है, एक सक्रिय जीवन, एक सामाजिक जीवन, एक प्रतिशोधात्मक जीवन, एक रचनात्मक जीवन है जीवन, एक आदर्श जीवन है, एक प्रगतिशील जीवन है, और अमरता की बेहतर भूमि में सदाबहार उपवन, घुमावदार नदियाँ, गहरे काई से ढके तट, संगीतमय पक्षी, हीरे की सुंदरता के सितारे, बादलों से काला सुनहरा आकाश है;

वहाँ मैदान, फव्वारे, बगीचे, स्कूल, लिसेयुम, विशाल पुस्तकालय, ज्ञान के विश्वविद्यालय, देवताओं के पदानुक्रम भी हैं - आत्मा को प्रसन्न करने, शिक्षित करने और प्रकट करने के लिए सब कुछ - यह सब, "ये सभी तुम्हारे होंगे," एक प्राचीन आत्मा ने मुझसे वादा किया था एक आवाज़ में जिसने मेरे अस्तित्व की गहराइयों को रोमांचित कर दिया, "जब तुम योग्य हो, जब तुम योग्य हो।"

शोकाकुल और बहुत विद्वान एफ.डब्ल्यू.एच. मायर्स ने, अपने जीवन के अंत के करीब, अपने महान कार्य में ये शक्तिशाली शब्द लिखे: "गहन चिंतन करने पर, मुझे यह विश्वास करने का कारण मिलता है कि मृत्यु के बाद आत्माओं की स्थिति ज्ञान और प्रेम में अंतहीन वृद्धि में से एक है पृथ्वी के प्रति उनका प्रेम कायम है; और सबसे बढ़कर वे पूजा और कर्म में अपना रास्ता खोजते हैं। फिर भी अपने सुविधाजनक दृष्टिकोण से, कम से कम, वे देखते हैं कि यह अच्छा है। मेरा मतलब यह नहीं है कि वे बुराई के किसी अंत या स्पष्टीकरण के बारे में जानते हैं। फिर भी उन्हें बुराई गुलामी से कम भयानक लगती है।

यह किसी शक्तिशाली व्यक्तित्व में सन्निहित नहीं है; बल्कि यह एक अलग पागलपन पैदा करता है जिसे उच्च आत्माएं विकृत आत्मा को मुक्त करने का प्रयास करती हैं, उन्हें आग की सजा की आवश्यकता नहीं होती है; आत्म-ज्ञान मनुष्य का दण्ड और पुरस्कार है; आत्म-ज्ञान और साथी आत्माओं की निकटता या अलगाव। क्योंकि उस दुनिया में प्यार वास्तव में आत्म-संरक्षण है; संतों का मिलन न केवल श्रृंगार करता है, बल्कि शाश्वत जीवन का निर्माण भी करता है। बल्कि, सहानुभूतिपूर्ण टेलीपैथी का नियम यह निष्कर्ष निकालता है कि वह मिलन हमारे लिए यहीं और अभी वैध है।

अब भी दिवंगत आत्माओं का प्रेम हमारी पुकार का उत्तर देता है; अब भी हमारी प्रेमपूर्ण स्मृति - प्रेम स्वयं एक प्रार्थना है - उन आत्माओं को उनके ऊर्ध्व पथ पर सहारा देती है और मजबूत करती है। कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि हम उनके लिए कोहरे में लिपटे सहयात्रियों के समान हैं; "न तो मृत्यु, न जीवन, न ऊंचाई, न गहराई, न ही कोई अन्य प्राणी हमें ब्रह्मांड की आग से रोक सकता है, या आत्माओं की अकल्पनीय एकता को एक पल से अधिक के लिए छिपा नहीं सकता है। "

विश्वास का ज्ञान में विलीन होना।

हेनरी वार्ड बीचर ने महान अंग्रेजी सुधारक रॉबर्ट ओवेन, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रॉबर्ट हरे और अन्य नास्तिक भौतिकवादियों का जिक्र करते हुए प्रसिद्ध रूप से कहा कि "आध्यात्मिकता विश्वास को मजबूत करती है"। यह केवल यही नहीं, बल्कि और भी बहुत कुछ करता है; यह एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ अन्वेषक को भविष्य के अस्तित्व का ज्ञान देता है।

इसने न केवल मुझे यह ज्ञान दिया है, बल्कि इसने ईश्वर में मेरा विश्वास और मसीह में मेरा विश्वास और सच्चे स्वर्ग-प्रकट ईसाई धर्म की मुक्ति शक्ति में मेरा विश्वास मजबूत किया है। यीशु ने कहा, "यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तो इस से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" मुझे इस ईसाई शिष्यत्व पर गर्व है।

ईसाई धर्म और चर्चियन धर्म के बीच स्पष्ट अंतर होना चाहिए। एक ऊपर से, दूसरा नीचे से. एक मसीह के सिद्धांतों को सिखाता है, दूसरा मनुष्यों की आज्ञाओं को पंथों में ढालता है - ऐसे पंथ जो अंतरात्मा को जकड़ते और बांधते हैं। यीशु ने किसी नये सम्प्रदाय को बनाने या रचने का अधिकार नहीं दिया। उस ने 6" नई आज्ञा दी, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो," और कहा, "मेरी भेड़ों की चरवाही करो;" फिर उसने कहा, "मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस झुण्ड में से नहीं हैं; मुझे उन को भी लाना अवश्य है, और वहां एक झुण्ड और एक चरवाहा होगा। ,

चर्चवाद, राय के लिए मारे गए लाखों शेरों के खून से लाल, संप्रदाय बनाता है, विभाजन की दीवारें खड़ी करता है, विधर्मियों की निंदा करता है, गलत कमाई वाले लाखों जमा करता है, भड़कीले चर्च तानाशाही फैशन का उत्पादन, प्रचार और समर्पण करते हैं, नीति अपनाते हैं, विजय के युद्धों में संलग्न होते हैं , संडे-स्कूल कैडेटों और लड़कों की ब्रिगेड को प्रोत्साहित करता है।

संक्षेप में, कप के बाहरी हिस्से को नाप-तौल कर साफ करते समय, चर्च का व्यवहार दुनिया की सांसारिकता में डूबा हुआ है, और दुख की बात है कि पादरी, कुछ अपवादों के साथ, इस लोकप्रिय युद्ध-प्रोत्साहक चर्चवाद को सहायता और बढ़ावा देते हैं, इस प्रकार युगों के मसीह को क्रूस पर चढ़ाते हैं। दोबारा।

यह जीवित मसीह की शक्तिशाली ईसाई धर्म है जो सभ्य बनाती है, राक्षसों को बाहर निकालती है, और फिर भी स्वर्गदूतों को गाने पर मजबूर करती है - "पृथ्वी पर शांति, मनुष्यों के प्रति सद्भावना।" धार्मिक चक्रों और मसीहाओं के संदर्भ में माने जाने वाले, यीशु हिब्रू आध्यात्मिकता के शिखर पर थे, जो आत्माओं के महान यहूदी चिकित्सक थे।

चूँकि ईश्वर आत्मा है - अर्थात, शाश्वत आत्मा - मध्यस्थता के नियम द्वारा कार्य करने वाली उपस्थिति, प्रेरित ने, धारणा की एक विलक्षण स्पष्टता के साथ, नाज़रीन को "मध्यस्थ" घोषित किया - अर्थात, ईश्वर और के बीच मध्यस्थ मनुष्य।एक युग सताए गए और शहीद हुए मध्यस्थ आने वाले युगों में देवता बन जाते हैं। लेकिन यदि यीशु केवल दिव्य पुरुष, "बड़ा भाई" था, तो, शायद आप पूछेंगे, दूसरों पर उसकी नैतिक श्रेष्ठता कहाँ थी।

अगर मैं उनकी आवश्यक और विशिष्ट विशेषताओं को सही ढंग से समझता हूं, तो उनकी सर्वोच्च महानता उनकी अधिक आध्यात्मिक अवधारणाओं में, उनके सूक्ष्म संतुलित संगठन में, उनके मसीह-बपतिस्मा में, देवदूत प्रभावों की निरंतर छाया में, उनकी नैतिक आकांक्षाओं की गहराई में निहित है। उनकी सहानुभूति की गर्माहट, एसेनियन मण्डली के आध्यात्मिक उपहारों की उनकी गहरी सीख में, सत्ता के आदेशों के प्रति आज्ञाकारिता की उनकी आत्मा-व्यापक भावना में, सार्वभौमिक मानवता के कल्याण के लिए उनकी अथक, आत्म-विस्मृति, आत्म-बलिदान की भक्ति में। , और ईश्वर के प्रति उनके प्रेम और पूर्ण विश्वास में निहित था।

स्वीकृति और वास्तविकता के लिए उनके अस्तित्व में हमेशा जलने वाले प्रमुख विचार हैं ईश्वर का दिव्य पितृत्व, मनुष्य का सार्वभौमिक भाईचारा, स्वर्गदूतों और आत्माओं की सतत सेवा, सभी गलतियों के लिए अनुशासनात्मक प्रतिशोध, और सहनशीलता, दान, पश्चाताप, क्षमा की पूर्णता , प्यार। आवश्यकता- संक्षेप में कहें तो अच्छे कार्य थे। और ये, मानव शिक्षा और मुक्ति के लिए एक शक्तिशाली सुधार-शक्ति के रूप में क्रियान्वित हैं, मैं सकारात्मक धर्म के रूप में परिभाषित करता हूं, और इसे पूरी तरह से अध्यात्मवाद का पर्याय मानता हूं - अपने सर्वोत्तम और उच्चतम रूप में अध्यात्मवाद की एक परिभाषा। और एक व्यावहारिक शक्ति के रूप में.

केवल "पवित्र" चर्मपत्रों पर नहीं, बल्कि मनुष्यों के दिलों और जीवन में स्थापित यह शुद्ध और बेदाग धर्म, जल्द ही राज्यों और साम्राज्यों में साकार होगा, शांति, न्याय और दान को बढ़ावा देगा, कानूनी अधिनियमों को बुद्धिमान और मानवीय बनाएगा। , और ताजे पानी का कारण बनेगा।

राष्ट्रों के आध्यात्मिक उपचार और नैतिक उत्थान के लिए पूरी पृथ्वी पर सद्भाव और सद्भावना का प्रवाह होना चाहिए। यह ईसाई धर्म है - यह अध्यात्मवाद है, आत्मा का धर्म है, सभी तर्कसंगत लोगों का जन्मजात धर्म है। इसकी आवाज बहुत ही कम लोगों को सुनाई देती है। प्राचीन समय में ऐसा ही था, जब स्वर्ग से एक आवाज़ आई और पास खड़े लोगों ने उसे सुना, और कहा, “गर्जन हो रही है”; दूसरों ने कहा, “एक देवदूत बोला।

अध्यात्मवाद, अपने असभ्य, शोरगुल वाली घटनाओं और जुनून के साथ, केवल गड़गड़ाहट सुनता है, अध्यात्मवाद, देवदूत की "शांत, छोटी आवाज", प्यार से विनती करते हुए कहता है, "ऊपर आओ।" चमकीला सूरज और तारे युगों-युगों से इसके साक्षी रहे हैं। जब क्वेकर कवि व्हिटियर, एक अंग्रेजी परोपकारी के साथ, उस प्रतिष्ठित यूनिटेरियन रेव के साथ रोड आइलैंड गए। जब उन्होंने आखिरी बार डॉ. चैनिंग से मुलाकात की, तो उनकी बातचीत के विषय गुलामी-विरोधी सुधार, प्रगति, शांति, सहिष्णुता और मानवीय सहानुभूति थे। .

श्री व्हिटियर ने बाद में इसका उल्लेख करते हुए ये कोमल पंक्तियाँ लिखीं: "संप्रदाय या जलवायु की कोई बाधा महसूस नहीं की गई, - बेबीलोन में भाषाओं का संघर्ष बंद हो गया था, और एक सामान्य वेदी पर क्वेकर और पुजारी ने घुटने टेक दिए।" इस प्रकार, अच्छे और विद्वान लोगों के दिल हमेशा एक साथ मिलते रहें। ऐसी संगति धरती पर स्वर्ग का निर्माण करती

है। यदि आप दूसरों के साथ शांति, धार्मिकता और भाईचारे से नहीं चल सकते, तो अपने रास्ते जाओ, भाई, कृपया अपना रास्ता दूसरों के लिए छोड़ दो। लंदन की तरह, स्वर्ग तक विभिन्न दिशाओं से पहुंचा जा सकता है।

एक प्रमुख लेखक.

मीडियम एंड डेब्रेक, लंदन, मार्च 11, 1894 में, मुझे हडसन टटल द्वारा लिखित निम्नलिखित जानकारी "जुनून-मारने की अनियंत्रित इच्छा" शीर्षक के अंतर्गत मिली। हडसन टटल कहते हैं, "मैं अपने दोस्तों के साथ एक बड़ी अखरोट खाने की मेज पर बैठा था और सवालों के जवाब में कांप रहा था।" ख़ुफ़िया अधिकारी ने दावा किया कि वह एक भारतीय था, और अनुरोध करने पर उसने कहा कि वह उसका चित्र बनायेगा मेरे हाथ से.

मैंने एक छोटे संगमरमर के आकार का चॉक का टुकड़ा उठाया और मेरे हाथ ने अपने आप ही एक अजीब चित्र बना दिया। हम सभी हँसे, और मेरे पिता, जो मेज से उठकर कमरे के दूसरी ओर बैठे थे, ने कहा: 'वह शैतान जैसा दिखता है।

तुरंत ही मेरा मन हल्के और सुखद विचारों से तीव्र और अवर्णनीय घृणा में बदल गया। गुस्से ने रोशनी को खूनी लाली में बदल दिया, और हत्या करने की एक अनियंत्रित इच्छा थी, जिसके तहत मैंने चाक को अपराधी के माथे के केंद्र में एक गोली की सटीकता के साथ इतनी ताकत से मारा कि चाक टुकड़े-टुकड़े हो गया। यदि यह बड़ा होता तो निश्चय ही गंभीर परिणाम होते। बेशक, होश उड़ गए थे, लेकिन मैं शाम के लिए उस भयानक प्रभाव से बच नहीं सका। “इस सेंस के अध्ययन ने मुझे वह खतरा दिखाया जिससे संवेदनशील लोगों को खतरा है, और अपराधों के एक वर्ग की कुंजी दी जो अब तक समझ से बाहर थे।

हम अक्सर ऐसे लोगों के बारे में सुनते हैं जिन पर वर्षों से भरोसा किया गया है, और जो ईमानदारी और सत्यनिष्ठा और नैतिक ईमानदारी के मॉडल हैं, बिना किसी चेतावनी के, संपत्ति या व्यक्ति के खिलाफ कुछ जघन्य अपराध करते हैं। वे आम तौर पर कहते हैं कि उन पर अचानक और

अनियंत्रित आवेग आ गया था और जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, उन्हें अपने कृत्य पर पछतावा हुआ।

अध्यात्मवाद मात्र अध्यात्मवाद नहीं.

जिस प्रकार ईसाई धर्म को चर्च के पंथ से अलग किया जाना चाहिए, उसी प्रकार अध्यात्मवाद को अध्यात्मवाद से अलग किया जाना चाहिए। ये शब्द एक दूसरे से भिन्न हैं. इनका उपयोग कभी भी एक दूसरे के स्थान पर नहीं किया जाना चाहिए। अल, एक अरबी कण, कई शब्दों का उपसर्ग है, और मानसिक और नैतिक गुणों की निश्चितता के बराबर है। प्रत्यय लगने पर इसकी शक्ति और भी अधिक हो जाती है। कोई भी क्लासिक लेखक पद और अधिकार, विचार और आदर्श, बुद्धि और बुद्धि को एक साथ नहीं जोड़ता है, फिर आत्मा और आध्यात्मिक, या प्रेतवाद और अध्यात्मवाद को क्यों?

हत्यारा एक आत्मा है जो भौतिक शरीर में लिपटी हुई है, लेकिन न तो आध्यात्मिक है और न ही आध्यात्मिक रूप से दिमाग वाला नश्वर है। चीन आज एक घटनापूर्ण देश है, और हर शहर में जुनून आम है। कुछ साल पहले अटलांटिक पार करते समय, कोरियाई मंत्री, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया था, वाशिंगटन, डी.सी. में मेरे केबिन-साथी थे; और वह हर घंटे मुझे अपने देश की अद्भुत आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों और उनसे जुड़ी निराशाजनक और प्रचलित आत्मा-पीड़ादायक भावनाओं के बारे में बताते थे।

न्यूज़ीलैंड के माओरी लोग प्रेतात्मावादी हैं, जो कौरी-गम की गांठों वाली मंद रोशनी वाली गुफाओं में अपने मृतकों से संवाद करते हैं। जैसा कि अक्सर कहा जाता है और कभी भी इनकार नहीं किया जाता है, मॉर्मन प्रेतात्मावादी हैं, जो जीभ और अन्य आध्यात्मिक उपहारों के उपहार का दावा करते हैं। क्या ये प्राच्य जातियाँ और बहुविवाह-प्रथा करने वाले संप्रदायवादी अध्यात्मवादी हैं! से बहुत दूर! आत्माओं और आध्यात्मिक घटनाओं पर विश्वास करने से कोई सच्चा अध्यात्मवादी नहीं बन जाता, जैसे यांत्रिकी के नियमों में विश्वास करने से कोई कुशल इंजीनियर नहीं बन जाता।

सम्मोहन, जो अक्सर नास्तिक विरोधी अध्यात्मवाद का सहायक होता है, मूर्खतापूर्ण स्वार्थी तरीके से उपयोग किया जाता है, बेहद खतरनाक है। यह व्यक्तिगत इच्छाशक्ति को कमजोर करता है और अक्सर हिस्टीरिया, न्यूरस्थेनिया, जुनून और राक्षसी कब्जे जैसी भयानक मानसिक बीमारियों का जनक साबित होता है।

आत्मिक जीवन में **"94,000,000** वर्ष।**"**

हाल ही में दक्षिणी मिशिगन से एक आदमी मेरे पास आया, उसकी आँखें धँसी हुई थीं, पतला शरीर था, और गाल पिचके हुए थे, जहाँ बीस साल पहले उसे एक सार्वजनिक हॉल में सम्मोहित कर दिया गया था, जिसके बाद वह एक माध्यम बन गया और ज्यादातर अज्ञात भाषा में बात करता रहा। समय। यह बकवास था मेरे लिए। मैंने उसका नाम पूछा. यह बताने लायक नहीं था.

मैंने उससे पूछा कि वह कितने समय से आत्मा की दुनिया में है। उनका तत्काल उत्तर था 94,000,000 वर्ष। "इतने समय से आपका काम क्या रहा है?" "तारों और ग्रहों का दौरा करना, उनके सभी कानूनों को समझना," उनका अहंकारपूर्ण उत्तर था। इस समय मैं अपनी लाइब्रेरी में गया और एक क्रक्स रेडियोमीटर निकाला और उसे धूप में रख दिया। अंदर की मशीनें तेजी से घूमने लगीं। “उस गति की तीव्रता का कारण क्या है?” मैंने पूछ लिया। “यह मेरी इच्छाशक्ति की ताकत है। मैं चाहता हूं कि यह काम करे.
,

"क्या वह तुम हो?" मैंने रेडियोमीटर को छाया में, अँधेरे में और सूरज से रहित, धकेलते हुए कहा। पंखों की गति रुक गयी. "देखो," मैंने कहा, "मैंने अपनी इच्छा खो दी है।" उसने शांति से कहा, "हाँ-मैंने अपनी इच्छा खो दी है।"

अपने अंदर की सकारात्मकता को फिर से जागृत करते हुए, मैंने ठोस अंग्रेजी में कहा, “आप एक पाखंडी, धोखेबाज, घृणित झूठे हैं। आपकी इच्छाशक्ति का इस रेडियोमीटर से कोई लेना-देना नहीं है।

तुमने इस आदमी की जीवन शक्ति ख़त्म कर दी है, तुमने उसे शारीरिक रूप से बर्बाद कर दिया है, तुमने उसे मूर्ख बनाया है और मुझसे शर्मनाक तरीके से झूठ बोला है। अब, श्रीमान, आप चले जाइये। सच्चे और जीवित मसीह के नाम पर मैं आपसे जाने की मांग करता हूं और आदेश देता हूं, और इन प्रेरक शब्दों के साथ, मैं उसके माथे पर अपना दाहिना हाथ और उसकी गर्दन के पीछे अपना बायां हाथ थपथपाते हुए, माध्यम के पास गया। ,

और धीरे-धीरे इसे नीचे की ओर ले जाना, एक क्षण के लिए सौर जाल पर आराम करना, फिर इसे स्थिर रूप से नीचे और बाहर की ओर ले जाना। मैं शायद पांच मिनट तक इस जुनूनी विषय के पास खड़ा रहा, कभी-कभी उसके सिर पर चुंबकीय सांस लेता और मजबूत भूत भगाने की इच्छाशक्ति का प्रयोग करता।

"आपकी संवेदनाएँ क्या हैं - आप कैसा महसूस करते हैं?" मैंने इस आदमी से पूछा. "मुश्किल से बता सकता हूं। मैं अजीब और फिर भी मजबूत महसूस करता हूं। मुझे लगता है, डॉक्टर, आपका वजन बहुत ज्यादा है। आप बहुत मजबूत हैं।" मेरा जवाब था कि मैं अकेला नहीं हूं. एक संदेशवाहक मंडल है - मेरे पीछे और ऊपर चेतन शक्ति का एक क्षेत्र। यह शक्तिशाली, मर्मज्ञ और उत्थानकारी है। यह अमर ज्ञान रोमांचित करता है और मेरे अस्तित्व की गहराइयों को आध्यात्मिक शक्ति से भर देता है जो कभी-कभी पूरी तरह से अभिभूत कर देने वाली होती है। क्या यीशु ने यह नहीं कहा, "क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने पिता से प्रार्थना नहीं कर सकता और वह तुरन्त मुझे स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक दे देगा?"

प्रार्थना आत्मा को स्वर्गदूतों और महादूतों के पदानुक्रम के साथ कंपनात्मक एकता में उठाती है जो ईश्वर की इच्छा को पूरा करने में हमेशा खुश रहते हैं।

अध्याय XXVI

स्वीडनबॉर्ग और ऑब्सेसिंग एविल स्पिरिट्स

यह अक्सर कहा गया है, विशेष रूप से यूरोप महाद्वीप पर, कि जेस्पर स्वीडनबॉर्ग के सबसे बड़े बेटे इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग का जन्म 29 जनवरी, 1688 को स्टॉकहोम में हुआ था और उनकी शिक्षा उप्साला में हुई, जॉन के समय के बाद वह सबसे महान दार्शनिक और अध्यात्मवादी थे। . हालाँकि वह "न्यू चर्च" के संस्थापक और उस समय के महान विद्वान व्यक्ति थे, लेकिन कभी-कभी उन पर बुरी आत्माएँ हावी हो जाती थीं। यह तथ्य उनकी और उनके दोस्तों की गवाही पर आधारित है.

एक सुसंस्कृत अंग्रेजी लेखक और पुस्तक समीक्षक विलियम व्हाइट द्वारा स्वीडनबॉर्ग के जीवन के दो बड़े खंडों में, जिन्हें मुझे व्यक्तिगत रूप से जानने का सम्मान मिला, इस स्वीडिश द्रष्टा की व्यक्तिगत आदतों, संगति और स्वर्गदूतों के साथ संबंधों का विवरण दिया गया है। उसके सत्ताईस वर्षों के दौरान आत्माएँ, और राक्षस। संवाद के दौरान मानसिक अनुभवों का स्पष्ट वर्णन मिलता है। एक समय में, स्वीडनबॉर्ग ने एक विश्वसनीय स्रोत से खुद को "मसीहा" घोषित किया था।

मिस्टर वेस्ले ने जनवरी, 1781 में अपनी अर्मेनियाई पत्रिका में ब्रॉकमार के घर पर रहने के दौरान स्वीडनबॉर्ग के बारे में अजीब विवरण लिखे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस पर राक्षसों ने कब्ज़ा कर लिया था, या उसे नियंत्रित कर लिया था, क्योंकि उसके "मुंह से झाग निकल रहा था, और वह अन्यथा एक भयानक रूप में प्रकट होता था।" दूसरे समय घर में आकर उसने अपने को संभाला, कपड़े उतारे, बाहर भागा और नाली में कीचड़ में लोटता हुआ चला गया।

मिस्टर ब्रॉकमर उन्हें एक लॉज में ले गए और डॉ. स्मिथ से उनका इलाज कराया। श्री शीर-स्मिथ, जिनके साथ स्वीडनबॉर्ग कुछ समय तक रहे, “उनसे डरते थे क्योंकि वह रात में बात करते थे। कभी-कभी वह अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो जाता था, मानो किसी अदृश्य व्यक्ति से बातचीत कर रहा हो, और कई अन्य अजीब चीजें पागलों के कारण होती हैं।

इन विचित्रताओं की गवाही में, रेवरेंड श्री बर्गमैन, जर्मन चर्च के मंत्री, सेवॉय, लंदन, श्री मैथासियस, श्री हिंदमर्श और अन्य का उल्लेख किया गया है, जो साबित करते हैं कि वह कभी-कभी राक्षसों के हमलों का शिकार थे। लंदन में रहते हुए, स्वीडनबॉर्ग ने एक आध्यात्मिक डायरी शुरू की, जिसे उन्होंने सत्रह वर्षों तक जारी रखा।

डॉ. टैफ़ेल ने इन डायरी पांडुलिपियों को बारह खंडों में प्रकाशित किया। जिन्हें हम उद्धृत करते हैं वे 1747 से 1749 तक लगातार चलते रहे। बुरी आत्माओं के बारे में उन्होंने लिखा: "मैं गवाही दे सकता हूं कि वे इतने भयानक और भयावह हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। शैतान की सबसे घातक साजिशें अवर्णनीय हैं, हां, अकल्पनीय हैं; क्योंकि ऐसा कुछ नहीं है मनुष्य में ऐसी बुराई जिसे उसे बुराई के लिए उकसाना नहीं चाहिए।

, , , बुरी आत्माओं के इन भयानक प्रयासों को, जिन्हें मैंने अक्सर अनुभव किया है, प्रकाशित करने के बजाय विस्मृति के लिए भेज दिया जाना चाहिए। इनसे मैंने सीखा कि यदि प्रभु अनिवार्य रूप से उपस्थित नहीं होते, तो मैं एक क्षण भी नहीं टिक पाता, बल्कि अनिवार्य रूप से नरक में चला जाता। , , , "सितंबर, 1747.—अनुभव से मैंने सीखा है कि बुरी आत्माएं पीड़ा पहुंचाने से बाज नहीं आतीं। अपनी उपस्थिति से उन्होंने मेरे शरीर के विभिन्न भागों में दर्द उत्पन्न किया है; अपने पैरों पर, ताकि मैं मुश्किल से चल सकूं; पृष्ठीय तंत्रिकाओं पर, ताकि मैं मुश्किल से खड़ा रह सकूं; और मेरे सिर के कुछ हिस्सों पर इतनी तीव्रता से दर्द हुआ कि दर्द कई घंटों तक बना रहा। , , ,

जनवरी 8, 1748.—जब मैं सोने जा रहा था, तो कहा गया कि कुछ आत्माएँ मुझे मारने की साजिश कर रही थीं; मैं बिना किसी डर के सो गया. लगभग आधी रात को मैं जागा और महसूस किया कि मैं अपने आप से नहीं, बल्कि, जैसा कि मेरा विश्वास था, स्वर्ग से साँस ले रहा हूँ। तब मुझे स्पष्ट रूप से बताया गया कि आत्माओं के एक पूरे समूह ने मेरा दम घोंटने की साजिश रची थी, लेकिन जैसे ही उन्होंने प्रयास किया, मेरे भीतर एक स्वर्गीय सांस खुली और वे हार गए। , , ,

"जनवरी 11, 1748.—आत्माएं अक्सर चाहती हैं कि मैं छोटी-छोटी चीजें चुराऊं, जैसे कि दुकानों में खुली पड़ीं; उसकी इच्छा इतनी प्रबल है कि वह वास्तव में मुझसे हाथ मिलाती है। , , ,

"जनवरी 11, 1748.—आत्माएं अक्सर चाहती हैं कि मैं छोटी-छोटी चीजें चुराऊं, जैसे कि दुकानों में खुली पड़ीं; उसकी इच्छा इतनी प्रबल है कि वह वास्तव में मुझसे हाथ मिलाती है। , , ,

"30, 1748.—आज घर आकर, मैं दुखी था। मेरी उदासी एक परेशान आत्मा से प्रेरित थी जिसने मुझे बताया कि वह खुद को सबसे प्रसिद्ध लोगों में गिनता है। उन्होंने खुद को तत्वमीमांसा के प्रति समर्पित कर

दिया था, और अब उन्हें पता चला कि वे कितने बेकार भ्रम थे, और उन्होंने दिव्य सत्य को उनकी आंखों से कैसे छिपाया, उन्होंने उन्हें गंदगी कहा, और दुःख से भर गए। , , ,

“फ़रवरी, 1748.—कभी-कभी, हाँ, नहीं, अक्सर ऐसा हुआ है कि मेरे मुँह का सुखद स्वाद ख़राब हो गया है। दो बार, अगर मैं ग़लत नहीं हूँ, तो चीनी का स्वाद नमक जैसा था। ये परिवर्तन आत्माओं से प्रेरित होते हैं। , , ,

“मार्च 14, 1748.—उन आत्माओं में से कई ऐसी हैं जो सफेद वस्त्र पसंद करती हैं, और वास्तव में इतनी लगन से, कि उन्होंने कई हफ्तों तक मुझे ऐसे वस्त्र खरीदने के लिए उकसाया है। , , ,

“मार्च 20, 1748.—जब आत्माएं मनुष्यों से बात करना शुरू करती हैं, तो किसी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उन पर विश्वास न करें, क्योंकि वे जो कुछ भी कहते हैं वह उनके द्वारा बनाया गया है, और वे झूठ हैं। यदि उन्हें यह बताने की अनुमति दी जाए कि स्वर्ग क्या है और स्वर्ग में चीजें कैसी हैं, तो वे इतना झूठ बोलेंगे और इतनी दृढ़ता से बोलेंगे कि मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाएगा।

इसलिए, जब ऐसी आत्माएँ बोलती थीं, तो मुझे उनकी किसी भी बात पर विश्वास करने की अनुमति नहीं थी। उन्हें दिखावा करना पसंद है. चाहे किसी भी विषय पर चर्चा हो, उन्हें लगता है कि वे इसके बारे में सब कुछ जानते हैं; वे इसके बारे में अलग-अलग राय बनाते हैं और खुद को ऐसे पेश करते हैं जैसे उन्हें पूरी जानकारी हो; और यदि कोई सुन कर विश्वास कर ले, तो वे उस पर बल देते हैं, और उसे धोखा देते हैं, और तरह-तरह से बहकाते हैं।

अक्टूबर 20, 1748.—कुछ लड़कों को लड़ते हुए देखकर, मुझे कुछ आत्माओं से बहुत खुशी महसूस हुई; जिससे साफ है कि इन्हें दुश्मनी कितनी पसंद है. मैं आत्माओं के चरित्र को उनकी व्यक्त भावनाओं से तुरंत पहचान लेता हूँ। मैं, जैसा कि लोग आमतौर पर करते हैं, जो कुछ भी मेरे मन में आता है उसके लिए मैं खुद को श्रेय नहीं देता।

“नवंबर 2, 1748.—बुरी आत्माएं मुझे सड़क पर गाड़ियों के पहियों के नीचे फेंकना चाहती थीं। आज मैंने विशेष रूप से ऐसा करने के उनके निरंतर प्रयास पर ध्यान दिया; और समझ पा रहा था कि ऐसी शरारतें उसका जुनून है. , , ,

“कुछ जलपरियाँ ऐसी हैं जो किसी भी अन्य चीज़ से अधिक अवतार लेना चाहती हैं। जब मैं खाता हूं तो वह भी खाना चाहती है. मैं कई दिनों से उनसे पीड़ित हूं.' वे मेरे द्वारा खाए गए बादाम केक, नाशपाती और कबूतरों को हड़पने की कोशिश करते हैं, और मेरे शरीर पर कब्ज़ा करना चाहते हैं। , , ,

“नवंबर 27, 1748.—हाथ मिलाते हुए मुझे एहसास हुआ कि यह मैं नहीं, बल्कि कोई और था। एक आत्मा ने हाथ पकड़ते हुए कहा। तो ऐसा लग रहा था मानो किसी आत्मा ने अपने स्पर्श ज्ञान से मेरे हाथ पर कब्ज़ा कर लिया हो। , , , , “आत्माओं के साथ संवाद करने की क्षमता की खोज से कुछ समय पहले, मुझे आत्महत्या करने का प्रलोभन हुआ था - चाकू से हत्या करने का। आवेग इतना प्रबल हो गया कि मुझे चाकू अपनी मेज में छिपाना पड़ा।

अब मैं जानता हूं कि सारा हेसेलिया ही वह आत्मा थी जिसने चाकू को देखकर मेरे अंदर आत्मघाती आवेग जगाया था। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि मनुष्य अनजाने में उन आत्माओं से ग्रस्त हो सकते हैं जो पृथ्वी पर उनके जीवन के दौरान उनसे नफरत करती थीं। मैं फिर से देखता हूं कि द्रष्टा ए. जे. डेविस का उल्लेख किया जाना चाहिए। अपने "डायका" में, उन्होंने हमें स्पष्ट रूप से सूचित किया कि ऐसी आत्माएं हैं जो नैतिक रूप से कमजोर हैं, और "प्रभावी रूप से अशुद्ध" हैं - कि उन्हें इस दुनिया में बनाए रखने में उनका मुख्य कार्य "जादू, छल और हास्य" के माध्यम से है। दूसरों को कष्ट होता है,

... गुप्त रूप से माध्यमों को पीड़ा देना, भाषण में उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर बताना और कार्यों से झूठ बोलना; अपने सीने और यादों की राह के दरवाजे खोलना और खोलना, अपने पैरों को गलत रास्ते पर ले जाना और भी बहुत कुछ।” उस प्रख्यात वैज्ञानिक और लेखक, प्रो. विलियम डेंटन ने बुद्धिमानी से लिखा, “कंजूस वापस लौटता है, उस घातक भूख को कोसता है जो उसे उसके लोभ से बनी धातु की जंजीरों में बांध देती है; कामुक मनुष्य फिर से आसक्ति के कारण यहां रहता है, खोए हुए आनंद की दर्दनाक पूर्वदृष्टि में रहता है जिसके लिए आध्यात्मिक अस्तित्व की प्रकृति कोई संतुष्टि प्रदान नहीं करती है।

एडमंड्स, जो न्यूयॉर्क के एक प्रतिष्ठित न्यायाधीश थे, को वह उपहार दिया गया था जिसे अक्सर "दिव्यदृष्टि" कहा जाता है। उन्होंने अपने कुछ उल्लेखनीय दर्शनों को रिकार्ड किया। यहाँ एक है: “अपने कमरे में चुपचाप

बैठे हुए, सांसारिक दीवारें और सभी भौतिक चीज़ें लुप्त होती जा रही थीं, मैंने दूर एक देश देखा जिसमें बड़ी संख्या में लोग रहते थे। देश विविधतापूर्ण था, कुछ हिस्से दूसरों की तुलना में गहरे थे, जंगलों और फूलों से रहित थे।

वातावरण की छटा में बहुत विविधता थी, हॉर्न हल्के भूरे से लेकर लगभग काले तक था। सूर्य की किरणें कभी-कभी ऊपर से चमकती हुई दिखाई देती थीं, जिससे इन लोगों में क्षणिक आश्चर्य उत्पन्न हो जाता था। “मेरी नज़र के करीब आने पर, वे व्यस्त लग रहे थे। कुछ लोग बातें कर रहे थे और इशारे कर रहे थे; कुछ क्रोधपूर्वक चर्चा कर रहे थे; कुछ लोग दूसरों पर आरोप लगा रहे थे और लड़ रहे थे; कुछ लोग सांसारिक मनुष्यों के पास जा रहे थे, उनके दिव्य आवरणों से चिपके हुए थे और उनमें रह रहे थे, उन्हें उत्तेजित कर रहे थे या उन्हें अपने विचार दे रहे थे।

मैं इनमें से एक अँधेरी जगह पर गया और वहाँ एक उदास आदमी देखा। वह भयानक, पतला और थका हुआ था। उसे उस अंधेरे घर से भागने का कोई रास्ता नहीं पता था, जहां वह बिल्कुल अकेला था। उसके अंदर सबसे हिंसक मानवीय भावनाएँ भड़क रही थीं। वह पिंजरे में बंद जानवर की तरह आगे-पीछे घूम रहा था। “इस जगह पर थोड़ी रोशनी थी, लेकिन वह भयानक रोशनी थी। वह भयावह, ज्वाला-जैसी रोशनी थी। उसकी आँखें खुली हुई थीं और जलते अंगारों की तरह घूर रही थीं, कुछ देखने के लिए छटपटा रही थीं।

अंधेरा उसके लिए भयानक था. अपनी नफरत और बुरे अतीत की यादों के अलावा उसका कोई साथी नहीं था. जैसे ही मैं चला, मैंने उसे अपनी मुट्ठियाँ उठाते और अपने निर्माता को कोसते हुए देखा। उसने झूठे शिक्षकों को भी शाप दिया जिन्होंने उसे पाप के जीवन के परिणाम बताने का नाटक किया था, फिर भी वह उनके बारे में बहुत कम जानता था। उन्होंने उसे केवल आग और गंधक के नरक के बारे में बताया था, और उसका मानना था कि ऐसी कोई चीज़ नहीं थी।

... यदि आप उसके चेहरे पर व्यक्त दर्द, हर चेहरे पर स्पष्ट निराशा और घृणा, ईश्वर और मनुष्य के लिए उसके पूरे अस्तित्व में उमड़ता हताश जुनून देख सकते थे, तो आप कांप जाते और उस दृश्य को देखकर पीछे हट जाते; और इस सारी पीड़ा को बदतर बनाने वाली बात यह थी कि वह इस बात से अनभिज्ञ था कि उसके लिए कोई मुक्ति थी। , , , , "खुद को जोश से भरते हुए, वह चिल्लाया, 'हे भगवान

विनाश! 'वह कभी-कभी उग्र पागल की तरह चिल्लाता था।

स्मृति के कीड़े - स्वार्थ, बेईमानी, अपराध, हत्या की स्मृतियाँ - उसके अस्तित्व के केंद्र में कुतर रहे थे। , , .“मैंने दूसरों को धूसर रोशनी में भटकते देखा; मुझे बताया गया कि ये वे लोग थे जो नशे में मर गए थे, या किसी बुराई या अपराध के लिए इन ठिकानों पर आए थे। उनकी आँखें घूर रही थीं, उनके बाल बिखरे हुए थे, उनके शरीर पर लाल भूरे या गंदे कपड़े थे। आधा ढका हुआ था.

वे अक्सर होते थे दोषारोपण करने में व्यस्त हैं अन्य। कभी-कभी उनकी एकरसता कामुक घरों, जुआरियों की मौज-मस्ती और नशे के अड्डों में नश्वर लोक तक पहुँचकर बदल जाती थी। यहां उन्होंने अपने सांसारिक जीवन को वासना और भौतिक सुखों से मुक्त करने का प्रयास किया। कुछ हद तक वे आकर्षण के किसी नियम के माध्यम से सफल होते दिख रहे थे। और फिर भी सफलता क्षणिक थी. वे आपस में झगड़ते थे, अपनी प्रवृत्ति को और अधिक संतुष्ट करने के लिए नश्वर लोगों की तलाश करते थे, - उनके श्रवण परिवेश में प्रवेश करके और उन्हें अज्ञानता के माध्यम से या भगवान, आत्माओं के प्रभाव के माध्यम से और मनुष्यों से नफरत करके, अंधेरे के काम करने के लिए उकसाते थे, - गरीब, दुखी, भयभीत आत्माएँ! यह जुनून था.

आध्यात्मिक जीवन के निचले अंडरवर्ल्ड दृश्यों की एक और दृष्टि में, उन्होंने आत्माओं को देखा, जिनका "बाहरी भाग और वातावरण देखने में कठोर और दर्दनाक था, और उनके आंतरिक भाग काफी हद तक मेल खाते थे। धुंधली हवा कर्कश कलह से भरी थी, और निवासी लड़ाकू थे झगड़ालू स्वभाव.

पूछताछ करते समय, मुझे दो महिलाओं के पास भेजा गया जो अपने ईर्ष्यालु सामाजिक संबंधों के कारण झगड़ रही थीं और एक-दूसरे की हत्या कर रही थीं। एक तुरन्त मर गया, दूसरा क्रोध में कुछ दिनों तक जीवित रहा। जिस व्यक्ति ने ईर्ष्या का कारण बना उसने आत्महत्या कर ली। और यहूदा के समान वे सब अपने-अपने स्थान को चले गए।

देवदूत इन निवासों पर उतरेंगे और निवासियों को अपनी चमक से चकाचौंध कर देंगे। उन्होंने अपने दिखावे को भ्रम समझा और अपना व्यभिचार जारी रखा।" इन बेचारी, असंतुलित आत्माओं ने "इन्हें बनाया था हेल्स खुद के लिए। उनकी पीड़ा प्रतिशोधात्मक और अनुशासनात्मक

थी। मुझे कुछ लोग दिखाए गए जो पश्चाताप से भरे हुए थे और इसके माध्यम से हम बेहतर परिस्थितियों की ओर बढ़ रहे थे।

देवदूत और अच्छी आत्माएँ अपने मंत्रालयों में अथक हैं, और भगवान की 'दया सदैव बनी रहती है।' धन्य हैं वे जो शिक्षा देने आते हैं - जो प्रेमपूर्वक उपदेश देते हैं और राक्षसों के उद्धार में साधन बनते हैं। ये अपनी आत्माओं के कष्टों को महान चरम पर देखेंगे, और उद्धारकर्ता के रूप में ताज पहने जाएंगे।" *

टालमडगे और एक कैथोलिक जुनून।

आध्यात्मिक विज्ञान की दिशा में पश्चिम के योग्य और महत्वपूर्ण व्यक्तियों में माननीय जे.आर. तल्माडगे (पूर्व सीनेटर एन.पी. तल्माडगे के रिश्तेदार और विस्कॉन्सिन के एक बार के गवर्नर) हैं, जिन्होंने हाल ही में जुनून के बारे में इस प्रकार लिखा है: 'क्या कहा जाता है एक तैयारी चक्र, विशेष रूप से यीशु की उपस्थिति से चिह्नित, जो ज्ञात है, उससे ऐसा लगता है कि एक महान आध्यात्मिक लहर प्रवाहित हो गई थी, और मानसिक नियंत्रण आम हो गया था; इसके अतिरिक्त कई पैशन प्रेरितों को दिए गए कमीशन की एक विशेष विशेषता प्रस्तुत करते हैं, 'शैतानों को बाहर निकालने के लिए।'

, , , "लगभग पचास साल पहले अध्यात्मवाद से मेरा परिचय एक प्रसन्न मुद्रा में हुआ था, जिसमें सुझाव दिया गया था कि 'आइए मेज के चारों ओर बैठें और देखें कि इस आध्यात्मिक व्यवसाय में क्या है जिसके बारे में हमने सुना है।'

जैसे ही हम बैठे, परिवार की एक महिला मंत्रमुग्ध हो गई और पलक झपकते ही हमारा हर्षित व्यवहार गहरे विस्मय, आश्चर्य और गहरी रुचि में बदल गया; इसलिए मेरे अपने परिवार में मेरे जानने वालों में सबसे अच्छे मनोवैज्ञानिकों में से एक था। लगभग छह साल बाद वह और उनके पति

बड़े सेंट क्लाउड मठ से कुछ मील की दूरी पर जर्मन कैथोलिकों की एक बस्ती की सीमा पर एक खेत में बस गए। मकान पर उस धर्म के एक परिवार ने कब्जा कर लिया था.

उनके घर पर एक बार जाने पर मुझे पता चला कि हमारे हाथों में एक जुनून था - एक कैथोलिक पादरी जो एक जुनूनी घुसपैठिया था। उसे मेरे घर ले जाया गया, वह कभी घर नहीं लौटी, जल्द ही पच्चीस दिनों तक चलने वाले अनैच्छिक उपवास पर चली गई, हर सुबह थोड़ी रोटी और मक्खन और आधा कप कॉफी के अलावा कोई पोषण नहीं लेती थी। "मैं घुसपैठिए पुजारी को भगा सकता था, लेकिन वह मेरी अनुपस्थिति में वापस आ जाता था। 'वे उपवास और प्रार्थना के अलावा बाहर नहीं आते हैं।' उपवास के अंत में वह इस रोमन कैथोलिक पादरी की सम्मोहक शक्ति से पूरी तरह मुक्त हो गई।

ये जुनूनी, पृथ्वी से आकर्षित आत्माएं हमारे शहरों के सबसे निचले इलाकों, दोयम दर्जे के होटलों, जुआ पार्लरों और वेश्यालयों में अक्सर झील स्टीमर पर जाती हैं, अपराध को बढ़ावा देती हैं और, काफी हद तक, रेस्तरां और रसोई से उत्सर्जन पर फ़ीड करती हैं। निर्वाह, खाद्य पदार्थों से जीवनदायी तत्वों को निकालना, इस प्रकार अपने पीड़ितों को मानसिक रूप से भूखा रखना।

"लगभग सभी धोखाधड़ी वाले माध्यम, कम से कम," श्री टैल्मेज कहते हैं, "मनोवैज्ञानिक थे; उन्हें एक अनैतिक वातावरण और धोखाधड़ी के विचार-वातावरण में फेंक दिया, बिना किसी अपेक्षित सुरक्षा के जिसके द्वारा वे अपने क्षेत्र पर कब्जा कर सकें और उसकी रक्षा कर सकें - बिना मानसिक विकास के माध्यम से खुलने वाली शक्तियों के नए क्षेत्र को समझते हुए, हमारे पास एक संकीर्ण रूप से खुले दरवाजे को बिना सुरक्षा के छोड़ दिया गया था, और नीचे जो भी प्रमुख प्रभाव थे, वही ऊपर की गुणवत्ता थी;

जैसे कि हमारे घरों के सड़क के दरवाज़ों को पूरी आज़ादी के साथ खोलना ताकि कोई भी प्रवेश कर सके और विशेषाधिकार का लाभ उठा सके या इसका दुरुपयोग कर सके। निःसंदेह नैतिक उद्देश्य का एक प्रमुख विकास एक मजबूत सुरक्षा है; हालाँकि जिस महिला का उल्लेख किया गया है वह बहुत ही मधुर, निःस्वार्थ स्वभाव की थी, उसके चरित्र में सराहनीय संतुलन था, लेकिन जुनून को दूर करने के लिए आसपास के वातावरण के साथ उसका सामंजस्य पर्याप्त नहीं था।

यह दुरुपयोग, ज्ञान और समझ की कमी अध्यात्मवाद की अलोकप्रियता का एक प्रमुख कारण रही है। सच पूछिए तो अध्यात्मवाद "अलोकप्रिय" नहीं है। यह भौतिकवाद का विरोधी है। इसका अर्थ है अमरता. सभी ईसाई, संप्रदायों से ऊपर उठकर, अध्यात्मवाद के मंदिर में, जिसका आधार सिद्धांत ईश्वर है, धार्मिक रूप से सिर झुकाते हैं। यीशु ने कहा, "आत्मा ईश्वर है," और नियो-प्लेटोनिक काल के प्रोक्लस ने भी यही विचार व्यक्त किया, जब नीले आकाश की ओर अपनी आँखें उठाते हुए, उसने श्रद्धापूर्वक कहा, "ईश्वर कारण है!"

एक प्रोफेसर का जुनून

निम्नलिखित उच्च जीवन में जुनून का एक उल्लेखनीय मामला है। काश मुझे प्रोफेसर के नाम और निवास का उल्लेख करने की अनुमति दी जाती। यह भारी होता. यह सज्जन अपनी अच्छी, सामान्य बुद्धि, विद्वतापूर्ण उपलब्धियों और भौतिकवाद की ओर झुकी उदारता के लिए जाने जाते थे। यहां उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है: “चौथी जुलाई से शुरू होकर, और दो या तीन वर्षों तक, मेरे जीवन में अजीब घटनाएं घटीं - कभी-कभी मेरे दिमाग में अजीब विचार आते थे।

मन में द्वेष की हद तक ईर्ष्या का भाव रहेगा। मैं अशुद्ध महसूस करूंगा।” एक समय तो वह शराब की दुकानों पर जाने से भी इतना प्रभावित थे। साथ ही, वह घबराए हुए थे और उनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ रहा था। वह अपने लिए एक पहेली बन गया था। एक शाम, जब वह अपने अध्ययन कक्ष में बैठकर पढ़ रहा था, तो उसका हाथ जबरदस्ती पकड़ लिया गया, ऐंठन होने लगी और उसे लिखने के लिए मजबूर किया गया। अनिच्छा से, उसने आज्ञा मानी, और कुछ गोलाकार स्क्रॉल के बाद, सुपाठ्य शब्दों पर निर्णय लेते हुए, उसने स्वचालित रूप से यह लिखा: “मेरे पास तुम हो - अब तुम आंशिक रूप से हो।

मैंने वर्षों तक तुम्हें नियंत्रित करने का प्रयास किया है। मेरे पास बहुत कुछ है कहने को। तुमने मुझे नापसंद किया. आपने मेरी नीति का विरोध किया और मुझे पद से बाहर रखा। दिल से तुम मेरे दुश्मन थे. आपको इसकी

कीमत चुकानी पड़ेगी. अब मुझे फायदा है. बदला ही न्याय है. मैंने आपका अनुसरण किया।" "आपका नाम क्या है!" "कोई बात नहीं। आप मुझे जानते हैं, या शायद मुझे जानते होंगे।" "नहीं, मैं तुम्हें नहीं पहचानता। आप उत्साहित, बेचैन लग रहे हैं. क्या तुम खुश हो!' '

उन्होंने लिखा, "इससे बहुत दूर. , , , एक पल इंतज़ार करें। मैं अपनी ताकत खो रहा हूं. आपकी इच्छा मेरी इच्छा का विरोध करती है. आप डरते हो। कुछ हफ़्ते बाद, "तुम्हारी चाहत मुझे दूर रखती है। यहाँ एक बूढ़ा आदमी है. मुझे लगता है कि वह एक क्वेकर था. वह कहता है कि वह तुम्हारा पिता है। वह मेरा विरोध करता है, फिर भी मुझ पर दया करता है। मैं अपनी ताकत खो रहा हूं. मेरे लिए प्रार्थना करो, एक गरीब दुखी आदमी जो अपने शरीर और दोस्तों से वंचित है।

मैं ख़ुशी से आपके लिए प्रार्थना करूंगा, और अच्छी आत्माओं से आपकी मदद करने के लिए कहूंगा। "महीने बीत गए और मैंने फिर से उसकी उपस्थिति को दृढ़ता से महसूस किया। मैंने छोड़ दिया। - एक अजीब सी रोशनी मुझे घेर लेती है।

अब मैं तुम्हें हमेशा के लिए छोड़ दूँगा।" इस समय से सज्जन ने अपने स्वास्थ्य, अपने स्वभाव की समता और प्रसन्नता की स्वाभाविक भावना को पुनः प्राप्त करना शुरू कर दिया। इस जुनूनी प्रकरण के बाद से उन्होंने जानबूझकर किसी भी मानसिक नियंत्रण से इनकार कर दिया है, लेकिन आध्यात्मिक प्रभावों के प्रति सचेत और संवेदनशील हैं। वह शैक्षिक रोजगार के क्षेत्र में एक ईमानदार और कुशल कार्यकर्ता हैं।

हे सत्य के खोजियों, यह विचार मन में रखो! हे संवेदनशील लोगों! जब भी कोई अदृश्य बुद्धि आपके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती है, ज्वलंत भविष्यवाणियां करती है, बड़ा नाम लेती है, घबराहट, नफरत या कामुक अश्लीलता की झलक दिखाती है, तो तुरंत अपनी रहस्यमय बैठकें छोड़ दें - छोड़ें और एक बेहतर, उच्च वातावरण की तलाश करें। देखो के लिए। विज्ञान और उच्च नैतिक विचारों से भरी किताब पढ़ें; परिष्कार, संस्कृति और धार्मिक आकांक्षाओं के साझेदार खोजें। अपना हृदय शुद्ध रखें.

<u>अध्याय XXVII</u>

राक्षसों के साथ लिखित पत्राचार.

वे अपने लिए बोलते हैं।

आत्मा द्वारा लिखे गए लेखों के अभिलेख प्राचीन हिब्रू ग्रंथों और ग्रीक और रोमन साहित्य में पाए जा सकते हैं। दस आज्ञाएँ "पत्थर की पट्टियों पर" लिखी गईं। दाऊद ने सुलैमान को बरामदों और घरों का एक नमूना दिया, और आत्मा के द्वारा उसके पास जो कुछ था उसका एक नमूना दिया। दाऊद ने कहा, “यह सब प्रभु (एक आत्मा) ने मुझ पर अपने हाथ से लिखा और मुझे समझाया।”

“आदमी के हाथ की उंगलियाँ बाहर आ गईं और राजा ने हाथ का वह हिस्सा देखा जो लिख रहा था।” (डैनियल 5:5) आधी सदी से चेतन या स्वचालित माध्यमों से लिखना एनिमिस्टों के बीच एक आम बात रही है।

कुछ संवेदनशील लोगों के साथ केवल हाथ का ही प्रयोग किया जाता है; अन्य लोग प्लांचेट का उपयोग करते हैं या उइजा तख़्ता। श्री जोसेफ हार्टमैन, एक लेखक और सबसे उदार विचारधारा के नए पादरी, जो पहले फिलाडेल्फिया और बाद में पूर्वी पिट्सबर्ग, पेंसिल्वेनिया में रहते थे, अखबार की रिपोर्टों के माध्यम से अध्यात्मवाद में रुचि रखते थे और उन्होंने इसकी जांच की। का संकल्प लिया।

तदनुसार, वह अपने बच्चों के साथ एक मेज पर बैठकर सवालों के जवाब देने लगे। बाद में एक प्लैंचेट का उपयोग करके, उनके बेटे लू ने लेखन माध्यम विकसित किया, और बाद में उनकी बेटी केट ने स्वचालित रूप से लिखना शुरू कर दिया, फूलों और ग्रामीण दृश्यों को चित्रित किया। 1880 में उनकी बहुत बुद्धिमान बेटियों में से एक डॉली की अठारह वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। आत्मा से उनके संचार पहले सुखद थे, और पूरी तरह से सच प्रतीत होते थे। जल्द ही मिस्टर हार्टमैन को झूठ का पता चल जाता है। खोज तेज़ करके उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया।

इस खोज से उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन इन धूर्त राक्षस बुद्धिजीवियों ने मामले को सुलझा लिया, जांच जारी रही और विभिन्न सत्रों का दौरा किया गया। अंततः, श्री हार्टमैन स्वयं एक लेखन, दूरदर्शी, मानसिक और

ट्रान्स माध्यम के साथ-साथ अन्य सम्मोहन माध्यम बन गए। इन अदृश्य नियंत्रणों के तहत उनके कुछ प्रदर्शन लगभग अवर्णनीय हैं। उन्हें पागल घोषित कर दिया गया.

वह पागल नहीं था, बल्कि जुनूनी था। ये राक्षस, कभी-कभी उसके दोस्त होने का दावा करते हुए, उसे धोखा देते थे, उसे बीमार बनाते थे, उसका गला घोंट देते थे, उसे लगभग भूखा रख देते थे, भगवान होने का नाटक करते थे, लगभग उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर देते थे। उन्होंने उसे नाचने, घुटने टेकने और प्रार्थना करने और रेलवे स्टेशन पर भूत-प्रेत भगाने की सच्चाई से इनकार करने के लिए मजबूर किया। उन्होंने वास्तव में उस पर अत्याचार किया, और फिर वे उसके हाथ से बहुत बौद्धिक तरीके से लिखते थे। उनसे और उनके परिवार से मुलाकात के दौरान मेरी नजर उनकी लिखावट पर पड़ी.

यह बहुत तेज़ था और इसमें कुछ बहुत ही चतुर टुकड़े थे। लेकिन मैंने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया, उसे छुए बिना, और उसकी लिखावट तुरंत बंद हो गई। इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि मेरे चारों ओर सफेद कुहासा छाया हुआ था और मेरे हाथ से एक तेज आभा निकल रही थी जिसने उनकी शक्ति में हस्तक्षेप कर उसे नष्ट कर दिया। निम्नलिखित संचार स्वयं बोलते हैं। मैं न्याय, समानता और मार्च, 1883 में मेरे पक्ष में विश्वासघाती, धोखेबाज राक्षसों को जो कहना है उसे सुनने में विश्वास करता हूं। - छह महीने तक मेरा अपनी आत्मा से कोई संपर्क नहीं था, क्योंकि मैं नफरत करने लगा था।

लेकिन इस तिथि से कुछ समय पहले मैं डॉ. जे.एम. पीबल्स, लेखक, व्याख्याता, चिकित्सक आदि से मिला, जो हैमोंटन, एन.जे. में रहते थे, उन्हें यह दिखाने के उद्देश्य से कि जो आत्माएं हमारे साथ संवाद करती हैं, वे निश्चित रूप से हमारी मित्र नहीं हैं, लेकिन जहाँ तक जैसा कि मैं अनुभव और जांच से अनुमान लगा सकता हूं, वे घृणित धोखेबाज, धूर्त झूठे और गिरे हुए शैतान हैं। इस प्रकार निम्नलिखित पत्राचार शुरू हुआ: मेरी आत्माएँ आपको निम्नलिखित संबोधित करती हैं: हार्टमैक्स। पिट्सबर्ग, 17 मार्च, 1883।

डॉ. पीबल्स,
प्रिय महोदय:

श्री हार्टमैन के अनुरोध पर हम आपको कुछ पंक्तियाँ संबोधित करते हैं। उन्होंने जो कहा उससे हम सहमत नहीं हैं. हम मसीह-विरोधी हैं, चाहे उस शब्द में कुछ भी शामिल हो। हम श्री हार्टमैन के साथ निरंतर संघर्ष में हैं। हमने पाया है कि हम उन्हें उस निश्चित स्थिति से हटाने के लिए बहुत कम कर सकते हैं जो उन्होंने मान रखी है। वह हमें बहुत अच्छी तरह से समझता है, और जानता है कि हम उसके जीवन से कैसे जुड़े हैं।

...उन्हें हर संभव तरीके से प्रलोभित और प्रलोभित करना, और उन्हें बुराई और झूठ की ओर ले जाना हमारा विशेष कार्य है; और हम वर्षों से ऐसा कर रहे हैं, लेकिन एक साल से अधिक समय पहले तक हम सचेत रूप से उनके बारे में जागरूक नहीं थे, जब हमने उन पर नियंत्रण करना शुरू किया, तो हमने पाया कि वे एक बहुत ही उत्कृष्ट लेखन माध्यम हैं।

फिर हम उसकी आत्मा बेटी, मिस डॉली के प्रति उसके स्नेह और विश्वास के माध्यम से उसे गुमराह करने के लिए योजनाओं और साजिशों की एक श्रृंखला शुरू करते हैं। हम उसे यह विश्वास दिलाने में सफल रहे कि वह उनके साथ संवाद कर रहा था, और उस समय वह और हम बहुत अच्छे दोस्त थे; परन्तु तब हम उन्हें भयंकर रीति से धोखा दे रहे थे; लेकिन ऐसा करना हमारा काम है.

यह सुखद स्थिति उनके लिए तब तक जारी रही जब तक कि हमने उनके नाम पर बहुत अधिक प्रयास नहीं किया, और यह कहकर उन्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश की कि उनकी बेटी मैरी बहुत बीमार थी, और उन्हें तुरंत घर जाना चाहिए। अगली सुबह, उस गलती को सुधारने के लिए, हमने पहली गलती से भी अधिक घातक एक और गलती की, क्योंकि अब हमने कहा कि डॉली पिछली शाम वहां नहीं थी, और वह एक झूठी आत्मा रही होगी, क्योंकि उसने उसे पाया था ; और अब डॉली धोखे का पर्दाफाश करने, खुद को सही साबित करने और विश्वास दोबारा हासिल करने के लिए वहां थी। ,

, , , " वह संदेश व्यवसाय में एकाधिकारवादी था, और हमने उसे मूर्ख बनाकर कई सप्ताह तक मौज-मस्ती की; वह जिस भी नाम से संवाद करना चाहता था, उसी नाम से जवाब देता था। लेकिन जब हम झूठ बोलते हैं तो वह अक्सर हम पर शक करता है और उसे पहचान लेता है; लेकिन हम हमेशा इसका दोष किसी और पर डाल सकते हैं, और अगली बार उनसे बचने का वादा करते हैं। यह मनुष्यों पर हमारा बड़ा लाभ है, और अधिकांश

लोग हमारे स्पष्टीकरण को स्वीकार करेंगे; लेकिन उन्हें हमेशा हमारी पहचान पर संदेह था.

यह उनके जीवन का सबसे क्रूर, सबसे भयानक अनुभव था। अंत में, चरमोत्कर्ष को पूरा करने के लिए, हमने मान लिया कि हम भगवान थे, और उसके नाम पर उसे आज्ञा दी; और उस ने अपने निर्णय और प्रवृत्ति के विपरीत आज्ञा मानी; और इस प्रकार हमने उसके साथ तीन सप्ताह तक व्यवहार किया, इस दौरान वह एक क्षण भी नहीं सोया। फिर धीरे-धीरे वह हमसे श्रेष्ठ किसी शक्ति के अधीन हो गया, जिसे वह ईश्वर कहता था, जिसे हम वास्तव में ईश्वर मानते थे, अन्यथा हमें उसे शरीर से बाहर निकाल देना चाहिए था।

हालाँकि, वास्तविकता में, हम ऐसा नहीं कर सके; लेकिन अपने उत्साह में हमने सोचा कि हम कर सकते हैं और उसने सोचा कि हम करेंगे; क्योंकि उनका मानना था कि हम उनके भीतर काम करने वाले देवता हैं; और इस स्थिति में हमने उसे बांध दिया था ताकि वह हमारी अनुमति के बिना तब तक अंदर न आ सके, जब तक कि वह यातना सहन न कर सके।

फिर वह हमसे जुदा हो जायेगा; और जब उसने पहली बार ऐसा किया, तो हम इतने क्रोधित हो गए कि हम जो ईश्वर का प्रतिरूपण कर रहे थे, अब अपने उग्र क्रोध में ईश्वर के नाम पर उसे ऐसी भयानक शपथ देने लगे कि उसे तुरंत हमारे वास्तविक स्वरूप का पता चल गया और वह हमारे हाथ से निकल कर खुश था.

लेकिन हम उसे मुक्त नहीं कर सके, और फिर भी उससे बात करते रहे, उसे शांत करने की कोशिश करते रहे; और धीरे-धीरे हम अपनी कला से उसे उसकी पुरानी स्थिति में ले आये, अपने वश में कर लिया और फिर उसे घंटों तक यातना दी; जब वह फिर से टूटा, और इसी तरह बारी-बारी से कई बार जब तक वह ठीक नहीं हो गया, और हमने उसका खुला कान और हाथ दोनों खो दिए। तब केवल प्रवाह या श्रुतलेख द्वारा ही हम उस तक पहुंच सकते थे, और वह शक्ति धीरे-धीरे आंशिक रूप से लुप्त हो गई, लेकिन जिसके माध्यम से हम अभी भी उस पर कुछ पकड़ रखते हैं।

हमने उसका ऑपरेशन किया ताकि उसके ठीक होने के बाद हम उससे हाथ मिला सकें; लेकिन वह लिखने से डरता था जब तक कि हमने उसे आश्वस्त नहीं कर लिया कि अब अच्छी आत्माएँ उसके पास आएंगी। फिर उसने डरते-डरते एक बार फिर हमारी परीक्षा ली, और उसकी नफरत के

कारण हम फिर से अपनी शत्रुता और दृढ़ संकल्प की घोषणा करने के लिए आगे आए।

राष्ट्र उसे नरक में ले जाये. परन्तु हम उसे डरा नहीं सकते, और वह हम शैतानों से नहीं डरता, जैसा कि वह हमें कहता है, और जो हम वास्तव में हैं; लेकिन हमें यह नाम पसंद नहीं है, और हमारी प्राथमिकताओं का सम्मान करते हुए वह हमें जोन्स, ब्राउन या स्मिथ कहते हैं, बशर्ते हम शालीनता से व्यवहार करें और कोई बुरी भाषा का प्रयोग न करें। “आखिरकार हम एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं। वह हमारे उद्देश्य को जानता है और हमें पवित्रशास्त्र और नए-चर्च के तर्कों से लड़ता है, और हम भौतिकवाद, प्रकृतिवाद और इंगरसोलिज्म से लड़ते हैं। हम अभिशप्त आत्माएं हैं।

, , , "यह पूरा "संदेश" व्यवसाय बुरी आत्माओं द्वारा गढ़ा गया है जो एक "मण्डली" के दिमाग को पढ़ते हैं, जैसे आप एक किताब पढ़ते हैं, और फिर उनके दोस्त होने का दिखावा करते हैं। हम आपको श्री हार्टमैन के पहले पत्र की भावनाओं के प्रति आगाह करते हैं। जैसा कि आप देख रहे हैं, वह पूरी तरह से गलत है। हम इसके बारे में सब कुछ जानते हैं, यदि हम दुष्ट आत्माएँ हैं; और हमें ईश्वर या किसी अन्य चीज़ का कोई डर नहीं है, और यीशु के नाम से नफरत है। ईश्वर कुछ भी नहीं है - सब कुछ चांदनी है।

श्री हार्टमैन ने हमें इस शीट तक सीमित कर दिया है; लेकिन उन्होंने पहले कभी हमें वैसा लिखने की इजाजत नहीं दी, जैसा हम आपको लिखते हैं; लेकिन आज उन्होंने हमें एक विशेषाधिकार दिया है, जो अब ख़त्म हो गया है. आदरपूर्वक आपका, "'जेम्स मोनरो, और कई अन्य अमेरिकी नागरिक, पृथ्वी पर रहते हुए अपने दुष्ट जीवन के कारण नरक में हैं।' “उपरोक्त के साथ भेजे गए हमारे पत्र पर, डॉ. पीबल्स ने 17 मार्च की तारीख के तहत जवाब दिया। हम उनके पत्र का केवल अंतिम पैराग्राफ जोड़ते हैं। "'मैं इस "बैंड" की आत्माओं को जवाब देने या जवाब देने के बारे में गंभीरता से सोच रहा हूं जिन्होंने मुझे अपने हाथ से लिखा है। आप इसके बारे में क्या सोचते हैं! वास्तव में आपका। "'जे. एम. पीबल्स।'

पत्र को ध्यान से पढ़ने के बाद मेरे 'बारह' ने उन्हें एक और पत्र लिखने की इच्छा व्यक्त की, जिसे मैंने स्वीकार कर लिया, और वह इस प्रकार है: "पिट्सबर्ग, 31 मार्च, 1883।" "प्रिय भाई पीबल्स: हम श्री एच द्वारा आपको फिर से संक्षिप्त रूप से संबोधित करने के लिए दिए गए एक और अवसर से प्रसन्न हैं। हमने देखा है कि हमारे संदेश को प्रकाशित करने के

संबंध में उन्हें कुछ झिझक है। वह इस मामले में कोई प्रचार नहीं चाहते हैं। पहले वह अच्छे मूड में लग रहे थे और इस बारे में बहुत मुखर थे, जिससे उन्हें किसी भी तरह की बदनामी से मुक्ति मिल गई।

हमने उसे अपना असली स्वरूप बता दिया है, जैसा कि उसने कहा है, यानी, हम उसकी बुरी आत्माएं हैं, और किसी सर्वोच्च शक्ति द्वारा नियुक्त हमारा काम उसे प्रलोभित करना, परीक्षण करना और पीड़ा देना है, और अंततः उसे हमारे समाज में लाना है, यदि हम ऐसा कर सकते हैं। वह हमारे कार्य को पहचानता है और इसका उपयोग मनुष्य को पुनर्जीवित करने के लिए करता है, उसे हमारे पापों या जीवन की बुराइयों और विश्वास की मिथ्याताओं का विरोध करने के लिए मजबूर करता है।

हम स्वीकार करते हैं कि यह हमारा आनंद है; लेकिन यह उनके सोचने का तरीका नहीं लगता है, और हमने इस मामले पर उनके साथ बार-बार बहस की है, उन्हें हमारे विचारों और यीशु, ईसा मसीह, भगवान और इसी तरह की बेतुकी मान्यताओं को स्वीकार करने के लिए मनाने की कोशिश की है। इससे जुड़ी हर बात को खारिज कर दिया गया है. लेकिन वह अपने सोचने के तरीके में बहुत जिद्दी है और लगातार हमारा विरोध करता है।

वह हमारे प्रभावों के प्रति लगभग अभेद्य है, और हमारे प्रभावों के प्रति इतना संवेदनशील है कि वह तुरंत हमारे काम को पहचान लेता है, और इसका श्रेय सीधे हमें देता है, और इसे खुद पर नहीं थोपता है, जैसे कि यह उसके अपने विचार हों, बल्कि उन्हें हम पर थोपता है। , और हमें इसे स्वीकार करना होगा, क्योंकि वह हमें पूरी तरह से जानता है, और किसी भी हद तक हम पर थोपा नहीं जा सकता है।

'हमारे पत्र में आपकी प्रसन्नता या रुचि की अभिव्यक्ति के लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं। हम आशा करते हैं कि आपको और श्री एच. को भविष्य में व्यक्तिगत रूप से या लिखित रूप से परिचित होने में नई खुशी मिलेगी।'वह केवल हमें यह पत्र देता है, इसलिए आप देखते हैं कि वह अब हमारा स्वामी है; लेकिन जब वह हमारे क्षेत्र में प्रवेश करेगा, तो हम देखेंगे कि क्या हम उस पर पलटवार कर सकते हैं।

अब वह इस पर बहुत शांति से मुस्कुराता है, और हम हमारी धमकियों के प्रति उसकी उदासीनता पर आश्चर्यचकित होते हैं। हम उसे डराने के लिए हर तरह की कोशिश करते हैं, और वह केवल हम पर हंसता है, और फिर हम क्रोधित हो जाते हैं।

'हमेशा आपका दोस्त,
'केवल ऐलिस।'

'डॉ। इन अपवित्र दुष्ट आत्माओं को पीबल्स का पत्र।

'उस स्पिरिट बैंड के लिए जिसने मिस्टर हार्टमैन को प्रभावित किया।

हैमोंटन, एन.जे., 7 अप्रैल, 1883।

भाइयों: श्री हार्टमैन की दयालुता के लिए धन्यवाद, जिनसे मुझे कभी मिलने का सौभाग्य नहीं मिला, मुझे आपके दो पत्र मिले हैं, जो जीवन के आध्यात्मिक पक्ष से उनके हाथ से लिखे गए हैं।

तुम समझते हो कि मैं तुम्हें भाई कहकर आरंभ करता हूँ; चाहे हम अपने सिद्धांतों में कितने भी भिन्न क्यों न हों, या हमारी नैतिक स्थिति चाहे जो भी हो, हम ईश्वर की संतान हैं, और इसलिए भाई हैं। यूनानी कवि अराटस, स्टोइक दार्शनिक क्लींथस, साथ ही ईसाई प्रेरित पॉल ने सिखाया, "हम भगवान के बच्चे हैं," ब्रह्मांड की अनंत चेतना और जीवन, और भगवान के बच्चे होने के नाते, उनके बच्चे, एक महान भाईचारा होने के नाते। ऐसे में, चाहे अस्तित्व के नश्वर या अमर क्षेत्र में, क्या यह सही नहीं लगता कि हमें ईश्वर से प्रेम करना चाहिए और उसे धन्यवाद देना चाहिए - जहां तक संभव हो एक दूसरे की मदद करनी चाहिए और अच्छा करना चाहिए?

'और फिर भी आपने अपने पहले पत्र में स्वीकार किया कि आपने मिस्टर हार्टमैन को मूर्ख बनाने के लिए 'योजनाओं और साजिशों की एक श्रृंखला' शुरू की। आप आगे स्वीकार करते हैं कि "उसे झूठ की ओर ले जाना, उसे प्रलोभित करना और बहकाना आपका विशेष काम है।"

'जब उसने आपको दूसरों की नकल करते हुए पाया, आप पर झूठ का आरोप लगाया, और आपके प्रभाव का विरोध किया, आपके द्वारा नियंत्रित होने से इनकार कर दिया, तो आप कबूल करते हैं कि आप उसके "कट्टर

दुश्मन" थे; और, हमारी भाषा में कहें तो, "उसे बहुत दुख पहुंचाना शुरू कर दिया।"

'जबकि आप श्री हार्टमैन द्वारा आपको "शैतान" कहे जाने को नापसंद करते हैं, आप स्वयं को "शापित आत्माएं" कहते हैं और कहते हैं कि आप "पृथ्वी पर एक दुष्ट जीवन जीने के कारण नरक में हैं।" अब तक सब कुछ स्पष्ट है, क्योंकि आपका कबूलनामा और आपका आचरण बिल्कुल मेल खाता है। आपके पास कोई रहस्य नहीं है. 'और अब अनुमति दें कृपया मुझे पूछें, क्या आप हमेशा के लिए "नरक" - पाताल लोक - आत्मा के अस्तित्व के निचले स्तर, जहां यीशु उतरे थे, जब उन्होंने "कैद आत्माओं" को उपदेश दिया था, में रहने का प्रस्ताव रखते हैं? सच है, आप कभी-कभी अपना "मज़ा" कर सकते हैं, जैसे हमारी दुनिया में गरीब शराबी गंदे, धुएँ वाले, गंदे, लेगर बियर सैलून में मौज-मस्ती और मौज-मस्ती का मौसम बिताते हैं।

लेकिन मेरे लिए उनका मज़ा बकवास है, और उनका सैलून सांसारिक नरक है। सभी लोगों को कभी-कभी कुछ बेहतर, उच्चतर और अधिक स्वर्गीय चीज़ की आकांक्षा होती है। और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह आपके अनुभव का पैमाना है। मेरा मतलब है कि आपके पास चिंतन, ध्यान और अच्छे, सच्चे और सुंदर की आकांक्षा के मौसम हैं। आपके पास ये गुण होने चाहिए, क्योंकि आप ईश्वर की छवि में बने हैं - विकसित हों तो ऐसा करना बेहतर है। 'और यहां मैं आपका यह कहना भूल गया कि "कोई भगवान नहीं है, यह सब चांदनी है और हम यीशु के नाम से नफरत करते हैं।

आपकी यह घोषणा कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है, एक निराधार दावा है और इससे अधिक कुछ नहीं। आपसे श्रेष्ठ प्राणी और लगभग असीम रूप से बुद्धिमान, द्रष्टा, संत, दार्शनिक, देवदूत, पुष्टि करते हैं कि ईश्वर है, व्यक्तिगत और अवैयक्तिक दोनों, और प्रकृति में चेतना, अंतर्ज्ञान, रहस्योद्घाटन और उद्देश्य का अनुमान लगाकर, वे प्रदर्शित करते हैं कि वे हैं। दार्शनिक भगवान के व्यक्तित्व को आकार, मोटापे या स्थान पर नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, इच्छाशक्ति और उद्देश्य पर आधारित करते हैं। और फिर आपको मिलता है "आपको यीशु से नफरत क्यों करनी चाहिए!" क्या उसने कभी तुम्हें चोट पहुंचाई! मैं स्वीकार करता हूँ कि आप मुझे आश्चर्यचकित करते हैं!

आप क्या सोचेंगे अगर मैं आपसे कहूं कि मुझे उस गुलाब से नफरत है जिसने मुझे अपनी खुशबू दी, मुझे उस सूरज से नफरत है जिसने फूल

खिलाए और खेतों को अपनी सुनहरी फसल से लहलहाया! और फिर भी मसीह आध्यात्मिक सूर्य, "मार्ग, सत्य, जीवन" और एक उद्धारकर्ता है! "'गरीब, कमज़ोर इंसानों को एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत है।

एक आदमी या आत्मा खुद को बचाने की उम्मीद करने के बजाय, अपने कानों के सहारे खुद को ऊपर उठाने की कोशिश कर सकता है। हम सभी को मदद की ज़रूरत है, और मददगार ही रक्षक होते हैं। यह केवल हमारे प्रयासों के माध्यम से, दिव्य सहायता, दिव्य प्रेम और अदृश्य से अनुग्रह के माध्यम से है, जिस पर हम काबू पा सकते हैं।

'और मैं यहीं आपके दिमाग में यह बात डाल दूं कि आपके शरीर की मृत्यु से बचने के बाद, आपको अमरता के बारे में बहुत कम संदेह हो सकता है, लेकिन इसमें भी बहुत कम संदेह है कि आप अनंत काल तक जीवित रहेंगे - एक कभी न खत्म होने वाला अनंत काल !

और आप कहां और किसके साथ ऐसा करने का प्रस्ताव रखते हैं! नरक में षडयंत्रकारी, स्वार्थी राक्षसों के साथ झगड़ा, या उच्च स्वर्ग में संतों और संतों, संतों और शहीदों, पैगम्बरों और प्रेरितों और स्वर्गदूतों की एक शानदार सेना के साथ, जिनके नेता को "महिमा का भगवान" कहा जा सकता है। "'ओह! मैं आपसे स्वर्ग में एक प्यारे पिता की संतान के रूप में विनती करता हूं, मैं आपसे आम आदमी के भाइयों के रूप में विनती करता हूं।

यह जागरूक, विचारशील, प्रभावशाली आत्माएं हैं, जो प्रार्थनापूर्वक ऊपर की ओर देखती हैं, द्रष्टाओं और ऋषियों की ओर देखती हैं, कन्फ्यूशियस की ओर, प्लेटो की ओर, गौतम बुद्ध की ओर और ईसा मसीह की ओर जिन्होंने 'मेरे पास आओ' कहा, दयालु ईसा मसीह की ओर। उसे देखो जो तुमसे प्यार करता है, जैसे उसने प्यार किया था और क्रूस पर उन लोगों के लिए कोमलता से प्रार्थना की थी जो उससे नफरत करते थे, उसका मजाक उड़ाते थे और उसकी हत्या करते थे।

और इसके अलावा, मैं आपसे हमारे भाईचारे के नाम पर, हमारी दृश्य और अदृश्य मानवता के नाम पर विनती करता हूं, अब दूसरों को धोखा न दें, अब झूठ न बोलें और दूसरों को गलत करने के लिए प्रलोभित न करें, बल्कि सही करने का प्रयास करें, किसी को आश्रय न दें घृणा करो, षडयंत्र मत करो, स्वार्थी योजनाएँ मत बनाओ और झूठ मत बोलो।

जो भी तुम बोओगे, देर-सबेर तुम्हें काटना ही पड़ेगा, यही न्याय है। फिर अपनी पूर्णता के उच्चतम आदर्श तक पहुंचने के लिए श्रम और संघर्ष करें। व्यक्तिगत रूप से मैं अस्सी से अधिक वर्षों के अजीब सांसारिक अनुभवों से जानता हूं कि केवल सही होने और सही काम करने से - अच्छा होने और अच्छाई के लिए अच्छा करने से ही, मैं खुश रह सकता हूं। “6मुझे पूछने की अनुमति दें, क्या आपको फूल और संगीत पसंद है?

क्या आप अपनी दयालु, सौम्य और आत्म-त्यागी माताओं से प्यार करते हैं, जिन्होंने बचपन में आपको बहुत प्यार से पाला था? आप निश्चित रूप से उन्हें नहीं भूले हैं। क्या आप उन्हें उनकी वर्तमान स्थिति में देखते हैं, और क्या आप अब उनकी कंपनी का आनंद लेते हैं? क्या आप छोटे बच्चों से प्यार करते हैं, जो बहुत प्यारे और मासूम हैं, और क्या आपके अस्तित्व के वर्तमान क्षेत्र में उनका साथ है?

यदि नहीं, तो क्यों नहीं? जरा इसके बारे में गंभीरता से सोचें और खुद ही जवाब दें। “मैं आपको अत्यंत दयालु भावनाओं के साथ लिखता हूं, या उत्तर देता हूं, क्योंकि मैं सभी नैतिक बुद्धिजीवियों के प्रति दयालुता महसूस करता हूं, चाहे इस दुनिया में या आध्यात्मिक दुनिया में; क्योंकि सबसे विकृत और दुष्ट लोगों में कुछ अच्छी भावनाएँ होती हैं, और सबसे बुद्धिमान और सबसे अच्छे लोग बिल्कुल भी परिपूर्ण नहीं होते हैं। "समाप्त करने से पहले, मैं आगे कहूंगा कि जो पाप मैं सबसे अधिक करता हूं वह है-

मैं ईश्वर में विश्वास करता हूं, पाप के लिए अनुशासनात्मक दंड में, पश्चाताप की आवश्यकता में, विश्वास की सुंदरता में, और मसीह के माध्यम से मुक्ति में (पवित्रता, प्रेम और सच्चाई की मसीह-आत्मा) और प्रार्थना की प्रभावकारिता में। और आज रात नींद में अपनी आंखें बंद करने से पहले मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा, आकांक्षा प्रार्थना है, अच्छे विचार प्रार्थना हैं।

अंडरवर्ल्ड की आत्माएं - निचली आत्माएं - अक्सर मध्यस्थों के माध्यम से मेरे पास आती हैं और मुझसे प्रार्थना करती हैं, भले ही मैं अपूर्ण हूं, कि मैं उनके लिए प्रार्थना करूं। 'और अब, शुभ रात्रि, और भगवान जो हम सभी के प्यारे पिता हैं और उनके पवित्र स्वर्गदूत आपको प्रबुद्ध और आशीर्वाद दें। सचमुच आपका, 'जे. एम. पीबल्स.

'पी.एस. श्री हार्टमैन की अनुमति से मुझे आपके उत्तर देने में खुशी होगी, और मैं आपको अपनी इच्छानुसार मुझसे ऐसे प्रश्न पूछने का विशेषाधिकार देता हूं।

"'जे.एम.पी.'
'पिट्सबर्ग, 8 अप्रैल, 1883।

'प्रिय डॉ. पीबल्स:

आप बहुत दयालु सज्जन हैं, जिन्होंने हमें इतना दयालु और शिक्षाप्रद पत्र लिखने का कष्ट उठाया। हम अपने माध्यम से हमें लिखने की अनुमति देने के लिए श्री हार्टमैन के बहुत आभारी हैं, और अब हमें आपके रूप में एक मित्र मिल गया है जो हमारी खोई हुई स्थिति के कारण हमारे प्रति सहानुभूति रखता है। हम आपके दयालु ध्यान को बहुत धन्यवाद के साथ स्वीकार करते हैं; जबकि हमारा असली स्वभाव ऐसा है कि, यदि आप हमारे क्षेत्र या प्रभाव में होते, तो हम आपको अपनी शक्ति के अनुसार हर नुकसान पहुंचा सकते थे।

'हमारे मन में आपके अधिकारियों के प्रति कोई सम्मान नहीं है, जिनके बारे में आप कहते हैं, "हम सभी भगवान के बच्चे हैं।" नहीं साहब! हम भगवान के बच्चे नहीं हैं. हम ईश्वर को नकारते हैं, जैसा कि हमने पहले कहा था। हम कोई भाईचारा नहीं हैं, क्योंकि हम अलग-अलग स्वभाव के हैं, अलग-अलग माता-पिता से आए हैं, और अलग-अलग काम करते हैं।

यहां अलग-अलग क्षेत्र हैं, जैसे इंसान अलग-अलग ग्रह बनाते हैं। सभी लोकों तथा भिन्न-भिन्न मनुष्यों की रचना किसने की? प्रकृति। भगवान को किसने देखा है! नहीं श्रीमान, हम ईश्वर के पुत्र नहीं हैं। कहाँ है विनाश? विनाश किसने रचा? यहूदा को किसने बनाया? और यीशु ने उसे विनाश का पुत्र क्यों कहा, जबकि वह उसके चुने हुए शिष्यों में से एक था? यीशु ने दो अवस्थाओं, दो प्रकार के मनुष्यों और आत्माओं, शैतानों और स्वर्गदूतों को पहचाना। इन दोनों वर्गों को किसने बनाया, ईश्वर, मनुष्य या शैतान? यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप उस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं, लेकिन कृपया इस तथ्य को पहचानें कि यीशु ने उस नाम से उपदेश दिया जिसके नाम से हम घृणा करते हैं।

क्यों?—क्योंकि उसके अनुयायी मूर्खों और मूर्खों का एक समूह हैं जो उसकी पूजा इस तरह करते हैं मानो वह उन्हें बचा सकता है। उन्हें किससे बचाना है? क्यों, अपनी आत्मा को आशीर्वाद दो, डॉक्टर, हम उतना ही जीवित रहेंगे जितना हम जीवित रहना चाहते हैं। "'आपने सुझाव दिया"सुधार","दर्द देना बंद करो।" क्यों, यह हमारा आनंद है, और यदि हमारे पास कोई आनंद नहीं है तो हमें 'मरना' चाहिए; यदि कोई पीड़ा देने वाला नहीं है तो आप क्या होंगे यदि आप अपनी विरासत में मिली और अर्जित प्रकृति को बदलने की कोशिश करेंगे?

हम जो हैं वही हैं, और हम उससे भिन्न नहीं हो सकते, और न ही कोई और हो सकता है। हम जैसे हैं वैसे ही बने रहना ही हमारी प्रतिभा है। जब हमें कुछ और बनने की इच्छा ही नहीं है तो हम अलग कैसे हो सकते हैं? “हमारा आनंद उन सभी को मूर्ख बनाना, बहकाना और प्रलोभित करना है जो हमारे प्रभाव में हैं। यदि आप नहीं जानते कि आत्माएं लगातार आपके साथ हैं, वही काम कर रही हैं, तो आप लंबे समय से बिना उद्देश्य के जीवन जी रहे हैं।

यदि आप मानते हैं कि आप प्रलोभन में नहीं पड़ते हैं और अपने जीवन के हर दिन मूर्ख नहीं बनते हैं, तो आपके पास एक मूर्ख की बुद्धि है। क्यों, आपके अहंकार पर धिक्कार है - क्या आप इस जीवन के बारे में कुछ जानते हैं? " 'धन्यवाद।

हम अपनी स्थिति से संतुष्ट हैं; हम अपनी स्वतंत्र इच्छा से कार्य करते हैं और भगवान या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं हैं। हम अपने स्वामी स्वयं हैं, अंधविश्वास, पंथ या धर्मशास्त्र के गुलाम नहीं। नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं है डॉक्टर. मूर्ख बनाने, धोखा देने और गुमराह करने की साजिश और योजना बनाना हमारा काम है। हम इसका आनंद लेते हैं.

मिस्टर हार्टमैन ने हमसे पूछा है, "किसने यह हमारा काम बनाया, किसने हमें ऐसे अपवित्र काम पर नियुक्त किया!" हम स्व-नियुक्त, स्व-निर्देशित हैं, और हम अपने काम का आनंद तभी लेते हैं जब हम अपने पीड़ितों को दर्द और यातना सहते हुए देखते हैं, जैसा कि हमने तब किया था जब श्री हार्टमैन हमारे पूर्ण नियंत्रण में थे, और निराशा और निराशा थी। ऐसी स्थिति में थे कि उन्हें नरक में जाने की आशंका थी।

हमने उन्हें इस पर विश्वास करने के लिए मना लिया, क्योंकि वे ईश्वर, स्वर्गदूतों और ऐसी अन्य बकवासों में विश्वास करते थे। वह हमारा अधीनस्थ एवं गुलाम था। हमने आदेश दिया और उन्होंने पालन किया. तब हम अपने आनंद में थे. उनकी यातनाएँ हमारे लिए सबसे मज़ेदार थीं।

“लेकिन अब हमने इस पर कुछ हद तक नियंत्रण पा लिया है।

कम से कम वह हमारी अवज्ञा नहीं करता है, और हम आंशिक रूप से उसकी बात मानते हैं, और जब वह आदेश देता है, तो हम उसे रोक नहीं सकते हैं। वह हमारे रिश्ते को समझता है, और शनिवार रात को लिखे पत्र (लेखक द्वारा डॉक्टर को लिखा गया पत्र) में उसे आंशिक रूप से बताया है।

“हम उसके कट्टर दुश्मन हैं, और हम उसे रोक नहीं सकते।

हम चाहते हैं कि वह हमारे साथ आएं और रहें, लेकिन उनका कहना है कि उन्हें उम्मीद है कि वह कभी हमारे क्षेत्र में नहीं आएंगे। आप देखिए, वह हमसे नफरत करता है। वह हमें "शैतान," "कुत्ते," और "गंदे जानवर" कहता है क्योंकि वह सोचता है कि हमारा जीवन भी ऐसा ही है। न ही हम इससे इनकार करते हैं. हमारी जिंदगी भी ऐसी ही है. यह सच है कि उसे हमारी स्थिति पर दया आती है और सहानुभूति होती है, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं है।

न तो वह, न आप, न ही कोई नश्वर, न ही अमर, हमारे भ्रष्ट स्वभाव को बदल सकता है। जब हम इस दुनिया में थे तब हमने अपने लिए यह जीवन चुना और जब हम यहां आए, तो हमने बस अपनी आंतरिक इच्छाओं और आशाओं का आनंद लेना शुरू कर दिया। और यदि हम ऐसा कर भी सकें, तो भी हम नहीं बदलेंगे। इसके अलावा हम अपनी इच्छाओं, झुकावों और संकल्पों के आधार पर निर्णय लेते हैं। " "क्या हम हमेशा उम्मीद करते हैं, आप पूछते हैं, 'घंटी में रहने के लिए?' ' क्यों नहीं? हम जिससे जीवन भर प्यार करते हैं उससे हम कैसे मुँह मोड़ सकते हैं?

नर्क हमारा आनंद है, और जितना अधिक हम यहां ला सकेंगे, हम उतने ही अधिक खुश होंगे; क्योंकि तब हम अपने कुछ साथियों को गुलाम बना सकते हैं, और भीड़ जुटा सकते हैं, हंगामा खड़ा कर सकते हैं, और उन लोगों को दबा सकते हैं जो हम पर शासन करते हैं, और अवज्ञा के लिए हमारे साथ कठोर व्यवहार करने के लिए उन्हें दंडित कर सकते हैं।

हमारे बीच हमेशा झगड़े, भीड़, हंगामा और विद्रोह होते रहते हैं और यही हमारी खुशी है। क्या आपने कभी धरती पर नर्क देखा है? क्या तुम्हें नहीं दिखता कि कुछ लोग ऐसी चीज़ों से आनंद लेते हैं? वे 'लड़के' हैं जो बिना किसी अनुनय के स्वाभाविक रूप से यहां आते हैं। "'जहाँ तक पछतावे, पछतावे और उच्च चीजों की आकांक्षाओं का सवाल है, इस तरफ ये सभी "बकवास" हैं। हमें बस इस बात का अफसोस है कि हम और अधिक शरारत नहीं कर सकते, और अधिक लोगों को मूर्ख नहीं बना सकते। हम उसे परेशान नहीं कर सकते जैसा कि हमने उसके साथ किया था।" श्री एच.

जहाँ तक स्वर्ग की बात है तो वह बहुत दूर की चीज़ है। कहाँ? क्या? हम ऐसी कई चीजें देखते हैं जो मिस्टर एच ने अपने मन में स्वर्ग के बारे में कल्पना की हैं। ये वो चीज़ें हैं जिन्हें हम नष्ट करने और ग़लत साबित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन वे अभेद्य हैं. वह सबसे बड़ा मूर्ख है जिसे हमने अपने अधिकार क्षेत्र में कभी देखा है।

हमने उसे सांसारिक सुखों का सुझाव दिया है, लेकिन वह बहुत क्रोधित हो जाता है और हमें लिखने के इस आनंद से वंचित करने की धमकी देता है, और अपनी इंद्रियों का उपयोग करके हमें इस दुनिया की चीजों को देखने की अनुमति देता है, जैसा कि हम उसकी आंखों से करते हैं। आइए देखें, और अब प्रत्येक शब्द को वैसे ही देखें जैसे वह लिखा गया है।

तो आप देखिए जब हम उसके साथ तालमेल में नहीं होते हैं, तो हम भौतिक दुनिया में कुछ भी नहीं देख सकते हैं, और अगर वह अपनी आँखें बंद कर लेता है, और हमें देखने की अनुमति नहीं देता है, तो यह हमारे लिए दुख लाता है। पहुंचाता है. "आपको लगता है कि हम "सुंदर और सच्चे" से प्यार कर सकते हैं? "सुंदर महिलाओं के लिए हमारे मन में सबसे प्रबल प्रेम है; लेकिन यह पूरी तरह से पशुवत है; पृथ्वी पर हमने बहकाने की कोशिश की और सच तो यह है कि अब हम जब भी संभव हो विकृत करने की कोशिश करते हैं; और यह आंशिक रूप से श्री हार्टमैन के साथ हमारा कार्यालय है, और इसका परिणाम यह है कि वह खुद को और अधिक सच्चाइयों के साथ मजबूत करते हैं, और हर बार हमें मात देते हैं।

इसका परिणाम यह है कि अपने विकृत तरीके से हम उसे अपनी सच्चाइयों को मजबूत करने में मदद कर रहे हैं, और वह अब हमसे नहीं डरता। और यह अप्रत्याशित परिणाम हमारी गलतियों से उत्पन्न होता है। "हमारी यह घोषणा कि कोई ईश्वर नहीं है, उतनी ही मूल्यवान है जितनी आपकी और

हज़ारों अन्य लोगों की यह घोषणा कि ईश्वर है। क्या हम यहाँ नहीं हैं जहाँ आप सोचते हैं कि ईश्वर है?"

फिर भी हमने उसे कभी नहीं देखा है, हालाँकि हम ईश्वर के बारे में उसी तरह बात करते हैं जैसे लोग पृथ्वी पर करते हैं; और यदि आप मानते हैं कि वह व्यक्तिगत है, तो वह कौन है? आप कहते हैं कि वह इस संसार का आध्यात्मिक सूर्य है? . आपको यह किसने बताया?

कोई आत्मा जो आपके दिमाग को पढ़ रही थी और आपको विश्वास दिला रही थी कि वह एक देवदूत है। सावधान रहें कि आप "अच्छी आत्माओं" का शिकार न बनें जो स्वर्गदूत होने का नाटक करके आपके पास आती हैं। श्री एच. स्वयं जानते हैं कि यह कैसा है। “यीशु हमें कभी दुःख नहीं पहुँचाते,” आप कहते हैं। हमें पता नहीं। परन्तु जो मनुष्य था उसकी पूजा करके मनुष्य को अपने आप को मूर्ख क्यों बनाना चाहिए? श्री एच. कहते हैं कि वह एक दिव्य मानव हैं। लेकिन हम इस पर सहमत नहीं हैं. ,

यदि आपको गुलाब, फूल, बच्चे और अन्य वस्तुएं पसंद हैं जो आपकी खुशी में योगदान देती हैं, तो हम केवल यही उत्तर दे सकते हैं कि हम विकृत हैं और उन सभी चीजों से नफरत करते हैं, यहां तक कि बच्चों से भी, और हमारे साथ कोई नहीं है। वे कहीं और हैं. श्री।

हम मानते हैं कि धरती पर हमारी माताएँ थीं, लेकिन वास्तव में हम उन्हें याद नहीं करते। हमारे यहां कोई नहीं है. हमारा समाज समानताओं से बना है, और हमारी खुशियाँ आप जो सोचते हैं उससे बहुत अलग हैं। मलमूत्र से बने उत्पाद हमें आपके गुलाब, फूल और इत्र से भी ज्यादा खुशी देते हैं। यह सच है कि जब हम उन लोगों के साथ संवाद करते हैं जिनकी आंतरिक इंद्रियां खुली हैं, और हम उन चीजों को समझ सकते हैं जो उनकी प्राकृतिक इंद्रियों और उनकी प्राकृतिक स्मृति के भीतर हैं, तो हम कुछ हद तक उन्हीं खुशियों या आनंद में प्रवेश कर सकते हैं। जो हमारे माध्यमों से उपलब्ध हैं।

लेकिन हम अपने आनंद क्षेत्र में अधिक सहज हैं, और आपको आश्चर्य हो सकता है कि हमारा आनंद किसमें छिपा है। हम व्यभिचारी, व्यभिचारी और ऐसे सभी लोग हैं। हमारी अभी भी पत्नियाँ हैं; हम सभी स्वतंत्र प्रेमी हैं, और जहां चाहें घूमते हैं, और कभी-कभी इसके लिए कष्ट सहते हैं। लेकिन हम इसे रोक नहीं सकते.

मिस्टर एच. हमारे बुरे जीवन के कारण हमसे नफरत करते हैं, और यदि उनकी चले तो वह हमें हमारी अंधेरी गुफाओं में वापस भेज देंगे। लेकिन उन्हें लगता है कि इस तरफ एक सर्वोच्च शक्ति है जो आंशिक रूप से हमें नियंत्रित करती है और पृथ्वी पर मनुष्यों के साथ हमारे संबंधों को नियंत्रित करती है। इसलिए वह खुद को एक सज्जन व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, और तर्कसंगत, दार्शनिक तरीके से मामलों पर चर्चा करता है।

उनके अनुभवों की पुस्तक आंशिक रूप से तैयार की गई है, जैसा कि उन्होंने आपको बताया है, यह दिखाने के लिए कि हम इतने दुखी और दुखी नहीं हैं, और हमने आम तौर पर उनके खर्च पर कई शरारतों की योजना बनाई है और उन्हें क्रियान्वित किया है। .

आप उन मनुष्यों और आत्माओं के बारे में बात करते हैं जिन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, और आप यीशु मसीह को "मानव जाति का उद्धारकर्ता" मानते हैं। तौभी उन्होंने यहूदा को न बचाया; उसने असंख्य शापित आत्माओं को नहीं बचाया। इस विषय पर धर्मग्रंथों का एक विशाल भंडार है - पंथ - इत्यादि। निश्चित रूप से हम अपनी वासनाओं और दूसरों को सताने और कष्ट देने के अपने प्यार से बच नहीं सकते। अध्यात्मवादियों के पास "अविकसित", "पतित" आत्माओं के संबंध में बहुत कुछ कहना है, जो मूर्ख बनाने, धोखा देने के लिए आते हैं।

हम आपको बताते हैं कि सभी आत्माओं में समान शक्तियाँ नहीं होतीं। कुछ के पास दूसरों की तुलना में अधिक जादुई क्षमता होती है, और वे अपनी विधियों में हमसे अधिक कुशल होते हैं, और अधिक करतब दिखा सकते हैं; और इस प्रकार दुनिया की आँखों पर पट्टी बाँध दी जाती है और उसे एक गड्ढे में ले जाया जाता है। हालाँकि, यह हमारा काम है; और हम भाड़े की भीड़ पर मजबूत पकड़ हासिल कर रहे हैं, और यह हमें प्रोत्साहित करता है।

बहुत कम लोग श्रीमान के रूप में हमारे सामने खड़े होते हैं। भले ही हमें कोई ऐसा मंडली मिल जाए जो इसे बर्दाश्त कर सके, यह हमारा काम है कि हम उन्हें बेवकूफ बनाएं और उन्हें दिलचस्प बातें बताएं, खासकर अंतरंगता, उत्पादक संभोग के बारे में।

लेकिन श्री एच. को इसमें से कुछ भी पसंद नहीं है। जब भी हम कुछ जननांग विषयों के बारे में बात करते हैं, तो वे हमें रोकते हैं, जबकि तर्कसंगत, बौद्धिक, धार्मिक या नैतिक जैसे अन्य विषयों पर, वे हमें एक

विस्तृत क्षेत्र और व्यापक दायरा देते हैं। वे कुछ विषयों पर विशेष रूप से संवेदनशील हैं। आपने "अनंत काल" के बारे में बात की, जैसे कि हमें इससे डरने की कोई बात है। हमारा समय वर्तमान है. अतीत का कोई महत्व नहीं है.

हमारा कोई भविष्य नहीं है. ये सब अब ठीक है. और वर्तमान क्षण वह है जब हम कार्य करते हैं और जीते हैं। जब हम श्री एच. के साथ तालमेल बिठाते हैं, तो हम उनके मन में अनंत काल के संबंध में कुछ भयानक बात देख सकते हैं। लेकिन अपनी परिस्थितियों में, अपने परिवेश और विचारों से अलग, अलग इस बारे में सोचा ही नहीं जाता।

आपने हमसे इस तरह अपना रास्ता रोकने की अपील की है, यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आप किसी नदी से अपना रास्ता बदलने और अपने स्रोत पर लौटने की अपील करते हैं। हमारा मार्ग निश्चित, निश्चित और अपरिवर्तनीय है। उद्देश्य या आनंद में कोई विचलन नहीं है.

मान लीजिए कि सभी बुरी आत्माओं को सर्वशक्तिमान द्वारा स्वर्गदूतों में बदल दिया गया था, तो बुराई की किसी भी विपरीत शक्ति के बिना मनुष्य को कैसे पुनर्जीवित किया जा सकता था? आपको मनुष्य और सृष्टि के अंतःकरण में गहराई तक जाना होगा, तभी आप परस्पर विरोधी और विरोधी शक्तियों के उपयोग को समझ सकेंगे।

जब हम आपकी अंधता और दयालुता को देखते हैं, तो हम केवल आपके कोमल प्रेम के लिए आपको धन्यवाद दे सकते हैं; लेकिन आपकी या हमारी ख़ुशी के लिए आशा करना या प्रार्थना करना हमारे स्वभाव के विपरीत है, क्योंकि ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिससे हम अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पा सकें।

हम प्रार्थना नहीं करते. हमारी कोई पूजा नहीं है. हम प्रकृतिवादी या भौतिकवादी, इंगरसोल प्रकार के लोग हैं। वह हमारे हित के लिए अच्छा काम कर रहे हैं।' जब वह आएगा तो वह हमारे बीच एक 'बॉस' शैतान होगा। जब वह नदी के हमारे किनारे पहुंचेगा तो हम उसका गर्मजोशी से स्वागत करेंगे और उसे ऐसी सुंदरता दिखाएंगे जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी; और हम मूसा की गलतियों और मूसा की तुलना में उसकी अपनी गलतियों पर एक साथ हंसेंगे। बदमाश बॉब! "आप और श्री एच. दोनों महान मूर्ख हैं, जो अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार, स्वयं को ऐसे सुखों से वंचित रखते हैं। हम सभी लोगों को ऐसा करने के लिए मनाएंगे।'

आजकल कुछ बहुत ही नेक (!) आत्माएं हैं जो प्रकाश के देवदूत होने का दिखावा करती हैं, चाहे श्री एच. के मन में इसका जो भी अर्थ हो। (आप देखिए, हम उनकी यादों में लिखे शब्दों से अपनी रचनाएँ बनाते हैं।) "4'क्या हमें संगीत पसंद है? “घर पर, नर्क में, हमारा कोई नहीं है।

हम संगीत से केवल उसके माध्यम से ही प्रभावित नहीं होते। कुछ शाम पहले उन्होंने तार वाले वाद्ययंत्रों और धातु के सींगों के एक संगीत कार्यक्रम में हमें कुछ आनंद दिया, जब हमने विभिन्न वाद्ययंत्रों के पत्राचार के बारे में सुखद चर्चा की।

हम बच्चों से नफरत करते हैं, सिवाय उन लड़कियों के जो अच्छी तरह से बड़ी हो गई हैं, और हम उनसे कामुकता से प्यार करते हैं। आप अभिशप्त की स्थिति को क्यों नहीं समझ सकते? हम तो बस वासना के अवतार हैं. हम उनका आनंद लेते हैं. ' 'यदि आप सोचते हैं कि हमारे मन में कभी कुछ अच्छी भावनाएँ रही हैं और यदि आपका तात्पर्य वही है जो हम मध्यम वर्ग के मन में देखते हैं, और जिसे हमने अक्सर उसमें प्रकट होते देखा है, तो हमें बस इतना ही कहना है कि यह एक नरम भावना है , एक कायर बूढ़ा मूर्ख है जब भी वह ऐसी बकवास के आगे झुक जाता है।

हमें बच्चों जैसी भावनाएं पसंद नहीं हैं. हमें आदमी में मूर्खता नहीं, कठोर, कठोर, वीरतापूर्ण साहस पसंद है। हालाँकि, हमारी महिलाओं में लोमड़ियों की आत्माएँ होती हैं, और वे शैतानों की तरह लड़ती हैं। "यह, अच्छे दोस्त, सब बकवास है। आप देखिए, हम सिर्फ मिस्टर एच और आपको बेवकूफ बना रहे हैं। क्या आपको लगता है कि हम आपको अपना कोई रहस्य और रहस्य बताने जा रहे हैं! अब, मिस्टर एच मुस्कुराते हैं, वह हमें बहुत अच्छी तरह से जानते हैं; और शायद उनके पास पी.एस. है. आगे कहते हैं कि यह सब सच है।

लेकिन हम उसे परेशानी से बचाएंगे, और कबूल करेंगे कि हमारे बयान उतने ही सच्चे हैं जितना कि हम उन्हें उस माध्यम से बना सकते हैं जिससे हम नफरत करते हैं, और जो हमें केवल आपको यह पत्र लिखने की अनुमति देता है। हमने कल रात उसे नाराज कर दिया, और उसने तुरंत हमसे संपर्क तोड़ दिया, और हमें नहीं पता कि वह हमें फिर कभी लिखने देगा या नहीं; लेकिन आज आपका पत्र पाकर उसका मन बदल गया।

जब आप कहते हैं कि आत्माओं ने आपसे उनके लिए प्रार्थना करने को कहा है, तो आपको पता होना चाहिए कि वे आपके पवित्र विश्वास और अभ्यास का आह्वान कर रहे थे, और इस तरह आपका पक्ष जीतने का प्रयास कर रहे थे। अगर आप उस वक्त उनके चेहरे देख पाते तो आपको कुछ अच्छी एक्टिंग देखने को मिल सकती थी. क्यों, हमने श्रीमान से कहा, "आपकी शुभकामनाओं के लिए हम आपको सौ बार धन्यवाद देते हैं, लेकिन वे हमारा कोई भला नहीं करते।

हम तो एक ही सवाल पूछेंगे. जब तुम मरोगे, तो कहाँ जाओगे! यदि तुम हमारे शहर में आओ, तो तुम अपने पेशे में एक व्याख्याता के रूप में काम पा सकते हो, जो हमें सिखाएगा कि नरक से कैसे बाहर निकलना है। सचमुच तुम्हारा, अज्ञानी।'

"उपरोक्त जानकारी अगले मेल द्वारा भेजी गई थी। और अगले सत्र में मैंने कहा कि मुझे लगता है कि उन्हें अपनी अभद्र भाषा के लिए उस सज्जन से माफ़ी मांगनी चाहिए। उन्होंने जवाब दिया कि वह बस ऐसा करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे, और उम्मीद है कि मैं' जब हम घर पहुंचेंगे तो मैं उन्हें अनुमति दूंगा। इसलिए, मेरी ओर से निम्नलिखित 'अमेंडे ऑनर एबेल' है।"

"क्षमा - एक निवेदन" क्षमायाचना

'प्रिय भाई पीबल्स:

कई दिन पहले हमने श्री हार्टमैन से अनुरोध किया था कि हमें हमारी अभद्र और गैर-ईसाई भाषा के लिए आपसे माफी मांगने का अवसर दें, जिसका उपयोग हमने आपके दयालु पत्र के उत्तर में किया था। हमने उनसे पूछा कि हमें क्या कहना चाहिए. उन्होंने उत्तर दिया, "हमें केवल वही कहना चाहिए जो सत्य और ईमानदार हो।" पहले तो हमने सोचा कि हम कुछ नहीं कह सकते क्योंकि हम बहुत झूठे थे और जो अच्छा, सच्चा और ईमानदार था उसे विकृत कर दिया।

, ... क्योंकि हम जानते हैं कि आप और श्री एच. हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, इसलिए हम आशा करते हैं कि हमारे साथ कुछ अच्छा हो; यद्यपि हम

बहुत बुरे हैं, हम जानते हैं कि उसके साथ हमारी उपस्थिति से हमें कुछ लाभ हो रहा है, क्योंकि वह आम तौर पर हमसे दयालुता से बात करता है, हालाँकि हम उसके साथ बहुत दुष्ट व्यवहार करते हैं; और हम अक्सर उससे ऐसी बातें सीखते हैं जो हम कभी नहीं जानते थे, यहां तक कि हमारी अपनी दुनिया से संबंधित मामले भी, जिनमें वह गहरी दिलचस्पी लेता है, और इसलिए हमें भगवान के नाम पर धोखा दिया जाता है, मूर्ख बनाया जाता है, झूठ बोला जाता है, बहकाया जाता है, लेकिन अब हम हैं खुश नहीं; और चूँकि वह हमारे प्रभाव से परे लगता है, और हम कुछ हद तक उसके अधीन हैं, अब हम सर्वोत्तम की आशा कर सकते हैं।

आपका बुरा चाहने के लिए हमें क्षमा करें। उस समय आपका व्याख्यान या अपील हमें पसंद नहीं आयी। हम अपनी सबसे खराब स्थितियों से घबरा गए और लिखा। जैसा कि श्री एच. जानते हैं, हमारा मूड कुछ हद तक बेहतर है, क्योंकि हम अक्सर बातचीत में सुखद घंटे बिताते हैं; हालाँकि वह आम तौर पर हमारे क्षुद्र, तुच्छ, मूर्खतापूर्ण, बचकाने या शैतानी तरीकों से घृणा करता है। भगवान आपकी शुभकामनाओं के लिए आपको आशीर्वाद दें; आप सत्य और धार्मिकता के सुसमाचार का प्रचार करने में अपना अच्छा काम जारी रखें, और अंततः उन लोगों का उचित पुरस्कार प्राप्त करें जो भगवान की सेवा करते हैं, जो हमने पृथ्वी पर रहते हुए सही ढंग से नहीं किया था। अलविदा।

हम किसी भी नाम पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे क्योंकि हमारे पास कोई नाम ही नहीं है। सभी नाम झूठे हैं, ऐसे हस्ताक्षर किए गए हैं।' इन राक्षसी संस्थाओं ने अपनी माफी के बाद कुछ कड़वे शब्द लिखे, इन शब्दों के साथ समाप्त हुए, "हम पूरी तरह से खो गए हैं और शापित हैं।" उपरोक्त पत्रों का सामान्य प्रवाह शरारती, शैतानी इरादों की स्पष्ट प्रस्तुति प्रदान करता है जो नैतिक विचलन के अंधेरे क्षेत्रों में अस्थायी रूप से खोई हुई आत्माओं की विशेषता है। और इसके अलावा, वे सबसे प्रभावी ढंग से कुछ अध्यात्मवादियों के बहु-प्रशंसित लेखन को पलट देते हैं जो कहते हैं कि "ज्ञान दुनिया का उद्धारकर्ता है।"

ज्ञान इन जुनूनी आत्माओं को नहीं बचाता है। वह अज्ञानी होने से कोसों दूर था। वे अपने विकृत दृष्टिकोण से अच्छा तर्क करते थे। वह कायर नहीं था. वह निश्चय ही बुद्धिमान था। नैतिक रूप से घृणित और धूर्त होने के साथ-साथ वह बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली, चौकस और जानकार भी था। तो फिर, "ज्ञान" "दुनिया का उद्धारकर्ता" नहीं है।

बौद्धिक व्यक्ति और आत्माएं सबसे खतरनाक हैं, जब तक कि वह बुद्धि, वह ज्ञान, किसी उच्च नैतिक उद्देश्य से प्रेरित और बुद्धि द्वारा निर्देशित न हो। सिद्धांतहीन धोखेबाज अच्छे लेखक होते हैं; बैंक-गबनकर्ता कुशल लेखाकार हैं; रेल-लुटेरे कुशल यांत्रिकी हैं; विद्वान वैज्ञानिक और भाषाविद्, रोलोटॉफ़ ने अपनी पत्नी और बच्चे की हत्या कर दी, और उसे इथाका, एन.वाई. में दफनाया गया और केयुगा झील के पास डुबो दिया गया।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान और विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. वेबस्टर पर डॉ. पार्कमैन का कर्ज़ था जिसे वह चुका नहीं सके, इसलिए उन्होंने उनकी हत्या कर दी और अपने रासायनिक ज्ञान का उपयोग शरीर में विनाशकारी एसिड से जहर देकर अपने अपराध को छुपाने के लिए किया। विघटित करना और नष्ट करना।

क्या किताबों या विज्ञान और युद्ध के ज्ञान ने हाल ही में अंग्रेजों और बोअर्स को सैकड़ों युद्धक्षेत्रों को खून से लाल करने से बचाया था! जितना बड़ा बौद्धिक ज्ञान, उतनी गहरी साजिश, उतना ही गहरा अपराध। हार्टमैन की प्रेतात्माएँ बुद्धिमान और दुष्ट थीं, जो अपनी दुष्टता का आनंद लेती थीं और मौज-मस्ती करती थीं। और फिर भी, मुझसे उसकी माफ़ी से पता चलता है कि वह टेनीसन द्वारा वर्णित "महान आशा" से परे नहीं थी।

हार्टमैन को परेशान करने वाली, उसे पागल बनाने वाली और खुद को "पूरी तरह से खोई हुई और शापित" लिखने वाली ये राक्षसी संस्थाएं एक भी नहीं थीं। वह पूरी तरह से भ्रष्ट नहीं थी. विरासत में मिले मलबे और अतिक्रमित वातावरण के नीचे दिव्यता की एक चिंगारी चमक रही थी, - भगवान का अवतार, दिव्य छाप, - दिव्यता का उदय।

भगवान का प्रेम शाश्वत है. ये गरीब, पृथ्वी से जुड़ी आत्माएं, अपनी निराशा में खुद को "शैतान" घोषित करती हैं, हमारे भाई हैं, - और भगवान के बेटे हैं, जहां हम ठोकर खाते हैं और गिरते हैं। उन्हें अवश्य ही बचाया जाना चाहिए। वादा यह था कि मसीह को "अपनी आत्मा का कष्ट" देखना चाहिए - वह मसीह जिसने जेल में आत्माओं को उपदेश दिया, - "और संतुष्ट हो।"

अध्याय XXVIII.

आंतरिक जुनून जैसा कि एक अलौकिक आत्मा द्वारा समझाया गया है - आगे के अनुभव।

क्या पानी स्पंज में नहीं समाता और बारीक पदार्थ मोटे पदार्थों में नहीं समाता? क्या कीड़े ओक और एल्म की छाल में और उसके नीचे अपना रास्ता नहीं बनाते! क्या नाशपाती और आलूबुखारे के गूदे में कीड़े घुसकर उसमें प्रवेश नहीं करते और उसे नहीं खाते? क्या जिस हवा में हम सांस लेते हैं वह अदृश्य आयनों, परमाणुओं और आणविक रूपों और विभिन्न कीटाणुओं से भरी नहीं है!

भौतिक और दृश्य से लेकर अदृश्य और अगोचर तक तर्क करते हुए, और जुनून के विभिन्न रूपों, बाहरी, आंतरिक और राक्षसी पर विचार करते हुए, मैंने डॉ. जी. राइट लेस्टर लेन के नियंत्रित बुद्धि समूह से परामर्श किया और उनसे मुझे यह बताने के लिए कहा कि वह अक्सर क्या कहते हैं। वाक्यांश, "आंतरिक जुनून!" वे क्या करते हैं से मतलब?

यहां उनका उत्तर है, जिसमें उन्होंने केवल वही कहा जो उन्होंने मेरे बारे में और मानव ज्ञान के लिए मेरे द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की: “अब हम अपने अस्तित्व के स्तर पर एक सत्य-केंद्र से आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए आगे बढ़ते हैं। हैं।

आपने हमें लिखे अपने पत्र में कहा है, 'जब कोई आत्मा अपने आत्मा-शरीर में लिपटी हुई एक जीवित, मांसल मानव शरीर में प्रवेश करती है (यदि ऐसा होता है), तो यह उस आत्मा-इकाई को कुछ समय के लिए उसे खाली करने का कारण बनता है। करने को मजबूर करता है. इसे जुनून कहा जाता है, लेकिन क्या यह सिर्फ सादा कब्ज़ा नहीं है!' “निश्चित रूप से यह है, मेरे भाई. आपको याद रखना चाहिए कि जुनून और कब्ज़ा, बहुत अलग हैं। एक सामान्य चीज़ हमेशा दूसरे के बिना मौजूद रहती है। आप इस बात पर भी विचार करेंगे कि हम ऐसे रूप देखते हैं जिन्हें आप नहीं देख सकते - कि जिसे आप ठोस कहते हैं वह हमारे लिए ठोस नहीं है। वे अधिक से अधिक

धुंधली-छायाएं हैं, और हम लगातार देख रहे हैं कि जिसे आप पदार्थ कहते हैं वह पदार्थ में जा रहा है, जैसे दस्ताने में एक हाथ, और पदार्थ पदार्थ में से गुजर रहा है, जैसे कांच के शीशे के माध्यम से प्रकाश।

हम आपसे कहीं उच्चतर और अधिक अलौकिक अस्तित्व की स्थिति में रहते हैं, और उचित परिस्थितियों में आपके पास आ सकते हैं, लेकिन आप अपने भौतिक परिधानों में हमारे पास नहीं आ सकते। "और जैसे आप जंगल के पेड़ों पर लाखों-करोड़ों रेत, घास के तिनके और पत्तियां देखते हैं, वैसे ही हम वह देखते हैं जो आप नहीं देख सकते; हम अनगिनत - बिल्कुल अनगिनत - पंचवर्षीय योजनाएं देखते हैं, जिनमें सबसे नाजुक पदार्थ, परिष्कृत ईथर, परमाणु, परमाणु पिंड और परमाणु रूप शामिल हैं, जो जीवन से जल रहे हैं, और उनमें से कई सचेतन जीवन के साथ जीवित हैं, जीवन की शक्तियों और सिद्धांतों के साथ जीवित हैं।

और ये, कमोबेश, जिनमें से कुछ मानव रूपों में रह चुके हैं, मानव जीवों में प्रवेश कर जाते हैं। हम इसे आंतरिक जुनून कहते हैं। इनमें से कुछ अविकसित संस्थाएं अज्ञानता के कारण प्रवेश करती हैं, अन्य जीवित, तैरते परमाणुओं के रूप में, और अन्य अपने पूर्व सांसारिक वातावरण से विचार में चिपके हुए ईथर व्यक्तित्व के रूप में प्रवेश करती हैं। एक परमाणु इकाई, या एक आत्मा जो एक बार मानव रूप में मानव शरीर में निवास करती थी।

अविकसित, भ्रष्ट, और किसी भी तरह से आध्यात्मिक नहीं, और असुरक्षित व्यक्तियों के प्रति चुंबकीय रूप से आकर्षित, श्रवण वातावरण में, कंपनी में, या मन में सांत्वना चाहता है, और जीवन के उच्च स्तर तक वहीं रहता है। इस पर रहने वाले लोगों को इस बात पर जोर नहीं देना चाहिए यह जीवन की एक उच्च, महान स्थिति तक पहुंचता है, और लालची नहीं होना चाहिए और पिशाच की तरह स्वार्थी रूप से मानव शरीर से चिपकना नहीं चाहिए।

किसी व्यक्ति से कुछ समय तक मानसिक रूप से जुड़े रहने से, यह आत्मा, चाहे वह अज्ञानी हो या दुर्भावनापूर्ण, जादुई रूप से बन जाती है-

यह आत्मा उसके जुनूनी जीवन का इतना बड़ा हिस्सा बन जाती है कि व्यक्ति चाहे कुछ भी करे या सोचे, यह आत्मा इकाई उस व्यक्ति के साथ और भी बड़े रिश्ते में प्रवेश कर जाती है, जिससे कि कुछ ही समय में वह खुद को लगभग केंद्र का केंद्र बना लेती है। व्यक्ति का जीवन. वास्तविक

भाग और कारण का पता लगाता है, और कई संघों के साथ इसे नश्वर शरीर में बने रहने के लिए प्रेरित करता है।

बाद में यह परिचित या आविष्ट आत्मा स्वयं को मस्तिष्क के तंत्रिका केंद्रों के संपर्क में पाती है, फिर भी कुछ हद तक अपना व्यक्तित्व बरकरार रखती है, और जब अन्य संस्थाओं द्वारा संवर्धित किया जाता है, तो वे धीरे-धीरे पूर्ण शक्ति में आ जाते हैं। वे व्यक्ति के दिमाग को तब तक प्रभावित करते हैं जब तक कि वह उनके काम का केंद्र न बन जाए, और कभी-कभी राक्षसी काम और पागलपन का भी। इस स्तर पर व्यक्तित्व को आघात पहुँचाया जाता है, यदि अमान्य नहीं किया गया है, और इतनी अंधकारमय स्थिति के अधीन किया जाता है कि बाहरी संरक्षक प्रभाव चेतन कैद आत्मा को मुक्त करने में विफल हो जाते हैं।

यह इच्छा पर निर्भर करता है - जुनूनी राक्षसों की जिद्दी इच्छाएं। यहाँ तक कि देवदूत भी शक्ति में असीमित नहीं हैं। महानतम आत्माएँ और आत्माओं का समूह न तो सर्वज्ञ हैं और न ही शक्ति में सर्वशक्तिमान हैं। यीशु मसीह, कुछ अवसरों पर, "कोई शक्तिशाली कार्य नहीं कर सके"। समय नहीं आया था. "यदि ये परमाणु शरीर, या बल्कि, यदि ये सकारात्मक, अविकसित मानव आत्माएं जिन्हें नश्वर कहा जाता है, दुष्ट प्रकृति की होती, यदि वे अपने सांसारिक जीवन में स्थूल और स्वार्थी और अनैतिक होती, तो यदि आवश्यक हो तो वे स्वाभाविक रूप से ऐसा करते अन्यथा यह आमूल-चूल परिवर्तन लाता है किसी व्यक्ति के स्वभाव और प्रवृत्तियों में, उनकी निम्नतम भावनाओं और सबसे दुष्प्रवृत्तियों को संतुष्ट करने के लिए उन्हें शराब पीने के लिए प्रेरित करना और प्रलोभित करना।

व्यक्तिगत एवं भौतिक रूप में परिवर्तित होने पर ये आपराधिक कृत्यों को जन्म देते हैं। न तो पुलिसकर्मियों को और न ही सांसारिक जीवन के विधायकों को अधिकांश भयानक अपराधों के कारणों की थोड़ी सी भी समझ है जो आपकी शारीरिक दुनिया को काला कर देते हैं। "इनमें से कुछ परमाणु रूप - जिन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है - वे हैं जिन्हें हम देखते और महसूस करते हैं, जो भीतर से आच्छादित हैं और जीवन की दिव्य चिंगारी से अनुप्राणित हैं।

वे अस्तित्व और वास्तविक सत्य हैं, जो, यदि वे कभी भी अस्थायी रूप से भौतिक या आध्यात्मिक शरीर से सुसज्जित थे, तो बाहरी रूप से खराब हो गए हैं या जीवन के परमाणुओं में वापस चले गए हैं, - मात्र, तैरते हुए, बेचैन संस्थानों में। आध्यात्मिक जीवन और आत्मा रूपों को उसी तरह

वर्गीकृत किया जाता है जैसे आपकी इंद्रिय धारणा की अंधेरी दुनिया में पदार्थ और भौतिक रूपों को।

इस उच्च जीवन में इन संस्थाओं को उन लोगों से दूर करना हमारे काम का हिस्सा है जो इनसे पीड़ित हैं। ये संस्थाएं कुछ तत्वों, रसायनों और कम आध्यात्मिक वातावरण के संपर्क में आती हैं, वे खुद को दूरदर्शी दूरदर्शी लोगों द्वारा देखने की अनुमति देने के लिए पर्याप्त मात्रा में ईथर पदार्थों में हेरफेर करती हैं, ग्रहण करती हैं और प्रभावित करती हैं।

हमारा माध्यमवादी माध्यम और उसका वैवाहिक साथी अक्सर इन भयभीत, जुनूनी व्यक्तित्वों को वैसे ही देखते हैं जैसे वे नश्वर जीवन में हैं, जिससे इन आंतरिक आत्मा संस्थाओं के चरित्र के बारे में विश्वास पैदा होता है जिनसे हम निपट रहे हैं और उन्हें दूर कर रहे हैं।

जब हम इन आपराधिक आत्माओं को हटाते हैं, तो हम देखते हैं कि उन्हें आत्मा अस्पतालों, या सुधार केंद्रों में ले जाया जाता है, और आध्यात्मिक विकास के लिए अनुभवी चिकित्सकों और देखभाल करने वाली नर्सों के हाथों में सौंप दिया जाता है। बचाए गए, शिक्षित और मुक्त किए गए, वे अक्सर अन्य दुर्भाग्यपूर्ण लोगों के उद्धार और नैतिक उत्थान में सहायता के लिए लौटते हैं।

अक्सर फिट होने पर उन्हें संवेदनशील लोगों के लिए सुरक्षा गार्ड के रूप में रखा जाता है। इस तथ्य के कारण कि हमारा मध्यस्थता उपकरण वर्तमान समय में (घबराहट-थकावट के कारण) हमारे निकटतम संपर्क से बाहर है, हम अपने विचारों और उनकी उचित अभिव्यक्तियों के साथ पूर्ण न्याय करने में असमर्थ हैं, इसलिए हम उचित विचार की मांग करते हैं और दान। हैं।

पूर्व में व्यक्तिगत अनुभव-अभिभावक आत्माएँ,

पूर्वी देशों की अपनी एक यात्रा के दौरान, मैं एक पारसी चिकित्सक से मिलने के लिए मदुरा में रुका, जिसके साथ मेरा लंबे समय से पत्र-व्यवहार था। और जब मैं ब्यूबोनिक प्लेग, हिंदू विशेषताओं और जादू-टोने पर बातचीत कर रहा था, तो उन्होंने संयोग से सम्मोहन और पैतृक लगाव का उल्लेख किया। इससे विषय पर मुक्त चर्चा का रास्ता खुल गया और परिणामस्वरूप राक्षसों को बाहर निकालने में कुछ अधिक समय लग गया।

"मेरी मानसिक शक्तियों की खबर ब्राह्मणों से पारिया और अन्य जातियों तक फैल गई।*

मेरा पहला विषय एक ब्राह्मण महिला थी, जो शादीशुदा थी लेकिन अपने पैतृक घर में रहती थी। मेरे पिता, एक अमीर ब्राह्मण, अपनी कार में मेरे लिए आये। इस अजीब तरह से निर्मित इमारत की दूसरी मंजिल पर एक अजीब आकार की सीट पर आराम से बैठा हूं, और अपने दुभाषिया के माध्यम से कुछ बातचीत कर रहा हूं। मैंने उस औरत को आवाज़ दी जो बुरी आत्मा से परेशान थी और उसे कमरे में बुलाया। पहले तो वह मूर्ख, उदासीन और पूरी तरह से उदासीन लग रही थी। उससे बात करते समय उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन जल्द ही वह बेचैन हो गई।

कुछ मिनटों के बाद वह काफी ऐंठनग्रस्त हो गई, उसकी आँखें कमरे के चारों ओर घूम गईं। संकट की इस स्थिति में, अदृश्य शक्तियों की वर्षा को महसूस करते हुए, मैंने शुद्ध पानी का एक बर्तन मंगवाया। जब उसे लाया गया, तो मैंने उसमें कई बार अपने हाथ डुबोए और फिर उसे फर्श पर छिड़कना शुरू कर दिया, उसके चारों ओर घूमते हुए, इन शब्दों को जोर से दोहराते हुए कहा, सारी शक्ति ईश्वर से है - सारी शक्ति ईश्वर से है, मसीह के माध्यम से। , स्वर्गदूतों और सेवक आत्माओं के माध्यम से। फिर उसके सामने कई फुट पीछे हटते हुए मैंने आदेशात्मक स्वर में कहा, "मुझे देखो!"

कुछ क्षण रुकने के बाद पिता ने कहा, "डॉक्टर की बात सुनो। उसे देखो।" अब वह मेरी ओर कुछ ठंडी, व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखने लगी। व्यक्तिगत रूप से, इस बीच मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा वजन बहुत अधिक है। मेरी आत्मा मुझ पर हावी हो गई. मेरी नजरें दृढ़ता से, तेजी से उस पर टिक गईं, मैं तेजी से उसके पास गया, एक हाथ उसके माथे पर रखा और दूसरे हाथ से उसकी गर्दन के पीछे थपथपाया, मैंने उसके ऊपरी मस्तिष्क पर सांस ली। एक-दो पल में वह कांपने लगी, फिर ऐंठन, जोर-जोर से कांपने लगी और फिर दर्द भरी कराह के साथ फर्श पर गिर पड़ी। भयभीत होकर पिता ने उसे आंशिक रूप से उठाया।

मैंने अपना बायां हाथ उसके सिर पर रखा, जबकि मेरा दाहिना हाथ पीछे की ओर फैला हुआ था और हथेली ऊपर की ओर थी। जल्द ही उसकी घबराहट बंद हो गई और उसने अपनी आँखें खोलीं और अपने पिता की बाहों में कूद गई। यह एक खुश हाथ और दिल था. बेटी फिर से खुद थी. अपने अदृश्य सहायकों से उसके चारों ओर एक सुरक्षात्मक शक्ति फैलाने और जुनूनी, घुसपैठ करने वाली आत्मा को किसी कैद सुधारगृह में ले जाने

का आह्वान करते हुए, जहां इसे उच्च जीवन की शुद्ध करने वाली आग से छुआ जा सके, मैंने प्रार्थना की कि उसे निर्देश दिया जाए, प्रबुद्ध किया जाए और बचाया जाए। , ताकि वह बदले में उन लोगों के लिए सहायक बन सके जो समान रूप से पीड़ित हैं।

अक्सर सुधरा हुआ शराबी संयम का सबसे सफल समर्थक बन जाता है, जॉन बी. गफ़ इसका एक महान उदाहरण थे। आने वाले हफ़्तों में कई लोगों को मेरे पास विचुंबकीकरण, इच्छामृत्यु और राहत के लिए लाया गया। चाहे सुदूर भारत में हो या इस देश में, मैं घुसपैठ करने वाली राक्षसी आत्मा को हटाने में शायद ही कभी असफल होता हूँ। वास्तव में, अगर मुझे सही परिस्थितियाँ और सामाजिक वातावरण मिल जाए तो मैं कभी नहीं कहूँगा। लगभग सभी को मैंने बेदखल कर दिया है और ठीक होने के बाद वे अपना नाम जनता से छिपाना चाहते हैं। यह सही है।

मामले के संगठन और प्रकृति के कारण, किन्हीं दो मामलों को बिल्कुल एक जैसा नहीं माना जा सकता है। कुछ मामलों में मैं चुंबकीय उपचारों द्वारा मुक्ति का प्रस्ताव करता हूं। शारीरिक तंत्र को सफाई और उत्तेजना की आवश्यकता होती है। यह दर्ज है कि नए नियम के समय में "कुछ लोग केवल उपवास और प्रार्थना करके ही बाहर निकलते थे।"

जुनूनी प्रभावों के लक्षण

“आम तौर पर जुनून के पहले लक्षण हैं थकान, शारीरिक और मानसिक घबराहट, नींद न आना, किसी अदृश्य बोझ से दबे होने का एहसास, जिससे जीवन के हल्के-फुल्के कर्तव्य असंभव लगने लगते हैं। जीवन की सारी संभावनाएँ और अधिक निराशाजनक लगने लगती हैं। घबराहट से पीड़ित व्यक्ति की हर बात में एक आवेगपूर्ण जल्दबाजी होती है और एक स्पष्ट संवेदनशीलता होती है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक चिड़चिड़ापन होता है। “अक्सर वातावरण अंधेरा और घना महसूस होता है, जिससे सांस लेना मुश्किल हो जाता है।

सामान्य वस्तुएँ कभी-कभी कंपन करती हुई प्रतीत होती हैं, जिससे असंगत विचार उत्पन्न होते हैं। जैसे ही यह बाहरी प्रभाव प्रबल होता है, इच्छा, स्मृति, कारण और उद्देश्य की कार्यप्रणाली स्पष्ट रूप से उसी

अनुपात में विफल होने लगती है। “भय, संकट, ईर्ष्या, संदेह की एक स्थिति है, जिसमें थोड़ा सा भी असंगत शब्द या कठोर नज़र रोने, या आक्रोश और क्रोध का कारण बन जाती है। इससे संबंधित जीवन शक्ति का कमजोर होना और थकान की भावना है, जिसके बाद असामान्य रूप से मजबूत वासनापूर्ण स्वभाव होता है।

पूर्ववर्ती सभी लक्षण किसी भी जैविक या कार्यात्मक बीमारी से स्वतंत्र हो सकते हैं। सबसे विशेषज्ञ, पुराने जमाने के चिकित्सक किसी भी शारीरिक बीमारी का पता नहीं लगा सकते हैं, और उनके सबसे मजबूत उपचार बिल्कुल बेकार हैं। अधिक उन्नत चरणों में, उन जुनूनी पीड़ितों को उनके तर्क के विपरीत काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिसमें अजीब प्रलोभन, धमकी भरी आवाजें, परेशान करने वाले स्पर्श और सबसे अतिरंजित चीजों को करने की तीव्र इच्छाएं शामिल होती हैं, जिसमें अपवित्र और अश्लील शब्दों का उपयोग भी शामिल है। करने के लिए।

अक्सर ये जुनूनी संस्थाएं मानसिक, रासायनिक और महत्वपूर्ण असंतुलन के कारण होने वाली शारीरिक बीमारियाँ पैदा करती हैं।

अध्याय XXIX.

एक जुनूनी आत्मा को अपने शिकार से जबरदस्ती दूर कर दिया गया.

एग्नेस पेरी 28 मार्च, 1904 की लाइट ऑफ ट्रूथ में एक आकर्षक दानव को भगाने का रोमांचक विवरण प्रस्तुत करती है। यहां एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है: 4 4 शिकागो में रहने वाली यह सम्मानित, फिर भी भावुक महिला उम्र में काफी उन्नत, सुसंस्कृत थी। सामान्य से अधिक बुद्धिमान, स्वभाव से नकारात्मक और उन्नत विचारों के साथ पढ़ने में गहरी रुचि थी। वह काफी हद तक दिव्यदर्शी और दिव्यदर्शी थी। इसका माध्यमात्मक रहस्योद्घाटन धीरे-धीरे हुआ।

वह अपने घर में रहती थी और अपनी प्रतिभा का उपयोग केवल निजी तौर पर करती थी और उसका चुंबकीय प्रभाव इतना मजबूत नहीं था कि इन

लगातार घुसपैठ करने वाली और राक्षसी आत्माओं को दूर कर सके। “जब वह नहाती थी या अपने कमरे में कपड़े पहनती थी तो वे उसके पास आते थे और उपहासपूर्वक हँसते थे और घृणित विचार व्यक्त करते थे।

कभी-कभी वे उसके स्वर अंगों को नियंत्रित करते थे और असभ्य, अश्लील और अश्लील अभिव्यक्तियाँ करते थे, जब तक कि उसका जीवन लगभग असहनीय नहीं हो जाता था। वह गिड़गिड़ाती, गिड़गिड़ाती और उन्हें चले जाने का आदेश देती, लेकिन वे केवल उपहास करते और अपनी पीड़ा जारी रखते।

उसे यह जानकर संतुष्टि हुई कि नेता, अनैतिकता का 'मुख्य भड़काने वाला', एक ऐसा व्यक्ति था जो पृथ्वी पर एक चिकित्सक था, जो पैसे के लिए अभ्यास करता था। वह उन लोगों में से एक था जो किसी व्यक्ति को यह देखने के लिए आसानी से प्रताड़ित कर सकता था कि किसी विशेष दवा या उपचार का मानव शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा। वह नास्तिक था और भावी जीवन में उसका कोई विश्वास नहीं था। उनकी नैतिकता और आध्यात्मिकता दोनों ही पूर्णतः अविकसित थे। “वह मर गया - और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह अभी भी जीवित था - जीवित; फिर भी उसे मार्गदर्शन के लिए कोई दिव्यता नहीं मिली, वह लक्ष्यहीन होकर भटकने लगा।

यह पाते हुए कि अब उसे अस्तित्व में रहने के लिए काम करने की आवश्यकता नहीं है, वह इस संवेदनशील प्राणी के संपर्क में आया, सम्मोहित हो गया और खुद को उससे जोड़ लिया, उसे दुखी करके अपनी दुर्भावनापूर्ण शक्ति दिखाना शुरू कर दिया। वह अपने सांसारिक जीवन में उनसे केवल एक बार मिली थी। अब ये साफ़ तौर पर क्रूर जुनून का मामला था. “उन्होंने शिकागो के डॉ. डब्ल्यू. से परामर्श किया। येट्स और उन्हें अपनी दुखद कहानी सुनाई, जब लगभग तुरंत ही डॉक्टर, आत्माओं के एक शक्तिशाली समूह से प्रभावित होकर, आविष्ट आत्मा से बात करने लगे और उसके साथ तर्क करने लगे।

वह महिला दूरदर्शी होने के कारण उन सभी को बहुत स्पष्ट रूप से देख सकती थी और उसने जो सुना था उसे दोहराती थी। केड-फेदर नाम के एक भारतीय गाइड ने उनसे बात की और उन्हें अपने बुरे रास्ते छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की। आत्मा ने सोचा कि उसने क्या कहा था और अंत में अनिच्छा से कहा कि वह जा सकता है, लेकिन अगर वह जाता है, तो वह अपने स्थान पर किसी और को भेज देगा।

स्त्री ने आत्मा से कहा, यदि मैं तेरी सहायता करने के लिये कुछ कर सकती हूं, या तुझे अच्छी बातें सिखा सकती हूं, तो मैं ऐसा करने को तैयार हूं, परन्तु मैं बुरे विचारों और इरादों वाली आत्माओं को अपने आसपास नहीं रखूंगी, और न ही किसी के वश में होऊंगी। हर भटकती आत्मा जो मेरा उपयोग करके खुश हो सकती है।

अगर मुझे अच्छी आत्माएँ नहीं मिलीं, तो मैं तुममें से किसी को भी नहीं रखूँगा। वह उसका उत्तर बहुत स्पष्ट रूप से सुन सकती थी, मैं जब चाहूँ और जितनी बार चाहूँ तुम्हारे पास आऊँगी, और तुम अपनी मदद नहीं कर सकती।' डॉक्टर ने उसे चेतावनी दी कि वह बहुत सावधान रहे अन्यथा उसे अपनी दुष्टता की सजा अवश्य मिलेगी।

जिस पर आत्मा अपनी भाषा में और भी गाली-गलौज करने लगी. यह देखकर कि अनुनय का कोई फायदा नहीं हुआ, डॉ. येट्स ने आध्यात्मिक दुनिया में एक आजमाए हुए और सच्चे दोस्त को बुलाया, उसके सामने मामला रखा और मदद मांगी। इसका वादा किया गया था और इसे पूरा भी किया गया।

इस अच्छी भावना ने, पार्टी के कुछ शक्तिशाली भारतीयों की सहायता से, जिद्दी आत्मा को अपने नियंत्रण में ले लिया, उसे महिला के वातावरण से बाहर कर दिया, उसे दिव्यदर्शी की दृष्टि में भारी चुंबकीय जंजीरों से बांध दिया, और एक उजाड़ स्थान पर ले जाया गया आत्मा के दायरे में, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि यह 'शैतान द्वीप' जैसा था, जहां बेचारे ड्रेफस को कैद किया गया था।

वहां उन्होंने उससे कहा कि उसे तब तक रुकना चाहिए जब तक वह अपने बुरे विचारों पर काबू नहीं पा लेता और प्रकाश में प्रगति के लिए तैयार नहीं हो जाता। जब उससे जुड़े अन्य प्रभाव उसे समझाने लगे कि वह कहाँ है।

जब उन्होंने देखा कि उनके नेता के साथ क्या किया गया है, तो वे डर के मारे भाग गये। "महिला को अपने उत्पीड़क से पूरी तरह राहत मिल गई है और वह डॉ. येट्स और उनके दयालु दोस्तों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।" शिकागो के एक चिकित्सक ने, जो पृथ्वी पर उस व्यक्ति को अच्छी तरह से जानता था, जब तथ्यों का यह कथन सुना, तो उसने कहा, 'यह बिल्कुल वैसा ही है।' वह एक अच्छे डॉक्टर थे, लेकिन उनके नैतिक मूल्यों के बारे में जितना कम कहा जाए उतना बेहतर होगा।

अब समय आ गया है कि अध्यात्मवादियों को इन अविश्वसनीय, विविध और राक्षसी प्रभावों के बारे में अपनी नींद से उठना चाहिए और चैत्य और दृश्य को अदृश्य से जोड़ने वाले परस्पर संबंधित कानूनों का अध्ययन करना चाहिए। और इसके अलावा उन्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि पर्दे के पीछे अविकसित जुनूनी आत्माएं अक्सर हमारे संवेदनशील लोगों के दरवाजे पर रखे गए धोखे का प्रेरक कारण होती हैं। पृथ्वी के धोखेबाज और धोखेबाज लोग अपने शारीरिक वस्त्र उतारकर पूर्णता के आदर्श नहीं बन जाते।

एक मनोवैज्ञानिक अपराध - पंद्रह साल का एक जुनूनी लड़का आत्माओं के आदेश पर अपनी माँ को गोली मारता है और मार डालता है

29 मई, 1904 के शिकागो ट्रिब्यून में महज पंद्रह साल के एक लड़के की भयावह कहानी है, जिसने बार-बार आने वाली आत्माओं की आवाजों से प्रेरित होकर अपनी माँ को गोली मार दी। संक्षेप में ये थे तथ्य. वह लड़का अपनी माँ का पसंदीदा था। उनके बीच बहुत गहरा स्नेह था.

यह इतना स्पष्ट था कि परिवार में उन्हें "माँ का बेटा" कहा जाता था। अपनी माँ की हत्या करने से केवल तीन सप्ताह पहले, उसने उसे एक एक्सप्रेस ट्रेन से कुचले जाने से बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी थी। इस घातक कृत्य के पहले न कोई दुर्भावना थी, न कोई झगड़ा, न कोई आवेश।

परिवार अंग्रेज़ था, पिता वकील थे। लड़के ने जानबूझकर कहा कि उसने उसे गोली मार दी क्योंकि उसने "ऐसा करने के लिए एक आवाज सुनी थी" और उसे घातक पिस्तौल से गोली चलाने की कोई याद नहीं है। लड़के का

नाम फ्रैंक ओजर्स था, और उसके पिता और चाचा दोनों वकील थे, जैसा कि उन्हें अंग्रेजी अदालतों में कहा जाता है।

अपनी माँ को, जिसे वह बहुत प्यार करता था, गोली मारने के बाद, वह अपनी छोटी बहन को पास के एक होटल में ले गया और मकान मालकिन से अनुरोध किया कि "उसकी देखभाल करें क्योंकि घर में कुछ गड़बड़ थी।"

प्रेरक आवाज.

अदालत में प्रस्तुत किया गया सबसे उल्लेखनीय साक्ष्य पारिवारिक चिकित्सक डॉ. ऑक्टेवियस अनियन का था, जिन्हें श्रीमती रॉजर्स को गोली मारने के तुरंत बाद घर बुलाया गया था। लड़के ने उनके सामने गवाही दी कि उसने ऐसी आवाज़ें सुनी थीं जो उसे अपनी माँ को मारने के लिए प्रेरित कर रही थीं। फ्रैंक ने उसे बताया, "जिस रात मैंने अपनी मां को गोली मारी, मैं घर गया और रात का खाना खाया। उसके बाद मैं ऊपर गया और रिवॉल्वर नाश्ते के कमरे में ले गया। मुझे मां को गोली मारने की लगभग एक अदम्य इच्छा महसूस हुई। हालांकि, मैंने खुद को रोका और चला गया बाहर।

आवेग फिर आया और मैं घर में वापस चला गया। "एक आवाज ने मुझे स्पष्ट रूप से ऐसा करने के लिए कहा। उसने कहा, 'करो यह और जल्दी से.' मुझे गोली चलने या पिस्तौल से गोली चलने की याद नहीं है, लेकिन मुझे धीमी आवाज सुनना और फिर दरवाजे से टकराना याद है। मैं इसके बारे में बस इतना ही जानता हूं." उसने डॉक्टर को यह भी बताया कि पिछले दो-तीन महीनों से उसे लगातार महसूस हो रहा था कि उसकी मां उसके

पीछे खड़ी है और जब वह मुड़ा तो उसने अपने सिर पर एक भूत देखा, जो धीरे-धीरे गायब हो गया.

कैंब्रिजशायर के मिल्ड्रेथ में हुई यह दुखद घटना, जिसमें एक माँ की हत्या का कोई वस्तुनिष्ठ पर्याप्त कारण नहीं था, के साथ "एक आवाज़/" "आवाज़ें/" "बहुत प्रभावित/" जैसे शब्द और वाक्यांश थे। एक अनूठा आवेग/"एक भूत" जो धीरे-धीरे "दूर हो गया", आदि सभी प्रेतात्मवाद के शब्द हैं, जिनमें समान घटनाओं के प्रति बार-बार जुनून होता है।

फिर भी, बार-बार दोहराए जाने वाले प्रश्न।

कैसी गिरी हुई परी है! कैसी बुरी आत्माएं हैं! क्या सच में दुनिया में कोई बुराई है? बिना किसी संदेह के यह कहना कि "सब मन है," "सब अच्छा है," कि "सब सही है," और यह कि इस प्रतिस्पर्धी, युद्धरत दुनिया में कोई बुराई नहीं है, जैसा कि कुछ अतिवादी आदर्शवादी कहते हैं, यह कहने के समान है कि यह सही है और ग़लत एक दूसरे के विपरीत नहीं, एक दूसरे के बगल में हैं, जैसे फूलों की लताएँ और ज़हर आइवी एक दूसरे के बगल में हैं।

अंतर्विरोधों का अस्तित्व स्वतः स्पष्ट है। ऐसे तथ्यों को नकारना न केवल सामान्य ज्ञान का भयानक उल्लंघन है, बल्कि अवलोकन और सभी बुद्धिमान अनुभव का सीधा अपमान है। ऐसी नैतिक अधमता का चिंतन दुःखदायी है। इस पर विचार करो!

सब कुछ मन है, - "सब कुछ अच्छा है," "सब कुछ सही है!" और यहाँ रूढ़िवादी और बार-बार दोहराया जाने वाला वाक्यांश आता है, जिसका औचित्य यह है कि "ईश्वर में सब कुछ परिपूर्ण है।" यह वास्तव में सच हो सकता है! लेकिन, तुम्हें कैसे पता! आप इस तरह के दावे को सही ठहराने के लिए सर्वशक्तिमान की सलाह के तहत कैसे आए! तर्क की किस प्रक्रिया से आपने परमेश्वर के रहस्यों की खोज की?

क्या यह दिखावा एक प्रकार का आंतरिक, अहंकारी जुनून नहीं है? इससे ज्यादा बचकानी बात क्या हो सकती है? विश्वास करें कि बुराई एक सर्व-विजयी इकाई, उद्देश्यपूर्ण और स्थायी के रूप में मौजूद नहीं है। ऐसी बुराई, बेकार और अंतहीन, संभवतः एकता, दिव्य आदेश, अनंत अच्छाई और एक सर्वज्ञ, अपरिवर्तनीय के ब्रह्मांड में प्रवेश नहीं कर सकती है और हमेशा के लिए शासन नहीं कर सकती है, जो सभी चीजों को सक्रिय और घेरती है।

तथ्य और दर्शन का सामंजस्य कैसे हो सकता है**?**

इस और सभी विषयों पर तर्क, सर्वोच्च निर्णय का प्रयोग करें। यह सच है कि सभी समुदायों में दुर्व्यवहार, कुप्रशासन, दुरूपयोग और जानबूझकर किए गए अपराध कम या ज्यादा हद तक मौजूद हैं। इसे नकारना स्वयं को मूर्ख बनाना है। लेकिन अपूर्ण मनुष्यों के लिए ये गलतियाँ स्वाभाविक घटनाएँ हैं। वे विकास की राह में स्वेच्छा से उठाए गए कदम हैं। वे स्वयं पर थोपे गए संकट हैं जिन पर काबू पाना है। जो सही है वह गलत हो जाता है जब उसे उचित योग्यता के बिना तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है।

एक व्यक्ति भावनात्मक और सकारात्मक रूप से उतना ही खुश हो सकता है जितना वह पागल हो सकता है, और पागलपन या क्रूर द्वेष आत्मा को अस्थायी अंधकार में घेर लेता है। और फिर भी, सूरज बादलों के ऊपर चमकता है। प्रगति, पूर्णता नहीं, अपरिवर्तनीय वास्तविकता के दिव्य प्रेम का प्रमाण है।

दैवीय अर्थव्यवस्था में बुराई का कोई अंत नहीं, उसका अपना अनुशासनात्मक दंड है। दुर्भाग्य आगे चलकर सौभाग्य में बदल सकता है। इसलिए, वातावरण को निराशावादी विलाप से भरना नासमझी है। जीवन के कई सबसे दर्दनाक चरण पथरीले रास्तों से होते हुए सबसे समृद्ध आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाते हैं।

गर्मी की धूप में अंकुरित होने और अंकुरित होने से पहले ही मक्का भूमिगत अंधेरे में मर जाता है, जिसके बाद सौ गुना फसल होती है। बुरी आत्माओं तक पहुंचा जा सकता है, उन्हें छुटकारा दिलाया जा सकता है और उन्हें दैवीय कानून के साथ मिलाया जा सकता है। जा रहा है।

आध्यात्मिक निकायों की आभा.

यह वैज्ञानिक रूप से स्थापित तथ्य बन गया है, जिसे हाल ही में इस रूप में स्वीकार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति एक छायादार श्रवण वातावरण से घिरा हुआ है। आधी सदी से दिव्यदर्शी इसकी पुष्टि करते आ रहे हैं। यह उनकी व्यक्तिगत स्पष्ट दृष्टि की गवाही पर आधारित है। आत्माएँ अक्सर इनका वर्णन करती हैं enzoning क्षेत्र.

और अब इस नई खोजी गई धातु, रेडियम की सहायता से, जिसे प्राप्त करना अभी भी बहुत मुश्किल है, और जिसकी गर्मी, प्रकाश और अद्भुत गतिविधि हवा, पानी या किसी भी प्रकार के पदार्थ के निरंतर संपर्क से कुछ भी नहीं खोती है - यह ओडिलिक आभा वास्तव में नैतिक उपलब्धि का रहस्योद्घाटन है।

इस रेडियम प्रकाश की सहायता से, इस श्रवण वातावरण को मानव रूप को ढंकते हुए देखा जा सकता है, जो व्यक्ति के मानसिक विकास और नैतिक स्थिति के अनुसार गुणात्मक और मात्रात्मक रूप से नीरसता और चमक में भिन्न होता है। यह चमकदार, आवरणयुक्त उत्सर्जन, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों निकायों से प्रवाहित होता है और उनसे जुड़ा होता है, व्यक्तित्व के आधार पर चुंबकीय या विद्युत, आकर्षक या प्रतिकारक होता है।

अधिकांश आंखों के लिए अदृश्य और जटिल, इसकी लंबाई एक से तीन और तीस फीट तक होती है, और कुछ चिह्नित व्यक्तियों में इससे भी अधिक लंबाई होती है। इस अजीब-बल आभा के विस्तार से यह कहावत

उभरी, "उन्हें महान व्यक्तिगत चुंबकत्व का उपहार दिया गया है। यह निकलने वाली आभा लीवर, मानसिक मिट्टी है जिसका उपयोग कम, संलग्न आत्माएं बड़े पैमाने पर जुनूनी असंगति, बीमारियों के बीज के मनोवैज्ञानिक आरोपण के लिए करती हैं और विनाश.

स्वतंत्र दिव्यदर्शी को यह आभा एक धूमिल, वाष्पशील पदार्थ के रूप में दिखाई देती है, जिसका रंग गहरे और घृणित से लेकर धूसर, सीसायुक्त, हल्का, नीला और चमकदार सुनहरा होता है। यह वास्तविक चरित्र का रहस्योद्घाटन है। आसपास का वातावरण सुखद, स्वास्थ्यवर्धक और नैतिक रूप से प्रेरणादायक होता है जब यह वास्तव में अच्छे और आध्यात्मिक सोच वाले लोगों से निकलता है, चाहे वे नश्वर हों या अमर।

कुछ लोग स्वास्थ्य, शांति, धूप और खुशी को अपने पास रखते हैं। उसका स्पर्श आत्मिक आनंद का बपतिस्मा है; उनकी मुस्कान एक आशीर्वाद है, और उनका गर्म हाथ पवित्रता और मिठास का आशीर्वाद है। चरित्र को पढ़ने के लिए मनोचिकित्सक काफी हद तक इस आसपास के माहौल पर निर्भर करता है। मुझसे अक्सर प्लान चेटे का अनुमान बताने के लिए कहा जाता है। इस छोटे उपकरण को कई नामों से जाना जाता है और यह अपने आप में हानिरहित है, इसे तब तक टाला जाना चाहिए जब तक कि यह ईमानदार जांचकर्ताओं के हाथ में न हो।

जिज्ञासा या भाग्य-बताने के लिए चंचलतापूर्वक उपयोग किया जाता है, यह जुनून का प्रवेश द्वार खोलता है, और खराब हवा वाले, गंदगी से सजाए गए कमरों में भव्य अनाचारपूर्ण सत्रों की तरह, शैतान उन निवासियों को आमंत्रित करता है जो नैतिक नहीं हैं। अंधेरे के पाताल में रहो. देवदूत, चाहे अवतरित हों या न हों, स्वच्छ शरीर और शुद्ध मन की प्रशंसा करते हैं।

अध्याय XXX

अध्यात्मवाद और दानववाद बनाम अध्यात्मवाद और देवदूत मंत्रालय

असभ्य, अध्यात्मवाद का मज़ाक उड़ाना, अपने विभिन्न साज-सज्जा, स्वार्थी कार्यों और अंधेरे आत्मा साज-सज्जा के साथ, वस्तुतः बेबीलोनियन प्रेतात्मवाद का पर्याय है। जब यह यहूदियों के बीच प्रकट हुआ, तो कानून देने वाले मूसा के लिए इसकी 'झटके और बड़बड़ाहट' की निंदा करना उतना ही बुद्धिमानी था, जितना कि उच्च श्रेणी के अध्यात्मवादियों और धार्मिक लोगों के लिए अध्यात्मवाद के नाम पर छिपी धोखाधड़ी को उजागर करना था। सिनेमाघरों, खराब हवादार और मकड़ी के जाले वाले हॉलों में प्रदर्शित, यह आधुनिक समय का, अव्यवस्थित अध्यात्मवाद, यहूदी और एपोस्टोलिक काल का नस्लीय रूप से संशोधित दानववाद है।

यह भारत के काले जादू के समान है, जैसा कि मद्रास के ब्राह्मणों ने मुझे बताया, मैडम ब्लावात्स्की, अपनी अद्भुत शारीरिक घटनाओं और धोखाधड़ी के साथ, एक व्यावहारिक और प्रचलित उदाहरण थीं। यह लाभ-प्रेमी भूतवाद मुख्य रूप से इंग्लैंड और यूरोपीय देशों में सत्रहवीं शताब्दी का जादू टोना है, और बाद में न्यू इंग्लैंड में कॉटन माथेर के समय का, योग्य और संशोधित।

यह द्वैतवाद है, साथ ही हमारे चारों ओर कपटपूर्ण चालें और जुनून भी है। ये डाइका (राक्षस-आत्माओं का उल्लेख पहले किया गया है, ए.जे. डेविस द्वारा लिखित “डाइका एंड देयर अर्थली प्री” पृष्ठ 13-15 देखें) “जादू-टोना से अपना मनोरंजन करते हैं” और लगभग सीएनएस व्यंग्यवाद हैं, “हमेशा दूसरों को पीड़ित करते हैं; गुप्त रूप से माध्यमों को पीड़ा देना, उन्हें भाषण में अतिशयोक्ति और कार्यों से झूठ बोलने के लिए मजबूर करना, अपनी छाती के सड़क के दरवाजे खोलना और खोलना, अपने पैरों को गलत रास्ते पर इंगित करना और बहुत कुछ। क्या उत्तम वाक्यांश है,—“बहुत ज़्यादा!” इसका अर्थ अतिशयोक्ति, झूठ और जादू-टोने से कहीं अधिक है।

डॉ. ए.जे. डेविस इस डायक्का दानववाद का वर्णन इस प्रकार करते हैं जिसे वे "क्रूर भूतवाद" कहते हैं, "कोई कथित जुनून नहीं है, कोई कथित जादू टोना नहीं है, धार्मिक पागलपन का कोई चरण नहीं है जहां ऐसा मनोविज्ञान संभव नहीं है, ये आत्माएं लगातार संवेदनशील व्यक्तियों को

पीड़ा दे रही हैं , उन्हें मनोविकृत करने और उन्हें उनकी इच्छा के उपयोग से वंचित करने में आनंद आता है।" टेलीग्राफी की तरह अध्यात्मवाद भी कोई नैतिक सत्य नहीं है; न ही यह दैवीय सत्यों का समूह है, क्योंकि इसके प्राप्त कई संचार, अक्सर सीधे विरोध में, बाद में अक्सर झूठे साबित होते हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता.

इसके अलावा, प्रेतात्मवाद कोई दर्शन नहीं है; न ही यह कोई धर्म है, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जो चीनियों, हिंदुओं, कोरियाई लोगों और रॉकी पर्वत के लाल भारतीयों के बीच उतना ही प्रमुख है, जितना शिविर-बैठक वाले भूत-प्रेतवादियों के बीच, उनके परीक्षण-शिकार, आश्चर्य-खोज के साथ। भीड़ के साथ. मैं दोहराता हूं, यह एक तथ्य है - लाखों तथ्यों में से सिर्फ एक तथ्य जो इस महान दुनिया की हलचल भरी गतिविधियों में शामिल है।

जुनून के लिए खुला दरवाजा.

भौतिकवादी प्रवृत्ति वाले अध्यात्मवादियों ने ज़ोर देकर कहा है, "हमें किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं है;" "यीशु मसीह एक गूढ़ज्ञानवादी मिथक था," या "पादरी ढोंग," "यहूदी भिखारी और आवारा," "जिस बछेड़े पर वह सवार था वह यरूशलेम में चोरी हो गया था," और "धर्म एक पुराना गुफाओं में रहने वाला अंधविश्वास है।" कुछ अध्यात्मवादी पुस्तकों और पत्रिकाओं में डाले और प्रचारित किए गए इस प्रकार के अप्राकृतिक और असंस्कृत कथन राक्षसवाद की उत्तेजक खाद पैदा करते हैं जो नरक की कुत्सित उल्टी के रूप में सामने आती है।

ऐसी तर्कहीन शिक्षाओं के लेखक मृत्यु से पहले और मृत्यु के बाद नेता बनने की आकांक्षा रखते हैं। घमंडी, घमंडी, वे स्वर्ग में सेवा करने के बजाय प्लूटो के पाताल में शासन करना पसंद करेंगे। नम्रता और सज्जनता जैसी कृपा की उन्होंने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। वे महत्वाकांक्षा को आकांक्षा और नीति को सिद्धांत मानते हैं। संवेदनशील मध्यस्थों को प्रभावित या उन पर हावी होने के दौरान, वे अक्सर अपने नापाक उद्देश्यों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए महान ऐतिहासिक नाम अपना लेते हैं।

यह अमेरिकी दिखावटी अध्यात्मवाद नया नहीं है। यह उतना ही पुराना है जितना प्राचीन काल। इसका उद्देश्य निचली आत्मा की दुनिया के निवासियों के साथ संवाद करना है। यह बस नव निर्मित नेक्रोमेंसी है। यह जादू का एक चरण है. यह, जैसा कि यह संचालित होता है, अंधेरे के डायक्का क्षेत्रों से प्रवेश का खुला द्वार है।

चीनी लोगों का एक बड़ा समूह भूत-प्रेतवादी है। कोरियाई लोग अध्यात्मवादी हैं। अफ़्रीकी लोग अध्यात्मवादी हैं. मॉर्मन - जैसा कि हजारों बार घोषित किया गया है - आत्मावादी हैं, और हाल ही में स्मूट ट्रायल में कांग्रेस द्वारा उन पर जोर दिया गया और उन्हें वापस ले लिया गया।

लेकिन, क्या बहुविवाह का अभ्यास करने वाले मॉर्मन वास्तव में अध्यात्मवादी हैं; क्या उनके बुजुर्गों को हमारे मंचों पर और हमारे अध्यात्मवादी मंदिरों में प्रतिपादक के रूप में उपस्थित होने की अनुमति है! इसके साथ जुड़ी स्वार्थी साजिशों, इसके विज्ञापित भाग्य-कथन, इसके कोयला-क्षेत्र अन्वेषण और सामाजिक-संबंधों को देखते हुए, प्रेतात्मवाद जुनून का एक व्यापक, खुला द्वार है, और यह खतरनाक है क्योंकि यह कानूनविहीन रूप से अनैतिक है और सिद्धांतहीन है। इसी अव्यक्त राक्षसी प्रवृत्ति ने वुडहुल को जन्म दिया

मुक्त-प्रेम आंदोलन. यह आज उस असंस्कृत नास्तिक अधर्म की केंद्रीय लड़ाकू शक्ति है, जो अक्सर मंच और शिविर-बैठक मंचों पर चढ़ जाती है, भ्रम और अव्यवस्था पैदा करती है जो स्पष्टवादी, गंभीर दिमाग वाले जांचकर्ता को पीछे हटा देती है। फिर भी, विभिन्न वातावरणों में आत्मा की लगातार बदलती घटनाओं के लिए निकटतम, सबसे गंभीर अध्ययन की आवश्यकता होती है।

पड़ाव चाहे जो भी हों, चाहे वे कितने भी ऊंचे चढ़ें या कितने भी गहरे उतरें, वे मानव जीवन और मानव नियति के जाल में इतनी गहराई से जुड़े हुए हैं कि उन्हें उन लोगों द्वारा नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है जो उन्हें अनावश्यक मानते हैं या मूर्खतापूर्ण मानते हैं।

दुरुपयोग को हमेशा सही उपयोग से अलग किया जाना चाहिए। अध्यात्मवाद पृथ्वी पर रहने के लिए है। यह ऊपर की ओर बढ़ने वाली सूक्ष्म शक्तियों पर विचार और अनुसंधान को उत्तेजित करके भौतिकवाद को नष्ट करने में मदद करता है, और अमरता पर कब्ज़ा कर लेता है।

यह मत भूलिए कि अध्यात्मवाद और सच्चा प्रेरितिक ईसाई धर्म, अपने दर्ज संकेतों, चमत्कारों और आध्यात्मिक उपहारों के साथ, एक साथ खड़े रहेंगे या गिर जाएंगे, क्योंकि आत्मा नैतिक ब्रह्मांड का जीवन और स्रोत है। और पॉल ने, उपहारों में से एक, "आत्माओं की पहचान" का जिक्र करते हुए, अपने समय के कोरिंथियन अध्यात्मवादियों को "बेहतर उपहारों की इच्छा" करने के लिए प्रोत्साहित किया, और कहा- "और फिर भी; आइए मैं आपको एक बेहतर तरीका दिखाता हूं। (कुरिं. 7:31.) स्पष्टतः, वह "बेहतर तरीका" एक शुद्ध आध्यात्मिक जीवन था।

शब्द "आध्यात्मवाद" और "अध्यात्मवाद।"

कोई भी प्रतिष्ठित लेखक जो उपसर्गों या प्रत्ययों की शक्ति को जानता है और अंग्रेजी भाषा की प्रतिभा को समझता है, कभी भी उपरोक्त शब्दों का परस्पर उपयोग नहीं करता है। जैसा कि मैंने अक्सर कहा है, वे पर्यायवाची नहीं हैं। और शब्दावली पर विचार किया जाना चाहिए. नैतिक गुण आम तौर पर प्रत्ययों में सन्निहित होते हैं। उदाहरण के लिए, एक आध्यात्मिक या आध्यात्मिक विचारधारा वाला व्यक्ति गुणात्मक रूप से केवल आत्मा वाले व्यक्ति से कहीं बेहतर होता है। सभी जनजातियाँ, चाहे वे कितनी भी असभ्य और बर्बर क्यों न हों, आत्मा वाले लोग हैं, अर्थात्, वे अब आत्माएँ हैं; लेकिन उनकी बात करें तो उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से जागरूक व्यक्तित्व कौन घोषित करेगा?

अत: आध्यात्मिक शब्द का आत्मा से उतना ही सम्बन्ध है जितना 'बौद्धिक' शब्द का बुद्धि से। कोई भी आलोचक "आध्यात्मिक" शब्द के अस्तित्व के बारे में बात नहीं कर सकता। मूर्ख पूरा जानवर नहीं है. आत्मा का बीज भीतर छिपा है, यद्यपि अभिव्यक्ति में अविकसित है। लेकिन कोई आधा मूर्ख ही ऐसे मानव-आकार के प्राणी को बौद्धिक या आध्यात्मिक घोषित करेगा।

आत्मा दिव्य, आवश्यक और अपरिवर्तनीय है, अध्यात्मवाद इससे संबंधित है और इससे उत्पन्न हुआ है, जो अपने व्यापक अर्थ में दृश्य और अदृश्य, चेतन प्राणियों की नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति से संबंधित हर

चीज का ज्ञान है। यह सार्वभौमिक, उदार और स्वर्ग-प्रेरणादायक है। इसके आध्यात्मिक उपहार और ऊपर और नीचे गवाहों के बादल भगवान के भविष्य के सचेत और प्रगतिशील अस्तित्व का वर्तमान प्रदर्शन हैं।

और जबकि अध्यात्मवाद दार्शनिक रूप से कच्चे, मूर्तिभंजक भौतिकवाद का विरोध करता है, यह ईसाई धर्म, जीवित मसीह, युगों के प्रेरक लोगो का विरोध नहीं करता है। विश्वव्यापी अध्यात्मवाद की व्यापक शाखाओं के नीचे छिपकर शरण लेने वाली अनियमितताओं और अपमानजनक धोखाधड़ी के बावजूद, इसके उपयोग थे और अभी भी हैं। परीक्षण, बार-बार परीक्षण, आध्यात्मिक शिशुओं के लिए सहायता। चकरा देने वाले भौतिकवादी को स्तब्ध करने के लिए आश्चर्यजनक चमत्कारों और अभूतपूर्व गड़गड़ाहट की आवश्यकता हो सकती है।

झूठा; मंदिर के निर्माण के दौरान बच्चों के लिए पत्र और कच्चे मचान की भी आवश्यकता होती है। सबसे कठोर रैप एक आहत दिल को आराम का कोमल संदेश दे सकता है। यह प्रेतात्मवाद के उच्चतम पहलुओं में से एक है। अध्यात्मवादी, साथ ही हजारों संप्रदायवादी, जो असाधारण चीजों की तलाश करते हैं, धीरे-धीरे आध्यात्मिकता की उन ऊंची ऊंचाइयों तक पहुंचते हैं जो आत्मा को आराम देते हैं - मधुर आराम और पूर्ण विश्वास।

हालाँकि, मैं जिन सबसे अधिक दृढ़ और स्पष्ट सोच वाले अध्यात्मवादियों से मिला हूँ, उनमें से अधिकांश ने कभी किसी सत्र में भाग नहीं लिया, कभी कोई कथित आत्मा की घटना नहीं देखी, न ही कोई अध्यात्मवादी व्याख्यान सुना। आत्मा की शांत, छोटी आवाज़ को सुनकर, वे आध्यात्मिकता में उसी तरह विकसित हुए जैसे उपजाऊ मिट्टी से डेज़ी उगती हैं, या जैसे वसंत के सूरज द्वारा धीरे से छूने और गर्म होने पर कलियाँ खिलती हैं।

आत्मा और परमात्मा का भेद**.**

अमेरिका में ऐसे बुद्धिमान अध्यात्मवादी हैं जो इस आधुनिक आंदोलन के बारे में बोलते हुए, "आध्यात्मिकता" के बजाय "आध्यात्मिकता" शब्द को प्राथमिकता देते हैं, और यह निस्संदेह "आध्यात्मिक" शब्द से छुटकारा

पाने के लिए है, जो उन्हें हमेशा चुभता रहता है। काँटा है. और फिर भी, दुनिया के प्रमुख विद्वान और भाषाशास्त्री आत्मा को "अस्तित्व", "पूर्ण अस्तित्व", "दिव्य पदार्थ" के रूप में परिभाषित करते हैं, और इससे प्राप्त आध्यात्मिक, वह है जो आत्म-चेतना है, आत्म- गतिविधि द्वारा विशेषता, नैतिक बल, और अच्छे और शुद्ध के लिए आंतरिक आकांक्षा। ये परिभाषाएँ "शब्दों" पर ट्रेंच और "उपसर्गों और प्रत्ययों" पर ट्यूक द्वारा समर्थित हैं।

"आध्यात्मिक" एक वैध शब्द है, और यह तार्किक रूप से "आत्मा" मूल से निकला है और उससे जुड़ा हुआ है, जैसे "बौद्धिक" का तात्पर्य है और यह बुद्धि से निकला है। "अंग्रेजी भाषा से "मां" शब्द को भी हटाने का प्रयास करें क्योंकि यह शब्द आध्यात्मिक है। जब चेलों ने यीशु को समुद्र पर चलते देखा, तो कहा, “यह एक आत्मा है।” इस वाक्यांश में उन्होंने आत्माओं और मृतकों की तथाकथित आत्माओं की उपस्थिति के बारे में उस समय की आम धारणा को व्यक्त किया। रेनन कहते हैं, "तिबरियास झील के किनारे यीशु के आसपास इकट्ठा हुआ समूह भूत-प्रेतों में विश्वास करता था।

महान आध्यात्मिक अभिव्यक्तियाँ बार-बार घटित हुईं। हर किसी का मानना था कि वे अलग-अलग तरीकों से प्रेरित हुए थे। कुछ भविष्यवक्ता थे, अन्य शिक्षक।” याद रखें, "आत्मा" और "आत्मा" पर्यायवाची नहीं हैं। इनका उपयोग कभी भी एक दूसरे के स्थान पर नहीं किया जाना चाहिए। प्लेटो और नव-प्लेटोनिक लेखकों ने इस अंतर को ध्यानपूर्वक चिह्नित किया। पॉल ने "आत्मा और प्राण के अलग होने" की बात की। भाषाशास्त्री शुबर्ट आत्मा को "मनुष्य का निचला, परिवर्तनशील भाग" मानते हैं। प्रोफ़ेसर पोर्टर का कहना है कि "'आत्मा' शब्द 'आत्मा' से भिन्न है, जैसे प्रजातियाँ वंश से भिन्न हैं।" आत्मा (आत्मा शरीर) मर सकती है। वाक्यांश "अमर आत्मा" बाइबिल के लेखों में कहीं नहीं मिलता है।

लेकिन इसके विनाश के बारे में कई बार ऐसे अंशों में कहा गया है: "जो आत्मा पाप करे वह मर जाएगा।" याद रखें, आत्मा के बारे में ऐसा कभी नहीं कहा गया है। अय्यूब में यह दर्ज है कि एक आत्मा है, न केवल निर्जीव हवा या सांस, बल्कि एक आत्मा (राउच), "मनुष्य में, और सर्वशक्तिमान की प्रेरणा उसे समझ देती है।"

आत्मा और आत्मा के बीच यह स्पष्ट अंतर पुराने हिब्रू और क्लासिक लेखकों के बेहतर वर्ग द्वारा स्पष्ट रूप से बनाए रखा गया है। इसलिए

बाइबिल का यह अंश: "जिसके हाथ में हर जानवर की आत्मा (नेफेश) और सभी मानव मांस की आत्मा (राउच) है।"

यीशु ने कहा, "आत्मा ही परमेश्वर है।" स्वर्गदूतों को "ईश्वर की सेवा करने वाली आत्माएँ" कहा जाता है। मनुष्य भगवान की छवि में बनाए गए हैं, और इसलिए वे आध्यात्मिक प्राणी हैं। सभी देवदूत निस्संदेह मनुष्य थे जो कभी इस ग्रह पर रहते थे, या स्वर्ग की गहराई में कुछ अन्य देवदूत थे। "यह आत्मा है जो जीवन देती है," प्राचीन प्रेरणा की आवाज़ है।

"यह एक प्राकृतिक शरीर है बोया, यह एक आध्यात्मिक शरीर है। प्रेरित ने कहा. पॉल ने कहा, "शारीरिक (शारीरिक) मन होना मृत्यु है; लेकिन आध्यात्मिक (वायु) मन होना जीवन और शांति है।"

और इस शिक्षा के अनुसार, यीशु ने चिल्लाकर कहा, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।" मार्क, उसने अपनी "आत्मा" पिता को नहीं सौंपी। ईश्वर शरीरों या आत्माओं का पिता नहीं है; लेकिन उसे "सभी प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर" कहा जाता है। और इसलिए, जब पहला शहीद, स्टीफन, क्रोधित हत्यारों के पत्थरों के नीचे गिर गया, तो उसकी पुकार थी, "प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को प्राप्त करो।"

(प्रेरितों के काम 7:59) और फिर, घायल और आहत होकर, स्तिफनुस का भौतिक शरीर सो गया, जबकि उसका आत्मा-शरीर उसकी आत्मा के साथ--उसकी अमर आत्मा-स्वर्ग में चढ़ गया--उच्च क्षेत्रों में--"के लिए परिपूर्ण बनाया गया" "उन धर्मियों की आत्माओं से जुड़ें जो चले गए हैं।"

अध्याय XXXI.

अलौकिक—मसीह—धार्मिक अध्यात्मवादी—जुनून।

भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम आत्मिक वरदानों से अनभिज्ञ न रहो। , , , लेकिन सर्वोत्तम आशीर्वाद की इच्छा करो, और मैं तुम्हें सर्वोत्तम मार्ग भी दिखाऊंगा। (1 कुरिं. 12:1.) हमारे पूर्वजों ने "सभी ने एक ही आध्यात्मिक

भोजन खाया और एक ही आध्यात्मिक पेय पिया, क्योंकि उन्होंने उस आध्यात्मिक चट्टान से पीया जो उनके पीछे थी, वह चट्टान मसीह थी।" (1 कुरिं. 10:4.) “उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।” (मत्ती 28:20.) "और परमेश्वर ने पौलुस के हाथों से चमत्कार दिखाए, और उसके शरीर में से रूमाल और तौलिए निकालकर बीमारों पर लगाए, और रोग दूर हो गए, और दुष्टात्माएं उनमें से निकल गईं।" (प्रेरितों 19:11, 12.) "क्योंकि मैं तुझ से मिलने की लालसा रखता हूं, कि तुझे कुछ आत्मिक वरदान दूं।" (रोमियों 1:11.) चमत्कार युगों की विरासत हैं। भौतिकवादी उनकी वास्तविकता को नकारता है, उनकी संभावना का उपहास करता है।

लेकिन उसके या किसी और के लिए यह जानना कैसे संभव है कि कोई विशेष घटना, अजीब और अद्भुत, चमत्कार है या नहीं! "कौन निर्णय करने में सक्षम है! क्या मुझे बताया गया है कि यह अद्भुत घटना, जिसे चमत्कार कहा जाता है, "प्रकृति के नियमों के विपरीत है!" हाँ - अहंकारी आदमी; तुम्हें कैसे पता! क्या तुमने प्रकृति के सभी नियमों का उल्लंघन किया है?

क्या आपने खोजा, मापा और सारणीबद्ध किया है? शेखी बघारने वाला कभी दार्शनिक नहीं होता। यदि "क्राइस्ट" शब्द एक अपवाद है, तो कई लोगों ने अभी तक सबक नहीं सीखा है। यहां तक कि भौतिकवादी शब्द भी उदार संस्कृति को चमत्कार या उसके आभासी पर्यायवाची शब्द अलौकिक से अधिक नहीं डराता। जिसे वैज्ञानिक पदार्थ या प्रकृति कहते हैं, उसे स्थान प्रभावित करता है और संचालित करता है, ढालता है और हेरफेर करता है। क्यों, वसंत ऋतु में पेड़ों की जड़ें और तने गुरुत्वाकर्षण के नियम को पार करते हुए कलियों और फूलों का निर्माण करते हैं। , - गुरुत्वाकर्षण जो तरल पदार्थ के साथ-साथ ठोस को भी पृथ्वी की सतह पर रखता है।

ऐसा कभी नहीं देखा गया कि कोई शव ताबूत से बाहर आकर दफन हो जाए, लेकिन मानव शव के आकार के शरीर में रहने वाला जागरूक आध्यात्मिक व्यक्ति अहंकारी विमान में चढ़ जाता है और गुरुत्वाकर्षण पर विजय प्राप्त करते हुए बादलों के बीच ऊंची उड़ान भरता है। गाने गाता है। कौन कर सकता है, कौन साहस कर सकता है, आत्मा की सीमा निर्धारित कर सकता है! - अलौकिक की सीमा! हम सभी अनजाने चमत्कारी कार्यकर्ता हैं।

अपने "एनालॉजी" में, बिशप बटलर टिप्पणी करते हैं, "भगवान के चमत्कारी हस्तक्षेप हमेशा प्रकृति के सामान्य नियमों के अनुसार हो सकते हैं, नश्वर लोगों की समझ से परे... ऐसे सचेत प्राणी हो सकते हैं जिनके लिए पूरी ईसाई व्यवस्था वैसी ही हो जैसी प्रतीत हो सकती है चीजों का स्पष्ट रूप से ज्ञात क्रम अब हमें उतना ही स्वाभाविक लगता है।" यह उचित है।

जॉन वेस्ले ने अपने भाई चार्ल्स को लिखते हुए कहा, "मुझे सामान्य तरीकों से कोई जल्दी नहीं है, केवल उन्हें आज़माना हमारा कर्तव्य है। हमारा सारा जीवन, और भगवान का सारा सौदा - शुरू से ही चमत्कारों के साथ मेरा व्यवहार असाधारण रहा है मैं दस से अधिक बार अलौकिक रूप से ठीक हो चुका हूं।" वह आगे कहते हैं, 'पवित्र आत्मा के उपहार अब ईसाई चर्च में नहीं पाए जाने का असली कारण यह है कि ईसाई फिर से मूर्तिपूजक बन गए हैं और इतने भौतिकवादी हो गए हैं कि केवल ईश्वरत्व का रूप ही रह गया है।'

पूर्णतः सत्य! प्रोटेस्टेंटों के विपरीत, रोमन कैथोलिकों ने कभी भी आधुनिक चमत्कारों, यानी आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों के अस्तित्व से इनकार नहीं किया है। सच है, जब वे सक्रिय रूप से निचले, शातिर रूप से अव्यवस्थित स्तर पर प्रकट होते हैं, तो वे बाद वाले को "राक्षसी" कहते हैं; और इस मामले में वे लगभग सही थे. हालाँकि, ये आधुनिक आध्यात्मिक घटनाएँ उस अर्थ में चमत्कार नहीं हैं जिस अर्थ में सत्रहवीं शताब्दी के स्कूल ने चमत्कारों को परिभाषित किया था। वे प्रकृति के अपरिवर्तनीय नियमों का उल्लंघन नहीं हैं, बल्कि उच्चतर नियमों का स्वाभाविक संचालन हैं, जिन्हें असभ्य लोग नहीं समझ सकते। आध्यात्मिक धरातल पर अलौकिकता स्वाभाविक है। इसे दार्शनिक एवं विद्वान लोग आसानी से समझ सकते हैं।

यदि यीशु ने अपने समय में, जेरिको से एक प्रेरित मित्र को, जो अस्थायी रूप से बर्फीले हर्मन के तल पर रहता था, तार के साथ या बिना तार के भेजा होता; या यदि उसने यरूशलेम से जॉर्डन नदी तक फोन किया होता, तो संचार के इन तरीकों को आश्चर्यजनक चमत्कार घोषित किया गया होता।

क्या वह नहीं देख सकता जिसने आंख बनाई है? क्या वह जिसने कानून बनाया, चाहे वह बलूत के फल के अंकुरण में हो या किसी नक्षत्र के संतुलन में, उसे संशोधित नहीं कर सकता, या उससे परे एक उच्च आध्यात्मिक

कानून को लागू नहीं कर सकता? निरपेक्ष अस्तित्व के असीमित क्षेत्रों में, दिव्य व्यक्तित्व सर्वोच्च है।

और इसलिए इस ग्रह के आस-पास या आसपास के वातावरण में छोटी आध्यात्मिक हस्तियाँ, सीमित जागरूक व्यक्तियों के रूप में शासन करते हुए, आध्यात्मिक अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न करती हैं, जो अक्सर उपयुक्त परिस्थितियों में दिखाई देती हैं। लॉन्गफेलो ने लिखा, "वे सभी घर जहां इंसान रहते हैं, प्रेतवाधित घर हैं।"

और श्रीमती हैरियट बीचर स्टोव, जो इसी तरह की धारणा रखती थीं, टिप्पणी करती हैं: "मैं इस भावना को कभी भी पुनः प्राप्त नहीं कर सकती कि मृतकों की आत्माएं किसी तरह अपने पूर्व निवास से जुड़ी हुई हैं, और आत्मा की शांति और रोमांच, हम उनमें क्या महसूस करते हैं यह अदृश्य की छायादार उपस्थिति के कारण हो सकता है।" संत पॉल कहते हैं, "हम गवाहों के एक बड़े बादल से घिरे हुए हैं; 'लेकिन वे गवाह कैसे हो सकते हैं, अगर वे हमें देख नहीं सकते और हमारे बारे में नहीं जानते?

सुसंस्कृत धार्मिक अध्यात्मवादी।

मुझे यहां कुछ प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली अध्यात्मवादियों की गवाही प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है जिन्होंने इस महत्वपूर्ण सत्य, आध्यात्मिक दुनिया के साथ सचेत संपर्क पर लिखा है। इस विषय पर लिखते हुए, दो महाद्वीपों द्वारा दावा किए जाने वाले प्रख्यात रॉबर्ट डेल ओवेन ने आत्मा-स्पर्शी ईमानदारी के साथ कहा, "आध्यात्मिकता ईसाई धर्म का पूरक है।" xx "आध्यात्मिक घटनाएँ ईसाई धर्म की प्रारंभिक गवाह थीं।"

"सभी विचारशील पर्यवेक्षक, जब इन घटनाओं की वास्तविकता से आश्वस्त हो जाएंगे, तो जैसे ही वे ईसा मसीह की शिक्षाओं, उनके वर्तमान कार्यों और उपहारों की सरल भव्यता देखेंगे, जैसा कि समकालीन सुसमाचारों और पोप में दिया गया है, ईसाई बन जाएंगे। धर्मशास्त्र का ऑगस्टिनियन संस्करण।

मेरे पास इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि ये सच्चाइयाँ धीरे-धीरे अपना रास्ता बना रही हैं। 'आदिम ईसाई धर्म और आधुनिक अध्यात्मवाद की पहचान' पर मेरे मित्र डॉ. क्रॉवेल के समय पर किए गए काम ने इस परिणाम को लाने में मदद की है - और मुझे उनकी अंतिम व्यापकता पर कोई संदेह नहीं है, क्योंकि सार और उद्देश्य में वे एक हैं।

इस उल्लेखनीय परिच्छेद में माननीय श्री ओवेन चर्चवाद, पंथ या आस्था के किसी धार्मिक स्वीकारोक्ति के बारे में नहीं लिख रहे थे, बल्कि ईसाई धर्म के बारे में, इसके साथ जुड़े आध्यात्मिक उपहारों के बारे में, जैसे कि नाज़रेथ के प्रेरित के होठों से लिख रहे थे। बाहर आ गया था.

महान द्रष्टा एंड्रयू जैक्सन डेविस ने इस प्रकार लिखा, "यीशु ने कानूनों और रीति-रिवाजों को अपने समय और देश की लोकप्रिय धारणा से ऊपर रखा। और लोगों ने उन्हें देशद्रोह और इमान सरकार के खिलाफ साजिश के लिए सूली पर चढ़ा दिया। लेकिन समय और ज्ञान ने इस झूठ को विकसित किया है कार्य करें, और यह स्पष्ट कर दिया कि यीशु को गलत समझा गया था, और उनके साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था और वह एक आदर्श व्यक्ति थे और इसका एक जीवंत उदाहरण था कि मानव जाति का क्या होगा?1 न्यूयॉर्क के न्यायाधीश एडमंड्स, जो अपनी कानूनी क्षमता के लिए समान रूप से प्रतिष्ठित थे और यीशु के प्रति उनकी प्रशंसा, प्रोफ़ेसर हरे के बारे में कहते हैं, "डॉ. हरे जीवन भर ईसाई रहे। वह एक ईमानदार, धर्मनिष्ठ और कट्टर आस्तिक थे, लेकिन अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उनके मन में आध्यात्मिकता विकसित हुई और वे अपनी चेतन अमरता में विश्वास करने लगे।

आखिरी बार जब मैंने उसे देखा था, तो उसने मुझे बताया था कि वह यीशु के माध्यम से रहस्योद्घाटन में पूरी तरह से विश्वास करता था, आखिरकार, वह अब इस विश्वास में एक पूर्ण ईसाई था, कि कुछ दिन पहले सलेम, मैसाचुसेट्स में उसकी मृत्यु हो गई थी। . एक बैठक में उन्होंने अपने विश्वास की सार्वजनिक घोषणा की, और उन्होंने मुझे इस विषय पर एक लंबा लेख पढ़कर सुनाया, जिसे उन्होंने प्रकाशन के लिए तैयार किया था। बोस्टन के विद्वान एलन पटनम, एक पूर्व यूनिटेरियन उपदेशक और अध्यात्मवादी, ने इस प्रकार अपना विश्वास व्यक्त किया।

'आध्यात्मिक क्षेत्रों में गर्भाधान और आध्यात्मिक परिस्थितियों में प्रशिक्षण के लिए की गई पूर्व व्यवस्था के अनुसार मैरी का बच्चा जीवित हो गया। उच्च, शुद्ध और शक्तिशाली आत्माएँ उसकी सहयोगी और सहायक

थीं, जबकि निचली आत्माएँ और आध्यात्मिक शक्तियाँ उसकी इच्छा के अधीन थीं। ... हम यीशु मसीह के नाम पर कृतज्ञता की प्रार्थना कर सकते हैं और करते भी हैं, जैसा कि प्रेरितों ने किया था, उन्हें ईश्वर के प्रति हमारा सबसे बुद्धिमान और कुशल सहायक मानते हुए; और फिर भी, गैलीलियन रब्बी ने प्रेरित पतरस को 'ईश्वर द्वारा स्वीकृत मनुष्य' के रूप में घोषित किया, वह हमारी जानकारी के भीतर किसी भी सृजित प्राणी के स्वर्गीय उपहारों का सबसे अमीर वितरणकर्ता था।

न्यूयॉर्क के सुवक्ता प्रोफेसर एस.बी. ब्रिटन, जिन्होंने कई वर्षों तक अध्यात्मवाद के शुरुआती पन्नों में संपादकीय लिखे, ने नाज़रेथ के यीशु के बारे में अपना मूल्यांकन व्यक्त किया, जिसका विनम्र जीवन और मृत्यु, उन्होंने घोषणा की, "एक हजार नायकों की विजय से अधिक मानवता के लिए थे यह गौरवशाली था।" “दिव्य जीवन के अपने विचार के प्रति समर्पण में वह सभी से श्रेष्ठ थे। जुनून के शोर और दुनिया के झगड़ों के बीच, उनकी आत्मा को शांति मिली। दिव्य अग्नि से पुनर्जीवित हुई आत्मा; वह प्रेम जो गहरी नाराजगी को जला देता है और वह क्षमा जो सभी मानवीय गलतियों के साथ मौजूद रहती है, यीशु के जीवन में स्पष्ट थी। जब दुनिया अविश्वासी और अवज्ञाकारी थी, तब वह अपने गहन विश्वास और अपनी अटूट निष्ठा के साथ अकेले खड़े थे - अत्यंत महान।

आत्मा की शांति, मानवता का वह अटूट प्रेम और अपराधियों के प्रति दिव्य क्षमा, यीशु के रहस्योद्घाटन में सन्निहित थे। भविष्य का चर्च उसी नींव पर बनाया जाना चाहिए जिस पर अतीत का जीवित चर्च बनाया गया था। यह क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु नहीं बल्कि पुनर्जीवित मसीह हैं जो बचाते हैं। कोई भी आदमी कोई और बुनियाद नहीं रख सकता.

लेकिन यह स्पष्ट है कि हमें एक नई और कई मामलों में एक अलग अधिरचना की आवश्यकता है। साम्प्रदायिक सम्प्रदायों को नष्ट करना होगा। हमारे पास एक धार्मिक संगठन होना चाहिए जिसके विश्वास के लेख यीशु की नैतिक शिक्षाएँ होंगी - जिनकी पवित्र पुस्तकें सभी युगों के खोजे गए सिद्धांतों और केंद्रित ज्ञान को समझेंगी और प्रकट करेंगी - सभी बाइबिल - और जिनके शिक्षक भौतिक दर्शन होंगे और आध्यात्मिक ब्रह्मांड. चित्रित करने के लिए नियोजित किया जाएगा; और सब, लोगों को शुद्ध और पवित्र जीवन जीने के सच्चे विज्ञान की शिक्षा देना।

जब अध्यात्मवाद के उपरोक्त पिता, जज एडमंड्स, रॉबर्ट डेल ओवेन, डॉ. क्रॉवेल, प्रोफेसर ब्रिटन, विलियम फिशबॉ, ए.ई. जबकि न्यूटन, जोएल

टिफ़नी, हेनरी किडेल और अन्य साहसी, निस्वार्थ कार्यकर्ता अध्यात्मवाद के समर्थकों को प्रभावित कर रहे थे, जुनून लगभग था अज्ञात।

ये गंभीर, महत्त्वाकांक्षी लेखक और रचनाकार सर्वोत्तम अर्थों में आध्यात्मिक थे। वह शब्द के व्यापक अर्थ में भी धार्मिक थे। आज कौन, हाँ, कितने कम लोग उनकी जगह भर रहे हैं? जिनेवा, एन.वाई. उच्च विज्ञान संस्थान के विद्वान ई.डी. बैबिट, एम.डी., एल.एल.डी., निम्नलिखित स्पष्ट भाषा में लिखते हैं, "हम ईश्वर की अवधारणा के बिना ब्रह्मांड के सच्चे विज्ञान को नहीं समझ सकते। अनंत शब्द, जिसका अर्थ असीमित है, को लागू किया जा सकता है क्योंकि ब्रह्मांड की सीमाएं नहीं हो सकतीं इसे सम्मिलित करें।

धर्म अच्छाई, आध्यात्मिक, दिव्यता की आकांक्षा है जो सर्वशक्तिमान की ओर बढ़ती है।" "यीशु वास्तव में दिव्य थे, भगवान के अवतार थे, क्योंकि प्रत्येक मानव आत्मा दिव्यता के अवतार की एक चिंगारी है, मानवता में एकमात्र दिव्य जीवन है सामान्यतः यीशु है. , ईसा मसीह की तुलना में बहुत कम है।

बचपन से ही वह प्रेरित थे, और यद्यपि कभी-कभी अविकसित आत्माओं द्वारा प्रलोभित होते थे, जिन्हें उनके युग में राक्षस और शैतान कहा जाता था, - फिर भी वह आम तौर पर पवित्र प्रभावों के नियंत्रण में थे, जो उनकी आत्मा को ऐसे दिव्य प्रभाव से बचाते थे, और अपनी चुंबकीय शक्ति को इस हद तक प्रज्वलित किया कि उसे लगा कि वह स्वयं ईश्वर के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के अधीन है, - कि ईश्वर वास्तव में उसका पिता है, और उसने ईश्वर के साथ अपने उद्देश्य और आत्मा की एकता को इतना महसूस किया कि उसने टिप्पणी की, - 'मैं और मेरे पिता एक हैं' - अर्थात् उद्देश्य में एक। (बैबिट, ऑन रिलिजन," पृष्ठ 266।)

नाज़रीन की उपस्थिति.

परमानंद या भक्तिपूर्ण उत्साह में, ईसाई अक्सर कहते हैं, हे प्रभु यीशु आओ! हमारी उपस्थिति में आओ! आइए और हमारे साथ जुड़ें।" और इनमें से कुछ ईमानदार आत्माएं पूरी ईमानदारी से घोषणा करती हैं कि वे उनकी

मधुर दिव्य उपस्थिति को महसूस करते हैं। हम उस पर विवाद करने या हल्के में लेने से बहुत दूर हैं, यहां तक कि निहितार्थ से भी, जिस बात की वे इतनी दृढ़ता और मजबूती से पुष्टि करते हैं। लेकिन क्या वे कुछ देते हैं सबूत, दूसरों के सामने कोई प्रदर्शन, कि वे इस प्रकार विशेष रूप से सम्मानित हैं?

अदृश्य दुनिया में दिव्यदर्शी अध्यात्मवादी और उनके संरक्षक सबसे सशक्त रूप से कहते हैं कि उन्होंने यीशु को, समकालीन सुसमाचारों के केंद्रीय व्यक्ति, उन उच्चतर स्वर्गदूतों के लोकों में देखा है। एंड्रयू जैक्सन डेविस, प्रसिद्ध द्रष्टा, ने अपनी एक पुस्तक में स्पष्ट रूप से घोषणा की है कि हाई रॉक में प्राचीन आत्माओं के उन प्रतिनिधिमंडलों में से एक के दौरान, उन्होंने नाज़ारेथ के यीशु को दिव्य दृष्टि से देखा था। और तदनुसार अपने सभी विशाल लेखों में वह केवल गहरी श्रद्धा के संदर्भ में ही उनके बारे में बात करते हैं।

मुझे क्राइस्ट जेसन्स नाम के व्यक्ति के साथ दो बार बातचीत करने का बड़ा सम्मान मिला है। यरूशलेम में एक प्रतिष्ठित रब्बी ने एक बार मुझे तल्मूड के कई अंश पढ़कर सुनाए जिनमें सीधे तौर पर यीशु का जिक्र था, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने "मिस्र में जादू सीखा था।" डेविड डू गाइड के माध्यम से ग्लासगो, स्कॉटलैंड में दूसरी बार। और अब जिनेवा विद्वान डॉ. बैबिट की हालिया गवाही आई है। (सत्य का प्रकाश, 28 मई।) ये उनके सटीक शब्द हैं: "क्रिसमस के दो दिन बाद मुझे लगने लगा कि यीशु स्वयं आ सकते हैं।

मैंने डॉ. इलियटसन से पूछा कि क्या ईसा मसीह जैसा कोई व्यक्ति वास्तव में जीवित था, भले ही कुछ लेखकों ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि उनका कभी अस्तित्व ही नहीं था। उत्तर था "हाँ"। तब मुझे एहसास हुआ और मुझे बताया गया कि रविवार की बैठक इस समझ के साथ स्थगित कर दी गई थी कि यीशु स्वयं हमारे साथ होंगे। निःसंदेह, यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात थी, क्योंकि उनका नाम कई शताब्दियों तक और लाखों-करोड़ों मानव जाति के बीच गौरवान्वित होता रहा था। वह शाम मेरे जीवन का एक युग थी।

ऐसी महान आत्मा, जो लगभग उन्नीस सौ वर्षों से विकसित हो रही थी, से बात करने का सौभाग्य महान था। उन्होंने संकेत दिया कि उनके नाम के संबंध में ऐतिहासिक अनुभव के दो बिंदु थे जिन पर उन्हें खेद है - पहला, यह धारणा कि वह भगवान के बराबर थे, हालांकि उन्होंने अभिव्यक्ति का

उपयोग किया था, "मेरे पिता मुझसे महान हैं," और, दूसरा। , उस दिन के विचार जिसमें वे स्वयं गिर गए थे - अर्थात, यह वास्तव में शैतान थे जो लोगों में प्रवेश करते थे, न कि अविकसित मनुष्य, जैसा कि हम अब जानते हैं, जिनमें से कुछ को उन्होंने बाहर निकाल दिया।

कनाडा और अमेरिका के साहित्यकारों में प्रसिद्ध प्रोफेसर बी.पी. ऑस्टिन, एल.एल.डी. यह आश्चर्यजनक गवाही दी: 4 4 कई वर्षों की स्पष्ट जांच के बाद, विभिन्न परिस्थितियों में, मैं यह पुष्टि करने का साहस करता हूं कि इन आध्यात्मिक संचारों में सिखाई गई नैतिक प्रणाली ईसा मसीह की नैतिक शिक्षाओं से किसी भी तरह से भिन्न नहीं है, इसे कभी भी पार नहीं किया गया है घोषित कर्तव्यों के उदात्त चरित्र, या उन उद्देश्यों की शक्ति और विविधता में जिनके लिए इसे कानून का पालन सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

बार-बार मैंने इन घटनाओं को देखा है, ऊंचे और नीचे, सबसे कठिन परिस्थितियों में उत्पन्न - स्वर्गीय दुनिया से आवाजें सुनीं - स्वर्गदूतों के होठों से ताजा निर्देश और प्रेरणा के जीवित शब्द पकड़े - गायब बादलों की तरह भौतिक रूप धारण किए। और उन्हें अमूर्त होते देखा है, मानो वे ईसा मसीह के समय ही गायब हो गये हों। अध्यात्मवाद फ़िलिस्तीन के आदर्श व्यक्ति के आसपास और उसमें केंद्रित ईसाई धर्म का पुनरुद्धार है। यह आध्यात्मिकता का पुनरुत्थान है, जो प्रेरितों के समय में इतना जीवंत और शक्तिशाली था।

हम आंशिक रूप से देखते हैं और फिर भी आंशिक रूप से जानते हैं, लेकिन अनंत काल हमारे सामने है। व्हिटियर की पंक्तियाँ कितनी प्यारी हैं: 'मैंने सत्य के परिधान की सीमा को छुआ, फिर भी उसकी पूरी भव्यता नहीं देखी।' शायद यहां ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ कहे जाने वाले व्यक्ति के बारे में उनकी परिपक्व अवधारणा को व्यक्त करना उचित होगा।

पतरस की परिभाषा को खुशी के साथ उद्धृत करते हुए, मैं नासरत के यीशु में "आपके बीच चमत्कारों, चमत्कारों और संकेतों द्वारा ईश्वर द्वारा प्रमाणित एक व्यक्ति को देखता हूं।" (प्रेरितों 11:22) नैतिक भव्यता और आत्म-बलिदान की कोमल भावना में, उनका चरित्र अन्य संतों और संतों से लगभग ऊपर उठ गया। उन्होंने आत्मा में पूजा की। उसने कभी भी ईश्वर की दृष्टि नहीं खोई।

आध्यात्मिक जगत में ईश्वर उससे बाहर से बात नहीं करता। उसे लगता है कि ईश्वर उसके भीतर है। उसे मूसा की तरह गड़गड़ाहट की आवाज़ की ज़रूरत नहीं थी; अय्यूब के समान कोई तूफ़ान नहीं; न ही यूनानी ऋषि जैसी कोई परिचित आवाज़. वह पिता की उपस्थिति में और लगातार ईसा मसीह की छाया में इतनी सजगता से रहता था कि वह सचमुच कह सकता था, 'मैं और मेरे पिता एक हैं।' इसकी परम महानता मुख्य रूप से इसके सामंजस्यपूर्ण संगठन में निहित है; स्वर्गदूतों के साथ निरंतर संचार में; उसकी मधुर आध्यात्मिकता की गहराई में; उनके नैतिक विश्वासों की तीक्ष्णता में; उनकी दिव्य सहानुभूति की व्यापकता और गर्माहट में; उसके दिल की ईमानदारी में; प्राधिकार के आदेशों का पालन करने की उसकी आत्मा-व्यापक भावना में; मानवता के सर्वोच्च हितों के प्रति उनकी समर्पित भक्ति में; और ईश्वर में उनके पूर्ण और परिपूर्ण विश्वास में।

मसीह की इन उत्कृष्ट अवधारणाओं को संजोते हुए, मैं उत्साहपूर्वक कह सकता हूँ, "मार्ग, सत्य और जीवन को देखो!" और, इसके अलावा, मैं ईमानदारी से कह सकता हूं कि मैं मसीह के माध्यम से मुक्ति में, दिव्य विकास में विश्वास करता हूं - अर्थात, मसीह के माध्यम से पवित्रता, आकांक्षा, प्रेम और सत्य के सिद्धांत - मसीह या आत्मा के माध्यम से मुक्ति। -मैं खुलेपन में विश्वास करता हूं, जैसे मैं गर्मियों की बारिश के दौरान खिलने वाली कलियों और हरे खेतों में विश्वास करता हूं, वैसे ही मैं शरद ऋतु की सुनहरी धूप में फलों के पकने और लहलहाती फसलों में विश्वास करता हूं! ईसा मसीह, बुद्ध की तरह, धार्मिकता के सूर्य और दुनिया के उद्धारकर्ता हैं! "नाज़रेथ के प्रिय भविष्यवक्ता, स्थिर और सौम्य, जिनका सत्य, इंद्रधनुष की तरह, दुनिया को गले लगाता है, -

समय आ गया है जब आपके दुश्मन आत्मसमर्पण कर देंगे, और युद्ध के लाल झंडे हमेशा के लिए फहराए जाएंगे: जब शेर का गला अब रेगिस्तान और घाटी में अपनी चुनौती की दहाड़ नहीं देगा, जब पृथ्वी हाथ मिला लेगी और काली तोपें उसके खिलाफ आग उगल देंगी चिल्ड्रन ऑफ़ मेन। अपने मतभेद एक साथ साझा नहीं करेंगे. “समुद्र की धुंध, फव्वारे की फुहार, पहाड़ी पर बेल, मंदिर पर काई, घाटी का गुलाब, पहाड़ का देवदार, सभी उस महिमा में बदल जाते हैं जो आपका प्रतीक है; इसलिए मैं आपके प्यार के लिए तरस रहा हूं, सबसे दुर्लभ और सबसे प्यारा जिसने किसी भी आत्मा को दुःख से ऊपर उठाया है, और मैं आपके जीवन की ओर मुड़ता हूं, सबसे सच्ची और निकटतम अनंत अच्छाई के रूप में जिसे नश्वर लोग जान सकते हैं। -जेम्स जी. क्लार्क.

अध्याय XXXII.

"अदृश्य दुनिया की सीमा पर बचाव कार्य।"

जिन लोगों ने पिछले अध्यायों को ध्यान से पढ़ा है उन्हें याद होगा कि मैंने चीन, भारत और अफ्रीका के अंधेरे क्षेत्रों में लोगों की अज्ञानता और स्वार्थ के बारे में बात की है; सभ्य देशों ने लाल युद्धक्षेत्रों की बात की है; स्वार्थ, डकैती, अपवित्रता, शराबीपन, जुआ, राजनीतिक धोखाधड़ी, अनैतिकता के अड्डे, फैशनेबल पाखंड, जानलेवा गर्भपात और नश्वर आँखों से अदृश्य लाखों अपराधों की बात की जाती है, और ये - इन सभी दृश्यों में अभिनेता - प्रत्येक घड़ी की टिक-टिक हैं . लेकिन, बिना पश्चाताप के आत्माओं के अदृश्य क्षेत्रों में धकेल दिए जाने पर, वे अपनी पहचान, अपनी भ्रष्ट प्रतिशोधात्मक प्रवृत्ति और अपनी गिरी हुई प्रवृत्ति अपने साथ ले गए हैं।

अब वे कहाँ हैं? उनके शरीर धूल और राख में हैं; फिर भी, वे यहाँ हैं। मृत्यु कोई उद्धारकर्ता नहीं है - कोई फिरौती देने वाला नहीं है। नश्वर फाँसी महिमा का मार्ग नहीं है। ऊपर उल्लिखित लोग अपने साथ अदृश्य दुनिया में उस नरक को ले गए जो उन्होंने अपने नश्वर शरीर में रहते हुए अपने और दूसरों के लिए बनाया था। अब, क्या उन तक पहुंचा जा सकता है? यह एक परोपकारी व्यक्ति की स्वाभाविक जिज्ञासा है।

हां, एक पल के लिए विचार करें, कि जहां नैतिक रूप से कम और भ्रष्ट लोग असंख्य मृतकों को जीवित करने के लिए अपने भौतिक वाहनों से बाहर चले गए हैं, वहीं शिक्षक, सुधारक, परोपकारी - युगों के महान प्रेमपूर्ण लोग भी रहे हैं। आत्माएं जिन्होंने शारीरिक मृत्यु दर में रहते हुए मानवता की नैतिक शिक्षा के लिए काम किया और जीया।

जो श्रमिक यहां मानव भलाई के लिए परिश्रम करते हैं, वे मृत्यु की घाटी से परे अधिक गहन श्रमिक बन जाते हैं। ऐसी धन्य आत्माओं को स्वर्ग के दिव्य सहायक, उद्धारकर्ताओं का समूह कहा जा सकता है।

एच. फोर्ब्स किडल का मिशन।

अध्यात्मवादियों को पढ़ते समय, यह नहीं भुलाया जा सकता कि प्रो. हेनरी किडल, लेखक, लेखक और कई वर्षों तक अधीक्षक रहे हेनरी किडल से अधिक विद्वान कोई नहीं था, और निश्चित रूप से कोई भी अधिक साहसी, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ नहीं था, जिसने अध्यात्मवाद की श्रेणी में स्थान प्राप्त किया हो। न्यूयॉर्क शहर के स्कूल. एच. फोर्ब्स किडल, इस आदरणीय अध्यात्मवादी के पुत्र, जो पत्रिकाओं के लिए लेखन और पुस्तक समीक्षा जैसे संगीत और साहित्यिक कार्यों में लगे हुए थे, ने "अदृश्य दुनिया की सीमा पर बचाव कार्य" शीर्षक के तहत निम्नलिखित पृष्ठ प्रस्तुत किए हैं। यह कार्य इसलिए और अधिक रोचक और विचारोत्तेजक है क्योंकि संचार और दर्शन उनके अपने शहर के निवास में हुए थे।

इस तरह के दर्शन, आध्यात्मिक भूमि में ऐसे भ्रमण, जैसा कि वर्णित है, अत्यंत शिक्षाप्रद हैं, साथ ही मानवता की भलाई के लिए महत्वपूर्ण प्रेरक शक्तियाँ भी हैं। बचाव का यह कार्य ईश्वर, ईश्वर के मसीहों, युगों के बुद्धों और सेवारत स्वर्गदूतों की कृपा से तब तक जारी रहना चाहिए, जब तक कि अंधेरे में अंतिम आत्मा को दिव्य प्रेम की अग्नि न छू जाए, जिससे हृदय कह उठे: 'मैं करूंगा' उठो और मेरे पिता के पास जाओ' वह इस प्रकार लिखते हैं:

अध्यात्मवाद का एक ऐसा चरण है जिसे वह ध्यान नहीं मिला है जिसका वह हकदार है, यहां तक कि उन लोगों के बीच भी नहीं जो अन्य मामलों में आधुनिक दिनों की इन शानदार आध्यात्मिक रोशनी के महत्व को पूरी तरह से समझते हैं।

मैं उस कार्य के बारे में बात कर रहा हूं जो मृत्यु की छाया की घाटी से परे अंधेरे और उदास सीमांत क्षेत्र के असहाय और अक्सर निराश निवासियों की सहायता करने के लिए उच्च जीवन में परोपकारी प्राणियों के साथ-साथ नश्वर प्राणियों की शक्ति में है। फैला हुआ है। यह आध्यात्मिक और भौतिक दोनों दुनियाओं में अच्छाई के अमूल्य अवसरों से भरी संभावना है। अज्ञानी और गिरे हुए "दहलीजों" के समूह से अधिक मानवता की सच्ची प्रगति में कोई बाधा नहीं है।

" कई लोग आध्यात्मिक विकास में इतने कमजोर हो जाते हैं कि वे उच्च क्षेत्रों की प्रेरणाओं या चुंबकीय प्रभावों के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं। उनकी आध्यात्मिक क्षमताएं अभी भी अल्पविकसित अवस्था में हैं, या इससे भी बदतर, गंभीर रूप से क्षीण हैं।

ऐसी आत्माएँ उन लोगों की तुलना में सच्चे आध्यात्मिक जीवन के प्रकाश से अधिक दूर हैं जो अभी भी देह में हैं। उनकी परिस्थितियाँ मानवीय विचारों और आवेगों की विशिष्टताओं जितनी ही विविध हैं; लेकिन वे स्वाभाविक रूप से और सहज रूप से पृथ्वी से चिपके रहते हैं क्योंकि यह उनके लिए ज्ञात एकमात्र विश्राम स्थान है। वे चेतना, या मनोवैज्ञानिक शक्तियों के संचालन के माध्यम से इससे चिपके रहते हैं, जिसका विरोध करने में वे बहुत कमज़ोर होते हैं।

यह आवश्यक नहीं कि ये बेचारे बहुत दुष्ट या दुर्भावनापूर्ण हों, ये बेचारे जीव टटोलने वाले प्राणी हैं; इसके विपरीत, अधिकांश मामलों में वे शायद केवल स्थूल और अज्ञानी होते हैं।

अक्सर वे कुछ अजीब भ्रम से पीड़ित होते हैं जिन्हें कोई भी प्रगति करने से पहले दूर करना पड़ता है। चाहे परिस्थिति कैसी भी हो इन जो लोग 'बाहरी अंधेरे' में रहते हैं, वे आंतरिक दुनिया की सूक्ष्म शक्तियों की तुलना में पृथ्वी के मोटे चुंबकत्व के माध्यम से अधिक आसानी से पहुंच योग्य हैं। वास्तव में, भौतिक तल वह सामान्य आधार है जिस पर सभी स्तरों की आत्माएं नश्वर मध्यस्थों के माध्यम से सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं; यह जीवन का केंद्र है, वह बिंदु जहां अतीत और भविष्य मिलते हैं; शाश्वत वर्तमान, जो आने वाली चीज़ों की अभिव्यक्ति के लिए युगों के उत्पाद को लगातार अवशोषित करता है।

असीम परे के निवासी, स्वाभाविक रूप से विकास की डिग्री या विचारों की मौलिक विविधता से अलग हो जाते हैं, उन्हें सांसारिक माध्यम के केंद्र बिंदु पर एक साथ खींचा जा सकता है। इस तरह माध्यम उन अदृश्य प्राणियों के हाथों में आरोहण के साधन बन जाते हैं जो सभी आत्माओं को उच्च जीवन की ओर खींचने के मसीह कार्य में लगे हुए हैं।

माध्यम के इस अनूठे कार्य के बारे में कई शुरुआती आविष्कारक जानते थे, जिनमें से एक जज एडमंड्स थे, जिनका "सर्कल ऑफ़ होप" उन अदृश्य लोगों की सहायता करने के विशेष उद्देश्य के लिए आयोजित किया गया था जो मदद की तलाश में उनके पास आए थे।

एक प्रमुख प्रारंभिक माध्यम डॉ. जी.ए. रेडमैन ने अपने आत्मकथात्मक कार्य, "मिस्टिक आवर्स" में इस विषय पर विस्तार से चर्चा की। उनका मानना था कि "हमारी घटनाओं के इस वर्ग पर बहुत कम ध्यान दिया

जाता है।" उन्होंने कहा, "मैं संतुष्ट हूं कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हम अपने नीचे की आत्माओं को आशीर्वाद देने में सक्षम होते हैं।" हमने प्रगति के अधिक उन्नत चरण में, चाहे वे आत्मा हों या नश्वर, उनसे क्या प्राप्त किया है।

वर्षों से मेरा मिशन।

कई वर्षों से यह मेरी किस्मत रही है, एक अजीब, ज्यादातर लोगों के लिए अविश्वसनीय, कि मुझे कई बार अतीत की छाया में रहने वाले कई और विभिन्न प्रकार के अदृश्य लोगों से निपटना पड़ा है। दो महिलाओं की मदद से, जिन्होंने अपनी मध्यम प्रतिभा को आत्मा मुक्ति और उत्थान के काम के लिए समर्पित किया है, सभी प्रकार के अशरीरी मनुष्य प्रबुद्ध होने और विभिन्न तरीकों से सहायता प्राप्त करने के लिए हमारी सभाओं में आए हैं। वे अकेले और समूहों में आये हैं; कभी-कभी वे सचमुच हमें घेर लेते हैं।

जो लोग उपहास करने आए थे, वे एक से अधिक बार धन्यवाद देने के लिए रुके हैं। श्री थॉमस अटवुड, एक अंग्रेज अध्यात्मवादी जो इस कार्य में बहुत गंभीर थे, से उनके मध्यमवादी विकास के आरंभ में ही आत्मा-भूमि में घूमने वालों के लाभ के लिए नियमित बैठकें, एक प्रकार की धार्मिक सेवा आयोजित करने का अनुरोध किया गया था।

वे कई सालों से ऐसा कर रहे हैं. उनकी दूरदर्शिता उन्हें यह देखने में सक्षम बनाती है कि उनके श्रोता, हालांकि बाहरी दृष्टि से अदृश्य हैं, अक्सर एक बड़ा और चौकस जनसमूह होता है; और इस प्रकार उन्हें यह जानकर संतुष्टि मिलती है कि उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता। हाल के एक लेख में अपने आगंतुकों का जिक्र करते हुए, वह उनके बारे में कहते हैं, नश्वर भूमि से उभरने के बाद वे जो भी शरीर धारण करते हैं, वे आत्माएं हैं, जितनी वे पृथ्वी-जीवन में थीं, अब और नहीं; और इस तथ्य के सामने कि कई मामलों में उन्हें नश्वर जीवन से गुजरने का कोई ज्ञान नहीं है, और वे अभी भी पूर्व दिनों की तरह अपना व्यवसाय करते हैं।

वे मुझे सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए पुरुष और महिला प्रतीत होते हैं, और मैं हमेशा उन्हें इसी तरह संबोधित करता हूं। " वह आगे कहते हैं, "इसके अलावा, हमारे पास लाए गए कुछ लोग विकास के इतने शुरुआती चरण में हैं कि यह महसूस करना मुश्किल है कि वे कभी हमारी महान

मानवता का हिस्सा थे। उनके द्वारा लाई गई स्थितियों का वर्णन करने के लिए घना अंधकार सबसे उपयुक्त शब्द है।

यह अविश्वसनीय लगता है कि मानव आत्मा इतने निचले स्तर पर हो सकती है, और फिर भी, जब हम अपनी सड़कों पर चलते हैं, अगर हम अवलोकन की अपनी सामान्य शक्तियों का उपयोग करते हैं, या इस जीवन में अपने कुछ अनुभवों को याद करते हैं, तो निश्चित रूप से इन गरीबों के प्रोटोटाइप जीव हमें आसानी से पहचान सकेंगे।

एक कदम और ऊपर, और हम उन पुरुषों और महिलाओं तक पहुंचते हैं जिनकी जीवन के बारे में धारणा कुछ धुंधली है। इनमें से बहुत से लोग नहीं जानते कि वे कौन हैं, क्या हैं, या कहाँ हैं। धीरे-धीरे स्मृति पुनर्जीवित हो जाती है और सांसारिक जीवन की कोई घटना याद आ जाती है। एक कदम आगे बढ़ने पर, हमें मदद दिए जाने की स्पष्ट इच्छा दिखती है, हालाँकि यह मदद किस दिशा में आवश्यक है यह बिल्कुल अज्ञात है, क्योंकि इन लोगों को अक्सर यह समझाने में बड़ी कठिनाई होती है कि वे अब सांसारिक शरीर में नहीं हैं। हैं।"

नश्वर शब्द आत्माओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

इसी तरह, मुझसे भी अपने सत्र की शुरुआत एक संबोधन के साथ करने को कहा गया है. ऐसा लगता है कि मनुष्यों द्वारा बोले गए शब्दों में आध्यात्मिक दुनिया में गूंजने की शक्ति होती है, और यह आवाज़ सचमुच अदृश्य लोगों को बुलाती है। इस प्रकार वे अपनी सुस्ती से, या विचारों की शांति से जागृत हो जाते हैं जो अक्सर उन्हें बंधन में रखती है। यदि वे घुमंतू और घुमक्कड़ हैं,—जुनूनी वर्ग है,—तो आवाज की आवाज उन्हें रुकने के लिए मजबूर कर देती है।

हमारे माध्यम की दिव्य दृष्टि से आध्यात्मिक रूप से देखे जाने पर, मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे मैं बोलते समय सड़क पर खड़ा हूं,
एक यात्राशील उपदेशक की तरह. आत्माएँ भी इसी प्रकार आचरण करती हैं; कुछ लोग पूर्ण असावधानी में आगे बढ़ते हैं, कुछ लोग निष्क्रिय उदासीनता में रुक जाते हैं, कई लोग रुचि लेते हैं। कभी-कभी, वे आत्मा की प्रगति की संभावना के बारे में प्रश्न पूछते हैं - अफसोस, एक नया विचार! पृथ्वी से प्रस्थान करने वाली अधिकांश आत्माओं के लिए।

कई लोगों ने मुझसे स्पष्ट रूप से कहा है कि मैंने जो कहा है उसकी सत्यता पर उन्हें संदेह है। एक आदमी ने टिप्पणी की कि उसे मुझ पर ज्यादा भरोसा नहीं था क्योंकि मैं पुजारी नहीं था। "आप एक प्रोटेस्टेंट की तरह बात करते हैं," उन्होंने कहा। अन्य समय में मैं किसी प्रकार के सभागार में प्रतीत होता हूँ, कभी किसी बहुत बड़ी इमारत में। वहाँ भीड़ थी और लोग जो कहा जा रहा था उसे सुनने के लिए उत्सुक थे। संबोधन के अंत में, छत खुली और एक तेज़ रोशनी आई जिससे पूरा स्थान भर गया। श्री एटवुड अपनी एक बैठक के दौरान खुद को एक बड़े गिरजाघर में पाते हैं।

हमने अपने अनुभवों से सीखा है कि आत्मा की दुनिया में प्रवेश करते समय व्यक्तियों में कल्पना की स्थिति में प्रवेश करने की प्रवृत्ति होती है। यह विचित्र स्थिति बाद के जीवन में बहुत प्रचलित प्रतीत होती है। यह जीवन और विचार की सांसारिक आदतों का मानसिक परिणाम है। यद्यपि मूलतः आदर्श, यह स्थिति उन लोगों के लिए बिल्कुल वास्तविक है जो इसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव में हैं। कभी-कभी इसे 'सामूहिक भ्रम' की स्थिति भी कहा जा सकता है।

श्री एटवुड टिप्पणी करते हैं, "मैं अक्सर अपने सामने विभिन्न व्यवसायों में काम करने वाले लोगों के दृश्य देखता हूं; कोक ओवन में गैस-मैन, फोर्ज में लोहार, मांस बेचने वाले कसाई, जूते की मरम्मत करने वाले मोची आदि। मैं उनसे बात करता हूं; जाहिर है वे नहीं करते हैं मेरी बात सुनो, क्योंकि वे अभी भी काम कर रहे हैं, लेकिन अचानक कसाई का चाकू खो जाता है, अगला जोड़ जो वह काट रहा था वह गायब हो जाता है, ब्लॉक उसका पीछा करता है।

जहां वे गए थे? ये बात उसे समझ नहीं आ रही. और तब पहली बार उसे एहसास होता है कि सब कुछ काल्पनिक था, और वह केवल अतीत में जी रहा था। वह क्या करे? मैं उससे कहता हूं, मदद मांगो. प्रकाश के लिए प्रार्थना करें, और मार्गदर्शन दिया जाएगा। हमारे सत्रों में वर्णित कई दर्शन इस प्रकृति के हैं, जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर निश्चित स्थिति टूट जाती है, जिससे मिशनरियों के लिए प्रकाश और दान के क्षेत्र से रास्ता खुल जाता है।

स्व-कैद आत्माएँ

आत्माओं का एक और असंख्य वर्ग वे हैं जो अपने ही विचारों के संकीर्ण दायरे में कैद होकर रह गए हैं। मन को एक ही विचार पर स्थिर करके भौतिक शरीर छोड़ने के बाद वह विचार उनकी चेतना पर पूरी तरह कब्ज़ा कर लेता है और वे पूरी तरह से अलगाव की स्थिति में रहते हैं, जहाँ से उन्हें किसी बाहरी माध्यम से जागृत किया जाता है। यह स्थिति आत्महत्याओं और हत्यारों की आम नियति है। यह अक्सर मृत्यु के रुग्ण भय के कारण भी होता है।

फिर, इसके परिणामस्वरूप हिंसा से किसी की मृत्यु भी हो सकती है। इसके अलावा, हमने सीखा है कि मजबूत इरादों वाली आत्माओं में अपने कमजोर भाइयों को मनोवैज्ञानिक बंधन में रखने की शक्ति होती है। इस प्रकार कुशल शासक और कट्टर पुजारी कभी-कभी परलोक में अपना प्रभुत्व बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

भविष्य की स्थिति के बारे में स्वीडनबॉर्ग के बयानों का सारांश देते हुए, विलियम व्हाइट टिप्पणी करते हैं, "सदियों से पाखंडियों ने आत्माओं की दुनिया को अपना घर बना लिया था, और अपने संगठित काल्पनिक स्वर्ग, या मूर्खों के स्वर्ग में, पृथ्वी के नागरिकों और चर्च के ढोंगों को दोहराते रहे।" बड़े पैमाने पर, असंख्य पवित्र और अच्छे स्वभाव वाले मूर्खों की मदद से, जो आंतरिक चरित्र की किसी भी भावना से रहित थे, सोने के रूप में चमकने वाली हर चीज को सोने के रूप में स्वीकार करते थे।"

इन विभिन्न वर्गों के बारे में, साथ ही उन लोगों के बारे में यह कहना उचित है जो अपनी स्थिति को अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन बहुत अज्ञानी हैं, या इसे सुधारने के लिए कोई भी प्रयास करने के प्रति उदासीन हैं, कि सांसारिक माध्यम उपयोगी हो सकता है। है। न ही यह कार्य केवल आत्माओं के लिए मूल्यवान है, आत्मा-जीवन में ऐसी कोई स्थिति नहीं है जिसे टेलीपैथी और विचार हस्तांतरण के माध्यम से पृथ्वी पर प्रसारित नहीं किया जा सकता है। पुरानी धारणाओं और रीति-रिवाजों का बहुत अधिक पालन, जो मानसिक और सामाजिक सुधार के लिए इतनी बड़ी बाधा है, अदृश्य दुनिया की सीमाओं पर मौजूद पंथ-बद्ध स्थितियों के अनैच्छिक प्रभाव का पता लगाया जा सकता है।

यही बात निंदनीय बुरी प्रवृत्तियों - निराशा, आत्महत्या और इससे भी बदतर - के बारे में कही जा सकती है, जिनका प्रदूषण सांप के निशान की तरह समाज में फैल जाता है। जिन सत्रों का मैंने उल्लेख किया है, वे लगभग दस साल पहले एक ऐसे माध्यम से शुरू हुए थे, जिसे मैं श्रीमती ए कहूंगी। धीरे-धीरे ही हमें समझ में आया कि स्पिरिट होस्टेस चाहती थीं कि उनकी प्रतिभा केवल आत्मा के स्तर पर काम करने तक ही सीमित रहे। जब यह बात हमारे मन में स्पष्ट हो गई तो कार्यवाही ने व्यवस्थित रूप ले लिया और सत्रों का व्यवस्थित संचालन सामने आया।

बैठकें कभी भी एक घंटे से अधिक नहीं चलीं और अधिकतर बैठकें अध्यक्षता करने वाली आत्मा द्वारा दिए गए आशीर्वाद के साथ समाप्त हुईं। घेरे में घूमते हुए माध्यम ने दिव्य दृष्टि से आत्माओं के एक समूह को हाथ मिलाते हुए बैठे देखा। हमें आदेश दिया गया है कि "जीवन के उजाड़ स्थानों में चले जाओ और मत डरो।"

मध्यम अनुभव.

असामान्य रूप से अप्रिय अनुभव के बाद, माध्यम को अक्सर प्रकाश और सद्भाव की दुनिया के कुछ खुशहाल क्षेत्र में ले जाया जाता था, निस्संदेह अंधेरे लोगों के संपर्क के निराशाजनक प्रभावों का प्रतिकार करने के साधन के रूप में। एक अवसर पर उन्होंने खुद को प्रगतिशील लाल लोगों के समुदाय के उज्ज्वल निवास में पाया। ऐसा लग रहा था जैसे यह किसी आदिम जंगल के मध्य में बसा हो। विशाल पेड़ स्फूर्तिदायक हवा में ऊंचे उठ गए, और चमचमाते तंबूओं से होकर बर्फ की तरह सफेद, चमकदार पानी की एक हल्की धारा बह रही थी।

यह सब माध्यम ने बहुत स्पष्ट रूप से वर्णित किया, यह टिप्पणी करते हुए कि उसने किसी भी व्यक्ति को नहीं देखा। तुरंत उसने एक आवाज सुनी, "बस एक क्षण, छोटी गोरी महिला, और हम तुम्हारे साथ रहेंगे।" फिर एक महान भारतीय ने अपना परिचय दिया, उसके बाद अन्य लोगों ने अपना परिचय दिया, सभी बहुत बड़े व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत कम कहा, - मितव्ययिता उनकी जाति का एक मजबूत लक्षण है, - लेकिन उनमें से एक

चुंबकीय शक्ति निकलती थी जो सौम्य और सौहार्दपूर्ण थी, और इतनी शक्तिशाली थी कि मंडल के सभी सदस्यों ने इसका प्रभाव महसूस किया।

एक प्रश्न के उत्तर में, उन्होंने हमें बताया कि पृथ्वी और आत्मा-भूमि के निचले स्तरों तक उपचारात्मक चुंबकत्व और सामंजस्यपूर्ण प्रभाव संचारित करना उनका विशेष आध्यात्मिक मिशन था। ईश्वर, महान आत्मा, के प्रति उनकी भक्ति अत्यंत प्रभावशाली थी। उनके आचरण की शानदार मर्दानगी और दयालु विचारशीलता की भावना भी कम प्रभावशाली नहीं थी, जिसने उनके सभी कार्यों में उनका मार्गदर्शन किया। माध्यम इस शुद्ध और शांतिपूर्ण क्षेत्र से अलग होने के लिए अनिच्छुक था, और जब उसने बाहरी जीवन की चीजों के लिए अपनी आँखें और अपनी चेतना खोली, तो उसे गहरा झटका लगा।

श्रीमती ए. मध्यमता के चरण में बाहरी चेतना का पूर्ण निलंबन शामिल नहीं है; लेकिन वह अक्सर नियंत्रित करने वाली आत्माओं से इतनी प्रभावित होती है कि वह उनके तरीके और अभिव्यक्ति की सभी विशिष्टताओं को प्राप्त कर लेती है। श्रीमती बी. माध्यम हाल ही में विकसित हुआ है.

वह गहरी समाधि में चली जाती है, और अंततः उसे इस सत्र के दौरान जो कुछ भी हुआ, उसकी कोई याद नहीं रहती। हालाँकि, उसकी आत्मा पूरी तरह से जागृत प्रतीत होती है, क्योंकि वह अक्सर अदृश्य लोगों के साथ बातचीत करती है, और जो कुछ भी होता है उसमें बहुत रुचि दिखाती है।

एक फ्रांसीसी चिकित्सक की आत्मा - डॉ. फिनुइट, न कि श्रीमती पाइपर की सहकर्मी - इस महिला के माध्यम से किए गए कार्यों के विवरण की अध्यक्षता करती है। हालाँकि, वह हमें बताता है कि वह अपने से अधिक उन्नत लोगों के आदेशों के अधीन है। एक गंभीर व्यक्ति, तेज़ दिमाग और मजबूत चरित्र का, उसका उत्साह सबसे मजबूत होता है। इससे हमें अदृश्य जगत के निचले स्तरों पर जीवन के विषय में बहुत विचारोत्तेजक जानकारी प्राप्त हुई है।

जब वह पहली बार सामने आया, तो उसने हमें बताया कि वह अभी भी एक डॉक्टर है। "लेकिन, दवाओं को छोड़ दें," उसने कहा। जब उनसे उपचार की वर्तमान पद्धति के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, "दयालु विचार, सौम्य मार्गदर्शन और सूक्ष्म चुंबकीय शक्तियां।" डॉक्टर, वास्तव में, सही अर्थों में अभी भी एक वैज्ञानिक है।

उनके उपचार के तरीके पूरी तरह से वैज्ञानिक हैं और उन्हें व्यावहारिक मनोविज्ञान कहा जा सकता है, - उनकी दुनिया में मनोविज्ञान विज्ञान पर हावी है, विज्ञान और धर्म वहां एक ही चीज बन जाते हैं।

उनके काम का चरित्र अत्यंत कठिन होना चाहिए, क्योंकि वे जो मामले प्रस्तुत करते हैं वे निश्चित रूप से गंभीर हैं, - हत्यारों, आत्महत्याओं, शराबी और सभी प्रकार की अत्यधिक एकरसता के मामले। उसके पास अपने सहायक-सहायक होते हैं जिनका चयन उसे बहुत सावधानी और विवेक से करना होता है।

वे कहते हैं कि उनकी सबसे कठिन समस्या नश्वर माध्यम और जिस विशेष पदार्थ तक वे पहुंचना चाहते हैं, के बीच संपर्क लिंक बनाने के लिए आवश्यक भावना को ढूंढना है। वास्तव में, यह कठिनाई, जैसा कि वह हमें बताते हैं, आत्माओं के बचाव और देखभाल के सामान्य कार्य में मुख्य बाधा है।

अपने विकास के चरण में नेक इरादे वाली आत्माओं की एक निश्चित श्रेणी तब हतोत्साहित हो जाती है जब वे खुद को एक नश्वर माध्यम प्राणी के प्रति लगाव के माध्यम से भौतिक स्तर से जुड़ा हुआ पाते हैं। वे विचारों की संगति के प्रबल प्रभाव के आगे झुक जाते हैं और अपने पतन में अपने माध्यम को भी अपने साथ खींच लेते हैं।

हालाँकि, यह खतरा माध्यम के किसी विशेष चरण तक सीमित नहीं है, क्योंकि दो दुनियाओं के बीच संपर्क के लिए हमेशा संचार की रेखा के प्रत्येक छोर पर एक माध्यम के संयोजन की आवश्यकता होती है। यह आवश्यक स्थिति, जैसा कि डॉक्टर कहते हैं, माध्यम का सबसे बड़ा खतरा है। और यह काफी उचित लगता है.

जुनून के बारे में एक आत्मा का दृष्टिकोण.

जुनून के संबंध में, डॉक्टर हमें बताते हैं कि खतरा पृथ्वी के मानसिक वातावरण में सुन्न, सुस्त, अज्ञानी प्राणियों की भीड़ की उपस्थिति के

कारण है; विशेष रूप से वे नीच, दुष्ट और भ्रष्ट लोगों के निवास से निकलने वाली आभा से आकर्षित होते हैं। इच्छाशक्ति में ये दुखी पीड़ित इतने कमजोर हैं, बीमारी के शिकार हैं, पापपूर्ण परिस्थितियों के शिकार हैं, और लगभग आत्म-चेतना से इतने रहित हैं कि वे व्यावहारिक रूप से मात्र स्वचालित मशीन हैं। इसलिए, जब हम एक नश्वर के दायरे में "प्रवाह" करते हैं - स्वीडनबॉर्ग की अभिव्यक्ति का उपयोग करने के लिए, यह कार्य आमतौर पर पूरी तरह से अनायास होता है।

जुनून वास्तव में जुनून है. रोगग्रस्त मानसिक प्रवृत्तियाँ और, विशेष रूप से, शारीरिक स्वास्थ्य की निम्न स्थिति, ऐसी स्थितियाँ प्रदान करती हैं जो आत्मा के संक्रमण का मार्ग खोलती हैं। डॉक्टर जिस दूसरे प्रकार की आत्मा का उल्लेख करते हैं उसे संक्षेप में वे "घूमनेवाला" कहते हैं। यह शब्द सार्थक है. इस वर्ग की आत्माएं पूर्णतया उग्र हैं।

उनमें आत्म-चेतना की कमी नहीं है, लेकिन उनमें आध्यात्मिकता की इतनी कमी है, आत्मा का बीज जीवन शक्ति से इतना बंजर है, कि उनकी आंतरिक प्रकृति केवल किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सहानुभूतिपूर्ण जुड़ाव से ही प्रकट हो सकती है जो अभी भी शरीर में है। अस्तित्व की अनुशासनात्मक प्रक्रिया से गुजरना।

इसलिए, जब तक वे किसी सूक्ष्म आत्मीयता से किसी नश्वर के प्रति आकर्षित नहीं होते, वे बेचैन पथिक, निष्क्रिय और उदासीन और अक्सर शरारती होते हैं। कभी-कभी, इन भटकती आत्माओं में से एक ने हमसे मुलाकात की है। मण्डली के किसी भी सदस्य की ओर से थोड़ी सी लापरवाही अक्सर उसे माध्यम की ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त होगी। श्रीमती बी. वह उसका बहुत सौहार्दपूर्ण ढंग से स्वागत नहीं करतीं; एक से अधिक बार उसने डॉक्टर को डांटा - जो उसके लिए एक बहुत ही वास्तविक व्यक्ति था जबकि वह मंत्रमुग्ध था - उसे हस्तक्षेप करने की अनुमति देने के लिए।

जब वह पहली बार सामने आया, तो मैंने उससे पूछा कि क्या वह जानता है कि उसके दयालु दोस्त हैं जो उसकी मदद करने के अवसर के लिए उत्सुक हैं। उसने कड़वी हँसी के साथ उत्तर दिया, 4 4 मेरे जैसे टेढ़े चेहरे वाले बूढ़े आदमी की कौन परवाह करता है?” उसे जीवन एक दुखद मजाक, एक उपहास प्रतीत होता था। उन्होंने उससे कही गई किसी भी बात को गंभीरता से लेने से इनकार कर दिया। वह अधिक समय तक नहीं रुका, उसके बाद डॉक्टर आया, जिसने टिप्पणी की, "बेचारा, उसे अभी तक अपना दोस्त

नहीं मिला है/' फिर उसने आत्माओं के उस वर्ग के बारे में बयान दिया जिससे वह संबंधित था।

हालाँकि, शायद इस आदमी का मामला पूरी तरह से निराशाजनक नहीं हो सकता है, क्योंकि एक अन्य हालिया यात्रा के दौरान, जब मैंने उसे विनम्र और विचारशील होने की सलाह दी, तो उसने कहा, "क्यों, मेरी माँ ने मुझसे यही कहा होगा।" वह वर्षों पहले कहा करती थी।" इस टिप्पणी से डॉक्टर को बहुत प्रोत्साहन मिला; उन्होंने कहा कि यह आत्मा की गतिविधि की शुरुआत का संकेत है।

निर्दोषों के विध्वंसक.

हालाँकि, आध्यात्मिक जीवन के निम्नतम स्तर में वे आत्माएँ शामिल होती हैं जिन्हें "व्यक्ति के रूप में कोई अलग अस्तित्व प्राप्त होने से पहले ही पृथ्वी से बाहर निकाल दिया जाता है।" "केवल अल्पविकसित व्यक्तित्व होने के बावजूद, वे जीवित हैं, और पृथ्वी के चारों ओर एक चिपचिपा, जाल जैसा द्रव्यमान बनाते हैं। एक सत्र के दौरान श्रीमती बी को यह स्थिति दिखाई गई। यह देखकर वह भयभीत लग रही थी और बार-बार चिल्ला रही थी, "काश दुनिया को पता होता!" एक महिला जिसकी पृथ्वी पर नापाक हरकतों ने मनोवैज्ञानिक रूप से उसकी आत्मा को इस उबलती, पीड़ा से भरी भीड़ में उलझा दिया था, फिर उसने इस पर कब्ज़ा कर लिया।

फूट-फूट कर रोते हुए, उसने खुद को घुटनों पर झुका लिया, और रिहाई के लिए बहुत मार्मिक गुहार लगाई। उनके पीछे हटने के बाद, माध्यम ने कई अन्य लोगों को उसी भयानक दुर्दशा में, नरक में पीड़ित होते देखा। हमें चेतावनी दी गई है कि श्रीमती बी को मंत्रमुग्ध होने पर सोने न दें।

इसलिए, जब भी वह उनींदापन का कोई लक्षण दिखाती है जो नियंत्रण में नहीं है, तो हम उसे जागते रहने की सलाह देते हैं। एक शाम उन्हें बहुत तीखे अंदाज में यह कहना जरूरी लगा, "सोने मत जाओ."

तुरंत एक आत्मा ने उत्तर दिया, “मुझे नींद क्यों नहीं आ रही है! अगर मैं सोता, तो शायद मैं शांति, प्रकाश और पवित्रता की एक उज्ज्वल भूमि का

सपना देख सकता था। "क्या आप अंधेरे में हैं!" हमने पूछा। उत्तर था, "निम्नतम नरक में।" हालाँकि, हमें जल्द ही पता चला कि इस आत्मा का अंधेरे के क्षेत्रों में प्रवास पूरी तरह से स्वैच्छिक था।

वह अलौकिक अल्ट्रूरिया का एक मिशनरी था। जिन लोगों की भलाई के लिए उसने स्वयं को निर्वासित किया था, उनकी स्थिति उसे कितनी दुखद लगती थी; और जिस काम में वह लगे हुए थे उसमें आने वाली कठिनाइयों के बारे में उन्होंने थके हुए ढंग से बात की। उन्होंने कहा कि वह उन लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे जो "अतृप्त लालसाओं" के कारण बंधन में थे; और यह कार्य इसलिए कठिन था, क्योंकि उन्हें केवल इंद्रियों के माध्यम से ही प्रभावित किया जा सकता है। “आप यह सुनकर आश्चर्यचकित हो सकते हैं और शायद चौंक भी सकते हैं कि ये जीव, जो पृथ्वी के इतने करीब हो गए हैं, जुनून के गुलाम हैं, जब वे मर जाते हैं तो उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।

उन्हें छोटे बच्चों की संगति में रखा जाता है, जिनके पूर्ण पवित्रता के वातावरण में दागी आत्माएं बुरे विचारों से मुक्त हो जाती हैं, जबकि उनके और उनके बेदाग साथियों के बीच का अंतर उनके भीतर उनकी स्थिति का एहसास जगाता है। इस आत्मा की उपस्थिति की महानता, उसके संबोधन की वाक्पटुता, उसके द्वारा प्रदर्शित आत्म-बलिदान की प्रेरक भावना का वर्णन करना संभव नहीं है। मीडियम पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि, उसके पीछे हटने के बाद, वह अपने पैरों पर खड़ी हो गई, अपनी बाहें तेजी से फैला दीं और चिल्लाने लगी, "मत जाओ, मत जाओ! मैं तुमसे प्यार करती हूं!"

जब डॉक्टर ने सत्र के समापन से ठीक पहले खुद को प्रस्तुत किया, जैसा कि वह हमेशा करते हैं, तो उन्होंने हमारी पूछताछ के जवाब में हमें बताया, कि महान आगंतुक "अकंदर, एक अच्छी आत्मा थी जो अंधेरे की भूमि में चुने हुए लोगों से बच जाती है। "हमने टिप्पणी की कि पृथ्वी पर उनका अनुभव असाधारण रहा होगा, जो उन्हें वर्तमान कठिन कार्य के लिए उपयुक्त बनाता है।

डॉक्टर ने उत्तर दिया, "उसने हर डिग्री प्राप्त की। वह एक पादरी था; लेकिन बहुत पहले ही वह अपने चर्च की गुलामी से मुक्त हो गया था।" जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, श्रीमती. जिन मामलों का इलाज किया गया है वे बेहद गंभीर हैं।

दरअसल, महिला का साहस कभी-कभी डगमगा जाता है, क्योंकि वह आत्मा में अपने हिस्से का काम बखूबी निभाती है। इस प्रकार, एक अवसर पर, उसने विरोध किया, "मैं वहां नहीं जाना चाहती। क्या मुझे वहां जाना चाहिए - मुझे जाना चाहिए!" फिर, अनिच्छा से, वह अपनी कुर्सी से उठी और कमरे में धीरे-धीरे और सावधानी से चली, नीचे की ओर झुकते हुए, जैसे कि एक खड़ी ढलान से नीचे जा रही हो, और दोहराती रही, "मैं जाऊँगी; हाँ, मैं जाऊँगी।" आख़िरकार वह ढेर में गिर जाती है, क्योंकि उसकी खोज की अशुभ वस्तु नियंत्रण में आ जाती है।

हम उसे वापस उसकी कुर्सी पर ले गए, आत्मा पूरे समय कराहती रही और अप्रिय, समझ से बाहर की आवाजें निकालती रही। डॉक्टर, जो तुरंत उसके पीछे आया, असामान्य संतुष्टि, या यूँ कहें कि उल्लास प्रदर्शित कर रहा था। "आखिरकार, आख़िरकार," उसने कहा, "हम उस तक पहुंच गए हैं।" "यह किस प्रकार का प्राणी है?" हमने पूछा। "महाशय," उन्होंने अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति के साथ उत्तर दिया, "वह आदमी पूरी तरह से भावुक विचार या सपने में डूबा हुआ था।

उनके शक्तिशाली दिमाग से निकलने वाले हानिकारक उत्सर्जन पृथ्वी पर उनके दुखी जीवन के दौरान उनके द्वारा डाले गए प्रभाव से एक हजार गुना अधिक थे। अधिक हानिकारक एवं घृणित थे। लेकिन अब वह हमारे आमने-सामने हैं।" कोई भी स्वाभाविक रूप से मान सकता है कि ऐसा अनुभव माध्यम के शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाएगा, या उसकी सामान्य चेतना पर एक अप्रिय प्रभाव छोड़ देगा।

लेकिन ऐसा नहीं है, इसके विपरीत, सत्र शुरू होने से पहले उन्होंने एक से अधिक बार जिस सिरदर्द की शिकायत की थी, वह सत्र के अंत में पूरी तरह से गायब हो गया है, जबकि उनकी मानसिक स्थिति आमतौर पर उज्जवल और अधिक प्रसन्न है। इस महिला के साथ, श्रीमती ए की तरह, अप्रिय, निराशाजनक अनुभवों के बाद सुंदर दृश्यों या चमक के क्षेत्रों की यात्राएं होती हैं।

वह कई बार अपने पिता के निवास पर गयी है; और उनकी मित्रतापूर्ण संगति में सुंदर बगीचों और चमचमाती नदी के किनारे घूमना उसे बहुत आराम देता है।

कभी-कभी वह तेज़ रोशनी की शिकायत करती है और अपनी आँखों को अपने हाथों से ढकना ज़रूरी समझती है। "क्यों, क्या यह अजीब नहीं है,"

उसने हाल ही में टिप्पणी की, "मुझे लगा कि लोग संगीत सुनते हैं, लेकिन मैं इसे देखती हूं। यही कारण है कि मैं संगीत में हूं।" एक शाम, वह एक नाव में शांति से नदी के किनारे तैर रही थी। उसकी गोद फूलों से भरी थी; और उसने फुसफुसाते हुए बताया कि एक सफेद वस्त्रधारी आदमी धनुष पर खड़ा है।

दूसरी बार उन्होंने फूलों के एक बड़े पर्दे का वर्णन किया, जिसका रंग बैंगनी था और जिसका आकार घंटी जैसा था। प्रत्येक फूल पर एक छोटा कबूतर लटक रहा था। पर्दा खुलता है, और प्रकाश खुले में से प्रवेश करता है। दूर से उसे सफेद कपड़े पहने आकृतियों का एक समूह दिखाई देता है। वे एक मेज पर खड़े हैं जिस पर एक बड़ा नक्शा या योजना फैली हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक सम्मेलन है; लेकिन दूरी इतनी ज्यादा है कि उसे इसके मकसद के बारे में कुछ भी पता नहीं चल पा रहा है.

ननों का जुलूस.

श्रीमती बी. श्रीमती ए. हालांकि वह कभी भी टेलीविजन श्रृंखला के किसी भी सत्र में उपस्थित नहीं रही हैं, लेकिन दोनों माध्यमों के माध्यम से चित्रित स्थितियों के सामान्य चरित्र में एक उल्लेखनीय समानता है। उदाहरण के लिए, कुछ वर्ष पहले श्रीमती ए. ने ननों के एक जुलूस का वर्णन किया था। उसने कहा कि वह 'सर्कल के ठीक बीच से' गुजर रही थी। उनके हाथ जंजीरों से बंधे हुए थे, और जब वे गुज़रे तो उन्होंने हमसे उन्हें छोड़ देने की विनती की। एक अजीब स्थिति, जिसके बारे में मेरा मानना है कि स्वीडनबॉर्ग के पत्राचार के सिद्धांत द्वारा सबसे अच्छी तरह से समझाया जा सकता है, जंजीर वाले हाथ उनके आध्यात्मिक बंधन की स्थिति का एक बाहरी प्रतिनिधित्व हैं।

श्रीमती बी को इस अजीब अनुभव के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन अपने एक सत्र में उन्होंने पास खड़े ननों के एक समूह का भी वर्णन किया। "कितना अजीब है," उन्होंने टिप्पणी की, "वे सभी अपने पैरों को देख रहे हैं। मुझे आश्चर्य है कि वे क्या देख रहे हैं? क्यों, उनके पैर जंजीरों से बंधे हैं! कितना अजीब है!" दुर्भाग्य से, नशे के दौरान शारीरिक मृत्यु के

शिकार दोनों श्रृंखलाओं में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं कि वे शरीर से बाहर आ गये हैं।

कुछ लोगों को लगता है कि वे अभी भी सड़कों पर लड़खड़ाते हुए चल रहे हैं; दूसरों को लगता है कि वे अभी भी सड़कों पर लड़खड़ाते हुए चल रहे हैं। वे बेहोशी की हालत में हैं. श्रीमती ए के पास लाया गया एक आदमी अभी भी लैंप-पोस्ट पर झूल रहा था, उन्होंने ऐसी कल्पना की, और जब उससे बात की गई, तो उसने नशे की हालत में कहा कि वह "ठीक है।"

"एक भारी गिरावट से उसकी खोपड़ी टूट गई थी, और मृत्यु तत्काल होती, इतनी दृढ़ता से उसने अपना ध्यान अपने जीवन के अंतिम सचेत कार्य पर केंद्रित किया होता। इस बेचारे व्यक्ति को जगाना कोई आसान काम नहीं था। उसकी सबसे बड़ी इच्छा थी घर जाओ; लेकिन वह खुद की देखभाल करने में सक्षम होना चाहता था। जब उसे अंततः सच्चाई का एहसास हुआ, तो उसका पहला विचार उसकी माँ के बारे में था, एक धन्य विचार, - यह उसका उद्धार साबित होगा, इसलिए हमें बताया गया।

श्रीमती बी द्वारा इलाज किए गए कई आश्चर्यजनक मामलों में से एक एक युवा व्यक्ति का मामला था जो अभी भी रोमांच से पागल था। "उसका दिल अचानक धड़कने लगा," डॉक्टर ने हमें बाद में बताया; लेकिन फिर भी उन्होंने खुद को उन खुश लोगों की संगति में पाया जिनके साथ उन्होंने अपने आखिरी पल बिताए थे। उसने माध्यम को अपने कब्जे में लेते हुए जोर से कहा, 'फिर से भर दो!' और गाती है, 'हम सुबह तक घर नहीं जाएंगे.

' उसका उठा हुआ हाथ पीने का गिलास पकड़ने लगता है। वह टोस्ट पीने के लिए उत्सुक है, लेकिन यह निश्चित नहीं है कि यह किसके सम्मान में पेश किया जाएगा। "यह यहाँ है," वह चिल्लाता है, और फिर झिझकता है। वह फिर से दोहराता है, "यह यहाँ है, यह यहाँ है - मेरे लिए। हुर्रे, हुर्रे!" यह बहुत दयनीय था. हालाँकि, डॉक्टर ने हमें आश्वासन दिया कि उसकी प्रगति धीमी नहीं होगी, क्योंकि वह दिल का अच्छा था, और युवा होने के कारण, उसकी सोचने की आदतें स्थिर नहीं थीं। "बस मौज-मस्ती की भावना का एक दुखी शिकार।"

अंतिम सांसारिक विचार.

ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु के समय मन की स्थिति अक्सर अशरीरी आत्मा की तत्काल स्थिति का निर्धारण करने में सबसे शक्तिशाली कारक बन जाती है। आधुनिक अध्यात्मवाद का साहित्य इस तथ्य के प्रमाणों से भरा पड़ा है। हमारे पास ऐसी आत्माओं के मामले हैं जो पृथ्वी पर अपने मन में चल रहे अंतिम विचार में लीन थीं - मानो कैद कर ली गई हों - और उन्हें बड़ी संख्या में हमारे पास लाया गया है। उन सबका वर्णन करने के लिए एक पुस्तक की आवश्यकता होगी।

एक व्यक्ति जिसके क्षेत्र की श्रीमती थी, उसके विचारों को पढ़कर माध्यम को पता चल गया कि वह गबन करने वाला है। वह अटकलों में गहराई से शामिल हो गया। ओह, उसे रहस्योद्घाटन का कितना डर था! नाविक, जिनके मन अभी भी जहाज़ के डूबने के डर से भरे हुए थे, अक्सर आते रहते थे। चालक दल के एक सदस्य ने सोचा कि वे अभी भी जीवनरक्षक नौका में हैं।

श्रीमती ए अपने क्षेत्र में इतनी गहराई तक घुस गईं कि मलबे का पूरा दृश्य उनकी दृष्टि में स्पष्ट हो गया; और पानी के विशाल पहाड़ों और खतरनाक रूप से भरी नाव के बारे में उनका वर्णन बेहद सजीव था। कभी-कभी किसी को डूबते हुए जहाज़ की झलक मिल जाती थी। उन समुद्री कप्तानों की दृढ़ निष्ठा कितनी प्रशंसनीय है जिनके अधिकार क्षेत्र में हमें लाया गया है।

उन्हें मृत्यु का भय नहीं रहता; केवल अपने प्रभार के प्रति निष्ठावान रहने का संकल्प है। और जब कभी-कभी बड़ी कठिनाई से हम उनके मन को उनकी भक्ति के विषय से हटाने में सफल होते हैं, तो उनके विचारों को नियंत्रित करने वाली मर्दाना भक्ति की भावना सबसे अधिक मार्मिक होती है।

डॉक्टर हमें बताते हैं कि अभिनेता - विशेष रूप से अच्छे अभिनेता, उन्होंने यह जोड़ने में सावधानी बरती - अक्सर, आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने पर, इस तरह से गहराई से शामिल हो जाते हैं क्योंकि मंच पर उनके द्वारा निभाए गए पात्रों के कारण, उनका अपना व्यक्तित्व कुछ हद तक छिपा रहता है। या पूरी तरह से. ऐसे में गिरे हुए लोगों तक पहुंचना बेहद मुश्किल होता है. कभी-कभी, वास्तव में, वास्तविक आत्म-पहचान का चयन करना लगभग असंभव होता है।

हत्यारों की हालत.

अगर मैं हत्यारों की स्थिति का संक्षेप में वर्णन करूँ तो क्या मेरे पाठक चौंक जायेंगे? स्वाभाविक रूप से, उनकी स्थिति दर्दनाक भयावहता में से एक है। कभी-कभी यह घटना ही होती है जो उनके मन से बाकी सभी विचारों को मिटा देती है। जो लोग मारे जाते हैं वे अक्सर अपने साथ मृत्यु का अत्यधिक भय लेकर आते हैं। कभी-कभी, वे अभी भी लटके हुए महसूस करते हैं। मृत्युदंड प्रकृति के विरुद्ध इतना पाप है कि इसके बारे में सोचना भी क्रूर है।

दूसरे लोग अपने अपराध से उत्पन्न किसी भयानक कल्पना में खोये रहते हैं; हो सकता है कि वे अपने शिकार को दफना रहे हों या छिपा रहे हों, या पीछा करने से भाग रहे हों। श्रीमती ए को एक ऐसे व्यक्ति के दायरे में ले जाया गया जिसने खुद को एक छोटी सी झोपड़ी की खिड़की से बाहर झाँकते हुए इतना भयानक दृश्य देखा कि उसके रोंगटे खड़े हो गए। यह अपने शिकार की लाश थी जिस पर उसकी नजरें टिकी हुई थीं.

धीरे-धीरे भयानक भूत फर्श से उठता, उसे घूरता और फिर धीरे-धीरे वापस नीचे डूब जाता। हम यह नहीं जान सके कि यह दुखी आत्मा कितने समय तक उस पीड़ादायक यातना की स्थिति में रही, क्योंकि माध्यम उसकी स्थिति में इतनी गहराई तक प्रवेश कर चुका था कि वह स्वयं भय और कमजोरी से लगभग बेहोश हो गई थी, और हमें बैठक समाप्त करनी पड़ी। मजबूरन करना पड़ा.

हालाँकि, इससे पहले हम उस भयानक जादू को तोड़ने में सफल नहीं हुए थे। जब आदमी को एहसास हुआ कि वह मुक्त हो गया है, तो वह भाग गया साथ शिकार किये गये हिरण की गति. एक अन्य व्यक्ति, जिसने बार-रूम विवाद के दौरान अपने शिकार को चाकू मार दिया था, उसने कल्पना की कि वह घटनास्थल के बीच में बेसुध पड़ा हुआ है। माध्यम ने यह सब बहुत स्पष्ट रूप से देखा - उलटी हुई कुर्सियाँ और मेजें, उड़ते हुए शीशे, शोर और सामान्य भ्रम।

जागने और अपनी वास्तविक स्थिति को समझने के बाद, इस अभागे आदमी ने फुसफुसाते हुए हमसे विनती की कि हम "बूढ़ी माँ" को इस मामले के बारे में कुछ भी न बताएं। एक अवसर पर, इस वर्ग की एक आत्मा को मुक्त करने के बाद, हमने डॉक्टर से पूछा कि उसकी वर्तमान स्थिति क्या है।

उन्होंने उत्तर दिया, "वह आदमी अभी एक कमरे में है; दरवाजा खुलता है और एक छोटा बच्चा प्रवेश करता है। वह हाथ बढ़ाकर कहती है, 'पापा, हम सब आपके आने से प्रसन्न हैं।' हालाँकि, वह आदमी अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लेता है और चिल्लाता है, 'नहीं, नहीं, नहीं!' विवेक को बचा लिया गया.

जुआरी की नियति.

एक शाम जुआरी को श्रीमती बी के पास लाया गया और उसने इस तथ्य का एक प्रभावशाली उदाहरण दिया कि आत्माओं को हमेशा बाहरी पहलुओं और परिस्थितियों से सही ढंग से नहीं आंका जा सकता है। माध्यम, इस भावना से नियंत्रित होकर, अपनी कुर्सी को मेज के करीब खींचता है, ऐसा व्यवहार करता है मानो वह ताश के खेल में लीन हो। "नौ बज गए हैं," वह कहती है, और ख़ुशी से मेज पर एक काल्पनिक कार्ड फेंक देती है।

पहले तो वह शख्स गेम में इतना मशगूल था कि उसने हमारी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया. हालाँकि, उन्हें जल्द ही दिलचस्पी हो गई और जब हमने सुझाव दिया कि उन्हें अब खुद को नए जीवन के लिए तैयार करना चाहिए, तो उन्होंने चिल्लाकर कहा, "नया जीवन, 'नया जीवन', क्या आपने कहा - क्या मेरे लिए कोई नया जीवन है?"

धीरे-धीरे मध्यमा अपने घुटनों पर बैठ जाती है और प्रार्थना में हाथ जोड़ लेती है। फिर वह अपने हाथ फैलाकर सीधी खड़ी हो जाती है। वह परमानंद की मुद्रा में हाथ जोड़कर कहती है, 4 'प्रकाश-प्रकाश!' जब परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं तो श्रीमति अक्सर एक ही बैठक में दस से अधिक मामलों का निपटारा कर देती हैं। डॉक्टर जिस काम के लिए खुद को समर्पित करते हैं उसमें अथक परिश्रम करते हैं, चाहे वह काम कितना भी कठिन क्यों न हो। जब उनसे पूछा गया कि क्या ऐसी परिस्थितियाँ आम थीं, जैसा कि

मैंने पिछले पृष्ठों में वर्णित किया है, तो उन्होंने उत्तर दिया, 'उसका नाम सेना है।'

हालाँकि, एक का बचाव आम तौर पर समान स्थिति में दूसरों की रिहाई का रास्ता खोलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें उम्मीद है कि अंततः उच्च क्षेत्रों में काम करने वाले लोग पृथ्वी से प्रस्थान करने वाली प्रत्येक आत्मा तक तुरंत पहुंच पाने की स्थिति में होंगे। हालाँकि, इस बीच, बहुत बड़ा काम किया जाना बाकी है;

और वह अक्सर यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि माध्यमों को इस तथ्य का एहसास कराया जा सकता है कि वे प्रकृति की सबसे नाजुक प्रक्रिया के बारे में मानवता के ज्ञान के लिए जिम्मेदार हैं, अर्थात्, आत्मा को उसके भौतिक निवास से अलग करना और अस्तित्व की आध्यात्मिक स्थिति के लिए उसका अनुकूलन। . सदियों पुरानी अज्ञानता के परिणामों पर काबू पाने में सबसे मूल्यवान सहायता प्रदान करने में सक्षम हैं। निम्नलिखित विवरण श्रीमती ए द्वारा एक माध्यम के रूप में आयोजित कई सत्रों के रिकॉर्ड से लिए गए हैं:

एक काला रसातल.

एक आत्मा अचानक माध्यम पर कब्ज़ा कर लेती है और उसे यह बताने के लिए विनती करती है कि वह अपने चारों ओर के अंधेरे से कैसे मुक्त हो सकता है। बिना किसी चेतावनी के, एक पल में, वह कहता है कि उसे तोप से काली खाई में फेंक दिया गया था। वह चिल्लाता है कि उसका दम घुट रहा है, और हमसे मदद की गुहार लगाता है। "मेरे लिए प्रार्थना करें!" वह बार-बार चिल्लाता है.

अपने समय से पहले आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश किया।

एक गरीब महिला आराम की भीख मांगती हुई आती है। वह कबूल करती है कि उसने खुद को समय से पहले आध्यात्मिक जीवन में धकेल दिया, और कहती है कि वह तब से बिना आराम के भटक रही है। वह कीचड़ भरे दलदलों, पत्थरों और झाड़ियों से भरी अंधेरी और ऊबड़-खाबड़ ज़मीन से होकर गुज़री है। उसके पैरों में दर्द है, वह थकी हुई है, और ओह, वह बहुत अकेली है! दूर-दूर तक फैले हरे-भरे खेत और चमकते जंगल; हालाँकि उनकी यात्रा लंबी और कठिन थी, फिर भी वह चमकता हुआ देश उनके करीब नहीं लगता था।

जैसे ही वह बोल रही थी, ऐसा लग रहा था कि वह एक दलदल में खड़ी है, जहाँ लंबी, खुरदरी घास लगभग उसके सिर के स्तर पर है। उसने हाथ उठाकर मदद की गुहार लगाई। अचानक, घास गायब हो गई, ज़मीन ठोस और सूखी हो गई, और उस पर एक रोशनी गिरी, जिससे एक संकीर्ण रास्ता दिखाई देने लगा। माध्यम की दृष्टि से दृश्य गायब हो जाता है, जबकि महिला खुश होती है कि आखिरकार रास्ता साफ हो गया है।

अभी भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं**.**

यह दृश्य एक थिएटर मंच है। सभागार दिखाई नहीं दे रहा है, लेकिन फ़ुटलाइट स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हैं। बोर्ड पर एक आदमी दिखाई देता है जो मैकबेथ की भूमिका निभाने में पूरी तरह से लीन है। वह गंभीरता की प्रतिमूर्ति हैं. उनकी अभिव्यक्तियाँ लगभग हास्यप्रद रूप से दुखद हैं। जब वह चिल्लाता है, "इसे दूर ले जाओ, मैकडफ," मैकडफ प्रकट होता है, और एक भयंकर तलवार लड़ाई शुरू हो जाती है। अचानक मैकबेथ अपनी तलवार गिरा देता है और आश्चर्य से अपने प्रतिद्वंद्वी को देखता है; क्योंकि वह मैकडफ में एक प्रिय मित्र और साथी को पहचानता है जिसे वह "मृत" जानता है। सत्य उसके सामने तुरंत प्रकट हो जाता है; वह मृत व्यक्ति का हाथ लेता है, और वे हाथ में हाथ डालकर दृष्टि से ओझल हो जाते हैं।

यह बताया गया है कि मैकडफ की भूमिका निभाने वाली आत्मा, उसके स्नेह की तीव्रता से प्रेरित होकर, लंबे समय से अपने दोस्त के अत्यंत सकारात्मक क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास कर रही थी, और बैंड की सहायता मांगने के बाद, उसने उसे स्वीकार कर लिया था। अपने स्वाभाविक तरीके से. परिचय में मदद की.

"मंच पर आघात।"

मीडियम का कहना है कि वह थिएटर स्टेज पर हैं। विभिन्न दृश्य, "एज़ यू लाइक इट" में आर्डेन का जंगल और अन्य दृश्य जो उसने पहले कभी नहीं देखे थे, उसकी दृष्टि के सामने तेजी से गुज़रते हैं। उसके सामने एक आदमी नाटकीय मुद्रा में खड़ा है. उसने एक बहुत बड़ी ढीली टोपी पहन रखी है; उसके कंधों पर एक बड़ा काला लबादा लिपटा हुआ है। मंडली में से एक ने टिप्पणी की कि वह आदमी शायद एक अभिनेता है।

वह उत्तर देता है, हाँ, और मैं अभिनय भी कर सकता हूँ; और "भीड़ की तालियाँ" के बारे में शान से बोलता है। आगे-पीछे घूमते हुए, वह शेखी बघारते हुए शेक्सपियर के कुछ अंश सुनाता है। "मैं एक दुखी डेन हूं," वह घोषणा करता है।

मनुष्य को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि वह अस्तित्व की किसी अन्य अवस्था में है; और जब उनसे पूछा गया कि क्या वह अपने जीवन से थके हुए नहीं हैं, तो उन्होंने जवाब दिया "नहीं, नहीं, यह बहुत अच्छा है।" हालाँकि, कुछ समय बाद माध्यम को पता चलता है कि उसे संदेह होने लगता है कि चीजें वैसी नहीं हैं जैसा वह मानता है।

फिर वह मंच आकर्षण जिसके साथ वह खुद को घेरने में सफल रहा है, धीरे-धीरे गायब हो जाता है। उसका आकार बहुत छोटा हो गया है, जबकि उसकी मंच पोशाक फटे कपड़ों में बदल गई है।

माध्यम को उसकी शक्ल घृणित लगती है और उसका असली चरित्र उजागर हो जाता है। वह कहती है, “क्यों, यह आदमी तो पूरा पाखंडी है।”

वह क्रोधित हो जाता है, फिर भी भय से भयभीत हो जाता है और माध्यम से ऐसे चिपक जाता है जैसे कोई आदमी खाई के किनारे से चिपक जाता है। उसे वापस ले जाने के बाद, हमें बताया गया कि वह अब अपनी अभिभावक आत्मा की पहुंच में है, और उसे अपनी वास्तविक स्थिति के बारे में पता चल गया है। शम्स जल्द ही गायब अमर लोकों में.

एक अच्छी महिला की उपस्थिति,

एक बड़ी, प्रतिष्ठित महिला अपना परिचय देती है। वह एक विशाल घेरा स्कर्ट के ऊपर एक काले रंग की पानी जैसी रेशमी पोशाक पहनती है। उसके गहनों से सजे हाथों पर लेस वाले दस्ताने हैं। उनके बालों को पिछली शताब्दी के मध्य में स्टाइल किया गया था। अपने व्यवहार में तिरस्कारपूर्ण होने के कारण, उसे लगता है कि उसकी सामाजिक स्थिति के कारण उसके साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जा रहा है। हम उसे आश्वस्त करते हैं कि हमें उसका अनादर करने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन सुझाव देते हैं कि आध्यात्मिक दुनिया में, जिसका वह अब निवासी है, पृथ्वी के कृत्रिम सामाजिक मानक अब प्रचलित नहीं हैं।

इसके विपरीत, लोगों को चरित्र और उपलब्धि के आंतरिक मूल्य के अनुसार मापा जाता है। जब हम विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं तो वह स्पष्ट रूप से सुनती है। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे उसकी आत्मा की धारणाएँ जागृत होती हैं, अहंकारपूर्ण व्यवहार गायब हो जाता है; और अंत में उसकी बड़ी स्कर्ट गिर जाती है, वह "पूरी तरह सिकुड़ जाती है।" अत्यंत दयनीय स्वरूप प्रस्तुत करता है।

मीडियम को लगता है कि उसके कई साथी हैं. ऐसा लगता है कि ये आत्माएं लंबे समय से तुच्छ मनोरंजन और खोखले सामाजिक अनुष्ठानों में व्यस्त थीं जो पृथ्वी पर उनके सभी विचारों पर हावी थीं।

हालाँकि, कुछ ही समय में, स्थिति असहनीय रूप से निराशाजनक हो गई थी। वे कुछ नया करने के लिए उत्सुक थे, और परिवर्तन की उनकी प्रबल इच्छा ही थी जिसने आध्यात्मिक कार्यकर्ताओं को अपने क्षेत्र में प्रवेश

करने में सक्षम बनाया। हालाँकि, अब भी, सभी अपनी स्थिति की झूठी वास्तविकता का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं।

आराम का एक सज्जन.

यह दृश्य शहर की एक सड़क का है। रात का समय है और ज़मीन पर भारी बर्फ़ गिर रही है। एक आदमी एक बड़े घर के दरवाजे पर खड़ा है। वह घर के लोगों को जगाने की कोशिश कर रहा है और काफी अधीर नजर आ रहा है. जब माध्यम ने उसे पहली बार देखा, तो उसने फटे हुए कपड़े पहने हुए थे और उसका शरीर सिकुड़ा हुआ दिखाई दे रहा था; हालाँकि, जब हम उससे बात करते हैं, तो वह एक अच्छे दिखने वाले सज्जन व्यक्ति में बदल जाता है, जिसने स्टाइलिश कपड़े पहने होते हैं। हम उससे पूछते हैं कि यह किसका घर है जो वह अंदर जाने के लिए इतना उत्सुक है।

वह जवाब देता है, "क्यों, यह मेरा घर है और मुझे समझ नहीं आता कि वे मेरे लिए दरवाज़ा क्यों नहीं खोलते।" उससे बात न करने के लिए माफी मांगने के बाद हमें पता चला कि वह शाम कुछ दोस्तों के साथ बिता रहा है। वह कहते हैं, "मेरे कोचमैन का एक्सीडेंट हो गया था, इसलिए मैंने सोचा कि मैं पैदल घर चला जाऊंगा; और अब मैं अंदर नहीं जा सकता।" फिर निम्नलिखित संवाद शुरू होता है: "क्या आप हाल ही में किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित नहीं हैं!" "नहीं साहब।" "किसी भी प्रकार का कोई आश्चर्यजनक हमला नहीं!" “ओह, हाँ, थोड़ा चक्कर आ गया, लेकिन कोई फ़र्क नहीं पड़ा।” "शायद यह आपकी कल्पना से कहीं अधिक गंभीर था!"

आपका क्या मतलब है श्रीमान! - हम उसे बताते हैं कि उसने भौतिक शरीर छोड़ दिया है, लेकिन वह इस बात को मानने से बिल्कुल इनकार कर देता है। “क्यों सर, मैं जीवित हूँ, और यहाँ मेरा घर है! "जब यह सुझाव दिया जाता है कि उसका घर केवल उसी चीज़ से बना है जिससे सपने बनते हैं, तो वह कहता है, "ओह, सपने कुछ भी नहीं हैं!" अचानक, वह चिल्लाता है, “मेरा घर कहाँ है! मैं इसे नहीं देख सकता. वह चला गया। मैं कहाँ हूँ!" हम दोहराते हैं कि वह आध्यात्मिक दुनिया में है, और जोड़ते हैं कि अच्छे दोस्त उसे नए जीवन के लिए तैयार करने के लिए उत्सुक हैं।

लेकिन मैं मरना नहीं चाहता," वह रोते हुए कहता है, "मैं धरती पर रहकर संतुष्ट हूं।" “प्रकृति ने अन्यथा निर्णय लिया है,” हम सुझाव देते हैं, “और बदली हुई परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने के लिए मर्दाना प्रयास करना बुद्धिमानी होगी। मान लीजिए कि अचानक आई वित्तीय आपदा से आपकी सारी संपत्ति बह गई।” “ऐसा नहीं हो सकता था,” वह जवाब देता है, “और आप मेरी स्थिति को नहीं समझ सकते, अन्यथा आप मुझसे इस तरह बात नहीं करते।

आप यह नहीं समझ सकते कि मेरे पास सुख-सुविधाएँ, एक अच्छा घर, मेरी देखभाल के लिए नौकर, घोड़े और गाड़ियाँ और मित्रवत मित्र होना कैसा होता था।” जब हम पूछते हैं कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो पहले जा चुका हो, जिसकी यादें वह संजोकर रखता हो और जिससे वह दोबारा मिलना चाहता हो, तो वह अभागा व्यक्ति पूरी तरह से टूट जाता है और कुछ देर के लिए चुप हो जाता है।

हालाँकि, कुछ समय बाद, वह उत्तर देता है, 44हाँ, एक व्यक्ति था जिसे मैं वर्षों पहले बहुत प्यार करता था; लेकिन वो मुझसे दूर चली गयी. ओह! अगर वह नहीं गई होती तो मैं कितना अलग आदमी होता!” जैसे ही वह ये शब्द बोलता है, माध्यम को दूर से एक खूबसूरत महिला आकृति दिखाई देती है, जो 44 साल की है और सफेद कपड़े पहने हुई है। जब वह उस प्रेत का वर्णन करती है, तो आदमी भावुक हो जाता है। "थोड़ी देर के लिए," वह एकालाप करता है, "जब उसने मुझे छोड़ दिया, तो मुझे लगा कि वह करीब थी।

अक्सर जब मैं अपने कमरे में अकेला होता तो मुझे ऐसा महसूस होता कि मैं उसे देख रहा हूँ; लेकिन मैंने इसे एक कल्पना के रूप में अपने से दूर कर दिया।" सांत्वना के शब्द उन्हें संबोधित थे, और आध्यात्मिक कार्यकर्ताओं ने हमें सूचित किया कि वह जाग गए हैं, हमारा काम पूरा हो गया है। माध्यम को इस दुखी आत्मा की आखिरी सांस दी गई थी। एक झलक मिली , वह एक कोने में सिमटा हुआ लग रहा था।

बाधित मास.

एक रोमन कैथोलिक चर्च के आंतरिक भाग ने माध्यम का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। एक पुजारी वेदी पर खड़ा होता है और प्रार्थना की तैयारी करता है। चर्च का पूरा भाग परिचारकों से भरा हुआ है। ऐसा लगता है कि

पुजारी को हमारी उपस्थिति के बारे में पता है और वह हमें चिढ़कर देखता है जैसे कि वह कोई घुसपैठिया हो। हम उससे पूछते हैं कि क्या वह अपने लोगों को वह सिखा रहा है जो आध्यात्मिक प्राणियों के रूप में उनके विकास को बढ़ावा देगा। वह गर्मजोशी से उत्तर देता है कि वह सच्चे चर्च के सिद्धांत सिखाता है। अब मंडली इस विवाद में दिलचस्पी दिखा रही है.

जैसे-जैसे उत्तेजना बढ़ती है, कई पुजारी घटनास्थल की ओर दौड़ पड़ते हैं, उनमें से एक बड़ा दिखने वाला आदमी होता है जो दूसरों के रोकने की कोशिशों के बावजूद आगे बढ़ता है। वह लोगों को संबोधित करते हैं, उनसे उन जंजीरों को तोड़ने का अनुरोध करते हैं जो उनकी आत्माओं को बंधन में रखती हैं, और उस दरवाजे की ओर इशारा करते हैं जिसकी ओर वह चलते हैं, उन सभी को आमंत्रित करते हैं जो बंधन से बचने के लिए उनके साथ जुड़ना चाहते हैं जो उन्हें सच्चाई से दूर रखता है। आध्यात्मिक जीवन।

बहुत से लोग उठकर उसके पीछे हो लेते हैं; वे इमारत से बाहर निकलते हैं, और उन्हें हरे-भरे खेतों से गुजरते हुए देखा जा सकता है, जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं सब कुछ उज्जवल होता जाता है। हालाँकि, बहुत से लोग पीछे छूट गए हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि जो कुछ भी घटित हुआ है उसके प्रति पूर्ण उदासीनता की स्थिति में हैं।

धर्मशास्त्रीय कट्टरता से बचाया गया।

एक व्यक्ति, माध्यम से बोलते हुए, टिप्पणी करता है, "मुझे लगता है कि मैं यहां आकर प्रगति के नियम के बारे में कुछ सीख सकता हूं।" 44 हाँ," हम उत्तर देते हैं, "आत्मा की प्रगति एक महान और गौरवशाली तथ्य है।" "अगर यह सच है," वह जवाब देते हैं, "यह वास्तव में एक आश्चर्यजनक तथ्य है।" "और गौरवशाली," हम सुझाव देते हैं। लेकिन वह इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है, क्योंकि वह अभी भी पुराने धर्मशास्त्र के प्रति वफादार रहने की ओर झुका हुआ है। माध्यम अब समझता है कि वह कई व्यक्तियों में से एक है।

वे घने कोहरे से घिरे हुए हैं, जो निस्संदेह उनकी कट्टरता का प्रतिनिधित्व करता है। घने बादलों के ठीक पीछे एक उज्ज्वल और सुंदर देश फैला हुआ है - इसे आज़माएँ। एक आदमी पहाड़ी ढलान से नीचे उतरता नजर आ रहा है. वह बादल के पास जाता है और उदाहरण के तौर पर फूल का उपयोग करते हुए आध्यात्मिक रहस्योद्घाटन के विषय पर एक काव्यात्मक

संबोधन देता है। उसका सिर मुंडा हुआ है, और उसने एक भिक्षु की पोशाक, एक लंबा ग्रे गाउन और कमर पर एक डोरीदार बेल्ट पहना हुआ है।

अपना संबोधन समाप्त करने के बाद, हमने उनसे पूछा कि क्या वह किसी चर्च के सदस्य हैं। वह उत्तर देता है, "यीशु का समाज; लेकिन अब और नहीं।" और आगे कहते हैं, "किसी को दोष मत दो।" हमें अलविदा कहते हुए, वह उस आदमी के कंधे पर अपना हाथ रखता है जिसने पहले बात की थी, और वे दोनों एक साथ पहाड़ी की ओर चलते हैं, और धीरे-धीरे माध्यम की नज़रों से ओझल हो जाते हैं।

क़यामत के दिन का इंतज़ार कर रहे हैं.

माध्यम का कहना है कि वह एक पुराने महल के खंडहरों के बीच है। क्षय और वीरानी हर जगह स्पष्ट है, जबकि ढहती इमारतों की ऊंची दीवारें दृश्य पर निराशाजनक छाया डालती प्रतीत होती हैं। इस वीरान जगह पर सैनिकों का एक समूह डेरा डाले हुए है. कुछ लोग ज़मीन पर बेहोश पड़े हैं, कुछ लोग गिरे हुए पत्थरों और सड़ते मलबे के बीच आगे-पीछे चल रहे हैं। हम नेता के बारे में पूछते हैं और तुरंत एक आदमी अपना परिचय देता है।

वह बड़ी निराशा व्यक्त करते हुए हाथ जोड़कर और सिर झुकाए खड़ा है। हमने पूछा, "अभी आप किस सेवा में हैं?" "बिल्कुल नहीं," उन्होंने उत्तर दिया। "हम बस इंतज़ार कर रहे हैं।" "आप किस का इंतजार कर रहे हैं!" "अंतिम तुरही की ध्वनि के लिए।" "क्या तुम्हें यकीन है कि तुरही कभी बजेगी!" "मुझे ऐसा सिखाया गया है और मैंने कभी इस शिक्षा पर सवाल नहीं उठाया है।" हमने धीरे से उसे सुझाव दिया कि वह एक दुखद गलती में फंस गया है, और उसे उन गलत धारणाओं को त्यागने की सलाह दी जो उसे और उसके लोगों को दूर रखने का साधन थीं।

सच्चे आध्यात्मिक जीवन की वास्तविकताएँ और गतिविधियाँ, जो निरंतर विकास में से एक है। वह पूछता है, "मुझे कैसे पता चलेगा कि आप जो कहते हैं वह सच है।" हम उसे बताते हैं कि ज्ञान बुद्धिमान और अच्छे प्राणियों - ज्ञान के स्वर्गदूतों से प्रसारित हुआ है, जो इस बात से चिंतित हैं कि अंधेरे या अज्ञानता और झूठ में रहने वाले सभी लोगों को जल्दी से सच्चाई सीखनी चाहिए। उस व्यक्ति ने आश्चर्यजनक, लगभग अविश्वसनीय बुद्धि वाले व्यक्ति की तरह व्यवहार किया, और उसकी

भाषा और व्यवहार से संकेत मिलता था कि वह सामान्य था। चरित्र और संस्कृति से परे एक व्यक्ति था. वह अब प्रगति करेगा.

आध्यात्मिक जीवन में एक पादरी।

माध्यम ने सबसे पहले एक छोटी मेज या पढ़ने की मेज देखी, जिस पर एक खुली किताब रखी हुई थी, जो बाइबिल की तरह दिख रही थी, और सुनहरे किनारों के साथ लचीले चमड़े में बंधी हुई थी। एक आदमी का हाथ यूं ही एक किताब पर टिका हुआ था। डेस्क उसकी नज़रों से ओझल हो गई और फिर उसने घेरे के ठीक बीच में एक आदमी को बैठे देखा। उसके पैर क्रॉस किए हुए थे, और उसकी उंगलियों के चारों ओर एक चश्मा घूम रहा था। उनके व्यवहार से (संभवतः अनुमानित) ऊब का संकेत मिलता था।

माध्यम ने उन्हें "एक पुजारी की तरह कपड़े पहने हुए - एक एपिस्कोपल मंत्री" के रूप में वर्णित किया। "पादरी," उसने शब्द का बहुत सटीक उच्चारण करते हुए त्वरित सुधार का सुझाव दिया। हमने संकेत दिया कि हमें उनके साथ बातचीत करने में खुशी होगी। कुछ झिझक के बाद उन्होंने हमें बताया कि वे अध्यात्मवाद के संबंध में कुछ सीखने आए हैं; इस घोषणा को करने का उनका तरीका अहंकारपूर्ण था, जिसमें अध्यात्मवाद का उच्चारण उपहास के साथ किया जाता था। यह अनुमान लगाते हुए कि उस व्यक्ति को अभी तक पता नहीं चला होगा कि उसकी मृत्यु हो गई है, हमने विस्तार से बताया

परिवर्तन की अद्भुत स्वाभाविकता पर, जो इस कारण से अक्सर व्यक्ति को इसके बारे में पता चले बिना होता है। लेकिन उन्होंने कहा, "ओह, मैं यह सब अच्छी तरह से जानता हूं। सच्चाई यह है कि मेरे कई अनुयायी यहां मेरे साथ हैं, और मैं उन्हें यह निर्देशित करने में असमर्थ हूं कि उन्हें कैसे आगे बढ़ना है; क्योंकि निश्चित रूप से उससे कुछ अधिक होना चाहिए।" "संकीर्ण है दरवाजा" आदि का हवाला देते हुए, यह सुझाव दिया गया कि केवल आत्म-बलिदान के माध्यम से ही आध्यात्मिक प्रगति हासिल की जा सकती है - केवल आत्म-दंभ के त्याग से ही आंतरिक प्रकृति को पर्याप्त रूप से सक्रिय किया जा सकता है .

ताकि वह उस प्रकाश को पहचान सके जो तीर्थयात्री के कदमों को उस द्वार तक ले जाता है जो सच्चे जीवन की ओर खुलता है। उसे लगा कि यह सच है, और वह इसका पूरा महत्व समझने लगा था। हमने उसे सलाह दी कि

वह अपना अभिमान त्याग दे और अपनी अज्ञानता की स्पष्ट स्वीकारोक्ति के साथ अपने लोगों के पास जाए।

इस तरह उसे आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होगी जो उन सभी को प्रकाश की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त होगी। उसके ढंग में अब कोई अवमानना न थी; और "नेतृत्व" शब्द उन्हें बहुत अपमानजनक लगा। "नहीं," उसने कड़वाहट से कहा, "मैं उन्हें नहीं लूंगा, बल्कि उनमें से एक के रूप में जाऊंगा।"

आनंद का महल.

जब मैं अदृश्य लेखा परीक्षकों को संबोधित सामान्य प्रारंभिक टिप्पणियाँ कर रहा था, तो माध्यम ने एक व्यक्ति को गुस्से में चिल्लाते हुए सुना, "आप यहां आने की कोशिश न करें। हमारे पास आपकी किसी भी बकवास के लिए समय नहीं है।" वह एक प्रकार के "आनंद महल" के प्रवेश द्वार पर खड़ा था। यह एक भव्य आयोजन था, और बड़े पैमाने पर कांच से निर्मित होने के कारण, महल का आंतरिक भाग स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

भव्य सजावट, और ताड़ के पेड़ और अन्य उष्णकटिबंधीय पौधे असंख्य चमकदार रोशनी की चकाचौंध में एक शानदार प्रदर्शन कर रहे थे। जैसे ही माध्यम इस विवरण को समाप्त करता है, "सनसेट", एक उज्ज्वल परिचारिका भावना, अपनी उपस्थिति प्रकट करती है, और हमें उस व्यक्ति को दूर भगाने के लिए असामान्य गर्मजोशी से आग्रह करती है जो उस स्थान के प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर रहा था। उन्होंने कहा, "उस व्यक्ति को अब उन दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं को अपनी स्वार्थी इच्छा के अधीन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।" "उसे मारो!"

अनंत अच्छाई और शक्ति के नाम पर, हमने उसे एक तरफ खड़े होने का आदेश दिया। उसके अपराध बोध ने उसे कायर बना दिया, उसकी ताकत ख़त्म हो गई और वह डर के मारे ज़मीन पर गिर पड़ा। दरवाजे खुल गये और वहाँ के निवासी तेजी से सीढ़ियों से नीचे भाग गये। उनमें से अधिकांश महिलाएँ थीं, जिनके चेहरे रंगे हुए थे और उन्होंने सभी प्रकार की भड़कीली पोशाकें पहन रखी थीं। उनमें से एक ने खुशी और कृतज्ञता व्यक्त करते हुए हमें संबोधित किया कि मुक्ति का समय आखिरकार आ गया है। उन्होंने कहा, वे लंबे समय से अपने जीवन से थक चुके थे, लेकिन उस व्यक्ति का उन पर इतना प्रभाव था कि वे बच नहीं सके।

वास्तव में, भले ही वे अलग होने में सफल भी हो गए हों, लेकिन उन्हें शायद ही पता होगा कि आगे कैसे बढ़ना है। और अब, हालाँकि वे सभी अपनी स्थिति में सुधार के अवसर के लिए बहुत उत्सुक थे, उन्हें लगा कि जीवन की अपनी पुरानी आदतों की गुलामी से मुक्त होना आसान नहीं होगा। इस विचित्र क्षेत्र से माध्यम हटने से पहले ही संरचना पूरी तरह से गायब हो गई थी।

कीचड़ की एक झील.

माध्यम कहता है, "यह बहुत अंधेरा है, और माहौल भारी और दमनकारी है।" ऐसा लगता है मानो वह किसी बड़े ब्लैक होल के किनारे पर खड़ी हो. उसकी गहराई में झाँककर उसे काली मिट्टी का ढेर दिखाई देता है। "क्यों, वहाँ लोग हैं," वह भयभीत होकर कहती है। "वे बस इसमें लोट-पोट हो रहे हैं।" हम उनके लाभ के लिए धर्मग्रंथों को उद्धृत करते हैं, "प्रकाश अंधकार में चमकता है, लेकिन अंधकार उसे समझ नहीं सकता।" वे अपने चेहरे पर हाथ रखकर चिल्लाते हैं, “नहीं, नहीं, रोशनी नहीं; हम रोशनी बर्दाश्त नहीं कर सकते!”

हमारा सुझाव है कि यह ज्ञान और दया का प्रकाश है; वह प्रकाश जो अनंत के प्रत्येक बच्चे के भीतर गहराई से अच्छाई को पहचानता है। अब घटनास्थल पर एक मंद रोशनी चमक रही है, जबकि गंदे पानी से दूर एक उबड़-खाबड़ रास्ता दिखाई दे रहा है। उत्सुकता से लोग इस रास्ते पर चढ़ते हैं और जैसे ही आगे बढ़ते हैं, माध्यम देखता है कि वे एक घने जंगल में प्रवेश कर गए हैं। यह एक कदम ऊपर है, - एक दुखद जगह, - लेकिन अब उन्होंने एक मजबूत आधार हासिल कर लिया है, और नीरस निराशा ने आनंदमय आशा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है।

अध्याय XXXIII.

अध्यात्मवाद जैसा कि यह है, और इसका विश्व के लिए संदेश है।

पतमोस के काव्यात्मक और भविष्यसूचक जॉन ने, दर्शन के आनंद में डूबे हुए, यह कहते हुए रिकॉर्ड किया, "मैंने स्वर्ग के बीच में एक और स्वर्गदूत को उड़ते देखा, जिसके पास शाश्वत सुसमाचार था, ताकि वह इसे पृथ्वी पर रहने वालों और हर किसी को प्रचार कर सके।" जाति, कुल, भाषा और लोगों को उपदेश दो।” (प्रकाशितवाक्य 14:6.) ईश्वर आत्मा, चेतना, प्रेम, उद्देश्य और इच्छा है, यह कोई अन्य देवदूत नहीं हो सकता।

शुद्ध अध्यात्मवाद के दूत की तुलना में। ऐसे देवदूत संदेशवाहक, नए चक्रों या नई और बेहतर व्यवस्थाओं के अग्रिम रक्षक होते हैं। दर्शन में ग्नोस्टिक रहस्योद्घाटनकर्ता की यह दिव्य घोषणा, "अनन्त सुसमाचार", ईश्वर का पिता-मातृत्व, स्त्री का भाई-बहनत्व, सभी राष्ट्रों, नस्लों और जनजातियों की समानता, सभी को अवसर की पेशकश, आकर्षक संदेश देवदूतों की, आत्माओं की मधुर प्रेरणा, मंत्रालय और प्रगति का महान ऊर्जावान उत्थानकारी नियम जो सभी सितारों और सूर्यों को दिव्य शक्ति से भर देता है और रोमांचित करता है जो अकथनीय विशालता को सुशोभित करते हैं।

तो फिर अध्यात्मवाद का विश्व को क्या सन्देश है? क्या इसका कोई विशिष्ट और निश्चित संदेश है? यह निश्चित रूप से है - और यह संदेश जितना उत्साहवर्धक और शक्तिशाली है उतना ही उत्साहवर्धक भी है! संक्षेप में, यह अमरता और प्रोविडेंस, सचेतन अस्तित्व है, जिसे पूरी तरह और संतोषजनक ढंग से प्रदर्शित किया गया है। अंधविश्वास, भय, दंतकथा और सभी स्वप्निल भावुकता को त्यागते हुए, यह दावा किया जा सकता है कि अध्यात्मवादी दुनिया भर में विचारकों का एकमात्र समूह है जो साबित करने और प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं और जो वास्तव में कब्र से परे वास्तविकता में विश्वास करते हैं। चेतन जीवन का प्रत्यक्ष, सबसे अचूक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

सभी देशों के अध्यात्मवादी यह दावा करते हैं और वे सबसे सकारात्मक सबूतों और प्रदर्शनों के साथ अपने दावों का पुरजोर समर्थन करते हैं। तो, यह संदेश है - सभी संदेशों का धन्य संदेश! लेकिन हाइडेसविले, नए बेथलहम में जीवन के वृक्ष के रोपण में प्रदर्शन के इस देवदूत दूत का उद्देश्य एक नया धार्मिक संप्रदाय स्थापित करना नहीं था - एक नया संप्रदाय स्थापित करना - सांप्रदायिक स्कूल या ऐसे महान चर्च संगठन बनाना फ़ारसीवाद। इसे बनाना नहीं पड़ा.

सजावट और समारोह जैसे बपतिस्मा, श्रद्धेय, पुजारी, लबादे वाले बिशप और ताजपोशी पोप। ऐसा कुछ नहीं है! इसकी निरंतर आवाज थी और है,

"आत्मा में चलो," "आत्मा जीवन देती है," "मेरे पास आओ," "विश्वास, आशा और दान की कृपा में बढ़ो," "जीवन के वृक्ष का फल खाओ, और इस प्रकार 'जीत'। अब नया नाम, सफेद पत्थर और वह फीका, चमकीला, 'भोर का तारा' पाने के लिए आगे बढ़ें।" तो अध्यात्मवाद का संदेश, आपके लिए है जो संदेह करते हैं - आपके लिए जो मौन में ध्यान करते हैं। डरना मत।

उल्काएँ सूर्य को काला नहीं कर सकतीं। एक अत्यधिक विकसित, सामंजस्यपूर्ण व्यक्ति राक्षसी प्रभावों से मुक्त होता है। जब नैतिक शुद्धता में रहते हैं, तो अध्यात्मवाद जुनून के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है, क्योंकि यह टार्टरियन अंधेरे के क्षेत्रों से आने वाले सभी आधार और घातक प्रभावों के खिलाफ इलेक्ट्रो-ईथर बाधाओं को दूर रखता है। यह हमें सिखाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस-पास, यहाँ और अभी, जीवन की असंगत स्थितियों पर दृढ़ और उद्देश्यपूर्ण विजेता बनना चाहिए।

यह हमें दूसरों को आगे बढ़ने में मदद करना और यहां और अभी एक सच्चे सामंजस्यपूर्ण जीवन की पूर्णता और पूर्णता का एहसास करना सिखाता है। यह हमें उच्चतम और श्रेष्ठ सेवा में लगे रहना सिखाता है, ऐसी सेवा जो नैतिक सफलता की ओर ले जाती है, यहीं और अभी। यह हमें आध्यात्मिकता का विकास करना सिखाता है, जो जीवन को हर तरह से बड़ा, व्यापक और भव्य बनाता है। यह सिखाता है कि एक शाश्वत सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व-ऊर्जावान शक्ति काम कर रही है, जो ब्रह्मांडीय धूल में, खनिजों, वनस्पतियों, जानवरों, मनुष्य, आत्मा और सभी स्वर्गदूतों में क्रमिक और व्यवस्थित तरीके से काम करती है। दिव्य आशीर्वाद के प्राणी। ऊपरी क्षेत्रों की ओर स्पष्ट रूप से इशारा करता है।

अरे, अज्ञेयवादियों पर संदेह करते हुए, यह आध्यात्मिक संदेश आपके लिए है - और अधिक जांच करें। भौतिकवादियों को नकारने वालों, यह संदेश आपके लिए है - सोचो, खोजो, गहराई से खोजो। आशावानों, भयभीत संप्रदायवादियों, यह संदेश आपके लिए है - तर्क करो, विश्वास करो, विश्वास करो, जानो। नए विचारकों, यह संदेश आपके लिए है - उस चट्टान को देखें जिससे आप निकले हैं, प्रदर्शन करें, विनम्र बनें, न्यायपूर्ण बनें। दुनिया के महत्वाकांक्षी, स्वार्थी लोगों, यह संदेश आपके लिए है - पश्चाताप करो, सुधार करो और अभी करो।

अध्यात्मवादियों, यह संदेश आपके लिए है - खुलो, विस्तार करो, प्रेम, दिव्य सद्भाव और उत्कृष्ट शांति के उच्च आध्यात्मिक जीवन में विकसित होओ। रोती-बिलखती, विलाप करती माताएँ, जिनके प्रियजनों के

रूप पहाड़ की ढलानों पर घास और विलो के नीचे सो रहे हैं, यह संदेश आपके लिए है - मेल-मिलाप करें, क्योंकि स्वर्गदूत आपके प्रियजनों के कोमल देखभालकर्ता और शिक्षक हैं, उन ऊँचाइयों में, मासूमियत के उज्जवल क्षेत्र.

भयभीत, मृत्यु के द्वार पर कांपते हुए, यह संदेश आपके लिए है - मृत्यु केवल एक संक्रमणकालीन नींद है, और वास्तव में अच्छे लोगों के लिए यह बगीचे की दीवार पर चढ़ने वाली एक फूलदार लता की तरह है जो दूसरी तरफ अमर सुंदरता में खिलती है। अतः हे मनुष्यों! साहसपूर्वक, शांतिपूर्वक और यहां तक कि मुस्कुराहट के साथ न्यायपूर्ण और पवित्र जीवन जीकर अपरिहार्य का सामना करने के लिए खुद को तैयार करें।

यह शाश्वत सुसमाचार हर कब्रिस्तान में आत्माओं की बढ़ती फसल, हर क्रिस्टल धारा में एक बहता हुआ जॉर्डन, हर पन्ना-पहने हुए पहाड़ में एक वर्तमान जैतून, हर अच्छी तरह से खेती की गई घास के मैदान में दूध और शहद के साथ बहता हुआ कनान देखता है। और प्रत्येक पतझड़-पकते सूरज में असीम प्रेम का आशीर्वाद।

किसी के मरने या मरने के लिए तैयार होने के बारे में सुनकर, जिसने जीवन का काम अच्छी तरह से पूरा कर लिया है, मैं अपनी आत्मा में कहता हूं, - जितनी जल्दी हो सके मुक्ति के सुखद घंटे तक पहुंचें, क्योंकि मौत का झटका एक उच्च और बेहतर रूप का परिणाम है अस्तित्व का. मंच की ओर केवल उत्थान है। मरना जून के पत्तों में पक्षियों के संगीत के समान मनमोहक है, - सदाबहार द्वीपों के नीलमणि समुद्र में सूर्यास्त के समान सुनहरा।

जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती है, और मैं अनुवाद के करीब आता हूं, मेरा दिल शांत, आत्म-संतुष्ट खुशी में पवन-वीणा की तरह गाता है। शरीर को पूर्ण विश्राम, पूर्ण शान्ति प्राप्त नहीं होती। दूर-दूर के देशों में घूमते हुए, और कई झरनों का पानी पीते हुए, मैं अभी भी और अधिक क्रिस्टल पानी की खोज कर रहा था।

कई शानदार दावतों पर दावत करते हुए, मैं अभी भी उस प्रेरक रोटी के लिए तरस रहा था जो स्वर्ग से प्रतिदिन आती है। चर्च और महल को आनंदित करने वाले एकल और आर्केस्ट्रा को सुनकर, मैं उन आकर्षक धुनों के लिए और भी अधिक रोता हूं जो अवर्णनीय खुशी और परमानंद, स्वर्गदूतों के धन्य निवास से रोमांचित करते हैं।

पृथ्वी की अपूर्णता मुझे दुखी, थका देती है। देर मत करो, हे मृत्यु की खूबसूरत परी, क्योंकि तुम्हारे मुखौटे के नीचे अमरता की महिमा छिपी है। अक्सर शव का शांत चेहरा एक दबी हुई मुस्कान में ढका होता है, बादल में एक दरार प्यार करने वाले, इंतजार कर रहे आत्मीय मित्रों की झलक दिखाती है। यह अध्यात्मवाद की शानदार जीत है.

गवाही देना

हाल के वर्षों में सैकड़ों प्रचारकों ने भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच एक सचेत संवाद की सच्चाई की गवाही दी है और दे रहे हैं। किंग्स कॉलेज, लंदन में तर्क और तत्वमीमांसा के दिवंगत प्रोफेसर रेव एच.डब्ल्यू. मोमेरी ने एक उपदेश में कहा: "मैं ईसा मसीह की ईसाई धर्म कहता हूं, क्योंकि दुनिया में बहुत सारे ईसाई धर्म हैं। लेकिन ईसा मसीह की ईसाई धर्म व्यक्तिगत चरित्र को पूर्ण कर रहा है। उनका उद्धार न तो आत्म-विकास से अधिक है और न ही कम है। ईसा मसीह की योजना थी बहुत सरल; यह सब एक शब्द में संक्षेपित है, प्रेम।

उन्होंने सिखाया कि मनुष्य को दिव्य प्रेम से बचाया जाना चाहिए, और जैसे स्वर्गदूतों ने अतीत में सेवा की थी, वैसे ही स्वर्गदूत और आत्माएं आज मनुष्यों की सेवा करते हैं। दृश्य और अदृश्य संसार के बीच कोई पीतल की दीवार नहीं है। और यदि आप इसके तर्क को देखें, तो आप देखेंगे कि मुक्ति की योजना अत्यंत दार्शनिक है, जो आज की सर्वोत्तम नैतिकता और उच्चतम तत्वमीमांसा के साथ पूरी तरह मेल खाती है।"

प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक, लॉरेंस ओलिफ़ेंट, जिनका नाम अतीत में ब्रिटेन में अध्यात्मवाद के संबंध में अक्सर इस्तेमाल किया जाता था, ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में एक महत्वपूर्ण मामले पर अपनी धार्मिक मान्यताओं का सारांश इस प्रकार दिया (लंदन लाइट देखें)। : “जैसे स्वर्गदूत मनुष्यों की सेवा करते हैं; जिस प्रकार हमारे सौर मंडल में सूर्य की उपस्थिति से व्यवस्था सबसे अच्छी तरह संरक्षित रहती है; राष्ट्र के मुखिया पर एक मुखिया;

प्रत्येक परिवार पर शासन करने वाला एक पिता; प्रत्येक व्यवसाय को नियंत्रित करने वाला एक मालिक; - यह सार्वभौमिक नियम है; इसलिए, कम से कम ऊर्जा की बर्बादी के साथ सबसे शक्तिशाली परिणामों पर

विचार करते हुए, मेरा मानना है कि पूरे नैतिक ब्रह्मांड के प्रमुख पर एक पवित्र व्यक्तिगत शासक, आध्यात्मिक यूलर था जो सभी मान्यता प्राप्त इतिहास में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति, यीशु मसीह था। प्रतिष्ठित मेथोडिस्ट, बिशप जे.पी. न्यूमैन, मेरे सामने एक अंतिम संस्कार उपदेश पुस्तिका में इसकी पुष्टि करते हैं। “ईसाई धर्म में वह सब कुछ शामिल है जो धार्मिक रूप से अच्छा और सच्चा है। यह धारणा लगभग सार्वभौमिक है कि दिवंगत लोगों की आत्माएँ पृथ्वी पर लौटती हैं।

चर्च में ज्ञान और धर्मपरायणता के लिए प्रतिष्ठित पुरुषों ने इस सामान्य विश्वास को संजोया है। बाइबिल के समय में दो दुनियाएँ मिलती थीं; लेकिन क्या दोनों दुनियाओं के बीच संचार जुड़ा है? आज तक! वेस्ली का मानना था कि स्वीडनबॉर्ग पर उसके मृत दोस्तों की आत्माएं सताती थीं। और यह पॉल ही था जिसने पूछा, 'क्या वे सभी सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं!'"

उस प्रख्यात अंग्रेजी अध्यात्मवादी, स्वर्गीय डब्ल्यू. स्टैनटन-मोसेस (एम.ए. ऑक्सन), लंदन ने गहरी धार्मिक भावना के साथ लाइट में एक पुस्तक लिखी थी। संपादकीय में ये पंक्तियाँ लिखीं: "उस मसीह जैसे अध्यात्मवाद की व्यापक सच्चाइयों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो सच्चे चर्च द्वारा हमसे विश्वास करने की अपेक्षा के साथ असंगत हो।

वास्तव में, मैंने जो कुछ भी सीखा है उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो मसीह की सरल शिक्षा के साथ संघर्ष करता हो, जहाँ तक यह हमारे लिए संरक्षित है। यह जानने की बात है कि धर्म का संपूर्ण ताना-बाना, जहां तक यह मनुष्य को प्रभावित करता है, उच्च अध्यात्मवाद के सिद्धांतों से अपनी मंजूरी और प्रेरणा प्राप्त करता है, जिससे हम में से कई लोग परिचित हैं।

ऐसे समय में जब पुरानी सच्चाइयों को नए साक्ष्य के रूप में सामने लाना फैशन बन गया है, जब मनुष्य ने प्राचीन आस्था पर अपनी पकड़ काफी हद तक खो दी है, जब धर्म एक बाध्यकारी शक्ति के रूप में अपना जीवनदायी प्रभाव खो रहा है। है, तो यह महसूस करने वाली बात है कि ईश्वर की दया से जो अपने प्राणियों की प्रार्थनाओं का उत्तर देने में कभी असफल नहीं होता, हम अपनी समझ के अनुकूल प्रायोगिक साक्ष्यों द्वारा अपने आध्यात्मिक अस्तित्व की वास्तविकता के आमने-सामने आ रहे हैं। . मैं ईसा मसीह की शिक्षाओं के बारे में जो कुछ जानता हूं, उसमें अध्यात्मवाद में कोई विरोधाभास नहीं दिखता।

आत्माओं का निरंतर बचाव.

यद्यपि वासनाएँ प्रबल होती हैं, यद्यपि पृथ्वी के अनगिनत अवतारी निवासी पाताल लोक की सिम्मेरियन छाया-भूमि में रहते हैं, फिर भी दैवीय आवेग नहीं बदलता है। यद्यपि वासनाएँ प्रबल होती हैं, यद्यपि पृथ्वी के अनगिनत अवतारी निवासी पाताल लोक की सिम्मेरियन छाया-भूमि में रहते हैं, फिर भी दैवीय आवेग नहीं बदलता है। धर्मार्थ बचाव कार्य जारी है.

उत्थानकारी कृपा सभी लोकों तक फैली हुई है। मनुष्यों के प्रति सद्भावना की देवदूत आवाज हमेशा दोहराई जाती है। सभी क्षेत्रों में गूंज रहे ये शब्द हैं, अपने पिता के घर लौट जाओ। '9 पूर्ण विनाश अकल्पनीय है।

अस्तित्व से कुछ भी नहीं खोया जा सकता। प्लेग को रोकने के लिए परमेश्वर की प्रचंड हवाओं का उपयोग किया जाता है। प्रतीत होता है कि बेमौसम की बारिश जो गेहूं को जंग लगाती है, पतझड़ के खेतों और जंगलों को और अधिक ताजा और सुंदर बनाती है। प्रत्येक शीत ऋतु का अपना मधुर वसंत होता है, और प्रत्येक समुद्र के अपने चमकते रत्न होते हैं। बर्फ के नीचे क्रिस्टल जल बहता है।

खाद के नीचे घास हरी है। प्रारंभिक फूल कीचड़ से उगते हैं, और क्रॉस के पीछे एक मुकुट होता है। सबसे कठोर नश्वर बाहरी भाग के नीचे अहंकार, दिव्य चिंगारी, ईश्वर की दबी हुई छवि है, जो पुनरुत्थान के शब्द की प्रतीक्षा कर रही है, जागो, ऊपर आओ!

आत्म-मुक्ति असंभव.

मनुष्य चाहे कितना भी अभिमानी और अहंकारी क्यों न हो, वह स्वयं को बचा नहीं सकता, स्वयं को पूर्ण नहीं बना सकता। वह ऐसा नहीं कर सकता, जैसे अंडा गर्मी के बिना नहीं फूट सकता, जैसे सर्दियों में कांपती हुई कली वसंत सूरज की महत्वपूर्ण हवा के बिना नहीं खिल सकती। दृश्य एवं अदृश्य सहायता अवश्य होनी चाहिए। बचाया गया व्यक्ति सामंजस्यपूर्ण, सुसंस्कृत, आध्यात्मिक रूप से विकसित और विचार और कार्य में सैद्धांतिक है। उसने कामुकता को अपने पैरों तले कुचल दिया है।

उन्होंने स्वार्थ पर विजय पा ली है. उसने सभी शारीरिक ज्ञान को अपने वश में कर लिया है, और अपने भीतर मसीह के माध्यम से आत्म-नियंत्रण की इतनी उच्च नैतिक ऊंचाई प्राप्त कर ली है, कि वह पूरी ईमानदारी से कह सकता है, मैं आत्म-संपन्न हूं। मैं अपने आप में एक कानून हूं. मैं, शब्द के उच्चतम अर्थ में, ईश्वर का पुत्र हूं।

जब एक भ्रष्ट, दुष्ट व्यक्ति मर जाता है, तो वह जागरूक जीवन के अंडरवर्ल्ड में प्रवेश करता है, जो आत्माएं चरित्र के रहस्यों की खोज कर सकती हैं, वे आत्मा के रूप की जांच करती हैं, विशेष रूप से मस्तिष्क की, क्योंकि वहां विचार और इच्छा का स्रोत था। इस प्रकार जांच और समझ के बाद उसके सामने उसके पिछले जीवन का परिदृश्य खुलता है। शरीर के साथ स्मृति नहीं मरती। न्याय तराजू रखता है.

इस प्रकार सभी को न्याय के समक्ष आना चाहिए। न्याय के इस न्यायाधिकरण से गुजरने के बाद, उसे ज्ञान और पुनर्वास के लिए ग्रह की परिधि पर कुछ अनुशासनात्मक विभाग में ले जाया जाता है। प्रेरित ने कहा, यीशु ने शरीर में मरकर, “जेल में आत्माओं को उपदेश दिया।” उपदेश का अर्थ है अवसर। गौतम बुद्ध, एशिया के प्रकाश, ने निस्संदेह सदियों से कैद एशियाई आत्माओं को उपदेश दिया। सभी युगों के दार्शनिक और सुधारक, जब उच्च क्षेत्रों में जाते हैं, तो कैद की गई आत्माओं को पढ़ाने और उपदेश देने का अपना काम जारी रखते हैं।

प्रेम और दान की यह भावना उन सभी महान नैतिक नायकों की आत्माओं को रोमांचित करती है जिन्होंने अतीत में पृथ्वी की शोभा बढ़ाई थी। वे नैतिक रूप से मृत लोगों को जीवित करने का उपदेश दे रहे हैं। आध्यात्मिक जीवन एक सक्रिय जीवन है, एक सामाजिक जीवन है, एक रचनात्मक जीवन है, एक मुक्तिदायक जीवन है। आविष्ट आत्माएँ सुन रही हैं, विश्वास कर रही हैं, और उनमें से कई अस्तित्व के उच्च स्तरों पर जा रही हैं, जहाँ एक समय के बाद, वे दिव्य सहायक बन जाती हैं।

कभी-कभी वे इन चकित, व्यथित आत्माओं को निचले क्षेत्रों से शांत, व्यवस्थित सत्र कक्षों में लाते हैं ताकि वे अपने छायादार वातावरण और अपनी नैतिक अपूर्णता दोनों को पूरी तरह से पहचान सकें। देखना ही जानना है. देखना जागृति की ओर पहला कदम है - देखना धार्मिक आकांक्षा और आत्मा-खोज की सुलगती आग को प्रज्वलित करता है। विकास अनवरत है. नेतृत्व करते हुए, यह हर नैतिक पर्वत की चोटी से चिल्लाता है, "ऊपर आओ।"

कोई विरोध नहीं.

सत्य अपनी बुनियाद पर खड़ा है। यह अजेय है. प्रकाश अंधकार का विरोध नहीं करता; यह बस पूर्वी पर्दे को उठाता है और चुपचाप सुबह की महिमा में प्रवेश कराता है। अध्यात्मवाद किसी भी तरह से सच्चे और शुद्ध ईसाई धर्म का विरोध नहीं करता है, जिसका मूल आधार ईश्वर का प्रेम, मनुष्य का प्रेम और आध्यात्मिक उपहार हैं। मसीह ने कहा, "इससे सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो, यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।" यदि हमारा सुसमाचार, आध्यात्मिक संचार से भरा हुआ, नैतिक रूप से उत्थानकारी नहीं है, यदि यह श्रद्धापूर्ण नहीं है, यदि यह शब्द के व्यापक और उच्चतम अर्थ में ईसाई नहीं है,

यदि यह दृढ़ विश्वास के साथ आत्मा की गहराइयों को नहीं छूता है, यदि यह भावनाओं को मधुर नहीं बनाता है, यदि यह आध्यात्मिक चेतना को तेज नहीं करता है और न्याय, स्वतंत्रता, पारस्परिकता, भाईचारे और सच्चाई के प्रति पंचकोणीय भक्ति विकसित नहीं करता है, तो इसका कोई लाभ नहीं है।

लेकिन अध्यात्मवाद - यह "अनन्त सुसमाचार" ईश्वर का है और प्रेम की दिव्य आत्मा द्वारा प्रज्वलित है, यह आध्यात्मिक प्रकृति को जागृत करके, अंतरतम को जागृत करके "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी" की नींव रखता है। तो, विचार करें कि (मैं केवल अपने लिए बोलता हूं) अध्यात्मवाद मसीह की ईसाई धर्म का विरोध करने के बजाय उसका पूरक है।

समय की इस प्रगतिशील अवधि के लिए अनुकूलित, यह नाज़रीन के भविष्यवाणी शब्दों की पूर्णता, पूर्णता या पूर्ति है, "ये संकेत उन लोगों का अनुसरण करेंगे जो विश्वास करते हैं," "और आप इनसे भी बड़े काम करेंगे।" और "देखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं," उन्होंने कहा, "यहां तक कि दुनिया के अंत तक भी।

यूरोप और हर जगह धर्मशास्त्रीय स्कूल के लोग और ठोस विश्वविद्यालय विचारक पेट्रिन और पॉलीन एक्लेसिओलॉजी और जीवित, प्रबुद्ध ईसा मसीह की ईसाई धर्म के बीच रेखा खींचने के लिए तेजी से सावधान हो रहे हैं; और उन्हें बेतरतीब, भविष्य बताने वाले, नास्तिक भूतवाद और पवित्र प्रबुद्ध अध्यात्मवाद के बीच अंतर की और भी अधिक कठोर रेखाएँ

खींचनी होंगी, जिनमें से एक मुख्य रूप से निचले आध्यात्मिक क्षेत्रों से है, दूसरा दिव्य और नैतिक रूप से उत्थानकारी है,

स्पिरिट हेल्पर्स की वास्तविकता वर्तमान आत्मा-शरीर के जबरदस्त रहस्योद्घाटन और संक्रमण, मृत्यु से पहले, जहां तक संभव हो, इसे शुद्ध और सामंजस्यपूर्ण बनाने का महत्वपूर्ण महत्व सिखाती है, जिसे केवल दयालु, निस्वार्थ और धर्मी जीवन जीने से ही पूरा किया जा सकता है। हो सकती है।

महान गैर-यहूदी प्रेरित ने कहा, "सुलह होने पर, हम उसके जीवन से बच जाते हैं।" यह राष्ट्रीयता या रंग नहीं है, न ही प्रायश्चित रक्त है, न ही विश्वास की स्वीकारोक्ति है जो बचाती है; लेकिन एक शब्द में, चरित्र. यह सही उद्देश्य, नैतिक जीत और उसे प्राप्त करने का संघर्ष है जो अनंत काल के लिए बचाता है और निर्माण करता है।

बहुत कम लोग मानवता के जन्मजात मूल्य और गरिमा को समझते हैं, या समझते हैं कि सभी शाही रक्त के हैं और आंतरिक रूप से दैवीय सार का हिस्सा हैं, और उन्हें उच्च आत्मा द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए ताकि वे नैतिक उत्थान प्राप्त कर सकें और महान चरित्र का निर्माण कर सकें। पृथ्वी की झुंड जातियाँ, विकास के विभिन्न चरणों में, आत्मज्ञान और पूर्णता की राह पर हैं।

वे विभिन्न अनुभवों के माध्यम से अवलोकन और यात्रा करके सीख रहे हैं कि कोई स्थायी खुशी नहीं हो सकती जो न्याय और धर्मपरायणता पर आधारित नहीं है। कोई भी नश्वर व्यक्ति, कोई भी राष्ट्र समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि सभी बेहतर और उच्चतर ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहे हैं। स्वर्ग से निकलने वाला यह सर्व-समावेशी अध्यात्मवाद न केवल इस बात की दृढ़ता से पुष्टि करता है कि मनुष्य अब आत्माएं हैं, बल्कि इसके बाद सचेत रूप से अस्तित्व में रहने पर वे अपने उन दोस्तों के साथ प्रेमपूर्वक बातचीत करने में सक्षम होंगे जो अभी भी भौतिक शरीर में हैं।

लेकिन यह हर व्यक्ति को, चाहे वह मौन में बैठा हो या जीवन के दैनिक कार्यों में व्यस्त हो, उच्च आत्मा की आवाज सुनने के लिए प्रोत्साहित करके, आध्यात्मिक विकास के लिए, आत्मा के संवर्धन की आवश्यकता की लगातार पुष्टि करता है।

यह कहने में कोई विरोधाभास नहीं है कि आत्मा मौन में बोलती है। हालाँकि अक्सर ऐसा कहा जाता है, अध्यात्मवाद कोई धर्म नहीं है, धर्म नहीं है, बल्कि स्वयं धर्म है, जो सीमित को अनंत से जोड़ता है - मानवता को परमात्मा से जोड़ता है, और इस अद्भुत सदी के अंत से पहले दुनिया को सार्वभौमिक रूप से बदल देगा।

एक स्वीकृत धर्म बनना नियति है। ऐसी भविष्यवाणी है जो इस क्षण मेरे भीतर प्रेरणादायक ढंग से स्पंदित होती है और मेरे अस्तित्व की गहराइयों को रोमांचित कर देती है। "यदि आप प्रकृति के आध्यात्मिक, दैवीय रहस्यों की जांच करना चाहते हैं," लाटियास (जन्म 1575) के महान अध्यात्मवादी जैकब बोहेम ने लिखा, "अपने दिमाग की जांच करें, और अपने उद्देश्य की शुद्धता के बारे में खुद से पूछें।

क्या आप मानवता की भलाई के लिए प्राप्त की गई अच्छी शिक्षाओं को लागू करना चाहते हैं? क्या आप उन सभी स्वार्थी इच्छाओं को त्यागने के लिए तैयार हैं जो आपके दिमाग पर छा जाती हैं और आपको शाश्वत सत्य की स्पष्ट रोशनी देखने से रोकती हैं? क्या आप दिव्य ज्ञान की अभिव्यक्ति का साधन बनने के लिए तैयार हैं?

क्या आप जानते हैं कि अपने स्वयं के उच्च स्व के साथ एक होने, अपने निम्न स्व से छुटकारा पाने, ईश्वर की जीवित, सार्वभौमिक शक्ति के साथ एक होने और स्वर्गदूतों के साथ मधुर संगति में आने और इस प्रकार मुक्त होने का क्या मतलब है? अपने ही तुच्छ, सांसारिक व्यक्तित्व के प्रति मरना?

या आप बस महान ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, जो हमेशा क्षणभंगुर होता है, ताकि आपकी जिज्ञासा संतुष्ट हो सके, और आप अपने विज्ञान को पहचानने में गर्व महसूस कर सकें और खुद को बाकी मानव जाति से श्रेष्ठ मान सकें। विचार करें कि दिव्यता की गहराई केवल दिव्य आत्मा द्वारा ही खोजी जा सकती है जो आपके भीतर अव्यक्त या सक्रिय है।

वास्तविक ज्ञान आपके अपने दिव्य आंतरिक स्व से आना चाहिए, न कि केवल बाहरी चीजों से; और जो लोग चीज़ों का सार केवल बाहरी चीज़ों में खोजते हैं उन्हें किसी चीज़ का कृत्रिम रंग मिल सकता है, लेकिन वास्तविक आध्यात्मिक चीज़ नहीं।" सत्य के खोजी! मानसिक विज्ञान के विद्यार्थी! आत्माओं की जांच करें, उनका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें, उनकी

शिक्षाओं से उनका मूल्यांकन करें, उनके मध्यम विषयों पर उनके प्रभावों का कठोरता से अध्ययन करें।

अंजीर काँटों पर नहीं उगते, न पुण्य रात के गड्ढों से चमककर उगता है! अत: नरक से दूर रहो; राक्षसों के मोहक गीतों के प्रति बहरे हो जाओ; स्वर्गदूतों से प्रार्थना करें, जो भाग्य के स्वामी हैं; चक्रीय युग के मसीहों से प्रेम करो; सभी मनुष्यों के प्रति न्यायपूर्ण रहो, और नम्रतापूर्वक परमेश्वर का आदर करो।

ओह, फिर भी हम मानते हैं कि, किसी भी तरह, अच्छाई ही बुराई का अंतिम लक्ष्य होगी; प्रकृति के कष्ट, इच्छा के पाप, संदेह के दोष और खून के धब्बे। कि कोई भी लक्ष्यहीन होकर न चले, जब परमेश्वर अपना ढेर पूरा कर लेगा तो एक भी जीवन नष्ट नहीं होगा, या कूड़े के रूप में शून्य में नहीं फेंका जाएगा।

"स्मृति में" जब अध्यात्मवाद, विज्ञान, तर्क, और ईसा मसीह के ईसाई विश्वास की दासी, उनके दिव्य पितृत्व, उनके मातृत्व, उनके भाईचारे, उनके वर्तमान स्वर्गीय मंत्रालयों, गलतियों के लिए उनके अनुशासनात्मक प्रतिशोध, सभी सुधारों के प्रति उनकी उदारता, उनकी भावनाएं आपकी आत्म - संयम; यह दूरी में अपने आदर्शों के साथ पवित्र है, मानव दुर्भाग्य के प्रति इसकी मधुर दानशीलता है;

इसके पार्लरों में प्रार्थना सभाएँ और पूजा वेदियाँ; इसका पवित्र गृह प्रभाव; सच्चे धर्म के लिए इसकी प्रेरक सहायता; इसके पवित्र मंदिर जहां युवा और बूढ़े एक साथ आ सकते हैं; यह बीमारों के लिए उत्साहवर्धक शब्द हैं; यह उन लोगों के लिए सांत्वना देने वाली आवाज है जो रोते और शोक मनाते हैं; उन प्रियजनों के स्नेहपूर्ण संदेश जो मौत की खामोश नदी को पार करके उन शांत समुद्रों तक पहुंच गए हैं।

अमरता के उन पवित्र क्षेत्रों में, जहां प्यार करने वाले दिल कभी ठंडे नहीं पड़ते, पवित्र मित्रता कभी कम नहीं होती और दिव्य सूर्य कभी अस्त नहीं होते; जब यह अध्यात्मवाद, मैं दोहराता हूं, एक जीवित ज्ञान और एक व्यावहारिक शक्ति बन जाता है, जैसा कि मेजबानों और हमारे ऊपर के शक्तिशाली पदानुक्रमों द्वारा भविष्यवाणी और वादा किया गया है, तब भगवान की इच्छा वास्तव में पृथ्वी पर पूरी होगी जैसे कि स्वर्ग में होती है। है।

"मैं तुम्हें शांति के साथ छोड़ता हूं! पिछले दिनों से आशीर्वाद सरल और शांत तरीके से बह रहा है," छोटे और डरे हुए दिल वाले अपने अनुयायियों से, नाज़रीन ने इस प्रकार कहा!

इस प्रकार आत्मा का यह ज्ञान प्रत्येक मनुष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस ज्ञान के कारण हम अपनी मृत्यु के बाद जिस सूक्ष्म जीवन में प्रवेश करते हैं, उसमें यह जानकारी बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

समाप्त